comicsmylife.blogspot.in

दुबई का आका

अनिल मोहन

देवराज चौहान सीरीज

नया उपन्यास

comicsmylife.blogspot.in

देवराज चौहान सीरीज

दुबई का आका

अनिल मोहन

comicsmylife.blogspot.in

दुबई का आका

ISBN : 978-93-8071-21-9

लेखक से बातचीत के लिए ई-मेल

anilmohan012@yahoo.co.in

प्रस्तुत उपन्यास के सभी पात्र एवं घटनाएं काल्पनिक हैं। किसी जीवित अथवा मृत व्यक्ति से इनका कोई सम्बंध नहीं है। उपन्यास में स्थान आदि का वर्णन केवल कथ्य को विश्वसनीय बनाने के लिए किया गया है। उपन्यास का उद्देश्य मात्र मनोरंजन है।

राजा ऑनलाइन बुक स्टोर
अब आप हमारे ऑनलाइन बुक स्टोर www.rajapocketbooks.com पर अपनी पसंद की पुस्तकें ऑर्डर कर सकते हैं। इस स्टोर पर आप क्रेडिट कार्ड, बैंक ट्रांसफर, पोस्टल मनी ऑर्डर, आदि कई पेमेंट विकल्पों द्वारा पेमेंट कर सकते हैं। आपकी आदेशित पुस्तकें रजि. पोस्ट अथवा स्पीड पोस्ट से तुरंत भेज दी जाएंगी। आज ही www.rajapocketbooks.com पर जाएं।

•
प्रकाशक
राजा पॉकेट बुक्स
330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611410, 27612036, 27612039

•
वितरक
राजा पॉकेट बुक्स
112, फर्स्ट फ्लोर, दरीबा कलां,
दिल्ली-110006
फोन : 23251092, 23251109

•
मुद्रक
राजा ऑफसेट
1/51, ललिता पार्क
लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092

DUBAI KA AAKA : DEVRAJ CHOUHAN
ANIL MOHAN

मूल्य : साठ रुपए

एक्शन से भरा, जबर्दस्त उपन्यास!
देवराज चौहान को तलाश थी इकबाल खान सूरी की। वो दुबई में था कि पाकिस्तान में, ये पता लगाना बाकी था। इकबाल खान सूरी की हत्या करनी थी उसने, परंतु कामनी उर्फ नसरीन शेख की छल-कपट उसे उलझाए हुए थी। मार्शल के एजेंट, दुबई हो या पाकिस्तान, हर कदम पर उसके साथ थे परंतु इकबाल खान सूरी की हवा भी नहीं मिल रही थी।

दुबई का आका

अनिल मोहन

देवराज चौहान सीरीज का नया उपन्यास

comicsmylife.blogspot.in

देवराज चौहान सीरीज का आगामी नया उपन्यास...

वर्दी का नशा

अनिल मोहन के
राजा पॉकेट बुक्स में उपलब्ध उपन्यास

देवराज चौहान सीरीज
- ● मैं पाकिस्तानी
- ✪ डॉन जी
- ✪ शिकारी
- ✪ 100 माइल्स
- ✪ भूखा शेर
- ✪ आदमखोर
- ✪ गोला-बारूद
- ✪ निशानेबाज
- ✪ जिंदा या मुर्दा
- ✪ डैथ वारंट
- ✪ रॉबरी किंग
- ✪ खाकी से गद्दारी
- ✪ ज्वालामुखी
- ✪ जांबाज
- ✪ खूंखार
- ✪ डॉलर मामा
- ✪ हाई जैकर
- ✪ माई का लाल
- ✪ गिरोह
- ✪ भगोड़ा
- ✪ हैवान
- ✪ गुर्गा
- ✪ मुखिया
- ✪ जिन्न
- ✪ आतंक का पहाड़
- ✪ अण्डरवर्ल्ड
- ✪ गैंगवार
- ✪ डंके की चोट
- ✪ मिस्टर हीरो
- ✪ दिल्ली का दादा
- ✪ जैक पॉट
- ✪ बारूद का ढेर
- ✪ पौ बारह
- ✪ दरिंदा
- ✪ दौलत का ताज
- ✪ गनमैन
- ✪ एक रुपए की डकैती
- ✪ डकैती के बाद
- ✪ डकैती
- ✪ टक्कर
- ✪ घर का शेर
- ✪ पहरेदार

देवराज चौहान और मोना चौधरी सीरीज
- ● वांटिड अली
- ● सबसे बड़ा हमला
- ● बंधक
- ✪ पोतेबाबा
- ✪ जथूरा
- ✪ मंत्र
- ✪ सरगना
- ● गुड्डी
- ✪ मास्टर
- ✪ हमला
- ✪ जालिम

मोना चौधरी सीरीज
- ✪ खबरी
- ✪ गिरगिट
- ✪ सुरंग
- ✪ नागिन मेरे पीछे
- ✪ दौलत बुरी बला
- ✪ एक तीर दो शिकार
- ✪ तू चल मैं आई
- ✪ मोना चौधरी खतरे में
- ✪ आ बैल मुझे मार
- ✪ बुरे फंसे
- ✪ एक म्यान दो तलवारें
- ✪ जान बची लाखों पाए

अर्जुन भारद्वाज (प्राइवेट जासूस)
- ✪ हिंसा का तांडव
- ✪ खतरनाक आदमी
- ✪ गैंगस्टर
- ✪ खतरे का हथौड़ा

जुगलकिशोर सीरीज
- ✪ दस नम्बरी
- ✪ दहशत का दौर

थ्रिलर सीरीज
- ✪ जुर्म का जहाज
- ✪ सीक्रेट एजेंट

आर.डी.एक्स. सीरीज
- ✪ आर.डी.एक्स.
- ✪ डॉन का मंत्री
- ✪ गुरु का गुरु

✪ इस निशान के उपन्यास का मूल्य 50/- ● इस निशान के उपन्यास का मूल्य 60/-

अपने निकट के पुस्तक विक्रेता, रोडवेज बुक स्टाल, ए.एच. व्हीलर एंड कंपनी व सभी रेलवे बुक स्टालों से खरीदें, न मिलने पर कोई भी दस उपन्यासों के मूल्य का मनीऑर्डर राजा पॉकेट बुक्स 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084 के पते पर भेजकर घर बैठे प्राप्त करें। डाक व्यय माफ। कृपया M.O. पर अपना फोन नम्बर अवश्य लिखें।

दो शब्द——लेखक की कलम से

पाठकों को

अनिल मोहन का नमस्कार,

अब आपके हाथों में है **'मैं पाकिस्तानी'** के बाद मेरा नया उपन्यास **'दुबई का आका'**।

'मैं पाकिस्तानी' के अभी ई-मेल आने शुरू नहीं हुए कि उन ई-मेल भेजने वालों के नामों और विचारों का जिक्र इस पत्र में कर सकूं, ऐसे में मेरे आगामी नए उपन्यास **'वर्दी का नशा'** में उन पाठकों के नामों का जिक्र करूंगा, लेकिन मेरे पास उन पाठकों के ई-मेल बहुत हैं, जिनका मैं अभी तक जवाब नहीं दे पाया, ऐसे में कुछ ई-मेल मैंने चुने हैं कि इस पत्र में उन पाठकों को जवाब दूं।

बिकुल जौहरी, बिसालपुर (उ.प्र.) से, ई-मेल में लिखते हैं कि आपके उपन्यासों की सबसे बड़ी समस्या ये है कि एक भाग मिलता है तो दूसरा नहीं मिलता, जैसे कि मेरे पास **'शिकारी'** है परंतु **'डैथ वारंट'** नहीं, **'डॉन जी'** है तो **'100 माइल्स'** नहीं। ऐसे में मैं आपको कहानी के बारे में क्या लिखूं, मुझे समझ नहीं आता। आप दो भागों में उपन्यास लिखने बंद कर दें। एक ही भाग में लिखें तो ये हम पढ़ने वालों पर बड़ी कृपा होगी। जवाब में इतना ही कहूंगा कि अब मैं कोई भी उपन्यास दो या तीन भागों में नहीं लिख रहा आप निश्चिंत होकर मेरा कोई भी नया उपन्यास उठा सकते हैं सब एक ही भाग में हैं। नदीम सिद्दकी जी ने जाने कहां से ई-मेल भेजा है, इन्होंने जगह का नाम नहीं लिखा और मैं कई बार दोहरा चुका हूं कि अपने ई-मेल में जगह का नाम अवश्य लिखा करें, ताकि मुझे भी पता रहे कि मैं जिससे बात कर रहा हूं, वो किस शहर का है, नदीम सिद्दकी जी लिखते हैं आपका पात्र देवराज चौहान मुझे बहुत अच्छा लगता है और काफी देर से आपने R.D.X. सीरीज नहीं लिखी कृपया R.D.X. सीरीज का उपन्यास जल्दी लिखें। राज सिंह जी आगरा से लिखते हैं **'डॉन जी'** अच्छा लगा। परंतु किसी उपन्यास में जल्दी से वीरेंद्र त्यागी को लें। वो भी अच्छा लगता है।

अगला ई-मेल अंकुर लवण्य का दिल्ली से है ये कहते हैं कि मैंने कुछ देर से ही आपके उपन्यास पढ़ने शुरू किए हैं और आपके सब उपन्यास अच्छे लगते हैं, मैं नए पुराने, सब मिलाकर आपके तीन

comicsmylife.blogspot.in

उपन्यास हफ्ते में पढ़ लेता हूं। ये भी कहते हैं कि पार्ट में उपन्यास न लिखूं और इनकी जो फरमाईश है, वो बेहद कठिनाई से भरी है, अंकुर जी कहते हैं कि मैं किसी उपन्यास में, देवराज चौहान, मोना चौधरी, विनय बरूटा, जुगल किशोर, विजय बेदी, R.D.X. के अलावा जो भी हीरो हैं, सब को लेकर उपन्यास लिखूं तो मजा आ जाएगा। परंतु ये असम्भव-सी बात है कि ऐसा उपन्यास मैं लिखूं, क्योंकि इन सब पात्रों को साथ लेकर उपन्यास लिखना हो तो कहानी दो हजार पेज तक चली जाएगी। छः से आठ भाग बनेंगे और इन सब पात्रों को एक ही लड़ी में लगाना भी आसान नहीं होगा। बहुत उथल-पुथल हो जाएगी। ये मुझे सम्भव नहीं लगता कि हो पाएगा।

अभी जो देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ वाली सीरीज आपको पढ़ने को मिल रही है, उसमें ही कभी-कभी समस्याएं खड़ी हो जाती हैं मेरे लिए। बहरहाल अंकुर जी की ये बात अवश्य नोट कर ली है मैंने।

अगला ई-मेल मंसूर सिद्दकी का है जाने कहां से है। इन्होंने मेरे सारे उपन्यास पढ़े हैं और कहते हैं पोतेबाबा-महाकाली और मंत्र चाहिए। अगर किसी पाठक को कोई उपन्यास चाहिए तो वे प्रकाशक से सम्पर्क करें। तभी उपन्यास मिल पाएगा। अगला ई-मेल मुस्तफाजी का मुम्बई से है, मुस्तफा जी ने मेरे द्वारा की गई बहुत बड़ी गलती की तरफ ध्यान आकर्षित कराया है, **'शिकारी'** उपन्यास में प्रधानमंत्री जी की रैली में सबसे आगे नेता बैठते हैं, पब्लिक नहीं, जबकि मैंने लिखा कि आगे जनता बैठी थी और उसी जनता में मोरगन भिखारी के रूप में गन के साथ मौजूद था। मुस्तफा जी का शुक्रिया। ये गलती ठीक कर दी जाएगी। इनसे पहले ये बात किसी ने भी नहीं उठाई थी।

तो अब शुरू करते हैं **'दुबई का आका'** में पाकिस्तानी के ई-मेलों का जवाब, देवराज चौहान सीरीज के आगामी नए उपन्यास **'वर्दी का नशा'** में दूंगा। **'दुबई का आका'** आपको पसंद आएगा। ये तेज रफ्तार, रोचक उपन्यास है।

शेष फिर!

——अनिल मोहन

e-mail : anilmohan012@yahoo.co.in

दुबई का आका

भारतीय गुप्तचर जासूसी संस्था के चीफ मार्शल ने अपने कमरे प्रवेश किया और आगे बढ़कर दीवार में लगी सामान्य से बड़ी स्क्रीन के सामने कुर्सी पर बैठते हुए मोबाइल उठाया और नम्बर मिलाकर फोन कानों से लगा लिया। साथ ही सामने लगे कई स्विचों में से कुछ बटन दबाए तो स्क्रीन रोशन हो उठी।

कानों में लगाए फोन में अब बेल बजने लगी थी।

स्क्रीन चमक रही थी, परंतु वो खाली थी।

"हैलो मार्शल।" तभी मार्शल के कानों में उधर से आवाज पड़ी।

इसके साथ ही स्क्रीन रोशन हो उठी। स्क्रीन पर बाजार का छोटा-सा दृश्य नजर आया। लोग आ-जा रहे थे। उन्हीं में से एक व्यक्ति दिखा, जो कि सफेद कमीज पहने सड़क किनारे जाता, कान से फोन लगाए बात कर रहा था।

"मैं तुम्हें देख रहा हूं टॉम। नीदरलैंड में कब तक टिके रहोगे। तुमने तीन दिन से मुझे फोन भी नहीं किया।" मार्शल बोला।

"मुझ पर यहां की सरकार नजर रख रही है। अभी बात नहीं करना ही ठीक है।"

"क्या अब भी तुम उनकी नजरों में हो?" मार्शल ने पूछा।

"हां। वो मेरे पीछे हैं।"

मार्शल फौरन सामने लगा छोटा-सा लीवर धीमे-धीमे एक तरफ करने लगा। अब स्क्रीन पर जाते उस आदमी के पीछे की तस्वीरें स्क्रीन पर नजर आने लगीं। मार्शल की निगाह स्क्रीन पर टिकी थी।

फिर मार्शल की निगाह नीले चैक की शर्ट पहने एक आदमी पर जा टिकी जो तेजी से आगे बढ़ रहा था।

"तुम्हारा पीछा करने वाला नीली चैक शर्ट में है। मैं उसे भी देख पा रहा हूं।"

"वो अकेला नहीं है। और भी हैं। तीन लोग हैं। उनसे पीछा छूटने पर ही तुमसे बात करूंगा।"

comicsmylife.blogspot.in

"काम हो चुका है न?"

"पूरी तरह। वो इसलिए मेरे पीछे हैं कि अभी उन्हें सिर्फ शक है कि मैंने उसे गोली मारी हो सकती है। वहां सौ के करीब लोग थे। पार्टी चल रही थी सब नीदरलैंड सरकार में ऊंचे ओहदे पर मौजूद थे और मेहमान के तौर पर कई देशों के राजदूत भी मौजूद थे। मैंने वेटर के कपड़े पहने, वहीं हाल में सामान सर्व करते, साईलैंसर लगी रिवॉल्वर से अमेरिका के राजदूत को खत्म कर दिया और कोई न जान सका कि गोली कहां से आई है। उसके बाद मैंने रिवॉल्वर से भी छुटकारा पा लिया। उसे किसी अन्य की कोट की जेब में डाल दिया था। लेकिन वहां मौजूद एक सिक्योरिटी वाले को जाने कैसे मुझ पर शक हो गया। तब मेरी तलाशी ली गई। पूछताछ की गई। परंतु मेरे खिलाफ उन्हें कुछ नहीं मिला। लेकिन उसके बाद मैंने पाया कि मुझ पर नजर रखी जा रही है। मेरा पीछा किया जा रहा है। परंतु अभी तक मैंने पीछा छुड़ाने की चेष्टा नहीं की।"

"उन्हें पीछा करने दो। वो तुम पर सिर्फ शक कर रहे हैं। थोड़ा यकीन होता तो तुम्हें गिरफ्तार कर लिया गया होता।"

"फुर्सत में आने के बाद तुम्हें फोन करूंगा मार्शल।"

"ओके टॉम।" कहने के साथ ही मार्शल ने फोन बंद किया तो सामने ही रोशन स्क्रीन से तस्वीरें गायब हो गईं। हाथ बढ़ाकर मार्शल ने एक स्विच को छेड़ा तो स्क्रीन बंद हो गई। मार्शल कुर्सी छोड़कर उठा और टेबल की तरफ बढ़ गया।

तभी हाथ में दबा मोबाइल बजने लगा।

"हैलो।" मार्शल ने कॉलिंग स्विच दबाकर फोन कान से लगाया।

"मार्शल, मैं कामरान बोल रहा हूं।"

"तुम तो कामनी के पीछे सूरत में थे।" मार्शल कह उठा।

"हां मार्शल। कल कामनी मुम्बई से सूरत पहुंच गई। एक जगह किसी से मिली और उसे अपना सूटकेस दे दिया फिर खुद होटल में जा ठहरी। जिसने सूटकेस लिया उस पर हमारी नजर है। सुनील उस पर नजर रखे हुए है। आज सुबह ग्यारह बजे कामनी होटल से निकली और सूरत के एक बाजार में पहुंचकर दुकानों पर खरीददारी के लिए जाने लगी।"

"वो किसी से मिली? किसी से बात की?"

"दुकानदारों से, सेल्समैनों से वो बात करती है, परंतु हम नहीं जानते कि वो क्या बात कर...।"

"उनमें से कोई भी इकबाल खान सूरी का आदमी हो सकता है।"

"सम्भव है...।"

"वो दुबई से मुम्बई बिना वजह नहीं आई। इकबाल खान सूरी उसे मुम्बई भेजने का खतरा नहीं उठाएगा। अगर उसने ऐसा किया है तो जरूर कोई खास बात रही होगी। हमें वो बात जाननी...।"

"कामनी को पकड़ लें?"

"बेवकूफी मत करो। ऐसा करते ही इकबाल खान सूरी सतर्क हो जाएगा और कामनी भी मुंह नहीं खोलने वाली। तुम उस पर नजर...।"

"नजर तो हम रख रहे हैं, परंतु एक गड़बड़ हो गई है। किसी ने कामनी को शूट करना चाहा। मेरे खयाल में वो आदमी बाबा रतनगढ़िया का है और मुम्बई से ही कामनी के पीछे है। मुम्बई में जो हमला कामनी पर हुआ, वो बाबा रतनगढ़िया के आदमियों ने ही किया था और अब भी उसके आदमी पीछे हैं। कुछ देर पहले बाजार में कामनी को शूट करने की चेष्टा की गई परंतु उसी समय जाने कहां से देवराज चौहान ने बीच में आकर कामनी को बचा लिया।"

"देवराज चौहान?" मार्शल चौंका—"डकैती मास्टर देवराज चौहान?"

"वो ही। 'मैं पाकिस्तानी' के मिशन के दौरान मैंने देवराज चौहान को अच्छी तरह देखा था। अब उसे देखते ही पहचान लिया कि वो देवराज चौहान है। उसने कामनी को बचाया ही नहीं, जबर्दस्ती कार में अपने साथ ले गया। जबकि कामनी उसके साथ जाने को तैयार नहीं थी और बचाओ-बचाओ और हैल्प कहकर चीख रही थी। देवराज चौहान अकेला है। साथ में जगमोहन नहीं है।"

"इसका मतलब देवराज चौहान और कामनी पहले से एक-दूसरे को नहीं जानते?" मार्शल के माथे पर बल नजर आ रहे थे।

"नहीं। मेरे खयाल में ये इत्तफाक ही था कि देवराज चौहान ने उस आदमी को रिवॉल्वर निकालकर, कामनी को शूट करने की कोशिश करते देखा तो उसे बचाने की भावना से बीच में आ गया। दोबारा उस पर हमला न हो, इस भावना से उसे उठाकर ले गया। वो कामनी को समुद्र किनारे बनी एक कॉटेज में ले आया है। हम उस पर नजर रखे हुए हैं। अब हम क्या करें मार्शल?"

"देवराज चौहान के बीच में आ जाने से मामला अजीब-सा हो गया है कामरान।"

"ये भी सम्भव है कि देवराज चौहान पहले ही कामनी को जानता हो।" उधर से कामरान ने कहा।

"ये कभी नहीं हो सकता। देवराज चौहान कैसा इंसान है मैं जानता हूं। वो इकबाल खान सूरी तो क्या उसके आदमियों की परछाईं से भी दूर रहेगा। कामनी से उसका पहले से वास्ता होना सम्भव ही नहीं है। मुझे पूरा यकीन है कि देवराज चौहान कामनी की हकीकत से वाकिफ नहीं है। कामनी की

comicsmylife.blogspot.in

असलियत का उसे जरा भी पता होता तो वो उसे छोड़कर अलग हो गया होता।"

"हम क्या करें, हमें बताओ।"

"तुम लोग देवराज चौहान और कामनी पर नजर रखो और हर तीन घंटे बाद मुझे रिपोर्ट देते रहो।" मार्शल के चेहरे पर सोच के भाव नाच रहे थे—"देवराज चौहान का इस मामले में आ जाना हमारे लिए बुरा नहीं है। मेरा काम देवराज चौहान पूरा करेगा। उसे कामनी के करीब आ लेने दो देवराज चौहान ने उसकी हत्या होने से बचाया। आगे भी हो सकता है, वो ऐसा ही कुछ करे और ये बात मेरे लिए बेहतर है। उन दोनों में जितनी पहचान बढ़ेगी, उतना ही अच्छा होगा।"

"मैं समझा नहीं मार्शल।"

"उन पर नजर रखो और मुझे रिपोर्ट देते रहो।" कहकर मार्शल ने फोन बंद किया। होंठ सिकुड़ चुके थे परंतु आंखों में चमक नजर आ रही थी। टेबल पर रखे इंटरकॉम का रिसीवर उठाकर बटन दबाया और रिसीवर कान से लगा लिया।

दूसरी तरफ बजर बजते सुना फिर सतनाम की आवाज कानों में पड़ी।

"यस मार्शल।"

"मालूम करो कि जगमोहन कहां है।"

"जगमोहन? देवराज चौहान का साथी?"

"हां।"

"कुछ घंटे पहले उसे वरसोवा के इलाके में देखा गया था। वो कार ड्राइव करता कहीं जा रहा था। हमारे एक एजेंट ने उसे देख लिया था और फोन पर मुझे बताया भी।" उधर से सतनाम ने कहा।

"तो जगमोहन मुम्बई में ही है।" मार्शल ने सोच-भरे स्वर में कहा।

"यस मार्शल।"

"कामनी के मामले में देवराज चौहान ने दखल दे दिया है।" मार्शल बोला।

"नहीं मार्शल।" सतनाम की चौंकी आवाज आई—"ये कैसे हो...।"

"कामरान से बात कर लेना। ये हो चुका है।"

"देवराज चौहान से मिलने आई थी कामनी?"

"नहीं। कामरान का कहना है कि कामनी पर गोली चलने वाली थी तब देवराज चौहान के बीच में आकर दखल दिया और कामनी को अपने साथ ले गया। इस समय वे दोनों सूरत में समुद्र किनारे एक कॉटेज में मौजूद हैं।"

"क्या देवराज चौहान को पता नहीं है कि वो इकबाल खान सूरी की प्रेमिका और उसके सुरक्षा इंतजामों के देखने वाली कामनी है।"

"तुम ही इस बात का जवाब दो सतनाम।"

"मेरे खयाल में देवराज चौहान नहीं जानता। अगर जानता होता तो कामनी के पास फटकता भी नहीं।

"मेरा भी ये ही खयाल है। महज कामनी को बचाने की खातिर वो इस मामले में आ गया है। मुझे अब अपने इस काम की योजना बदलनी पड़ेगी हमारा ये काम अब देवराज चौहान करेगा। इस काम में कामनी की पहचान का उसे फायदा जरूर मिलेगा।"

"इस काम में देवराज चौहान?" उधर से सतनाम अजीब-से स्वर में बोला—"क्या वो हमारा काम करेगा?"

"जरूर करेगा। उसे करना ही पड़ेगा।" मार्शल दृढ़ स्वर में कह उठा

▭ ▭

"इस तरह एक सौ दस करोड़ का माल हमारा हो जाएगा।" कार ड्राइव करते ओंकारनाथ ने कहा।

बगल में बैठा देवराज चौहान कार की खिड़की से बाहर देखता रहा। सड़क पर हैवी ट्रैफिक था। इंजनों का और हॉर्न का शोर ही हर तरफ से सुनाई दे रहा था। दिन के ग्यारह बज रहे थे। चढ़ते सूर्य की गर्मी भी अपना असर दिखाने लगी थी।

पैंतीस वर्षीय ओंकारनाथ ने देवराज चौहान पर नजर मारते हुए कहा।

"तुमने मेरी योजना सुनकर कोई जवाब नहीं दिया। मैंने सही योजना बनाई है कि एक सौ दस करोड़ तक हम कैसे आसानी से पहुंच सकते हैं और उसे ले जा सकते हैं। अगर तुम्हें कहीं कमी लगी है तो कहो।"

"मेरी कार तक चलो।"

"मेरी प्लानिंग इतनी बुरी तो नहीं कि तुम्हें अपनी कार याद आने लगे" ओंकारनाथ कह उठा।

"मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूं कि मेरे पास समय कम है। कहीं पर जाना है मैंने।"

"मैं आधे घंटे से तुम्हें योजना बता रहा हूं, सुनने के बाद उसके बारे में कुछ तो कहो।"

"तुम्हारी प्लानिंग में मुझे कोई दम नहीं लगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"सच में?" ओंकारनाथ ने गहरी सांस ली।

"ये बच्चों वाली योजना है और जिस तरह तुम तीनों गार्डों को शूट करने की सोच रहे हो, वो तो और भी घटिया बात हो गई। मैं किसी की हत्या करके दौलत पर हाथ नहीं मारता।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

ओंकारनाथ कार आगे बढ़ाए जा रहा था।

"ठीक है।" ओंकारनाथ ने गम्भीर स्वर में कहा—"तुम योजना बनाओ।"

comicsmylife.blogspot.in

"मैं?"

"हां। सब कुछ तुम्हें बता दिया है कि कहां पर हाथ मारना है और वहां क्या-क्या इंतजाम है। तुम ही कोई बढ़िया-सी योजना बनाओ कि एक सौ दस करोड़ पर हाथ साफ किया जा सके।"

"मैं अपनी योजना बनाने नहीं, तुम्हारी सुनने आया था। सरबत सिंह ने मुझे मजबूर किया कि एक बार तुम्हारी बात सुन लूं। मैंने तुम्हारी बात सुन ली, परंतु मेरा वक्त ही खराब हुआ।"

"इतनी भी बुरी नहीं है मेरी योजना।"

देवराज चौहान चुप रहा।

ओंकारनाथ ने एक जगह सड़क किनारे कार रोकी। बाईं तरफ फुटपाथ के पार कारों की लम्बी-चौड़ी पार्किंग नजर आ रही थी। वहीं पर ही देवराज चौहान की कार खड़ी थी।

देवराज चौहान कार का दरवाजा खोलकर बाहर निकला।

"तुम सच कह रहे हो कि मेरी योजना में कोई दम नहीं।"

"हां।" देवराज चौहान ने दरवाजा बंद किया।

"अगर मैं तुम्हें इसी योजना पर चलकर एक सौ दस करोड़ पर सफलता से हाथ मार कर दिखा दूं तो तुम क्या कहोगे?"

"मुझे दिखाने के वास्ते कुछ मत करना। मरोगे। जो ठीक लगे वो ही करना। अगर तुमने मुझे बताई इसी योजना पर काम किया तो तुम्हें भगवान भी नहीं बचा सकेगा।" कहने के साथ ही देवराज चौहान कार पार्किंग की तरफ बढ़ गया।

हर तरफ कारों की कतारें नजर आ रही थीं। पार्किंग वाले लड़के वहां बिखरे अपनी-अपनी जगह पर ड्यूटी दे रहे थे। एक तरफ छाया के लिए प्लास्टिक शीट का छप्पर डालकर नीचे बैंच डाल रखा था। कभी कोई कार आ रही थी तो कोई जा रही थी। देवराज चौहान की कार सड़क की तरफ की पहली कतार में थी। वहां से सड़क सामने ही स्पष्ट नजर आ रही थी। देवराज चौहान अपने कार में बैठा। कार स्टार्ट की फिर कार का ए.सी. ऑन किया।

उसी पल पार्किंग में तेज रफ्तार से आती एक कार उसके बगल में आ रुकी।

देवराज चौहान की निगाह बगल में आ खड़ी हुई कार की तरफ उठी

उस कार में शीशे काले थे। परंतु आगे वाली सीटों पर दो लोगों के बैठे होने का आभास मिल रहा था। देवराज चौहान को उनके हाथ में दबी गन की झलक मिली तो उसके होंठ सिकुड़े। फिर खिड़की का शीशा नीचे होते देखा। तीस वर्ष का व्यक्ति दिखा। उसी ने गन थाम रखी थी। स्टेयरिंग सीट

पर बीस-बाईस वर्ष का युवक बैठा था। कार में धीमी आवाज में स्टीरियो चल रहा था। स्टेयरिंग सीट पर बैठा युवक स्टीरियो के म्यूजिक में मस्त था। जैसे उसे अपने साथी की हरकतों की परवाह ही न हो। दूसरे ने शीशा नीचे करके गन की नाल खिड़की से बाहर सामने सड़क की तरफ कर दी।

देवराज चौहान ने उस तरफ देखा।

सामने सड़क से दोनों तरफ से आता जाता ट्रैफिक था।

देवराज चौहान समझ नहीं पाया कि वो किसका निशाना लेना चाहता है। तभी उसकी निगाह बगल में खड़ी कार में बैठे देवराज चौहान पर पड़ी। दोनों की नजरें मिलीं।

गन वाले के चेहरे पर कठोरता आ गई।

देवराज चौहान ने अपनी निगाह घुमा ली।

गन वाला कुछ पल उसे घूरता रहा फिर गन पर निगाह टिका ली। स्टेयरिंग सीट पर बैठा युवक स्टीरियो से उठते म्यूजिक पर, स्टेयरिंग पर उंगलियों की थाप दे रहा था। देवराज चौहान की निगाह सामने सड़क पर आते-जाते वाहनों पर थी। वो समझने की चेष्टा कर रहा था आखिर ये चलती कारों में से अपने शिकार का निशाना कैसे ले सकेंगे। यूं ही उत्सुकता के नाते वो ठहर गया था। जबकि ऐसे नाजुक वक्त में उसे यहां नहीं रुकना चाहिए था। सावधानी के तौर पर उसने रिवॉल्वर निकालकर अपनी गोद में रख ली कि गन वाला गुस्से में गन का मुंह उसकी तरफ भी घुमा सकता है।

देवराज चौहान की निगाह सड़क पर टिकी रही।

इस दौरान एक-दो पल के लिए आती-जाती कारों में से ठीक सड़क पार 'बेनूर ज्वैलर्स' का बोर्ड भी दिखाई दे जाता था। उसके शीशे का दरवाजा। वहां बैठा गार्ड। शीशे का काफी बड़ा शो-केस।

एकाएक देवराज चौहान के माथे पर बल पड़े।

वो सतर्क हो उठा।

मस्तिष्क में उसी पल ये विचार कौंधा कि ये सड़क पर जाते ट्रैफिक में से किसी पर नहीं बल्कि सड़क पार बेनूर ज्वैलर्स पर किसी का निशाना लेने की चेष्टा में है।

देवराज चौहान ने गर्दन घुमाकर, बगल में खड़ी कार की खिड़की पर देखा।

वो ही पोजीशन थी।

खिड़की से निकली गन। गन पर आंख लगाए तीस वर्ष का वो व्यक्ति। गर्मी में उसके माथे और गालों पर पसीने की लकीरें बह रही थीं। देवराज चौहान ने उस गन की नाल का पीछा किया।

गन की नाल सीधा बेनूर ज्वैलर्स पर थी।

comicsmylife.blogspot.in

"मुझे क्या।" देवराज चौहान ने इस विचार के साथ सिर को झटक दिया और स्टार्ट कार की गियर डाली।

तभी गन का रुख उसकी तरफ हो गया।

देवराज चौहान चौंका।

उस व्यक्ति ने गन से इशारा किया अपना शीशा नीचे करे

देवराज चौहान ने आधा शीशा नीचे किया।

"तुम यहीं रहोगे, जब तक हमारा काम खत्म नहीं हो जाता।" गन वाला कह उठा।

"क्यों?" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"तुम यहां से जाकर, पुलिस को खबर कर सकते हो कि यहां कुछ होने वाला है।"

"मैं ऐसा क्यों करूंगा?"

"हीरो बनने के लिए।"

"मैं पुलिस के मामले में नहीं आना चाहता।"

"ये तो अच्छी बात है। तुम यहीं रहो। पहले हम यहां से जाएंगे फिर तुम जाना। बाद में पुलिस को मेरे हुलिए के बारे में कुछ बताया तो तुम्हें भी शूट कर दूंगा।" वो बोला।

दूसरा अभी तक म्यूजिक सुनने में व्यस्त था।

"हिलना मत। इसी तरह कार में रहो।"

देवराज चौहान ने गियर पर न्यूटल पर ले आया। इंजन चल रहा था। ए.सी. ऑन था।

"कार का इंजन बंद कर दो।" गन वाले ने कहा।

"तो ए.सी. भी बंद हो जाएगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"तुम कार में बैठे क्या कर रहे थे।" उसने गन को पुनः सामने की तरफ कर लिया था और आंख गन पर लगा दी।

"अभी कार में आकर बैठा ही था। तभी तुम आ गए।"

"ठीक है। इसी तरह बैठे रहो।"

देवराज चौहान ने सड़क पार जाती कारों के बीच में से बेनूर ज्वैलर्स पर नजर मारी।

"तुम क्या करना चाहते हो?" देवराज चौहान ने पूछा।

"देख नहीं रहे।"

"तुम सड़क पर जाती कारों में से किसी पर गोली चलाने वाले हो

"चुप रहो।"

देवराज चौहान चुप कर गया। नजरें सड़क पार बेनूर ज्वैलर्स पर टिका दी।

इसी पल बेनूर ज्वैलर्स के दरबान ने शीशे का दरवाजा खोला और भीतर से करीब अट्ठाईस वर्ष की बेहद खूबसूरत युवती बाहर निकली। उसने जींस की पैंट और स्कीवी पहन रखी थी। 5-5 फुट हाइट थी। आंखों पर काला चश्मा लगा रखा था। शो-रूम की तीन सीढ़ी उतरकर वो आगे बढ़ गई।

तभी देवराज चौहान के कानों में फायरिंग का तेज धमाका गूंजा।

गन वाले ने गोली चला दी थी।

देवराज चौहान समझ गया कि निशाना वो युवती ही है।

परंतु गोली उस तक न पहुंच सकी और सड़क पर जाती कार में जा धंसी।

'सत्यानाश।' उसने गन वाले को बड़बड़ाते देखा। गन फौरन खिड़की से भीतर कर ली।

तभी कार स्टार्ट हुई और बैक होने के पश्चात तेजी से बाहर निकलने वाले रास्ते पर दौड़ गई।

देवराज चौहान ने गहरी सांस ली और सड़क पार बेनूर ज्वैलर्स की तरफ देखा।

अब वो युवती वहां नहीं दिखी।

देवराज चौहान ने भी कार को बैक किया और पार्किंग से बाहर निकलने वाले रास्ते की तरफ बढ़ गया। उसकी सोचों में वो गन वाला, उसका साथी जो म्यूजिक सुनने में व्यस्त था या वो लड़की घूम रही थी। वो लड़की की हत्या करना चाहते थे। परंतु उसे लड़की ऐसी न लगी कि हत्या हो जाने के काबिल लगे। वो साधारण-सी खूबसूरत-सी आम उन युवतियों की तरह लगी, जो कि कदम-कदम पर नजर आ जाती हैं।

देवराज चौहान ने पार्किंग के पैसे दिए और कार सड़क पर ले आया। दूसरी वाली कार कहीं भी नजर नहीं आई थी। शायद वो तेजी से जा चुकी थी। वो दोबारा फिर उस युवती को शूट करने की चेष्टा करेंगे। देवराज चौहान ने सोचा कि गन वालों का प्लान गलत था। उन्हें सड़क पार से निशाना नहीं लेना चाहिए था। कोई भी कार बीच में आ सकती थी। ऐसा ही हुआ। उन्हें बेनूर ज्वैलर्स के बाहर ही कार में बैठकर उसके बाहर आने का इंतजार करना चाहिए था। इस तरह उसे शूट करने में आसानी होती और गोली चलाकर वहां से निकला भी जा सकता था।

सड़क पर कुछ आगे जाते ही देवराज चौहान ने मार्किट की तरफ नजरें घुमाई तो उसी पल उसकी आंखें सिकुड़ गईं। वो युवती दुकानों के सामने से, दुकानों को देखती आगे बढ़ रही थी। कंधे पर लेडीज पर्स लटका हुआ था। वो शॉपिंग करने में व्यस्त थी। मार्किट से अपने मन पसंद की चीज खोज रही थी। इस बात से पूरी तरह अंजान थी कि उसकी जान भारी खतरे में है। कभी भी, कहीं से भी गोली आकर उसे लग सकती है।

comicsmylife.blogspot.in

देवराज चौहान ने कुछ उलझन महसूस की।

युवती के हाव-भाव से ऐसा न लगा कि वो किसी प्रकार की गलत युवती है। अगर वो गलत होती, कोई उलटा काम किया होता तो इस तरह बेखौफ-सी बाजार में न घूम रही होती।

तो वो लोग इसे क्यों मारना चाहते हैं?

अगले ही पल देवराज चौहान चौंका।

वो वाली ही कार उसे सड़क के उस पार दिखी। वो सड़क किनारे खड़ी थी और युवती उससे उलटी दिशा में कुछ आगे जा रही थी। मतलब कि वो अभी भी उसे शूट करने की ताक में है।

युवती को बचाना चाहिए।

वो गलत नहीं लगती।

उसे जरूर पता होगा कि कोई उसकी जान क्यों लेना चाहता है।

एक बार युवती को सतर्क कर देना चाहिए।

इस विचार के साथ ही देवराज चौहान ने तेजी से कार आगे बढ़ा दी।

कुछ आगे जाकर 'कट' था।

वो कार भी वहीं से मुड़ी होगी।

देवराज चौहान ने कार को वहां से वापस मोड़ा और दुकानों की तरफ किनारे पर लाया और सड़क किनारे कार रोक कर बाहर निकला और आगे बढ़ गया फुटपाथ पर। युवती इधर से ही आ रही थी। देवराज चौहान की निगाह उस युवती को देखने की अपेक्षा कर रही थी आगे बढ़ते हुए।

परंतु कई कदम आगे जाने पर भी युवती नहीं दिखी तो वो ठिठका। फौरन सड़क के किनारे की तरफ देखा तो उस कार को बीस कदम आगे खड़े पाया। मतलब कि युवती कहीं पास ही थी। देवराज चौहान सतर्कता से वहां बने शो-रूम के भीतर बाहर से ही देखने लगा।

लेकिन तुरंत ही ठिठक गया।

एक शो-रूम के बाहर वो ही गन वाला टहल रहा था। उसका दायां हाथ जेब के भीतर था। स्पष्ट था कि दायां हाथ जेब में पड़ी रिवॉल्वर पर टिका हुआ था कि युवती सामने वाले शो-रूम से बाहर आये और वो उसे शूट करे। उसकी नजर कहां थी, उसने पहचान लिया।

देवराज चौहान आगे बढ़ा शो-रूम की तरफ। पास पहुंचा।

दरबान ने तुरंत शीशे वाला दरवाजा खोला।

देवराज चौहान भीतर प्रवेश कर गया और ठिठक कर उस बड़े शो-रूम में नजरें घुमाईं।

वो युवती नजर आ गई।

जींस की पैंट और पीली स्कीवी।

ये साड़ियों का शो-रूम था और वो अपने लिए साड़ी पसंद कर रही थी दो सेल्सगर्ल उसे साड़ी दिखा रही थीं। देवराज चौहान समझ चुका था कि ये शरीफ-सी युवती भारी मुसीबत में है। ये ज्वैलरी देख रही है। साड़ी खरीद रही है और बाहर उसकी हत्या के लिए वो आदमी मंडरा रहा है।

तभी एक सेल्सगर्ल युवती उसके पास पहुंचकर, मुस्कराकर बोली।

"मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूं सर?"

"मैं अपनी पत्नी को ढूंढ रहा था।" देवराज चौहान ने कहा—"उसे साड़ी खरीदनी थी और यहीं मिलना था। लगता है अभी तक वो पहुंची नहीं। मैं फिर आऊंगा।"

"आप यहां बैठकर मैडम के आने का इंतजार कर सकते हैं। या तब तक मैडम के लिए साड़ियां पसंद कर।"

"मैं फिर आऊंगा।" देवराज चौहान ने मुस्कराकर कहा और शो-रूम से बाहर निकल आया।

वो आदमी अभी भी एक तरफ जेब में हाथ डाले खड़ा था।

देवराज चौहान की उससे नजरें मिलीं।

उस आदमी के चेहरे पर कठोरता उभरी।

देवराज चौहान ने कार की तरफ देखा। स्टेयरिंग सीट पर बैठा युवक स्टेयरिंग पर उंगलियों से तबला-सा बजा रहा था। देवराज चौहान उस व्यक्ति की तरफ बढ़ गया।

"हैलो।" देवराज चौहान पास पहुंचकर बोला—"तुम भी यहां हो।"

"दफा हो जाओ।" वो गुर्रा उठा।

"मैं जानता हूं तुम किसकी जान लेने के चक्कर में हो। वो नीली जींस और पीली स्कीवी वाली है न?"

उसने कठोर निगाहों से देवराज चौहान को देखा।

"तुम भी मरना चाहते हो?" वो बोला।

"नहीं।"

"दोबारा मुझे नजर आए तो गोली मार दूंगा।"

"क्यों मारना चाहते हो उसे। वो तो मुझे शरीफ-सी लगती है।" देवराज चौहान ने कहा।

"तुम खिसक लो।"

"क्यों पड़े हो उसके पीछे।"

दोनों ने एक-दूसरे की आंखों में देखा फिर वो कह उठा।

"उसे मारने के मुझे दस लाख मिले हैं?"

"दस लाख? मिल गये या मिलने वाले हैं?"

"मिल गये हैं। दफा हो जाओ तुम यहां से।" वो दांत किटकिटा उ ।

comicsmylife.blogspot.in

"किसने दिए दस लाख?"
"हरामजादे मरना चाहता है तू। भाग जा यहां से।" वो गुर्रा उठा।
"तू मुझे नहीं मार सकता।"
"क्यों?" क्रोध में उसका चेहरा तपने लगा था।
"इस वक्त तू एक ही गोली चला सकता है। मेरे पर चला ले या उस पर। एक फायर करने पर शोर इतना होगा कि दूसरी गोली चलाने से पहले ही तुझे भागना पड़ेगा। तूने रिवॉल्वर पर साईलैंसर क्यों नहीं लगाया?"
"तुझे साईलैंसर की क्या जानकारी?"
"तेरे को गन पर भी साईलैंसर लगा लेना चाहिए था। गन पकड़ने के ढंग से तो तू मुझे पुराना खिलाड़ी लगा, परंतु अनाड़ीपन अभी भी तेरे में झलकता है कि भरे बाजार में गोली चलाने वाला है और साईलैंसर नहीं...।"
"तू कौन है?"
"मैं पुलिस वाला हूं।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।
"पु-पुलिस वाला?" वो हड़बड़ाया।
देवराज चौहान उसे देखता रहा।
वो नर्वस-सा दिखने लगा था।
"अब क्या इरादा है तेरा?" देवराज चौहान बोला—"गिरफ्तार करूं तुझे?"
"न-नहीं।" वो सकपका-सा उठा।
"अब तो छोड़ रहा हूं, दोबारा दिखा तो नहीं छोडूंगा। फूट ले यहां से
उसने सूखे होंठों पर जीभ फेरी। हिचकिचाया।
"सुना नहीं फूट ले।"
"मुझे काम करने दे। तेरे को एक लाख रुपया दूंगा।" वो धीमे स्वर में कह उठा।
"तो बहुत जरूरी है ये काम करना।" देवराज चौहान बोला।
"उधर कार में रखा है पैसा। लाख तुझे अभी दे दूंगा। पहले मुझे काम कर लेने दे। वो भीतर क्या कर रही है?"
"साड़ी खरीद रही है।" देवराज चौहान बोला—"लफड़ा क्या है?"
"लफड़ा?"
"कौन इस लड़की को खत्म करना चाहता...।"
"मुझे नहीं पता।"
"कैसे नहीं पता। तूने तो कहा कि दस लाख दिए...।"
"मैं नहीं जानता वो कौन है। फोन आया, बात हो गई। कोई मुझे दस लाख दे गया। लड़की की तस्वीर भी और बता गया कि लड़की इस वक्त कहां पर मौजूद है।"

"हूं।"
"अब तुम...।"
"कहां रहती है लड़की? नाम क्या है उसका?"
"तुम क्यों पूछ रहे हो?"
"आदत है पुलिस वाला जो ठहरा। मरने के बाद लड़की की लाश को, उसके घर जो पहुंचाना है।"
"तू अपना लाख ले और चला जा। ये लफड़ा भूल जा।"
"लाख गाड़ी में रखा है।"
"हां। तू गाड़ी के पास पहुंच। मैं इधर काम निबटाकर...।"
"दूध पीते बच्चे को क्यों साथ में रखा है, जो सिर्फ म्यूजिक सुनने का काम करता है। किसी मौके पर तेरे को सहायता की जरूरत पड़ गई तो क्या होगा। वो तबला ही बजाता रहेगा।"
उसने देवराज चौहान को घूरा।
"पुलिस वाले को ऐसे मत देख। बुरा भुगतेगा।" देवराज चौहान एकाएक तीखे स्वर में बोला।
वो संभल गया।
"तेरा नाम क्या है?" देवराज चौहान ने पूछा।
"नहीं बताता।"
"तू मुझे कुछ भी नहीं बता...।"
"देख तू अपना लाख रुपया ले और चला जा। मुझे मेरा काम करने दे।"
"दे—मैं जाऊं।"
"तू कार के पास चल। मैं गोली मार के आता हूं।" उसने हाथ अपनी जेब में डाले कहा।
"गोली से शोर होगा। तेरे साथ मैं भी फंस...।"
"कुछ नहीं होगा। हम कार में बैठकर भाग जाएंगे और...।"
"जेब में रिवॉल्वर पर हाथ है।"
"हां।"
"कौन-सी रिवॉल्वर है?"
"जर्मन मेक की है। ढाई लाख की ली थी। इससे चार को उड़ा चुका हूं।"
"मतलब कि वो लड़की पांचवा शिकार है।"
"वो आ गई।" उसके होंठों से निकला।
देवराज चौहान की निगाह तुरंत शो-रूम के शीशे के दरवाजे की तरफ घूमी।
वो बाहर निकल रही थी। हाथ में दुकान का लिफाफा था। मतलब कि साड़ी खरीद लाई थी।

comicsmylife.blogspot.in

देवराज चौहान ने फौरन उस व्यक्ति को देखा।
उसी पल उसने रिवॉल्वर निकाली थी।
देवराज चौहान ने फौरन हाथ का घूंसा, उसके हाथ पर मारा। हमला अचानक हुआ था। रिवॉल्वर छिटककर फुटपाथ के बरामदे में जा गिरी तेज आवाज उभरी। लोगों का आना-जाना रुका।
युवती का ध्यान भी इस तरफ आकर्षित हुआ। वो ठिठक गई।
वो आदमी नीचे गिरी रिवॉल्वर पर झपटने को हुआ। देवराज चौहान ने जोरदार ठोकर उसके कुल्हों पर मारी। वो धड़ाम से लुढ़कता हुआ एक बूढ़ी औरत की टांगों से जा टकराया।
औरत चीख उठी।
देवराज चौहान ने आगे बढ़कर नीचे पड़ी रिवॉल्वर को जोरों की ठोकर मारी।
रिवॉल्वर दूर सरकती चली गई। देवराज चौहान फौरन उस युवती के पास पहुंचा जो हैरानी से ये सब देख रही थी।
"तुम्हारी जान खतरे में है।" देवराज चौहान ने उसकी कलाई पकड़ी—"ये आदमी तुम्हें मारने आया है। जल्दी से मेरे साथ चलो।"
युवती घबरा उठी।
"बचाओ। हैल्प।" इसके साथ ही उसने देवराज चौहान के हाथ से अपनी कलाई छुड़ा ली।
"बेवकूफी मत करो। वो तुम्हें मारने के दस लाख ले चुका है। वो...।"
"हैल्प-हैल्प।" युवती गला फाड़कर चीखी—"बचाओ मुझे, ये आदमी मेरा अपहरण कर रहा...।"
असहाय-सा देवराज चौहान युवती को देखने लगा।
युवती चीखे जा रही थी।
आस-पास के लोग स्तब्ध से खड़े थे।
किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था।
तब तक नीचे गिरा वो आदमी उठ चुका था और और मामला खराब होता देखकर वो चंद कदम की दूरी पर खड़ी अपनी कार की तरफ दौड़ा और देखते-ही-देखते कार में जा बैठा। कार तेजी से दौड़ गई।
युवती एकाएक बदहवास-सी फुटपाथ पर दौड़ने लगी। पर्स और साड़ी का लिफाफा उसने थाम रखा था। देवराज चौहान उसके पीछे दौड़ता चिल्लाया।
"बेवकूफ, होश में आओ। वो कहीं गए नहीं हैं, पास ही में हैं। तुम खतरे में...।"
"चले जाओ मेरे पीछे से।" युवती भागते हुए चीखी—"बचाओ-बचाओ मुझे।"

देवराज चौहान के दांत भिंच गए।
पास पहुंचकर उसने युवती की बांह पकड़ ली।
"छोड़ो मुझे। छोड़ो—पुलिस—बचाओ...।"
"तुम्हारी जान खतरे में है। मैं तुम्हें बचाना चाहता हूं।"
"तुम बदमाश हो जो मुझे...।"
"मैंने तुम्हें उस आदमी से बचाया है। वो तुम्हें गोली मारने वाला था। अब तक तुम मर चुकी होती। इस वक्त भी वो कहीं पास ही में हैं और तुम्हें मारे बिना चैन नहीं लेंगे। मेरी बात को समझो और मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें बचा सकता हूं। तुम्हें छोड़कर चला गया तो दस मिनट में तुम मरी पड़ी होगी।"
"बचाओ। बचाओ।" युवती गला फाड़ कर चीख उठी।
लोग इकट्ठे होने लगे। देवराज चौहान ने उसकी बांह नहीं छोड़ी थी और दस कदम आगे उसकी कार खड़ी थी। देवराज चौहान समझ गया कि यहां रुका तो हालात उसके खिलाफ हो जाएंगे। अकेले या फिर युवती के साथ, जैसे भी हो, उसे यहां से चले जाना चाहिए। एकाएक देवराज चौहान ने युवती की बांह को झटका दिया और फौरन झुककर उसे कंधे पर उठा लिया और तेजी से अपनी कार की तरफ बढ़ा।
युवती चीखने-चिल्लाने लगी।
छूटने के लिए हाथ-पांव मारने लगी।
कार के पास पहुंचकर देवराज चौहान ने पीछे का दरवाजा खोला और किसी प्रकार युवती को कार के भीतर ठूंसा। युवती उसी पल बाहर निकलने को हुई कि देवराज चौहान ने हाथ के अंगूठे से उसकी कनपटी को दबा दिया। उसी पल युवती बेहोश होकर कार की पीछे वाली सीट पर लुढ़कती चली गई।
देवराज चौहान तुरंत स्टेयरिंग सीट पर बैठा और कार स्टार्ट की।
"क्यों साहब?" एक पचास वर्ष का आदमी पास आकर बोला—"लड़की को क्यों उठाकर ले जा रहे...।"
देवराज चौहान ने कार दौड़ा दी।

▭ ▭

मुम्बई!
जगमोहन कुछ देर पहले ही बंगले पर पहुंचा था। दोपहर के दो बज रहे थे। नहा-धोकर घर के कपड़े पहने और सोहनलाल को फोन किया। बात हुई।
"क्या कर रहा है?" जगमोहन ने पूछा।
"नानिया की सेवा करने में लगा हूं।" उधर से सोहनलाल ने कहा।
"मतलब?"

comicsmylife.blogspot.in

"पंद्रह दिन बाद घर लौटा हूं। किसी काम के सिलसिले में जयपुर में था। वापसी पर नानिया ने खूब खरी-खोटी सुनाई कि इतने दिन गायब रहा। अब जाकर मामला ठंडा हुआ है। घर में राशन-पानी खत्म है, नानिया के साथ बाजार जा रहा हूं सामान लेने। शादी की है तो काम भी करने पड़ेंगे। तू शादी क्यों नहीं कर लेता?"

"ताकि मेरा हाल भी तेरी तरह हो जाए।" जगमोहन मुस्कराया।

"मेरे हाल में क्या बुराई है?" उधर से सोहनलाल ने गहरी सांस लेकर कहा।

"मैं ऐसे ही बढ़िया हूं।"

"बता, फोन कैसे किया?"

"सोचा था लंच एक साथ करते हैं। देवराज चौहान मुम्बई से बाहर है फुर्सत है, पर तू तो फंसा पड़ा है।"

"फंसा समझ, कुछ भी समझ, पर अभी मैं आ नहीं सकता।"

जगमोहन ने फोन बंद कर दिया। चेहरे पर मुस्कान फैली थी। फिर वो देखने लगा कि लंच के लिए, खाने के लिए किचन या फ्रिज में क्या-क्या सामान पड़ा है। जो भी खाने का सामान पड़ा था, उसमें से कुछ खाकर अपना काम चलाया और कॉफी बनाकर कमरे में पड़ी कुर्सी पर आ बैठा घूंट भरा।

तभी कॉलबेल बजी।

सोहनलाल आ गया होगा। ये सोच कर कॉफी का प्याला एक तरफ रखा और कमरे से निकलकर हॉल में पहुंचा और दरवाजे की तरफ बढ़ गया। दरवाजा खोला...।

"तुम?" जगमोहन चौंका—"तुम फिर...?" उसके होंठों से बरबस ही निकला।

सामने मार्शल खड़ा था।

भारतीय जासूसी संस्था का चीफ मार्शल, जो कि उसकी निगाहों खतरनाक इंसान था।

जगमोहन ठगा-सा उसे देखता रह गया।

मार्शल के गम्भीर चेहरे पर मुस्कान उभरी। वो कह उठा।

"जाने-अंजाने में हमारी मुलाकातें बराबर हो रही हैं। मैंने नहीं सोचा था कि इस बार मुलाकात इतनी जल्दी होगी।"

"अभी तो तुम्हारा काम करके हम फारिग हुए हैं। मुसीबत भरा बुरा और खतरनाक काम।" (विस्तार से जानने के लिए पढ़िए **अनिल मोहन** का **राजा पॉकेट बुक्स** से पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'मैं पाकिस्तानी'**)। मैं तुम्हारा काम करके कभी खुश नहीं हुआ।"

"तुमने और देवराज चौहान ने दो बार मेरे लिए काम किया।"

"दोनों ही बार मौत की सवारी की।" जगमोहन के चेहरे पर तीखे भाव

उभरने लगे। पहली बार मार्शल के लिए **'डैथ वारंट'** और **'शिकारी'** में काम किया था।

मार्शल मुस्कराया।

"दोनों बार तुमने हमें मौत के मुंह में फेंका।"

"मेरा ऐसा इरादा नहीं था। परंतु तुम लोग ही ऐसे हालातों में फंस गए। डेथ वारंट, में तो तुम ही चूक गए थे और काम को भूलकर फ्रोजा से प्यार करने लगे थे। ये ही चूक तुमसे हुई और मामला गड़बड़ हो गया था। फ्रोजा तुमसे खेल, खेलती रही थी।"

"मैं पुरानी बातें नहीं करना चाहता।" जगमोहन की आंखों के सामने फ्रोजा का चेहरा नाच उठा।

"मैं भी नहीं करना चाहता।"

"अब क्यों आए हो?" जगमोहन के चेहरे पर सख्ती उभर

"काम के लिए।"

"तुम्हारा काम हम कभी भी नहीं करेंगे।"

"भूल गए तुम कि इस बार मैंने तुम्हें ज्यादा कीमत देने का वादा...।"

"बेहतर होगा तुम जाओ यहां से।" जगमोहन ने दरवाजा बंद करने की कोशिश की।

"मुझे भीतर तो आने दो।"

"नहीं। तुम मुसीबत का दूसरा रूप हो। मैं तुम्हारी छाया से भी दूर रहना चाहता हूं।"

मार्शल मुस्कराकर जगमोहन को देखने लगा।

"तुम हमारे पास मत आया करो। तुम्हारे अपने पास ढेरों काबिल एजेंट हैं। फिर हमारे पास क्यों...।"

"इस बार तो तुम लोगों ने ही मुझे आने को मजबूर किया।"

"हमने?" जगमोहन की आंखें सिकुड़ीं।

"देवराज चौहान ने मेरे काम में दखल दे दिया है।" मार्शल बोला।

जगमोहन चौंका।

"इसी वजह से मुझे आना पड़ा। मैं जानता हूं कि जगमोहन से तो मुझे मिलना ही पड़ेगा। बात तो तुम्हीं से तय करनी पड़ती है कि काम की कीमत क्या होगी। सोचा इस बार बात पहले से ही तय कर लूं।"

"देवराज चौहान तुम्हारे काम में दखल नहीं दे सकता।" जगमोहन कह उठा।

"वो सूरत में है।" मार्शल ने जैसे जगमोहन को याद कराया।

"हां।" जगमोहन सतर्क हुआ।

"मुझे भीतर आने दो।" मार्शल ने गम्भीर स्वर में कहा।

comicsmylife.blogspot.in

दोनों की निगाहें मिलीं। जगमोहन पीछे हट गया।

मार्शल भीतर आया तो जगमोहन दरवाजा बंद करते हुए कह उठा।

"हम जल्दी ही ये बंगला खाली कर देंगे। तब तुम हमें तलाश नहीं कर सकोगे।"

"मुझे मालूम है तुम लोगों ने तीन बंगले देखे हैं। उनमें से किसी एक को खरीदने की सोच रहे...।"

"तुम्हें कैसे पता?"

"मुझे सब पता रहता है।"

जगमोहन, मार्शल को घूरने लगा।

मार्शल आगे बढ़ा और हॉल में मौजूद सोफे पर जा बैठा

जगमोहन वहां पहुंचकर सामने बैठता कह उठा।

"तुम सूरत की क्या बात कर...।"

"देवराज चौहान सूरत शहर में है। अब से साढ़े तीन घंटे पहले उसने मेरे काम में दखल दे दिया है।"

"अनजाने में उससे ऐसा हो गया होगा।"

"यकीनन। अनजाने में ही ऐसा हुआ। परंतु जब से मेरे पास ये खबर पहुंची, मैंने कुछ और ही योजना बना ली।"

"तुम्हारी योजना की मैं परवाह नहीं करता। अब हम तुम्हारे लिए कोई काम नहीं करने वाले।" जगमोहन तीखे स्वर में कह उठा—"कैसे दखल दिया देवराज चौहान ने तुम्हारे काम में?"

"देवराज चौहान का वास्ता एक लड़की से पड़ गया है सूरत में। मेरे एजेंट उस पर नजर रखे हुए थे। उस लड़की की जान को खतरा था, कुछ लोग उसे मार देना चाहते थे। ये बात देवराज चौहान ने पहचान ली और उसे बचाने में लग गया। आखिरी खबर के मुताबिक देवराज चौहान उस लड़की को जबर्दस्ती अपने साथ ले गया है।"

"जबर्दस्ती?"

"हां। ये ही खबर मिली कि जो कुछ हुआ उससे लड़की बौखला गई वो भाग जाना चाहती थी परंतु आसपास मंडराते हत्यारों की वजह से देवराज चौहान उसे जबर्दस्ती अपने साथ ले गया।" मार्शल गम्भीर स्वर में बोला।

"तुम्हारे आदमी भी तो वहां मौजूद थे, वो लड़की को बचा सकते...।"

"मेरे आदमी उस लड़की पर नजर रख रहे थे। अचानक जिस तरह देवराज चौहान ने मामले में दखल दिया, वो भी उससे उलझ कर रह गए थे। सब कुछ बहुत जल्दी में हुआ था। मेरे एजेंटो को भी तब ही पता चला कि कोई लड़की की जान लेना चाहता है, जब देवराज चौहान का दखल इस मामले में आया।" मार्शल ने जगमोहन को देखा।

"तो अब मेरे पास क्यों आए हो?"

"इकबाल खान सूरी उर्फ भगता ठाकुर का नाम तो तुमने सुन ही रखा होगा?"

जगमोहन सतर्क हो गया। मार्शल पर नजरें टिकी थीं।

"जानता हूं। इसे कौन नहीं जानता।"

"इकबाल खान सूरी आज-कल 'दुबई का आका' बना हुआ है। वहीं बैठ कर वो हिन्दुस्तान में, खासतौर मुम्बई में अपने बे-नामी धंधों को चला रहा है। उसके आदमी, उसके लिए इस तरह काम करते हैं जैसे वो हिन्दुस्तान में ही मौजूद हो। इकबाल खान सूरी का दूसरा पांव पाकिस्तान में रहता है। हमारे पास खबर है कि वो पाकिस्तान की कम्पनियों में पैसा लगा रहा है। आर्थिक रूप से पाकिस्तान की सहायता कर रहा है। बदले में पाकिस्तान सरकार उसका पूरा ध्यान रखती है। उसे गुप्त ठिकाना दे रखा है। उससे और भी सहायता की आशा रखती है। इकबाल खान सूरी को पाकिस्तान में हर तरह का काम करने की छूट है। उस पर पाकिस्तान का कानून लागू नहीं होता।"

"ये सब मुझे क्यों बता रहे हो...।" जगमोहन सतर्क दिख रहा था।

"सूरत में देवराज चौहान जिस लड़की की जान बचाने में लगा है, वो इकबाल खान सूरी की खास प्रेमिका है और उसके साथ ही रहती है। सिर्फ एक वो ही है जो इकबाल खान सूरी का सही पता बता सकती है। दुबई में मेरे एजेंट इकबाल खान सूरी के काफी करीब पहुंच गए थे। उस पर हाथ डालने ही वाले थे कि वो अचानक गायब हो गया। उसे मेरे एजेंटो पर शक हो गया था या वो इत्तफाकन गायब हुआ, ये मैं नहीं कह सकता, परंतु वो गायब हो गया और महीने से उसके बारे में कोई खबर नहीं मिली। फिर अचानक ही इकबाल खान सूरी की प्रेमिका कामनी उर्फ नसरीन शेख के मुम्बई एयरपोर्ट पर उतरने की खबर मिली तो वो हमारी निगाहों में आ गई। मेरे एजेंट उस पर नजर रखने लगे। हम जानना चाहते थे कि वो हिन्दुस्तान में क्या करने आई है और इकबाल खान सूरी का कुछ पता चल सके। अभी उस पर नजर रखी ही जा रही थी कि देवराज चौहान बीच में आ गया और उसे अपनी योजना बदल कर नई योजना बनानी पड़ी...।"

"तुम कामनी नाम की उस लड़की को पकड़ कर उससे पूछ...।"

"इस तरह वो कुछ नहीं बताने वाली। ये इकबाल खान सूरी का मामला है, वो दुबई का आका बना बैठा है। वो क्या पागल है जो उसने अपनी प्रेमिका को इस तरह खुलेआम हिन्दुस्तान भेज दिया। जरूर इसके पीछे कोई खास बात है।"

जगमोहन ने सिर हिलाया फिर बोला।

"तुम अपनी किस योजना का जिक्र कर रहे थे?"

comicsmylife.blogspot.in

"वो बताने का अभी वक्त नहीं आया।"
"कब वक्त आएगा उसका?" जगमोहन ने होंठ सिकोड़े।
"जब देवराज चौहान सामने होगा।"
जगमोहन ने उखड़ेपन से पहलू बदल कर कहा।
"तुम्हारा कोई भी काम करने का हमारा इरादा नहीं है।"
"इरादा बन जाएगा।" मार्शल मुस्कराया।
"नहीं...।"
"बन जाएगा। 'मैं पाकिस्तानी' में देवराज चौहान भारी खतरे में पड़ गया था, उस काम की कीमत तो मैंने तुम्हें चुका दी थी पर कुछ अपनी तरफ से दूंगा और नए काम की कीमत भी उतनी होगी, जितनी पिछले काम की थी।"
"वो कम थी।"
"इस बार काम में ज्यादा खतरा नहीं है।"
"हर बार तुम ऐसा ही कहते...।"
"मैं सच कह रहा हूं, जब मेरी योजना सुनोगे तो समझ जाओगे।"
"तुम तो इस तरह कह रहे हो, जैसे मैंने काम की हां कर दी हो।"
"वो हो ही जाएगी।"
"भूल में हो।" जगमोहन ने तीखे स्वर में कहा।
"पैसा तुम्हारी पसन्द का होगा तो हां क्यों नहीं होगी।"
"मैं पैसे के पीछे इतना भी पागल नहीं हूं कि अपनी या देवराज चौहान की जान खतरे में डालूं।"
"इस बार खतरा कम है। मेरी योजना पर मेरे आदमी काम पर लग चुके हैं। देवराज चौहान और तुम्हें हर रास्ता साफ मिलेगा जब इस काम में अपने कदम रखोगे। तुम क्या सोचते हो मुझे तुम लोगों की चिंता नहीं होती? मुझे हर उस इंसान की चिंता होती है जो देश की बेहतरी की खातिर अपने को खतरे में डाल रहा हो। मेरे एजेंट मेरे बच्चों की तरह हैं, परंतु कभी-कभी मैं भी इतना बेबस हो जाता हूं कि हाथ पर हाथ रखकर मौत के तमाशे को देखना पड़ता है।"
"जैसे कि पिछली बार 'मैं पाकिस्तानी' में देवराज चौहान की मौत का तमाशा देखा।"
"मैंने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की थी कि...।"
"अगर मैं खुल कर मैदान में, तब न आया होता तो, शायद देवराज चौहान बच न पाता।" जगमोहन गुस्से से कह उठा।
मार्शल ने गहरी सांस ली फिर बोला।
"मैं तुम्हें उस लड़की के बारे में बता रहा था कामनी उर्फ नसरीन शेख। वो बेहद खतरनाक लड़की है। कराटे में ब्लैक बैल्ट ले रखी है और निशाना

ऐसा लगाती है कि तुम सोचते ही रह जाओगे। कभी वो फिल्मों में काम पाने मुम्बई पहुंची थी। टी.वी. एडों में काम किया उसने, तभी उसका सम्पर्क इकबाल खान सूरी से बन गया और वो दुबई पहुंच गई। धीरे-धीरे वो इकबाल खान सूरी की खास बन गई। इकबाल खान ने उसे यूरोप भेजा जहां उसने जूडो-कराटे सीखा। हथियार चलाना सीखने के लिए पाकिस्तान गई। अब वो इकबाल खान सूरी के पास, करीब रहती है। उसकी प्रेमिका का काम भी करती है, बॉडीगार्ड का भी। उसकी सुरक्षा के सारे मामले वो ही देखती है। इकबाल खान सूरी उस पर पूरा भरोसा करता है। इन सब बातों की रिपोर्ट हमारे पास कब से है। ऐसे में कामनी का हिन्दुस्तान में आना, बेवजह नहीं हो सकता।"
"तुम कहते हो कि देवराज चौहान उसे बचाने पर लगा है।" जगमोहन बोला।
"हां, क्योंकि देवराज चौहान उसकी हकीकत नहीं जानता।"
"वो तो मैं अभी उसे बता देता।"
"ऐसी गलती मत करना जगमोहन।"
"क्या मतलब?"
"देवराज चौहान उसे बचाने की खातिर, उसे अपने साथ ले गया है। ये एक अच्छी बात हो गई। उनके बीच बात, आगे जैसी भी चले, परंतु उनमें बेहतर सम्बंध बन जाने की पूरी संभावना है।"
"तुम ऐसा ही चाहते हो?"
"बेशक।"
"क्यों?"
"क्योंकि जो मेरी योजना है, उसमें ऐसा होना देवराज चौहान के लिए बेहतर रहेगा।"
"तुम्हारी योजना?" जगमोहन ने कड़वे स्वर में कहा—"तुम ज्यादा ही हवा में उड़ रहे हो कि हम तुम्हारा काम करेंगे।"
"इस बारे में हम बाद में बात...।"
"मैं अभी देवराज चौहान को कामनी की हकीकत बताने जा...।"
"बेवकूफी मत करना। जो काम अंजाने में बेहतर हो गया, उस पर पानी मत फेरना। मैंने विश्वास के दम पर ही तुम्हें सारी बता बताई है। मैं कहने आया हूं कि तुम खुद को तैयार रखो, मेरे काम के लिए। तुम्हें ही मुझसे ज्यादा परेशानी होती है, देवराज चौहान को इतनी नहीं होती। तुम सोच के रखो कि अबकी बार के काम की, क्या मुनासिब रकम लेनी है मुझसे। जबकि इस बार बहुत कम खतरा रहेगा।"
"मैं काम के बारे में नहीं जानता तो कैसे...।"

comicsmylife.blogspot.in

"जब देवराज चौहान वापस आ जाएगा, तब काम के बारे में बताऊंगा।"
"तुम्हारे एजेंट उन पर नजर रखे हुए हैं।"
"हां।"
"कुछ पता चला कि इकबाल खान सूरी की प्रेमिका हिन्दुस्तान क्या करने आई है?"
"अभी नहीं मालूम हुआ?"
"कौन लोग उसकी जान लेना चाहते...।"
"बाबा रतनगढ़िया।"
"रतनगढ़िया, अंडरवर्ल्ड डॉन?" जगमोहन के होंठों से निकला।
"हां। इकबाल खान सूरी ने सालों पहले इंडिया से भागकर दुबई का रा पकड़ा तो तब बाबा रतनगढ़िया इकबाल खान सूरी के लिए काम किया करता था। परंतु उसके दुबई जाने के बाद बाबा रतनगढ़िया ने मुम्बई में अपने पांव फैलाने शुरू कर दिए जबकि दुबई में बैठा इकबाल खान सूरी मुम्बई में अपना सिक्का चलते देखना चाहता था उधर रतनगढ़िया का कहना था इकबाल ने मुम्बई छोड़ दी तो यहां धंधा क्यों करता है इस प्रकार दोनों में ठनती चली गई। बाबा रतनगढ़िया ने इकबाल के जाने के बाद काफी ताकत हासिल कर ली थी। अपने पैर भी फैला चुका था। अब वो खुले तौर पर इकबाल के गुर्गों को टक्कर देने लगा था और सालों तक दोनों तरफ से आदमी मरते रहे। वे एक-दूसरे पर हमला करते रहे। इकबाल खान सूरी के दुबई जाकर बैठ जाने से भी मुम्बई में उसकी ताकत में कोई खास कमी नहीं आई थी। पूरे हिन्दुस्तान में उसके आदमी काम करते रहते हैं। इकबाल खान सूरी और बाबा रतनगढ़िया के बीच सालों से रुतबे की लड़ाई चल रही है और अब तक बाबा रतनगढ़िया मुम्बई अंडर वर्ल्ड का बड़ा बन चुका है। उधर इकबाल पाकिस्तान और श्रीलंका में भी व्यस्त हो गया है। ऐसे में इकबाल और बाबा की लड़ाई हल्की पड़ गई है परंतु फिर भी वे एक-दूसरे पर वार करने का मौका नहीं चूकते जैसे कि कामनी के मुम्बई एयरपोर्ट पर पहुंचने का पता बाबा रतनगढ़िया को पहले से ही था। बाबा के लिए ये सुनहरा मौका था कामनी को खत्म करके, इकबाल खान सूरी को चोट देने का। मौका देखकर बाबा के आदमियों ने कामनी पर मुम्बई में ही उसे खत्म करने के लिए हमला कराया था परंतु शातिर कामनी वहां से बच निकली और...।"
"बाबा रतनगढ़िया को कैसे पता चला कि कामनी दुबई से मुम्बई पहुंच रही...।"
"बाबा रतनगढ़िया के हाथ लम्बे हैं। उसका कोई आदमी दुबई में, इकबाल के आदमियों के बीच मौजूद है, जिसने पहले ही कामनी के आने की खबर उसे दे दी थी।" मार्शल ने कहा—"इसमें कोई शक नहीं कि अंडरवर्ल्ड के लोगों के हाथ, पुलिस से कहीं ज्यादा लम्बे होते हैं। पुलिस जो खबर दस साल में ढूंढ़ निकालती है उसे अंडरवर्ल्ड वाले 24 घंटे में ले आते हैं। यही वजह है कि पुलिस अंडरवर्ल्ड के लोगों पर काबू नहीं पा पाती। पुलिस ड्यूटी देती है, अपना फर्ज पूरा करती है, नौकरी करती है और कानूनन एक दायरे से बाहर नहीं निकल सकती, परंतु अंडरवर्ल्ड के लोगों के लिए कोई सीमा रेखा नहीं होती। शहर और देश की सरहदें उनके लिए मायने नहीं रखतीं। वो कहीं भी पहुंच जाते हैं उनके अपने रास्ते...।"
"मार्शल।" जगमोहन ने टोका।
"हां।"
"तुम्हारा प्लान क्या है। तुम करना क्या चाहते हो?"
मार्शल ने जगमोहन को देखा। चुप रहा।
"मैं कामनी की बात कर रहा हूं। इकबाल खान सूरी की बात कर रहा हूं और देवराज चौहान की बात कर रहा हूं।"
"सब बातों का जवाब दूंगा, जब देवराज चौहान भी सामने होगा।"
"अभी नहीं।"
"नहीं।"
"तुम मेरे पास सिर्फ ये कहने आए थे कि तुम हमसे काम लेने वाले हो।"
"हां।"
"जरूरी तो नहीं कि हम तुम्हारा काम...।"
"देवराज चौहान मेरा काम शुरू कर चुका है अंजाने में। देवराज चौहान और कामनी का साथ देखकर ही, मैंने नई योजना तैयार कर ली और तुम्हारे पास आ गया। समझो इस वक्त देवराज चौहान मेरे लिए काम शुरू कर चुका है।"
"मुफ्त में?" जगमोहन ने व्यंग से कहा।
"जब तुम्हें काम का पता चल जाए तो मुनासिब रकम तय करके, पैसा पहले ही ले लेना।"
"तुम जबर्दस्ती वाले अंदाज में बात कर रहे हो।"
"मैं अपना काम निकालने के लिए हर तरह के तरीके इस्तेमाल करता...।"
"वो तो मैं 'डैथ वारंट' में देख ही चुका हूं।" जगमोहन का स्वर कड़वा हो गया—"तब तुमने मेरे और देवराज चौहान के साथ ज्यादती की थी। बाद में हम ये सोच कर चुप कर गए कि तुमने जो किया, देश के फायदे के लिए किया। परंतु हर बार तो ऐसा नहीं चलेगा कि तुम्हारी बात मानते रहें।"
"दौलत में बहुत ताकत होती है।" मार्शल मुस्करा पड़ा—"तुम दौलत के काबू में आ जाते हो।"

comicsmylife.blogspot.in

जगमोहन ने मार्शल को घूरा।
"मैंने ठीक कहा न?"
"जरूरी तो नहीं मार्शल कि हर बार दौलत का तीर काम कर जाए।"
"इस बार भी दौलत का तीर काम करेगा।"
"तुम बहुत कमीने हो। बहुत ही ज्यादा कमीने।"
"मैंने तुम्हारी बातों का कभी बुरा नहीं माना, जबकि पहले भी तुम मु बहुत कुछ कह चुके हो। ये मामला मेरे एजेंट देख रहे थे। उन्होंने ही इसे पूरा करना था। तुम लोगों का इस मामले से कोई मतलब ही नहीं था। परंतु इत्तफाक से देवराज चौहान ने इस मामले में दखल दे दिया और मैंने देवराज चौहान को स्वीकारते हुए, अपने काम के लिए नई योजना बना ली। याद रखना मेरी बात कि अभी देवराज चौहान से इस बारे में कुछ मत कहना।"
"तुम पागल हो जो सोचते हो मैं चुप रहूंगा।"
"तुमने अपने लिए जुबान बंद रखोगे, क्योंकि ये काम मैं तुम लोगों के नाम लिख चुका हूं। मैं चाहता हूं देवराज चौहान और कामनी उर्फ नसरीन शेख के बीच कुछ अच्छे सम्बंध बन जाएं। भविष्य में ये बात बहुत काम आनी है।"
"अच्छे सम्बंधों से तुम्हारा मतलब जिस्मानी सम्बंध से तो नहीं है जगमोहन ने पूछा।
"ऐसा हो जाए तो बुरा क्या है?"
"तुमने देवराज चौहान को क्या समझ रखा है। दो बार तुम्हारा काम क्या कर दिया। तुम सिर पर चढ़ गए। देवराज चौहान शादीशुदा है। उसकी पत्नी है और दूसरी औरत के बारे में तो वो सोचता भी नहीं। तुम सम्बंध बनाने की बात कर...।"
"मैं ऐसी कोई बात नहीं कर रहा। ऐसा हो जाए तो बुरा नहीं होगा, मेरी योजना को देखते हुए। नहीं तो उनमें दोस्ताना सम्बंध तो बन ही सकते हैं क्योंकि देवराज चौहान कामनी को बाबा रतनगढ़िया के आदमियों से बचा रहा है। ऐसे में कामनी कुछ तो शुक्रगुजार होगी उसकी।" मार्शल ने शब्दों को चबाकर कहा।
"जब तक तुम पूरी योजना नहीं बताओगे, मैं समझ नहीं सकता, तुम क्या चाहते हो?"
"देवराज चौहान के सामने होने पर बताऊंगा। मेरे काम के लिए तुम तैयार रहना। आना-कानी मत करना और पहले की तरह भागने की कोशिश मत करना। मेरी नजर तुम पर भी है और देवराज चौहान पर भी।" मार्शल कहकर उठा और बाहर निकलता चला गया जबकि जगमोहन के चेहरे पर सोचें और गम्भीरता नजर आ रही थी। मार्शल का दूसरा नाम मुसीबत था।

▭ ▭

देवराज चौहान गुजरात के शहर सूरत में था।
कल रात दस बजे सूरत शहर पहुंचा था मुम्बई से। यूं आने का मन नहीं था परंतु सरबत सिंह की बात टाल भी नहीं सका था। सरबत सिंह से मुलाकात उसकी ज्यादा पुरानी नहीं थी, कुछ दिन पहले सरबत सिंह के साथ मिलकर एक छोटा-सा काम किया था। दो दिन पहले से सरबत सिंह का फोन आने लगा कि उसकी खास पहचान वाला ओंकारनाथ सूरत में रहता है और वो कहीं पर एक सौ दस करोड़ की डकैती करने को कह रहा है। प्लान उसने बना रखा था, उसे सिर्फ तुम जैसे इंसान की जरूरत है, जो इस काम में उसका हाथ बंटा सके। देवराज चौहान ने जाने को इंकार किया तो सरबत सिंह ने उससे रिक्वैस्ट की कि एक बार सूरत जाकर ओंकारनाथ का प्लान तो सुन लो।

सरबत सिंह की रिक्वैस्ट को देवराज चौहान मना नहीं कर सका था।
सरबत सिंह ने बताया कि वो भी सूरत का है और उसके बाप का एक मकान सूरत की रैंडर नाम की जगह पर है, जो कि समुद्र किनारे पर स्थित है। सरबत सिंह उससे मिला और मकान की चाबी देते हुए कहा कि वो रैंडर स्थित उसके मकान पर ही ठहरे। इस तरह मकान की कुछ देखभाल भी हो जाएगी। उसने ये भी कहा कि उस मकान की सफाई करने हर पंद्रह दिन में एक बार, एक काम वाली आती है। ऐसे में मकान लगभग उसे साफ ही मिलेगा। साथ ही उसने ओंकारनाथ का फोन नम्बर दे दिया। देवराज चौहान ने उसे मना कर दिया था कि उसका नम्बर ओंकारनाथ को न दे। वो खुद ही सूरत पहुंचकर ओंकारनाथ को फोन कर लेगा और इस तरह वो रात दस बजे सूरत में रैंडर नाम की जगह पर, सरबत सिंह की कॉटेज पर आ पहुंचा था। पांच सौ मीटर की दूरी पर समुद्र था और समुद्र से टकरा कर आती ठंडी हवा में समुद्र की खुशबू-भरी महसूस हो रही थी। ऐसा माहौल देवराज चौहान को अच्छा लगा। आस-पास और भी कॉटेज थे परंतु वे कुछ-कुछ फासले पर थे और घर के आस-पास की मिट्टी में समुद्र की रेत मिक्स थी।
मकान की लाइट चालू थी। मकान के भीतर पहुंचकर देवराज चौहान ने लाइट ऑन कर दी। साफ-सफाई जैसा माहौल था भीतर। वहां आराम से रहा जा सकता था। किचन भी ठीक हालत में थी। मकान का एक कमरा पक्का बना हुआ था, बाकी के तीन कमरे लकड़ी के थे। छत भी लकड़ी का फट्टों से बनाई हुई थी। किचन में खाने का कोई सामान नहीं था। ज्यादा इच्छा भी नहीं थी खाने की और वो रात आराम से बिताई देवराज चौहान ने।

अगले दिन यानी कि आज वो ओंकारनाथ से मिला।

comicsmylife.blogspot.in

ओंकारनाथ की प्लानिंग बचकाना लगी उसे उसकी बात में कोई दम नहीं दिखा। मुम्बई वापस जाने का इरादा करके वो ओंकारनाथ से अलग हुआ कि तभी इस लड़की के चक्कर में उलझ गया।

कोई उसकी जान लेना चाहता है।

दस लाख में जान लेने का सौदा हो चुका है। पैसे दिए जा चुके हैं और आज उसके सामने ही लड़की को मारने की चेष्टा की गई। परंतु लड़की उसे ऐसी न लगी कि उसकी हत्या की जाए। वो मध्यम वर्गीय, परिवार की शरीफ लड़की लगी और निश्चिंत होकर बाजार में खरीददारी कर रही थी। ऐसे में वो बीच में आ गया और उस वक्त तो लड़की को किसी तरह बचाया परंतु इतना उसे समझ आ गया कि हत्यारे लड़की का पीछा नहीं छोड़ने वाले। लड़की को कुछ नहीं हो और उसे सतर्क कर सके, इस कारण वो लड़की को जबर्दस्ती साथ ले आया था।

परंतु लड़की को लग रहा था कि जैसे वो ही उसका अपहरण कर रहा है।

वो उसके साथ आने को तैयार नहीं थी।

ऐसे में उसे समझाना आसान नहीं था कि कोई उसकी जान के पीछे है

अब वो लड़की को कार में डाल कर रैंडर स्थित सीधा समुद्र के किनारे वाले कॉटेज में ले आया था, जो कि सरबत सिंह की थी। लड़की अभी तक बेहोश थी और उसे एक कमरे में बैड पर लिटा दिया था।

ये काफी खुली जगह में मकान बना हुआ था। मकान के आसपास खुली जगह थी फिर पांच फुट की चारदीवारी थी। मकान से दूर तक फैला समुद्र स्पष्ट नजर आता था। यहां-वहां बने और भी कॉटेज नजर आ रहे थे परंतु इस तरफ शांति थी। लोगों का आना-जाना कम ही रहता था परंतु शाम के वक्त लोगों का आना बढ़ जाता था। तब लोग समुद्र किनारे टहलने आ जाते थे। परंतु वे किनारे की तरफ ही रहते। मकानों की तरफ नहीं आते थे।

सुबह देवराज चौहान घर से नहा-धोकर निकल गया था और ओंकारनाथ से मिलने से पहले एक रैस्टोरेंट में नाश्ता किया था, परंतु अब किचन में था फ्रिज में खाने का कोई सामान नहीं था। लड़की पता नहीं, होश में आने पर उसकी बात समझती भी है या नहीं। जबकि देवराज चौहान इरादा कर चुका था कि लड़की को यकीन दिलाने के बाद जाने देगा, ताकि अपनी सुरक्षा के बारे में सतर्क रहे। ऐसे में खाने-पीने का सामान घर में होना जरूरी था।

देवराज चौहान उस कमरे में पहुंचा जहां लड़की बेड पर बेहोश पड़ी थी। वो वैसे ही पड़ी थी जैसे कि उसे लिटाया गया था। अभी तक बेहोश थी। देवराज चौहान ने उसे चैक किया फिर काफी तलाश के बाद उसने हाथ-पांव बांधने के लिए डोरी को तलाशा और लड़की के हाथ-पांव बांधे उसके बाद अंगूठे

से उसकी कनपटी को एक बार फिर दबाया कि वो गहरी बेहोशी में चली जाए। उसके बाद घर को बाहर से बंद करके, आसपास देखा, दूर तक फैले समुद्र को देखा।

ऐसा कोई न दिखा जो यहां नजर रखता हो।

उसके बाद कार में बैठा और बाजार की तरफ सामान लेने चल दिया।

▭ ▭

दो घंटे बाद देवराज चौहान लौटा।

खाने-पीने का सामान ले आया था। सामान को कार से निकालकर भीतर रखा और फ्रिज का सामान फ्रिज में लगाया, किचन का किचन में रखा, इस दौरान लड़की पर नजर मार चुका था, वो बेहोश थी।

देवराज चौहान ने अपने लिए कॉफी बनाई, ब्रेड पर मक्खन लगा लिया था, वो खाता रहा। वो शांत था। चेहरे पर खास सोचें नहीं थीं। ओंकार सिंह को पूरी तरह अपने दिमाग से निकाल दिया था।

कॉफी के घूंट लेता वो छोटे-से ड्राइंग रूम में पड़ी कुर्सी पर आ बैठा ड्राइंग रूम में फर्नीचर के नाम पर चार कुर्सियां, पुराना-सा सैंटर टेबल और एक दीवान रखा था।

अभी कॉफी समाप्त की ही थी कि उसका मोबाइल बज उठा।

दूसरी तरफ मुम्बई से सरबत सिंह था।

"ओंकारनाथ से मिले या अभी मिलना है?" सरबत सिंह की आवाज कानों में पड़ी।

"कल मिला था। उसका सारा प्रोग्राम बेकार लगा। मुझे उसमें कोई दिलचस्पी नहीं है।" देवराज चौहान बोला।

"ओह, बता दिया ओंकार को ये बात?"

"कह दी।"

"वो तो बहुत कह रहा था कि मेरी योजना बहुत शानदार है। ऐसी वैसी है।"

"मैं उसकी बात को भूल चुका हूं।"

"वो तो तुम्हारी इच्छा पर है। फिर तो आज मुम्बई आ रहे होंगे?"

"शायद आज का दिन रुकूं।"

"होटल में ठहरे हो या मेरी उसी कॉटेज पर?"

"तुम्हारी कॉटेज पर। इसे कॉटेज कहना ठीक रहेगा। ये अच्छी लोकेशन पर है। यहां से पूरा समुद्र दिखता है।"

"मेरे बाप को समुद्र बहुत अच्छा लगता था। इसीलिए उसने यहां जमीन खरीदकर कॉटेज बनाई थी। मजे से रहो यहां पर। अपना ही माल है। मैं कामवाली को फोन कर देता हूं। वो रोज आकर सफाई कर...।"

comicsmylife.blogspot.in

"जरूरत नहीं। ऐसे ही ठीक है।"
"वैसे वो पंद्रह दिन में एक बार सफाई करने तो आती ही है।"
"मेरा कुछ पता नहीं कि कब मैं यहां से चल दूं।"
"ठीक है। जब मुम्बई पहुंचो तो मुझे एक फोन लगा देगा, मैं तुमसे कॉटेज की चाबी ले जाऊंगा।"
बात खत्म हो गई।
देवराज चौहान ने फोन बंद करके जेब में रखा और कॉफी का खाली प्याला किचन में रखने के बाद उस कमरे में पहुंचा, जहां लड़की थी। वो लड़की के हाथ-पांवों के बंधनों को खोलने लगा। अब बांधने की जरूरत नहीं थी। वो तो इसलिए बांध गया था कि उसके पीछे से लड़की को होश आए तो कहीं यहां से भाग न जाए।
कुछ देर और बीती तो लड़की को होश आने लगा।
तब देवराज चौहान ड्राइंग रूम में कुर्सी पर सिग्रेट सुलगाए बैठा था
लड़की को पूरा होश आ गया।
वो कमरे में नजरें दौड़ाने लगी। फिर तुरंत ही उठ बैठी। उसकी निगाह बेड पर पड़ी दोनों डोरियों पर गई जिससे उसके हाथ-पांव बांधे थे। उसने अपनी कलाइयों को देखा। डोरी एक तरफ उछाल दी।
चेहरे पर परेशानी दिखने लगी थी।
वो बेड से उतरी और खुले दरवाजे के पास पहुंची बाहर झांका तो ड्राइंग रूम में बैठा देवराज चौहान दिखा तो कुछ पल वो उसे देखती रही फिर पीछे हट गई। चंद पल वैसे ही खड़ी रही। उसे कुछ घंटे पहले का बीता वक्त याद आया कि उसके साथ क्या हुआ था बाजार में।
वो दरवाजे से हटी और कमरे की खिड़की को खोला। ये कॉटेज की पिछली तरफ का हिस्सा था और रेतीली जमीन नजर आ रही थी। अन्य कॉटेजों को भी देखा, जो वहां बनी हुई थी।
"होश आ गया तुम्हें।"
देवराज चौहान की आवाज को सुनते ही वो फिरकनी की तरह घूमी
देवराज चौहान दरवाजे की चौखट पर खड़ा था।
दोनों की नजरें मिलीं।
लड़की के होंठ भिंच गए।
"भागने की सोच रही हो।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।
वो वहीं खड़ी देवराज चौहान को देखती रही।
"भागने की कोई जरूरत नहीं। तुम आराम से यहां से जा सकती हो।"
लड़की, देवराज चौहान को देखती रही।
"नाम क्या है तुम्हारा?" देवराज चौहान ने पूछा।

"तुम कमीने इंसान।" लड़की एकाएक भड़ककर कह उठी—"मुझे भरे बाजार से उठा लाए और अब मेरा नाम पूछते हो। तुम क्या समझते हो कि मैं तुम्हें अपना नाम बता दूंगी।"
"तुम्हारे भले के लिए तुम्हें उठाकर...।"
"भला? तुम जैसे लोग आए दिन लड़कियों को सड़कों से उठाते हैं और उन्हें हवस का शिकार बनाकर मार देते हैं या छोड़कर चले जाते हैं। लेकिन मैं ऐसी लड़की नहीं हूं, मुझे हाथ भी लगाया तो...।"
"तुम्हें कोई हाथ नहीं लगाएगा।"
लड़की दांत भींचे देवराज चौहान को देख रही थी।
"मैं यहां पर अकेला हूं और तुम्हें मुझसे कोई खतरा नहीं है। लड़कियों के मामले में मैं शरीफ आदमी हूं।"
"जो इंसान भरे बाजार से लड़की को उठा लाए, वो शरीफ कैसे हो सकता है।"
देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।
"तुम अपने इरादे में कामयाब नहीं हो सकते। मैं-मैं...।" एकाएक पलटी और खुली खिड़की की चौखट पर चढ़ गई।
इससे पहले कि वो खिड़की के पार कूद पाती, देवराज चौहान ने तीर की भांति झपट्टा मारा और उसकी बांह पकड़कर वापस खींच लिया। लड़की, लकड़ी के फर्श पर जा गिरी। वो चीखी।
देवराज चौहान ने खिड़की के पल्ले बंद कर दिए।
लड़की संभली और चीख कर बोली।
"ये क्या कर रहे हो। मुझसे दूर रहो, मैं प्रेग्नैंट हूं।"
"तुम्हारे पेट में बच्चा है। सॉरी, इसकी मुझे जानकारी नहीं थी।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"फिर तो तुम्हें और भी ध्यान रखना चाहिए कि ऐसी कोई हरकत न करो कि तुम्हें तकलीफ हो।"
"मुझे जाने दो।"
"मैं तुम्हें रोक नहीं रहा। तुम्हारे भले के लिए तुम्हें यहां लाया हूं। तुम्हें मेरी बात सुननी चाहिए।"
"अपनी बात सुनाने के लिए मुझे इस तरह उठाकर लाए हो?" वो कह उठी।
"हां।"
"तुम पागल हो। मैं तुम्हें जानती तक नहीं और...।"
"मैं भी तुम्हें नहीं जानता।" देवराज चौहान मुस्कराया।
"आज से पहले तुमने इस तरह कितनी लड़कियों को उठाया?"
"एक को भी नहीं।"

comicsmylife.blogspot.in

"तो अपने पागलपन की शुरुआत तुमने मुझसे की है।" लड़की तीखे स्वर में उठी।

देवराज चौहान ने कठोर नजरों से उसे देखा।

नीचे बैठी लड़की सतर्क हुई।

"तुम्हें ये जरूर जान लेना चाहिए कि मैं तुम्हें इस तरह क्यों उठाकर लाया।"

"ब-बोलो—बताओ।"

"खड़ी हो जाओ।"

लड़की खड़ी हो गई और बोली।

"अगर तुम किसी बुरी हरकत को अंजाम देने के फेर में हो तो...।"

"पानी लोगी?"

"नहीं।"

"चाय-कॉफी?"

"नहीं।"

"खाने-पीने की जरूरत हो तो...।"

"मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। तुम अपनी बात कहो और मुझे जाने दो। मैं यहां नहीं रुक सकती। मुझे घर जाना है।" लड़की ने अपने शब्दों पर जोर देकर कहा—"तुम्हारी हिम्मत की दाद देती हूं जो मुझे इस तरह उठा लाए।"

"बेड पर बैठ जाओ।" देवराज चौहान बोला।

"बेड पर? नहीं बैठूंगी। तुम्हें जो कहना है, ऐसे ही कहो।" लड़की शक भरे स्वर में कह उठी।

देवराज चौहान कमरे से बाहर गया और दूसरे ही पल कुर्सी लेकर लौटा और कमरे के भीतर, दरवाजे के पास कुर्सी रखकर, उस पर बैठता कह उठा।

"जब बैठना चाहो, बैठ जाना। मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि तुम्हारी जान खतरे में है।"

"मेरी जान खतरे में है?" उसकी आंखें सिकुड़ीं।

"कोई तुम्हें खत्म करने के लिए दस लाख रुपए हत्यारे को दे चुका है और...।"

लड़की अजीब-सी निगाहों से देवराज चौहान को घूरने लगी।

"जो हत्यारा तुम्हारे पीछे लगा है, मैं इत्तफाकन उससे मिल चुका हूं वो हर हाल में...।"

"तुम पागल हो। पूरे पागल हो...।" लड़की के होंठों से निकला।

"मेरी बात को ध्यान से सुनो कि...।"

"मैं तुम्हारी झूठी बात में फंसने वाली नहीं। मुझे कोई नहीं मारना चाहता। तुम बकवास कर रहे...।"

"बेवकूफ मैंने तुम्हें बचाया है, वरना अब तक तुम मर चुकी...।"

"मैं मर चुकी होती। तुम-तुम कोई सनकी हो, जो मुझे यूं ही उठा लाए और...।"

"जब तुम बेनूर ज्वैलर्स में थीं, तब हत्यारा सामने सड़क पार कार पार्किंग में था। मेरी कार की बगल में उसकी कार आ खड़ी हुई। मैंने सब देखा, जब तुम बेनूर ज्वैलर्स से बाहर निकली तो उसने गोली चलाई, जो कि...।"

"गोली चलाई।" लड़की ने दांत भींचकर कहा—"लेकिन मुझे तो नहीं लगी। आसपास भी किसी को नहीं...।"

"मैंने कहा है, तब वो सड़क पार कार पार्किंग से निशाना ले रहा था। उसने गोली चलाई और वो गोली सड़क पर जाती किसी कार में जा घुसी जो कि अचानक ही सामने आ गई थी।" देवराज चौहान ने कहा।

चंद पल चुप रहकर लड़की कड़वे स्वर में बोली।

"तुम बकवास कर रहे हो। मैं बेनूर ज्वैलर्स में थी। कोई मुझ पर गोली चलाने के लिए सड़क पार इतनी दूर पार्किंग में जगह क्यों चुनेगा। वो तो बहुत दूर है। सड़क पर से हर समय ट्रैफिक आता-जाता रहता है। सुनो, मैं तुम्हारी बातों में नहीं फंसने वाली। अगर तुम मुझे उलझा कर, मेरे साथ रेप करने की कोशिश करना चाहते हो तो भूल जाओ। मैं प्रेग्नैंट हूं और तुम्हें अपने पास भी नहीं आने दूंगी। बेशक अपनी जान दे दूंगी अगर तुमने कोई कोशिश की तो...।"

देवराज चौहान शांत भाव से लड़की को देखता रहा।

"मुझे जाने दो।"

"नहीं।"

"क्यों?"

"मैं तुम्हें यकीन दिलाना चाहता हूं कि सच में कोई तुम्हारी जान के पीछे है। कोई तुम्हें मारना चाहता है।"

"मुझे यकीन दिलाकर क्या करना चाहते हो?"

"तुम्हारी जान बचाना चाहता हूं। ताकि तुम सतर्क रहो और अपने को बचा सको। ये जान सको कि कौन तुम्हें मारना...।"

"ठीक है। मुझे यकीन आ गया कि कोई मुझे मारना चाहता है। अब मुझे जाने दो।"

"जब मुझे भरोसा हो जाएगा कि तुम्हें यकीन आ गया है तो तुम्हें जाने दूंगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"तो इस बात का तुम्हें भरोसा भी होना चाहिए।"

"हां।"

"फिर तो तुम मुझे यकीन दिलाओ कि कोई मेरी हत्या कराना चाहता

comicsmylife.blogspot.in

है। उसने हत्यारे को दस लाख भी दे दिए हैं। इधर मैं तुम्हें भरोसा दिलाऊंगी कि मुझे तुम्हारी बात का पूरा भरोसा है।" लड़की तीखे स्वर में कह उठी।

"तुम मेरी बात को मजाक समझ रही हो।"

"मजाक नहीं चाल। तुम मेरे साथ कोई चाल चलने के फेर में हो। खयाल में मुझसे रेप करने का बढ़िया मौका देख रहो। जरूरी तो नहीं कि लड़की पर झपटकर रेप किया जाए। मैंने पढ़ रखा है कि लड़की को अपनापन दिखाकर, उसका बन कर, उसका विश्वास जीतकर भी कुछ लोग रेप करते हैं और भाग जाते हैं। तुम वैसे ही लगते हो मुझे। इसके सिवाय तो तुम्हारे लिए मेरे पास और कोई चीज है नहीं।" लड़की ने कठोर स्वर में कहा।

"ऐसा कुछ नहीं है। मैं फिर कहता हूं कि इस मामले में मैं शरीफ हूं।"

"सब ऐसा ही तो कहते हैं।" लड़की ने दांत भींचकर कहा।

"मैं ऐसा नहीं हूं।"

"क्यों, क्या तुम मर्द नहीं हो?"

देवराज चौहान मुस्कराया फिर बोला।

"मुझे खुशी है कि मैंने आज तुम्हें बचा लिया।"

"तुमने बचा लिया?"

"जब तुम साड़ी खरीद कर शो-रूम से बाहर निकली तो वो हत्यारा तुम्हें गोली मारने जा रहा था, पर मैंने उसके हाथ से रिवॉल्वर गिरा दी। इसी से ही उसका काम गड़बड़ हो गया।" तब वो तुमसे महज आठ कदम दूर था।

"बहुत बहादुर हो तुम।" लड़की ने व्यंग से कहा।

"मैंने सच कहा है।"

"रिवॉल्वर देखकर लोग दूर भाग जाते हैं और तुमने देखा कि जब वो रिवॉल्वर निकालकर मुझ पर गोली चलाने जा रहा है तो तुमने उसकी रिवॉल्वर गिरा दी। खूब—वैसे मैंने तुम्हें वहां किसी से उलझते देखा था। ये सब तुम्हारा ही पैदा किया ड्रामा हो सकता है कि तुम अपनी बात का मुझे यकीन दिला सको। तुम्हारा-मेरा वास्ता ही क्या है?"

"कुछ नहीं।"

"फिर तुमने मुझे क्यों बचाया?"

"इंसानियत के नाते।"

"ठीक है। अब ये बताओ कि तुम चाहते क्या हो?" लड़की ने सिर हिलाकर कहा।

"तुम्हें यकीन दिलाना चाहता हूं कि कोई तुम्हें मार देना चाहता है।"

"जब हमारा कोई रिश्ता नहीं तो तुम मेरा भला क्यों चाहते हो। मेरी जा की तुम्हें चिंता क्यों है।"

"दुनिया में अभी भले लोग बचे हुए हैं।"

"तो तुम खुद को भला कह रहे हो।"

"तुम्हारे मामले में।"

"तुम्हें कोई काम नहीं है?"

"बहुत काम है मुझे। फुर्सत ही नहीं रहती कि...।"

"तो फिर क्यों अपना और मेरा वक्त खराब कर रहे हो। तुम अपने रास्ते लगो और...।"

"मैं इस समय, वक्त का सही इस्तेमाल कर रहा हूं। तुम्हारी जिंदगी बचाने की कोशिश में हूं।"

"ये सब करके तुम अपना, कोई काम साधना चाहते हो।" लड़की के दांत भिंच गए।

"तुम्हारा मतलब कि मैं तुमसे झूठ कह रहा हूं।" देवराज चौहान बोला।

"पूरी तरह। कोई मेरी जान नहीं लेना चाहता।" लड़की ने दृढ़ स्वर में कहा।

"ये झूठ बोलकर मुझे क्या मिलेगा?"

"तुम जानो।"

"मतलब कि तुम मानने को तैयार नहीं कि कोई तुम्हारी जान लेना चाहता है।"

"कोई भी मेरी जान नहीं लेना चाहता ये तुम्हारे दिमाग की उपज है।"

"फिर तो मैंने तुम्हें बचाकर गलत किया।"

"बकवास मत करो और मुझे जाने दो यहां से। तुम्हारा-मेरा कोई मतलब नहीं...।"

उसी पल लड़की जेब में पड़ा मोबाइल बज उठा।

लड़की ने जल्दी से फोन निकाला और बात की। उसे डर था कि सामने बैठा इंसान फोन न छीन लें।

परंतु देवराज चौहान शांति से बैठा रहा। उसे देखता रहा।

"हैलो—मम्मा।" एकाएक लड़की की आंखों से आंसू निकलने लगे—"एक बदमाश ने मेरा अपहरण किया है, वो मुझे छोड़ नहीं रहा। अजीब-अजीब-सी बातें कर रहा...मैं नहीं जानती मैं कहां हूं पर ये जगह समुद्र के किनारे पर है...हां तुम पुलिस को फोन करो। मुझे बचा लो मम्मा मैं...।" उधर से फोन बंद हो गया।

लड़की का चेहरा आंसुओं से भीगा था।

उसने फोन जेब में डालकर, भर्राये स्वर में कहा।

"अब तुम्हें पुलिस आकर पकड़ लेगी। मुझे जाने दो और तुम भी भाग जाओ।"

देवराज चौहान कुर्सी पर बैठा शांत-सा लड़की को देखे जा रहा था।

comicsmylife.blogspot.in

"मुझे इस तरह क्यों देख रहे हो। इस तरह तो रेप से पहले देखा जाता है।" लड़की तीखे स्वर में कह उठी।

"ये बात किसने बताई तुम्हें?"

"फिल्मों में देखा है।"

"तुम्हारी मां का फोन आया था?"

"हां। अब मम्मा, पुलिस को मेरे अपहरण के बारे में बता रही होगी।" लड़की हिम्मत से कह उठी।

"अपने गाल साफ कर लो।"

"मेरा सारा मेकअप खराब कर दिया।" लड़की ने हाथ से आंसुओं भरे गालों को साफ किया।

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाकर कश लिया। फिर बोला।

"तुम जानती हो कि मैं तुमसे क्या कह रहा हूं।"

"मैं सिर्फ इतना जानती हूं कि तुम ऐसी बकवास कर रहे हो जिसे मैं कभी नहीं मान सकती।"

"यहां से जाना चाहती हो?"

"हां, अभी...।"

"तो मेरे से ढंग से बात करो।" देवराज चौहान शांत-सा बोला—"मैं पूछ रहा हूं, वो ही बात करो।"

"फिर तुम मुझे जाने दोगे?"

"हां।"

"ठीक है, बोलो।"

"अब तक मैंने तुमसे क्या कहा, वो सारी बातें मुझे बताओ।" देवराज चौहान ने कहा।

"फिर वो ही बात, मैं...।"

"यहां से जाना है तो तुम्हें मेरी बातों पर ही चलना होगा।" देवराज चौहान ने उसे सख्त निगाहों से देखा।

"पुलिस आती ही होगी। फिर देखूंगी तुम्हारा हाल। दो डंडे पड़ेंगे तो, ऊंट की गर्दन की तरह सीधे हो जाओगे।"

देवराज चौहान ने कश लिया। खामोश रहा। उसे देखता रहा।

"ऐसे क्या देख रहे हो?"

"लगता है तुम यहां से जाना नहीं चाहती।"

"ठीक है।" लड़की सिर हिलाकर बोली—"तुमने अब तक कहा कि मेरी जान को खतरा है। किसी ने किसी को दस लाख दिए हैं कि वो मुझे मार दे। ऐन मौके पर तुमने उसे देख लिया जो मुझे मारना चाहता है और तुम कहते हो कि तुमने उससे मुझे बचाया, वरना वो मुझे मार चुका होता। उसके बाद तुम जबर्दस्ती मुझे उठाकर अपनी कार में ले गए और मुझे बेहोश कर दिया। यहां ले आए और अब कहते हो कि मैं तुम्हारी बातों का यकीन करूं, जो भी तुम कह रहे हो। लेकिन मेरा कोई दुश्मन नहीं है, जो मेरी जान लेने के लिए दस लाख खर्च करे। मैंने ऐसा कुछ नहीं किया कि किसी को मेरी जान लेनी पड़े। मेरी सीधी-साधी जिंदगी है। मेरी नजरों में तुम कोई बदमाश हो जो अपना कोई मतलब निकालने के लिए मुझे यहां ले आए और मुझ पर दबाव बना रहे हो कि मैं तुम्हारी बातें मानूं। मैं तुमसे डरने वाली नहीं। अगर तुमने मेरे से रेप की कोशिश की तो मैं तम्हें मार दूंगी या अपनी जान दे दूंगी। इस बात की भी परवाह नहीं करूंगी कि मेरे पेट में बच्चा है। मैं ऐसी-वैसी लड़की नहीं हूं। अच्छी तरह समझ लो मिस्टर।"

"कह लिया।"

"हां।"

"तो अब पांच मिनट के लिए मान लो कि मैंने जो कहा है, वो सौ प्रतिशत सच है।"

"नहीं।"

"क्या नहीं। मान नहीं सकती या मेरी बातें सच नहीं हैं।"

"दोनों ही बातों में नहीं है।" लड़की ने दृढ़ स्वर में कहा।

"मतलब कि तुम्हें लगता है मैं झूठ कह रहा हूं।" देवराज चौहान बोला

"ये बात तो मैं कब से कह रही हूं।"

कश लेकर देवराज चौहान ने सिग्रेट नीचे फेंकी और जूते से मसली।

"ये भी यकीन नहीं कि वो हत्यारा तुम्हें मारने के लिए, तुम्हें ढूंढ़ रहा होगा।"

लड़की बरबस ही हंस पड़ी।

देवराज चौहान के माथे पर बल पड़े।

"मैंने तुम्हें कहा न कि दुनिया में ऐसा कोई नहीं है जो मुझे मारना चाहे।" वो बोली।

"तुम जैसे लोग ही मरते हैं।"

"क्या मतलब?"

"जो लोग ये सोचते हैं कि उन्हें कोई नहीं मार सकता, उन्हीं को लोग मार जाते हैं, जैसे कि तुम। मुझे समझ में नहीं आता कि तुम मेरी बात का जरा भी यकीन नहीं कर रही। एक बार भी गम्भीरता से नहीं सोचा।"

"क्योंकि मेरा कोई दुश्मन नहीं है।" लड़की सपाट स्वर में बोली।

देवराज चौहान लड़की को देखता रहा।

"अब मैं जाऊं? मैंने तुम्हारी बातों का जवाब दे दिया है।" उसने कहा।

"तुम या तो बहुत चालाक हो या बहुत ही बेवकूफ।" देवराज चौहान ने होंठ भींचे कहा।

comicsmylife.blogspot.in

"मैं बहुत समझदार हूं। तुम मेरी चिंता न करो। अब मैं जा सकती हूं न?"

"नहीं।"

"लेकिन तुमने अभी तो...।"

"तुम्हें मेरी बात का जरा भी यकीन नहीं, यहां से बाहर जाओगी तो मारी जाओगी। मुझे झूठा समझ रही हो, जबकि मैं तुम्हें बचाना चाहता हूं।" कहने के साथ ही देवराज चौहान उठा और कुर्सी दरवाजे से हटा कर रख दी।

"तो तुम मुझे नहीं जाने दोगे?" लड़की ने गुस्से से देवराज चौहान को देखा।

"नहीं, इस कमरे से निकलो। आओ मेरे साथ।"

"कहां?"

"किचन में, कॉफी बनानी है।"

"मैं तुम्हारे लिए कॉफी नहीं बनाऊंगी।" लड़की ने गुस्से से, दृढ़ स्वर में कहा।

"कॉफी मैं बनाऊंगा। तुम मेरे साथ रहोगी।"

"मैं यहीं ठीक...।"

"मैं नहीं चाहता कि तुम यहां से भागो और बाहर कोई तुम्हारी जान ले। हर पल मेरे साथ रहोगी तुम।"

"नहीं, मैं...।"

तभी देवराज चौहान तेजी से लड़की की तरफ बढ़ा।

"खबरदार, मुझे हाथ मत लगाना।" पीछे हटती वो चीखी।

देवराज चौहान ने उसकी कलाई पकड़ ली और दरवाजे की तरफ बढ़ा।

"तुम मेरा रेप करने के लिए मुझे ले जा रहे हो, मैं अपनी जान दे दूंगी लेकिन तुम्हें कामयाब नहीं होने दूंगी।" उसके साथ चलती लड़की ने तड़पकर कहा—"अभी पुलिस यहां आती ही होगी, वो तुम्हें पकड़ लेगी।"

लड़की की कलाई पकड़े देवराज चौहान किचन में पहुंचा।

लड़की परेशान दिखाई दे रही थी।

"तुम किचन में ही खड़ी रहोगी। मेरे पास।" देवराज चौहान उसकी कलाई छोड़ता कठोर स्वर में बोला—"तुमने हर वक्त मेरे पास रहने की कोशिश करनी है। मैं तुम्हें भागने का मौका नहीं देना चाहता।"

"तुम बहुत बड़े पागल हो।"

"मैं कॉफी बना रहा हूं। तुम पिओगी। तुम्हारे लिए बनाऊं?"

लड़की चुप रही।

देवराज चौहान कॉफी बनाने लगा। पास ही कांच की खिड़की थी जिससे बाहर देखा जा सकता था। उस खिड़की के बाहर, सामने समुद्र दिखाई दे रहा था। एक छोटी बोट समुद्र में किनारे के पास की तरफ घूम रही थी।

लड़की गुस्से से देवराज चौहान को देखे जा रही थी।

कॉफी बनाते देवराज चौहान बोला।

"तुमने आज लंच लिया?"

वो चुप रही।

"तुम्हारे लिए खाली पेट रहना ठीक नहीं। मुझे भूख लग रही है। मैं फ्रिज से सैंडविच लाने जा रहा हूं तुम्हें चाहिए तो...।"

"ले आओ।" लड़की अभी भी गुस्से में थी।

देवराज चौहान ने प्लेट उठाई और किचन से बाहर निकल गया।

गैस पर कॉफी रखी थी। लड़की की निगाह किचन की खिड़की के बाहर नजर आते समुद्र पर जा टिकी। जहां एक छोटी-सी, सफेद रंग की बोट चक्कर काट रही थी। चेहरे पर सोच के भाव थे। वो शीशे की खिड़की ऐसी नहीं थी कि वहां से बाहर निकलकर भागा जा सके। इस वक्त वो जाने क्या सोच रही थी।

देवराज चौहान प्लेट में सैंडविच के छः पीस रखे वापस लौटा।

"ये लो।" किचन की शैल्फ पर प्लेट रखते बोला और एक सैंडविच खुद उठाकर खाने लगा।

लड़की ने भरपूर हिचकिचाहट के साथ एक सैंडविच उठाया और धीरे-धीरे खाने लगी।

देवराज चौहान कॉफी बनाने में व्यस्त हो चुका था।

"तुम मुझे कब जाने दोगे?" लड़की ने शांत स्वर में पूछा।

"जब तुम्हें मेरी बात का भरोसा हो जाएगा कि कोई तुम्हारी जान लेना चाहता है।"

"भरोसा दिलाना जरूरी है क्या?"

"बहुत जरूरी है। मैं बस, तुम्हें बचाना चाहता हूं।"

"तुम अजीब-से नहीं हो क्या?"

"क्यों?"

"मैं तुम्हें जानती नहीं और तुम मुझे बचाने की बात कह रहे हो। कहीं तुम मेरी खूबसूरती पर फिदा तो नहीं हो गए।"

"मैंने तुम्हारी खूबसूरती नहीं देखी। ये बात तुम अपने मुंह से कह रही हो।"

"तो तुमने मुझे अभी तक देखा नहीं?" लड़की कड़वे स्वर में कह उठी।

"देखा।" देवराज चौहान को गिलासों में डालता बोला—"परंतु मेरे दिमाग में एक ही बात है कि तुम्हें यकीन दिला दूं कि तुम्हारी जान खतरे में है। मैं औरतों की इज्जत करता हूं और शादीशुदा हूं।"

"मतलब कि तुम मेरा रेप नहीं करना चाहते?"

comicsmylife.blogspot.in

"ये विचार तुम्हारे दिमाग की उपज है। इसमें जरा भी सच्चाई नहीं।"

"कहीं तुमने सैंडविच या कॉफी में बेहोशी की दवा तो नहीं मिला दी कि मैं बेहोश हो जाऊं और तुम...।"

"तो सैंडविच मत खाओ। कॉफी मत पिओ।" देवराज चौहान बोला—"अपना कॉफी का गिलास उठाओ और ड्राइंग रूम में चलो। भागने की कोशिश मत करना। मैं तुम्हें इस तरह नहीं जाने दूंगा।"

देवराज चौहान ने अपना कॉफी का गिलास और सैंडविच प्लेट उठा ली

लड़की ने देवराज चौहान को देखते गिलास उठाया और किचन से बाहर निकल गई।

दोनों ड्राइंग रूम में पहुंचे।

देवराज चौहान ने सैंडविच की प्लेट सैंटर टेबल पर रखी और एक सैंडविच उठाकर खाता हुआ खिड़की की तरफ बढ़ गया। दूसरे हाथ में कॉफी का गिलास था। खिड़की पर खड़ा होकर बाहर देखने लगा। आसमान में बादल छाने लगे थे। मौसम और भी सुहावना होने लगा था। ठंडी हवा में तेजी का एहसास होने लगा था। समुद्र में वो छोटी सफेद बोट अभी भी घूम रही थी। वो ज्यादा दूर नहीं थी। किनारे से हजार, बारह सौ मीटर दूर होगी।

देवराज चौहान पलटा और खिड़की से टेक लगाकर कॉफी का घूंट भरा।

लड़की कुर्सी पर बैठी उसे ही देख रही थी।

देवराज चौहान ने बचा-खुचा सैंडविच मुंह में डालते हुए कहा।

"कॉफी मत पीना, इसमें बेहोशी की दवा है।"

जवाब में लड़की ने फौरन कॉफी का गिलास उठाकर घूंट भर लिया।

देवराज चौहान ने महसूस किया कि लड़की जिद्दी किस्म की है। जो ठान लेती है, वो ही करती है। उस पर विश्वास नहीं करना तो नहीं करना। बेशक बात कुछ भी हो। ऐसी लगी वो देवराज चौहान को। प्लेट में रखे सारे सैंडविच को खत्म कर चुकी थी। वो भूखी होगी। ये महसूस करके देवराज चौहान ने कहा।

"फ्रिज में काफी कुछ खाने के लिए रखा है। जो पसंद हो ले लो।"

वो चुप रही और खाती रही।

"तुम्हारे विचार से तो तुम्हें अब तक बेहोश हो जाना चाहिए था, क्योंकि खाने-पीने के सामान में बेहोशी की दवा मिली है।"

"तो तुम मेरा रेप नहीं करना चाहते।"

"ये विचार मेरे मन में भी नहीं आया।" देवराज चौहान मुस्कराकर बोला।

"ऐसे मर्द मैंने पहले नहीं देखे। उनकी तो पहली कोशिश ही ये ही होती है कि...।"

"तुम्हारा वास्ता अभी मर्दों से पड़ा नहीं दिखा।"

लड़की ने तीखी निगाहों से देवराज चौहान को देखा।

देवराज चौहान पलटा और पुनः बाहर समुद्र में दौड़ती बोट को देखने लगा।

"ये कॉटेज तुम्हारी है?"

देवराज चौहान ने कॉफी का घूंट भरा और वहां से हटकर, लड़की के सामने कुर्सी पर जा बैठा।

"मेरे दोस्त की है।" देवराज चौहान बोला।

"मतलब कि तुम यहां नहीं रहते।"

"नहीं। कल रात पहली बार मैं यहां आया। आज यहां पर मेरा पहला दिन है।"

"कहीं बाहर से आए हो?"

"मुम्बई से।"

"मुम्बई में ही रहते हो या कहीं और।" लड़की अब कुछ संजीदा लगने लगी थी।

"मुम्बई में रहता हूं।"

"नाम क्या है तुम्हारा?"

"सुरेंद्र पॉल।"

"क्या करते हो?"

"इससे तुम्हें मतलब नहीं होना चाहिए।" देवराज चौहान ने कहा।

लड़की ने कॉफी का घूंट भरा और गम्भीर स्वर में बोली।

"तुम्हारा कहना है कि उस आदमी ने मुझ पर रिवॉल्वर से गोली चलानी चाही परंतु तुमने रिवॉल्वर गिरा दी।"

"तुम्हें कैसे पता कि मैंने रिवॉल्वर गिरा दी। मैंने तो नहीं कहा।"

"मैंने रिवॉल्वर गिरती देखी थी।"

"देखी थी।"

उसने सहमति से सिर हिलाया।

"फिर भी तुम मेरी बात का भरोसा नहीं कर रही कि...।"

"मुझे इस बात का यकीन नहीं कि कोई मेरी जान लेना चाहता है।"

"तुम्हारे खयाल से तब क्या हुआ था, जब तुम साड़ी खरीदकर वहां से बाहर निकलीं?" देवराज चौहान ने पूछा।

"मैं नहीं जानती। मैंने सिर्फ तुम्हें ही देखा पास आते और मैं घबरा गई।"

"तब तुमने किसी को भागते देखा?"

"हां।"

"वो ही तुम पर गोली चलाने वाला था लेकिन मेरे बीच में आने से भाग गया।"

comicsmylife.blogspot.in

"जब उसने रिवॉल्वर निकाली तो तुम्हें डर नहीं लगा मिस्टर सुरेंद्र पाल।" वो गम्भीर थी।
"नहीं।"
"जबकि लोग रिवॉल्वर देखकर ही घबरा जाते हैं।"
देवराज चौहान ने कॉफी का गिलास रखा और जेब से रिवॉल्वर निकालकर उसे दिखाई।
लड़की की आंखें फैल गई। वो बोली।
"तुमने उसकी रिवॉल्वर ले ली।"
"ये मेरी है।"
"तुम्हारी?"
"हां। मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि मुझे रिवॉल्वर से डर क्यों नहीं लगा क्योंकि ये मैं भी रखता हूं।"
लड़की की सांसें तेज-तेज चलने लगीं।
"तुम—तुम भी बदमाश हो?"
"तुम्हारे लिए नहीं।"
"मतलब कि हो।"
"नहीं।" देवराज चौहान रिवॉल्वर जेब में रखता कह उठा—"मैं गलत इंसान होता तो तुम्हें बचाने की चेष्टा न कर रहा होता।"
"क्या मालूम वहां पर जो हुआ हो, वो तुम्हारी ही कोई चाल हो?"
"मैं चाल चलकर तुमसे क्या ले लूंगा। क्या तुम बहुत अमीर हो?"
"नहीं।"
"बेहतर होगा कि मेरा भरोसा कर लो, मैं जो कह रहा हूं वो ही सच है।"
"भरोसा करने की कोशिश तो कर रही हूं।" लड़की ने सोच-भरे स्वर में कहा—"परंतु तुमने जिस तरह मुझे उठाकर कार में डाला, बेहोश किया, यहां ले आए, ये काम कोई साधारण व्यक्ति नहीं कर सकता।"
"मैं साधारण ही हूं और उस वक्त जाने कैसे मुझ में, हिम्मत आ गई थी ये सब करने की।"
लड़की चुप रही।
देवराज चौहान उसे सोचने का मौका देना चाहता था।
"तुमने उसे देखा जो मुझे गोली मारना चाहता था?" लड़की पुनः बोली
"हां।"
"कौन था वो?"
"मेरे लिए तो अजनबी था। मैंने तो उसे पहले नहीं देखा था। वो दो थे। एक को मैंने हमेशा कार के स्टेयरिंग पर ही बैठे देखा। मैंने दो बार उन्हें देखा। पहली बार कार पार्किंग में देखा जब पहली बार उन्होंने तुम्हारा निशाना लिया।"

"तो तुम दुकान की तरफ कैसे आ गए?"
"समझो कि उनके पीछे ही वहां पहुंचा। मुझे दोबारा वहां देखकर उसने मुझे धमकी दी कि मैं वहां से चला जाऊं, वरना वो मुझे गोली मार देगा। मैंने उसे झूठ ही कहा कि मैं पुलिस वाला हूं तो वो मुझे लाख रुपया देने का लालच देने लगा कहता था कार में दस लाख पड़े हैं, उसमें से एक लाख मुझे दे देगा। पहले उसे गोली मारने दूं। तुम्हें मारने के लिए उसने ताजे-ताजे ही दस लाख किसी से लिए थे।" देवराज चौहान ने कहा।
"तो तुमने उसे पहले नहीं देखा?"
"नहीं। सूरत शहर में तो मैं वैसे भी किसी को नहीं जानता। परंतु इस बारे में तुम सोच सकती हो कि ऐसा कौन है जो तुम्हें मारना चाहता है। सोचोगी तो तुम्हें पता चल जाएगा।"
"कोई नहीं है।"
"सोचो। जल्दी मत करो। कोई तो है ही जो तुम्हें मारना चाहता है
लड़की चुप हो गई। चेहरे पर सोचें दिखने लगीं।
देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई और उठकर कमरे में टहलने लगा। फिर खुली खिड़की पर पहुंचकर बाहर समुद्र में देखा। वो छोटी बोट अभी भी समुद्र में सामने ही चक्कर काटे जा रही थी। बाहर मौसम सुहावना हो गया था। आसमान में बादल छा गए थे। कहीं-कहीं पर से बादलों की गर्जन भी सुनाई दे जाती थी।
उस बोट को देखते देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ गईं।
देर से समुद्र के किनारे की तरफ बोट का चक्कर काटे जाना अजीब लगा उसे। खिड़की पर खड़ा वो बोट को ही देखता रहा कि एकाएक पलटा और दूसरे कमरे में पहुंचा। वहां लकड़ी की पुरानी अलमारी में उसने दूरबीन देखी थी। अलमारी खोली और दूरबीन निकालकर वापस कमरे में पहुंचा।
लड़की अपनी जगह पर बैठी थी।
बाहर की ठंडी हवा खिड़की से कमरे में आने लगी थी।
दूरबीन पर धूल जमी हुई थी कि उसे सालों से इस्तेमाल न किया गया हो। देवराज चौहान दूरबीन को साफ करने लगा। उसे देखती वो लड़की कह उठी।
"मौसम अच्छा हो गया है। मैं बाहर घूमना चाहती हूं।"
"तुमने सोचा कि कौन तुम्हारी जान लेना चाहता है।"
"कुछ समझ नहीं पा रही। बहुत उलझनें मेरे सामने आ रही हैं।"
"कैसी उलझनें?"
जवाब में वो चुप कर गई।
दूरबीन साफ करके देवराज चौहान खिड़की पर पहुंचा और उसे आंखों

comicsmylife.blogspot.in

पर लगाकर बोट का फोकस लेने लगा। दूरबीन पावर फुल थी। सरबत सिंह के बाप ने ही अपने शौक के तौर पर इसे लिया होगा। इसके सहारे वो समुद्र में दूर तक जरूर देखता होगा। बटन घुमाकर समुद्र में दौड़ती बोट का फोकस ले लिया।

अब बोट इतनी स्पष्ट दिखने लगी जैसे कि दस कदम दूर हो।

बोट में दो लोग बैठे थे।

उन दोनों के चेहरों पर नजर पड़ते ही देवराज चौहान बुरी तरह चौंका

वो दोनों ही थे जो इस लड़की की जान के पीछे लगे थे। एक कार चलाने वाला और दूसरा गोली चलाने वाला। कार चलाने वाला लड़का अब बोट चला रहा था और दूसरा उसकी बगल में बैठा था। उसकी निगाह बार-बार इसी कॉटेज की तरफ उठ रही थी। देवराज चौहान ने आंखों से दूरबीन हटाई और पलटकर बोला।

"वो यहां भी आ पहुंचे।"

"कौन?" लड़की के होंठों से निकला।

"तुम्हारी जान के पीछे जो लोग पड़े हैं, मैं उनकी बात कर रहा हूं। मेरे पास आओ।"

लड़की तुरंत उठकर पास आ गई।

"तुम दूरबीन आंखों पर लगाकर, देखो, जो बोट समुद्र में चक्कर लगा रही है। उनके चेहरे तुम्हें साफ दिखेंगे। तुमने उन्हें पहचानना है कि उन्हें तुमने पहले कहां देखा है।" देवराज चौहान बोला।

"हटो तो।" दूरबीन थामती लड़की ने कहा।

देवराज चौहान खिड़की से हट गया।

लड़की वहां खड़ी हुई और दूरबीन आंखों में लगाकर, समुद्र में घूमती बोट को देखने लगी।

करीब दो मिनट तक देखती रही फिर आंखों से दूरबीन हटाते कह उठी।

"मैंने इन दोनों को पहले कभी नहीं देखा।"

"ध्यान से देखो, शायद...।"

"देख लिया है। मैंने इन दोनों को पहले कभी नहीं देखा।" लड़की ने दृढ़ स्वर में कहा।

देवराज चौहान ने खिड़की से बोट की तरफ देखते हुए कहा।

"इन दोनों को किसी ने दस लाख देकर, तुम्हारी हत्या का सौदा किया है। लेकिन मैंने तो सोचा था कि मैं इन लोगों को पीछे छोड़ आया हूं, परंतु ये मेरे पीछे थे। मुझे यहां पर आते देख लिया था।" देवराज चौहान के होंठ भिंच गए।

"तुम्हें पता नहीं लगा?"

"नहीं। ये चालाक लोग हैं। जबकि मैंने इन्हें कम आंका था।" देवराज चौहान ने लड़की को देखा।

"कहीं ये सब तुम्हारा ड्रामा तो नहीं?"

देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं। वो लड़की को देखता रह गया।

"मेरा ड्रामा?" उसके होंठों से निकला।

"ये तुम्हारे ही आदमी हों और अपनी चाल के तहत मुझे यकीन दिलाना चाहते हो कि...।"

"कैसी चाल?"

"तुम्हें पता होगा।"

"बेवकूफ अब तक तुम्हें यकीन आ जाना चाहिए था कि मैं जो कह रहा हूं वो सच है।"

लड़की ने कुछ नहीं कहा और खिड़की से बाहर समुद्र में चक्कर लगाती बोट को देखने लगी। उसके चेहरे पर गम्भीरता नजर आ रही थी जबकि देवराज चौहान उसे घूरे जा रहा था।

"आओ।" देवराज चौहान ने एकाएक उसकी कलाई पकड़ी और दरवाजे की तरफ बढ़ा।

"कहां?" उसके साथ चलती लड़की ने कहा।

"मौसम सुहावना हो गया है। तुम बाहर घूमना चाहती थीं न?"

"ले-लेकिन बाहर वो हैं, जिन्हें तुम कहते हो कि वो मेरी जान लेना चाहते हैं।"

"ये तो और भी अच्छी बात है।" देवराज चौहान ने दरवाजा खोला।

तेज ठंडी हवाएं उनके जिस्म से आ टकराईं।

"अच्छी बात है?"

"तुम्हें यकीन आ जाएगा, जब वो तुम पर गोली चलाएंगे।" देवराज चौहान ने बाहर निकलते हुए कहा। उसने लड़की की बांह छोड़ दी थी। वो भी बाहर आ गई थी। आसमान में रह-रहकर बादल गरज रहे थे।

मौसम सच में शानदार था।

दोनों की निगाह समुद्र में चक्कर काटती बोट पर थी।

तेज हवा के संग समुद्र की लहरें भी उछलने लगी थीं।

"उन्होंने अगर मुझ पर गोली चलाई तो मैं मर भी सकती हूं।" लड़की परेशानी से कह उठी।

"कम-से-कम तुम्हें मेरी बात का यकीन तो आ जाएगा कि कोई तुम्हें मारना चाहता है।"

देवराज चौहान ने पुनः उसकी कलाई पकड़ी और समुद्र किनारे की तरफ बढ़ गया।

comicsmylife.blogspot.in

"तुम गलत कर रहे हो, वो मुझे गोली मार देंगे।"

"पर तुम्हें तो भरोसा नहीं कि कोई तुम्हारी जान लेना चाहता है।"

"फिर भी तुम ऐसा कह रहे हो तो खतरा है ही।" लड़की अजीब-सी स्थिति में फंसी महसूस कर रही थी—"वापस चलो।"

परंतु देवराज चौहान उसकी कलाई पकड़े समुद्र किनारे की तरफ बढ़ता रहा। हवा के संग रेत भी उड़ रही थी। आंखों में पड़ रही थी।

"वो मुझे मार देंगे। ये तुम क्या कर रहे हो?"

"मैं तुम्हें यकीन दिलाने की चेष्टा कर रहा हूं।"

"इस तरह यकीन दिलाते हैं कि मैं मारी जाऊं। तुम क्या सच पागल हो।"

"वो देखो, अब बोट ने चक्कर काटने छोड़ दिए हैं। वो एक जगह पानी में रुक रही है।" देवराज चौहान बोला।

युवती ने उस तरफ देखा।

बोट पानी में एक जगह ठहर गई थी और पानी के साथ हिल रही थी।

"वे रुक क्यों गए?" लड़की ने पूछा।

वे दोनों भी लगभग किनारे पर आ पहुंचे थे। पांवों की रेत अब गीली थी। वे रुक गए।

"तुमने बताया नहीं कि वे रुक क्यों गए?"

"उनके पास पावरफुल गन है। मेरे खयाल में वे वहीं से तुम्हारा निशाना लेंगे।" देवराज चौहान ने कहा।

"ये क्या कह रहे हो, अगर ऐसा है तो मुझे यहां लेकर क्यों खड़े...।"

इसी पल मोटी-मोटी बूंदों के रूप में बरसात होने लगी।

बरसात भी ऐसी तेज कि सिर्फ दस सेकंड में उन्हें भिगो दिया। मूसलाधार बारिश शुरू हो गई थी। ऐसी बरसात कि पंद्रह कदम दूर देखना भी सम्भव नहीं हो पा रहा था। समुद्र में वो बोट धुंधली-सी दिखने लगी थी तो कभी-कभी वो दिखती भी नहीं थी। समुद्र के पानी से बरसात की मोटी बूंदें टकराने का शोर उठ खड़ा हुआ था।

देवराज चौहान ने लड़की की बांह पकड़कर चिल्लाते हुए कहा।

"कॉटेज की तरफ चलो।"

दोनों तेजी से कॉटेज की तरफ बढ़ गए। पांव रेत में धंस रहे थे।

कॉटेज के दरवाजे तक पहुंचकर दोनों रुके। बरसात में बुरी तरह गीले हो चुके थे। देवराज चौहान के जूतों तक में पानी भर गया था। लड़की भी पूरी तरह भीग चुकी थी।

"बहुत तेज बरसात शुरू हो गई।" लड़की ने परेशान स्वर में कहा—"मेरा सारा मेकअप धुल गया।"

"मेरे खयाल में आज तुम दूसरी बार बची हो।" देवराज चौहान बोला—"बरसात ने तुम्हें बचा लिया।"

"वो कैसे?"

"उन्होंने यकीनन गन से तुम्हारा निशाना लेना था और तुम बच न पातीं।"

"ऐसा था तो तुम मुझे वहां लेकर क्यों गए?"

"तुम्हें यकीन दिलाने के लिए।"

"मैं मर जाती तो यकीन का क्या फायदा।" लड़की ने तीखे स्वर में कहा।

"तुम्हें मेरी बात पर भरोसा करना चाहिए कि कोई तुम्हारी जान लेने के लिए हत्यारा भेज चुका है।"

"पता नहीं तुम क्यों मेरे पीछे पड़ गए।"

"तुम्हें बचा रहा हूं और तुम मेरी बात का विश्वास नहीं कर रही। ये तो सरासर ज्यादती है।"

"भीतर चलो अब। मैं पहनूंगी क्या। मेरे पास कपड़े...।"

"जो साड़ी खरीदी थी वो पहन लेना।"

"ब्लाऊज नहीं है। वो नहीं पहन सकती।"

"तो मेरे कपड़े पहन लो।" देवराज चौहान दरवाजे पर से कॉटेज में प्रवेश कर गया।

लड़की भी भीतर आई।

"मेरे साथ कोई गड़बड़ तो नहीं करोगे?"

"बकवास मत करो। ऐसा कहकर तुम सामने वाले को कुछ करने पर उक्सा रही हो। उसे याद दिला रही हो कि वो...।"

"तुम मुझे जाने क्यों नहीं देते?" लड़की झल्लाकर कह उठी।

"मैं नहीं चाहता कि यहां से जाकर तुम अपनी जान गंवाओ। हत्यारे यहां तक आ पहुंचे हैं।"

"तुम मुझे मम्मा के पास छोड़ दो। फिर मुझे कोई नहीं मार सकेगा।"

"बेवकूफ, हत्यारे तुम्हारी ताक में बाहर घूम रहे हैं।"

देवराज चौहान ने अपने बैग से पैंट-कमीज निकालकर उसे दी।

"उस कमरे में जाकर पहन लो और दरवाजा भीतर से बंद किया तो मैं उसी वक्त दरवाजा तोड़ दूंगा।"

"तुम कमरे में मत आना।" उसने कपड़े उठाए और पीछे के कमरे की तरफ बढ़ गई।

"खिड़की से भागने की गलती मत करना, हत्यारे तुम्हारी ताक में बाहर मौजूद हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

comicsmylife.blogspot.in

▭ ▭

बरसात थमने के साथ ही अंधेरा फैल गया था।

कॉटेज की लाइट जल उठी थी। लड़की ने जैसे-तैसे देवराज चौहान की पैंट को कमर पर बांध रखा था। ऊपर उसने कमीज पहनी थी। अपनी पैंट और स्कीवी उसने सूखने के लिए पीछे वाले कमरे में डाल दी थीं। बिखरे गीले बालों को वो ड्राइंग रूम में कुर्सी पर बैठी सुखाने की चेष्टा में थी। दीवान पर लेटा देवराज चौहान सिग्रेट के कश ले रहा था। रह-रहकर उनके कानों में आसमान से उठती बिजली की गड़गड़ाहट पड़ जाती थी। कॉटेज की सारी खिड़कियां उन्होंने बंद कर रखी थीं।

तभी दूसरे कमरे में पड़ा लड़की का फोन बज उठा।

"ओह, मम्मा का फोन होगा।" कहने के साथ ही वो कुर्सी से उठी और दूसरे कमरे की तरफ दौड़ी।

"यहीं आकर बात करना, ताकि मैं भी सुन सकूं।" देवराज चौहान ने कहा।

लड़की फौरन ही फोन लिए वापस आ गई। वो बात कर रही थी।

"मैं ठीक हूं मम्मा।...मैं नहीं जानती मैं कहां हूं, पर ये समुद्र का किनारा...पुलिस को ढूंढ़ने दो मम्मा, देर-सबेर में मुझे ढूंढ़ ही लेगी...मेरे को नहीं मालूम कि ये क्या चाहता है, इतना ही कहता है कि मेरी जान को खतरा है, इसलिए तुम्हें उठा लाया। कहता है कि बाजार में किसी ने मुझ पर गोली भी चलाई थी, इसकी बातें मेरी समझ से बाहर हैं।...अभी ये मुझे जाने नहीं दे रहा...नहीं, अभी तक तो कुछ नहीं किया।...मैं हिम्मत रखे हूं मम्मा। लगता नहीं कि ये रात को मुझे जाने देगा...तुम फिक्र मत करो, मैं इसे कुछ नहीं करने दूंगी।"

फोन की बातचीत खत्म हो गई।

लड़की ने फोन टेबल पर रखा और बालों को हाथों से झटक कर पीछे किया।

"नाम क्या है तुम्हारा?" देवराज चौहान ने पूछा।

"क्यों?"

"तुम्हें किस नाम से पुकारूं?"

"मुझे किसी नाम से बुलाने की जरूरत नहीं है। मुझे जाने दो। मैं अपने घर जाना चाहती हूं।"

"वो हत्यारे, हो सकता है कॉटेज के आस-पास ही घूम रहे हों।" देवराज चौहान ने कहा।

लड़की ने होंठ भींच लिए।

"तुम उस खतरे को नहीं देख पा रही, जो मैं देख रहा हूं।"

"मुझे लगता है ये सब तुम्हारी चाल है सुरेंद्र पाल साहब। पता नहीं तुम मुझसे क्या चाहते हो।"

"अगर बरसात न आती और बोट से वो तुम्हारा निशाना लेकर गोली चला देते तो इस वक्त हालात कुछ और होते।"

"क्या मतलब है तुम्हारा?"

"तब तुम मर भी सकती थी।"

"तभी मुझे बाहर लेकर गए थे कि वे गोली चलाएं और मैं मर जाऊं तुम्हें मेरी इतनी चिंता होती तो मुझे कॉटेज के बाहर लेकर ही नहीं जाते। तभी तो कह रही हूं कि मुझे तुम्हारी बात पर यकीन नहीं...।"

"शायद तुम बच भी जाती। निशाना चूक जाता गोली चलाने वाले का गोली तुम्हारे कंधे या बांह में भी लग सकती थी और मेरी बात का तुम्हें विश्वास आ जाता कि कोई तुम्हारी जान ले लेना चाहता...।"

"वाह, क्या अंदाज है विश्वास दिलाने का।" लड़की ने कड़वे स्वर में कहा।

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।

"मान लो मिस्टर सुरेंद्र पाल। मुझे यकीन आ जाता है कि कोई मेरी जान लेना चाहता है, तब तुम क्या करोगे?"

"ये तुम पर निर्भर रहेगा।"

"वो कैसे?"

"ये बाद की बात है। पहले यकीन आ लेने दो।"

"समझो यकीन आ गया।"

"ये समझने वाला मामला नहीं है। गम्भीर मामला है और तुम अभी तक इस बात को हल्के से ले रही हो।"

"मैं कहती हूं मुझे यकीन आ गया कि...।"

"जब तुम्हें यकीन आएगा तो मुझे पता चल जाएगा।"

"तुमने कहा था कि ऐसा होने पर मुझे जाने दोगे।"

"हां।"

"और अगर उसके बाद किसी ने मेरी जान ले ली तो?"

"मैंने पहले ही कहा कि यकीन आ जाने की स्थिति में तुम पर ही सब कुछ निर्भर रहेगा कि आगे क्या करना है। तब कम-से-कम मैं तुम्हें जाने से नहीं रोकूंगा और अगर...।"

देवराज चौहान का मोबाइल बज उठा।

"हैलो।" देवराज चौहान ने बात की।

"आज वापस नहीं आ रहे क्या?" जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

"नहीं। आज की वापसी नहीं है। कल या परसों देखूंगा।" देवराज चौहान ने कहा।

comicsmylife.blogspot.in

"सरबत सिंह के पहचान वाले की योजना सुन ली क्या?" उधर से जगमोहन ने पूछा।
"हां। सब बकवास था। मैंने उसे मना कर दिया।"
"तो अब क्यों रुके हो सूरत में?"
"यूं ही। किसी लड़की की जान खतरे में है। पता चला तो उसे बचाने की चेष्टा में हूं।"
"ज्यादा पंगे वाला काम है?"
"खास नहीं। कल या परसों आ जाऊंगा।" कहकर देवराज चौहान ने फोन बंद कर दिया।
"किसका फोन था?" लड़की ने पूछा।
"मेरे दोस्त का।"
"मुम्बई से?"
"हां।"
"क्या कह रहा था?"
"तुम्हें जानने की क्या जरूरत है कि वो क्या कह रहा था। तुम्हें अपनी चिंता करनी चाहिए। तुम मेरी बात मानने को तैयार नहीं तो ऐसे में मैं तुम्हारे साथ ज्यादा नहीं रह सकता।" देवराज चौहान बोला।
"ये तो खुशी की बात है। तुम एक इशारा करो, मैं अभी यहां से चली जाती हूं।"
देवराज चौहान ने लड़की को घूरा।
लड़की ने गहरी सांस लेकर गीले बालों को झटका दिया।
"आज की रात यहां बिता लो। कल मैं तुम्हें तुम्हारे घर तक छोड़ दूंगा।" देवराज चौहान ने कहा।
"सच?" लड़की के चेहरे पर खुशी नाची।
देवराज चौहान उसे घूरता रहा।
"तुम्हारा क्या भरोसा कि सुबह मुझे जाने न दो।"
"सौ प्रतिशत कल मैं तुम्हें तुम्हारे घर तक छोड़ दूंगा। मैं और तुम्हारा साथ नहीं दे सकता। मैं तुम्हारा भला कर रहा हूं। तुम्हें बचाने की चेष्टा कर रहा हूं लेकिन मेरी बात को हल्के में ले रही हो। मेरा दावा है कि जब मैं तुम्हें छोड़कर जाऊंगा तो 24 घंटों के भीतर कोई तुम्हारी हत्या कर देगा।"
"बकवास। मेरा कोई दुश्मन है ही नहीं।" लड़की ने विश्वास-भरे स्वर में कहा।
"आज बरसात न आती तो ये बात जरूर स्पष्ट हो जाती।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"तुम गर्भवती हो, ऐसे में तुम्हें मेरी बात

को और भी ज्यादा गम्भीरता से लेना चाहिए था। तुम अपने पति को बुला लो यहां।"
"क्यों?"
"वो तुम्हें यहां से ले जाएगा। तुम अभी यहां से जा सकोगी।"
लड़की के होंठ भिंच गए।
कुछ पल चुप्पी के बाद लड़की ने कहा।
"तुम कल सुबह ही मुझे मेरी मां के घर छोड़ देना।"
"अपने पति को बुलाने पर क्यों हिचक रही हो?" देवराज चौहान बोला।
"तुम्हें इससे क्या।" लड़की ने गम्भीर स्वर में कहा—"इस बारे में मैं तुमसे बात नहीं करना चाहती।"
देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।
लड़की वहीं कुर्सी पर बैठी रही।
"खाने को क्या है?" लड़की ने पूछा।
"जो कुछ है। फ्रिज में है या किचन में है। खाकर रात बिताओ।"
"मैंने सोना कहां है?"
"पीछे वाले बेडरूम में। अगर रात को खिड़की के रास्ते भागना चाहो तो भाग सकती हो। जो इंसान अपना भला न चाहे तो दूसरा उसका भला कब तक कर सकता है। तुम्हारे मरने का वक्त आ चुका है तो तुम्हें कोई भी बचा नहीं सकता।"
"ये मुझे आशीर्वाद दे रहे हो या गालियां?" लड़की तीखे स्वर में बोली।
"अपना अच्छा-बुरा तुम बेहतर समझती हो।"
"मैं यहां से जाना चाहती हूं, परंतु रात के अंधेरे में नहीं। शायद सच मुझे खतरा हो।"
"कल सुबह तुम जहां कहोगी, वहीं छोड़ दूंगा।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

▭ ▭

आधी रात का वक्त था।
देवराज चौहान ड्राइंग रूम में दीवान पर सोया हुआ था। वहां पर नाइट बल्ब मध्यम रोशनी फैला रहा था।
कमरे की हर चीज स्पष्ट नजर आ रही थी। भीतर भी और बाहर भी सन्नाटा छाया हुआ था। समुद्र की उछलती लहरों की मध्यम-सी आवाजें कभी-कभार कानों में पड़ जती थीं।
तभी कमरे से दबे पांव लड़की बाहर निकली। उसने जींस की पैंट और स्कीवी पहन रखी थी जो कि शाम को बरसात में गीली हो गई थी। अभी

comicsmylife.blogspot.in

कपड़े सूखे नहीं थे, लेकिन वो पहन चुकी थी। जूते हाथ में पकड़े हुए थे कि उसके चलने का शोर न उठे। उसने ठिठककर दीवान पर सोये देवराज चौहान को देखा।

कई पलों तक देखती रही।

जब पूरा यकीन हो गया कि वो गहरी नींद में है तो दबे पांव आगे बढ़ लगी। कुर्सियों और टेबल से बचती वो दरवाजे तक जा पहुंची और पलटकर देवराज चौहान को देखा। वो सोया हुआ था।

फिर वो धीरे-धीरे बे-आवाज दरवाजे की सिटकनी खोलने लगी।

जल्दी ही इसमें वो सफल हो गई तो बहुत सावधानी से दरवाजे के बीच में लगी कुंडी खोलने लगी। इस बात का पूरा ध्यान रख रही थी कि आवाज जरा भी न उठे, जबकि दो बार कुंडी खुलने की चीं-चीं की आवाज उठी थी तो वो ठिठक गई थी।

आखिरकार उसने कुंडी खोल ली। खींचा तो दरवाजे के दोनों पल्ले बे-आवाज खुल गए। उसी पल उसने पलटकर दीवान पर सोये देवराज चौहान पर निगाह मारी फिर जूते हाथ में थामे खुले दरवाजे से बाहर निकल गई।

यही वो वक्त था जब देवराज चौहान ने आंखें खोल लीं। चंद पलों तक वो खुले दरवाजे को देखता रहा फिर उठ बैठा। सिग्रेट सुलगाकर कश लिया और खड़ा होते, दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

देवराज चौहान ने दरवाजा बंद किया और ड्राइंग रूम से निकलकर उस कमरे में पहुंचा जहां लड़की सोई थी। वहां कोई नहीं था। उसके जो कपड़े लड़की ने पहने थे, वो फर्श पर बिखरे पड़े थे। कश लेता देवराज चौहान वापस ड्राइंग रूम में पहुंचा और दीवान पर आ बैठा। लड़की चली गई थी। शायद उसे भरोसा नहीं था कि वो उसे कल छोड़ देगा। इसलिए रात में मौका पाते ही फरार हो गई।

देवराज चौहान के चेहरे पर गम्भीरता दिखने लगी।

वो जानता था कि लड़की की जान खतरे में है और लाख समझाने पर भी उसने उसकी किसी बात का यकीन नहीं किया था। अगर जरा भी यकीन किया होता तो, कम-से-कम वो रात में इस तरह बाहर न जाती। देवराज चौहान ने सिग्रेट को बुझाकर एक तरफ फेंका और दीवान पर लेट गया।

मन में सुबह उठते ही मुम्बई जाने का प्रोग्राम बना लिया था। सूरत में अब उसे कोई काम नहीं था। लड़की की जान न जाए, इस वजह से वो रुक गया था।

▭ ▭

रात का आखिरी वक्त चल रहा था कि जोरों से दरवाजा भिड़भिड़ाया गया।

देवराज चौहान नींद में था कि तुरंत हड़बड़ाकर उठ गया।

पुनः तूफान की भांति दरवाजा धाड़-धाड़ खटखटाया गया और उसी लड़की की आवाज आई।

"दरवाजा खोलो सुरेंद्र पाल। ये मैं हूं। मेरी जान खतरे में है। जल्दी दरवाजा खोलो।"

देवराज चौहान ने फुर्ती से तकिए के नीचे से रिवॉल्वर निकाली और दरवाजे के पास पहुंचकर दरवाजा खोल दिया। उसके होंठ भिंचे हुए थे। आंखें सिकुड़ी थीं। वो सतर्क था।

सामने लड़की बदहवास-सी खड़ी थी। उसके बाल बिखरे हुए थे। गाल पर खरोंच के निशान थे जैसे कहीं गिर गई हो। उसकी स्कीवी पर भी रेत लगी हुई थी। वो डरी हुई थी।

दरवाजा खुलते ही उसने तूफान की भांति भीतर प्रवेश किया औ... घबराए स्वर में बोली।

"वो—वो मेरे पीछे है। उन्होंने मुझ पर गोली भी चलाई। वो मुझे मारना चाहते हैं। मुझे बचा लो सुरेंद्र पाल।" कहने के साथ ही वो बुरे हाल की हालत में पीछे वाले कमरे की तरफ दौड़ती चली गई और कमरे में जाकर दरवाजा बंद कर लिया।

देवराज चौहान के दांत भिंच गए। वो दरवाजे को बंद करने जा रहा था कि इसी पल बाहर के अंधेरे से जूते की ठोकर आई और उसके रिवॉल्वर वाले हाथ पर लगी। ये सब एकदम, अचानक हुआ।

रिवॉल्वर हाथ से निकलकर कमरे में कहीं गिर गई।

तभी बाहर से एक शरीर हवा में लहराता आया और उससे टकराता, उसे साथ लेता, नीचे जा गिरा।

देवराज चौहान के होंठों से कराह निकल गई। कंधा जोरों से फर्श से जा टकराया था। इस बात की परवाह न करते हुए वो तुरंत संभला। उठने की कोशिश की। इस दौरान उसने देख लिया था कि उस पर हमला करने वाला, वो ही लड़का है जो कार के स्टेयरिंग को थपथपाता, म्यूजिक सुनता रहता था। जो बोट चला रहा था।

वो लड़का बहुत फुर्तीला था। इससे पहले कि देवराज चौहान उठ पाता, लड़का संभला और बैठे-ही-बैठे बंदर की तरह छलांग लगाकर उससे आ टकराया। दोनों नीचे लुढ़क गए और गुत्थम-गुत्था होकर उलझ गए।

तभी दरवाजे पर वो आदमी रिवॉल्वर थामे खड़ा दिखा जो कि लड़की

comicsmylife.blogspot.in

को खत्म करने के लिए दौड़ा फिर रहा था। जिसने देवराज चौहान ... कहा था कि उसने लड़की को मारने के दस लाख लिए हैं। उसके हाथ में दबी रिवॉल्वर की नाल पर साइलैंसर चढ़ा हुआ था। उसके चेहरे पर खतरनाक भाव दिख रहे थे। एक निगाह उसने लड़के और देवराज चौहान को उलझे देखा फिर भीतर आ गया और नजरें लड़की को ढूंढ़ने लगीं। अपने साथी और देवराज चौहान की उसे जरा भी परवाह नहीं थी जैसे कि उसे पूरा भरोसा हो कि उसका साथी देवराज चौहान से निबट लेगा।

हाथ में रिवॉल्वर थामे उसने ड्राइंग रूम पार किया और कॉटेज के भीतरी हिस्सों की तरफ बढ़ा कि सामने का बंद दरवाजा देखकर ठिठका फिर पास पहुंचकर दरवाजा खटखटाया।

भीतर से कोई आवाज नहीं आई।

"दरवाजा खोलो। मैं जानता हूं तुम भीतर हो।" उसने कठोर स्वर में कहा—"तुम बच नहीं सकती।"

"मुझे क्यों मारना चाहते हो?" भीतर से लड़की की घबराई आवाज आई—"मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है।"

"मेरा काम ही लोगों की हत्याएं करना है। लोग मुझे पैसा देते हैं और बता देते हैं, कि किसे मारना...।"

"तो क्या मेरी जान लेने के लिए भी तुम्हें पैसा दिया।" भीतर से लड़की की आवाज आई।

"हां। बोला कि कामनी को खत्म करना है। साथ में तुम्हारी तस्वीर भी दी।" वो दांत भींचे कहे जा रहा था—"दरवाजा खोल दो वरना मैं इसे आसानी से तोड़ दूंगा। ये कमजोर है।"

"कितना पैसा दिया?"

"दस लाख। तुम्हें इसने नहीं बताया, जो तुम्हारे साथ है। मेरी इससे बात हुई थी।"

लड़की की कोई आवाज नहीं आई।

"वो कौन है जो मेरी जान लेना...।"

"फालतू के सवाल मत करो। दरवाजा खोलो।" वो गुर्राया।

"तुम मुझे नहीं मार सकते।" लड़की की तीखी आवाज भीतर आई—"सुरेंद्र पाल कहां है?"

"सुरेंद्र पाल कौन?"

"जो इस कॉटेज में मेरे साथ...।"

"मेरे साथी का वो मुकाबला कर रहा है। तुम दरवाजा नहीं खोलती तो मैं अभी इसे तोड़ता हूं।" कहने के साथ ही उसने कंधे की जोरदार ठोकर दरवाजे पर मारी।

दरवाजा हिलकर रह गया।

उधर देवराज चौहान ने महसूस कर लिया था कि लड़का बहुत फुर्तीला है। लड़ने की कला में भी तेज है। उसे जरा भी मौका नहीं दे रहा था कि वो संभल सके। तभी देवराज चौहान के हाथ में उसके सिर के बाल आ गए। ऐसा होते ही उसने तेजी से लड़के का सिर फर्श पर टकरा दिया।

लड़के के होंठों से चीख निकली।

देवराज चौहान ने इसी प्रकार पुनः उसका सिर फर्श पर मारा

लड़का बेदम होने लगा।

मौका मिलते ही देवराज चौहान फुर्ती से उठा और उस व्यक्ति की तरफ दौड़ा जो कि दरवाजा तोड़ रहा था और दरवाजा टूटने ही जा रहा था। उसे करीब आता पाकर वो फुर्ती से घूमा कि गोली उस पर चला सके।

परंतु तब तक देवराज चौहान उसके पास पहुंच गया था।

देवराज चौहान ने उसकी रिवॉल्वर वाली कलाई पकड़ी और घुटने की चोट उसके पेट में दे मारी।

उसके होंठों से तीव्र कराह निकली और वो दीवार से जा टकराया।

देवराज चौहान ने जोरों का घूंसा उसके पेट में मारा तो वो चीख उठा।

देवराज चौहान ने उसके रिवॉल्वर वाले हाथ पर जोर से चोट की तो रिवॉल्वर उसके हाथ से निकलकर नीचे जा गिरी तो देवराज चौहान ने जोरों का घूंसा उसके चेहरे पर मारा। वो पुनः चीखा। तभी अपने पीछे से आहट मिली।

देवराज चौहान तेजी से पलटा।

पीछे से वो ही लड़का आ गया था। इस बार उसके हाथ में चाकू था। देवराज चौहान पूरी तरह घूम भी नहीं पाया था कि चाकू चल चुका था जो कि उसकी बांह में आ धंसा। तभी देवराज चौहान ने पैर की जबर्दस्त ठोकर उसकी टांगों के बीच मारी तो दोनों हाथ वहां रखकर, चीखता हुआ, नीचे जा लुढ़का।

देवराज चौहान पुनः वापस पलटा कि तभी उस व्यक्ति ने उसे जोरों का धक्का दिया।

देवराज चौहान बुरी तरह लड़खड़ाया और पीछे की तरफ जा गिरा।

परंतु अब उसने देवराज चौहान पर झपटने की अपेक्षा बाहर की तरफ दौड़ लगा दी। लड़का जो नीचे गिरा था, वो भी उठकर बाहर की तरफ भागा और देखते-ही-देखते दोनों बाहर निकल गए।

देवराज चौहान के होंठ भिंचे हुए थे। आंखों में पीड़ा के भाव थे। बाईं बांह में अभी भी चाकू धंसा हुआ था, परंतु वो ज्यादा गहराई तक न जा सका था। देवराज चौहान खड़ा हुआ और चाकू की मूठ पकड़कर झटके से उसे

comicsmylife.blogspot.in

बाहर खींच लिया। पीड़ा की तेज लहर उठी फिर दर्द सामान्य होकर उठने लगा। देवराज चौहान दरवाजे की तरफ बढ़ा। चाकू को रास्ते में पड़ने वाले सैंटर टेबल पर रख दिया। खुले दरवाजे से बाहर आकर अंधेरे में हर तरफ नजर मारी। परंतु उन दोनों में से कोई न दिखा। आज काली रात थी। आकाश में बादल मंडरा रहे थे। चंद्रमा बादलों की ओट में छिपा हुआ था।

वापस आकर देवराज चौहान ने दरवाजा भीतर से बंद किया।

बांह से थोड़ा-थोड़ा खून निकल रहा था।

वो वापस कमरे के दरवाजे पर पहुंचा और दरवाजा थपथपाकर बोला।

"तुम ठीक हो?"

"ह-हां।" भीतर से लड़की की सरसराती आवाज आई।

"वो चले गए हैं। अब तुम बाहर आ सकती हो।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने नीचे झुककर वहां पड़ी रिवॉल्वर उठा ली। जिस पर साइलैंसर लगा हुआ था। जो कि हमला करने वाले आदमी की थी।

देवराज चौहान ने रिवॉल्वर की नाल को सूंघा तो बारूद की स्मैल आई। स्पष्ट था कि कुछ देर पहले इस रिवॉल्वर से गोली चलाई गई है। उसने सैंटर टेबल पर रिवॉल्वर रखी और अपनी कमीज उतारी। कमीज को फाड़कर पट्टी का रूप दिया और अपनी जख्मी बांह पर बांधने लगा।

लड़की दरवाजा खोलकर बाहर निकली।

वो घबराई हुई थी।

पट्टी बांधते देवराज चौहान ने उसे देखा।

"ओह, तुम्हें क्या हुआ?" वो फौरन पास आई।

देवराज चौहान के होंठ भिंचे हुए थे। चेहरा कठोर था।

वो पट्टी बांधने लगी।

"वो गए?" हांफते हुए लड़की ने पूछा।

"तुम्हें दिख नहीं रहा।" देवराज चौहान का स्वर तीखा था

"बांह पर चोट कैसे लगी?"

"चाकू से।"

"ओह। मेरी वजह से तुम्हें चोट आई।" लड़की के चेहरे पर अफसोस के भाव उभरे।

"ये नौबत न आती अगर तुम इस तरह बाहर जाने की बेवकूफी न करती।" देवराज चौहान का स्वर सख्त था।

"सच में, सब कुछ मेरी बेवकूफी की वजह से हुआ। मैंने तुम पर भरोसा नहीं किया।"

पट्टी बंधवाने के बाद देवराज चौहान कमरे में अपनी रिवॉल्वर ढूंढने लगा।

रिवॉल्वर जल्दी मिल गई। उसे उसने टेबल पर रख दिया और लुढ़की पड़ी दो कुर्सियों को सीधा करके एक पर बैठ गया और लड़की को देखा।

लड़की डरी हुई थी।

"तु-तुम्हारी बांह की चोट ज्यादा गहरी तो नहीं?" लड़की सूखे होंठों पर जीभ फेरकर बोली।

"मेरी फिक्र मत करो।" देवराज चौहान ने सख्त स्वर में कहा—"गई क्यों यहां से?"

"मैंने सोचा कि कहीं कल तुम मुझे जाने न दो, इसलिए मैं...।"

"बाहर क्या हुआ?"

"बाहर गहरा अंधेरा था। मुझे रास्ता तो पता नहीं था, मैं हिम्मत करके एक दिशा की तरफ बढ़ गई। पांच-सात मिनट ही बीतें होंगे कि मेरी बांह के पास बहुत गर्म चीज निकली। पहले तो मैं समझ नहीं पाई कि क्या है। मैंने पीछे देखा तो दो लोगों को आते देखा। मैंने सोचा तुम हो, परंतु फौरन ही मुझे बोट वाले दो लोगों की याद आई तो मैं घबरा गई। मैं समझ गई कि वो गर्म चीज और कुछ नहीं गोली थी। वो मुझे मारना चाहते हैं। मैं भाग खड़ी हुई। आज अंधेरा बहुत है बाहर। आकाश में बादल हैं, इसी अंधेरे ने मेरी सहायता की और किसी प्रकार बचती-बचाती मैं वापस आ गई। मैंने सोचा उनसे मेरा पीछा छूट गया है, परंतु दरवाजा खटखटाते समय मैंने उन्हें दूर से इसी तरफ आते देख लिया था।" लड़की ने एक ही सांस में सब कुछ कह डाला।

देवराज चौहान कठोर निगाहों से उसे देखता रहा।

"मैं मरते-मरते बची हूं। तुमने मुझे बचा लिया, है न?" वो कांप कर कह उठी।

"दूसरी बार।"

उसने गहरी सांस ली और आंखें बंद कर ली।

"बैठ जाओ।"

लड़की ने आंखें खोलीं और कुर्सी पर आ बैठी।

"तो अब तुम्हें यकीन आ गया कि कोई तुम्हारी जान लेना चाहता है।" देवराज चौहान बोला।

"हां।" उसने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"कौन?"

"प-पता नहीं। मेरी तो किसी से दुश्मनी नहीं है। मेरी जान कौन लेगा?"

"लेकिन कोई तो लेना चाहता है।"

लड़की ने सहमति से सिर हिलाया।

comicsmylife.blogspot.in

"सोचो कि ऐसा कौन कर सकता है, किसके पास वजह है तुम्हें मारने की।"

लड़की, देवराज चौहान को देखती, सोचती रही।

"कमरे में जाओ। आराम करो।" देवराज चौहान बोला—"इस बारे में सुबह मुझे बताना।"

"तुम क्या करोगे?"

"कहोगी तो मैं तुम्हें बचा सकता हूं कहोगी तो तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ दूंगा ये तुम पर है।"

▭ ▭

अगले दिन दस बजे देवराज चौहान की आंख खुली।

मौसम सुहावना हो रहा था बाहर। हवा चल रही थी। आकाश में बादल छाए हुए थे। सामने समुद्र की ऊपरी सतह पर लहरें, बहती हवा के संग, अठखेलियां कर रही थीं।

देवराज चौहान ने कमीज नहीं पहनी हुई थी। बांह पर पट्टी बंधी थी। उसने एक निगाह बांह पर मारी फिर सामने पड़े बैग से कमीज निकालकर पहनी कि तभी लड़की कमरे से निकलकर वहां पहुंची।

देवराज चौहान ने उसे देखा।

"चाय-कॉफी लोगे?" वो बोली—"मैं बना देता हूं।"

"कॉफी।"

लड़की किचन की तरफ बढ़ गई।

देवराज चौहान टेबल पर पड़ी दोनों रिवॉल्वरों को देखा तो गहरी सांस लेकर उसने सिग्रेट सुलगा ली। फिर खिड़की के पास पहुंचकर उसे खोला तो सामने नीला समुद्र दिखने लगा। कश लेता, खिड़की पर खड़ा समुद्र को देखता रहा फिर आकाश पर मंडराते काले बादलों को देखकर सोचा कि कभी भी बरसात हो सकती है।"

तभी उसके कानों में मोबाइल बजने की आवाज आई।

लड़की का फोन बज रहा था।

वो खिड़की से हटा और किचन की तरफ बढ़ गया।

मोबाइल बजने की आवाज आनी बंद हो गई थी। किचन में पहुंचा तो लड़की को फोन पर बात करते पाया।

"सब ठीक है मम्मा। मुझे किसी ने नहीं उठाया वो मेरा दोस्त था। मैं उसे पहचान नहीं सकी थी...मैं ठीक हूं मेरी फिक्र न करो...आ जाऊंगी घर भी।" कहते हुए लड़की ने देवराज चौहान पर नजर मारी—"आज तो घर नहीं आऊंगी...अपने दोस्त के साथ बहुत बातें करनी है आज...मैं अपना खयाल रख रही हूं तुम चिंता मत करो...पुलिस को तुम समझा देना कि गलतफहमी में पड़कर अपहरण की रिपोर्ट लिखा दी थी माफी मांग लेना...।" कहकर लड़की ने फोन बंद करके, पैंट का जेब में रख लिया।

देवराज चौहान ने महसूस किया कि आज लड़की गम्भीर है अन्य दिनों की अपेक्षा।

देवराज चौहान किचन से बाहर आ गया।

कुछ देर बाद वो कांच के दो गिलासों में कॉफी डाले वहां पहुंची। एक गिलास देवराज चौहान को देने के बाद दूसरा खुद थामे कुर्सी पर बैठते हुए कह उठी।

"मेरी वजह से तुम्हें बहुत चोट लगी।" उसने उसकी बांह को देखा।

देवराज चौहान ने कॉफी का घूंट भरा।

"वो चाकू तुम्हारी छाती में भी मार सकता था।" वो पुनः बोली।

"वो पीठ पर मार रहा था, परंतु मैं उसी वक्त घूमा तो बांह पर आ लगा देवराज चौहान ने बताया।

"ओह। तुम सच में बहादुर हो। रात तुम न होते तो मैं बच नहीं सकती थी। मैं बेवकूफ थी जो तुम्हारी बात का विश्वास नहीं किया। मैंने यहां से बाहर जाकर बहुत बड़ी गलती की।" उसने अफसोस भरी सांस ली।

"तुम्हारा आगे का प्रोग्राम क्या है? यहां से जाना चाहती हो तो...।"

"मैंने इस बारे में बहुत सोचा है सुरेंद्र पाल जी।" उसने गम्भीर स्वर में कहा—"तुम बहादुर इंसान हो और मुझे बचा सकते हो। मैं अपनी मां के पास या कहीं भी गई, तो जो लोग मेरी जान के पीछे हैं, वो मुझे खत्म करके रहेंगे। मैं कहीं पर भी सुरक्षित नहीं हूं। परंतु तुम मुझे बचा सकते हो, जैसे कि रात को बचाया। जैसे कि कल दिन में बचाया। तुम दो बार मुझे बचा चुके हो। क्या आगे भी मेरे को बचाओगे।"

"तुम चाहो तो...।"

"मैं चाहती हूं कि तुम मुझे बचाओ। ऐसा करोगे तो मैं और मेरा बच्चा, जो मेरे पेट में है, तुम्हारे एहसानमंद रहेंगे। उसकी आंखों से आंसू बह निकले—"मैं अभी मरना नहीं चाहती।"

"मैं अपनी कोशिश कर सकता हूं कि तुम्हें बचा लूं। परंतु मुझ पर पूरा भरोसा मत करना। मेरे से भी गलती हो सकती है। चूक हो सकती है।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"फिर भी मुझे तुम पर भरोसा है। तुम्हारे अलावा कोई और है भी नहीं कि उस पर भरोसा कर सकूं।"

"तुम्हारा पति तो...।"

"मेरी अभी शादी नहीं हुई।"

"ओह।" देवराज चौहान के होंठ सिकुड़े।

comicsmylife.blogspot.in

"पर जल्दी ही शादी हो जाने की आशा है।" आंसू साफ करते उसने कहा—"जल्दी हो जाएगी।"

देवराज चौहान ने कॉफी का घूंट भरा।

लड़की ने भी कॉफी का घूंट भरा फिर बोली।

"मेरा नाम कामनी है।"

"कामनी! हूं—तुमने सोचा होगा कि कौन तुम्हारी जान के पीछे सकता है।"

"कोई भी नहीं।"

"तुम अच्छी तरह जानती हो कि कोई तो है ही जो दस लाख देकर तुम्हें खत्म कराना चाहता है।"

"मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा।"

"तुम मुझे बताओ अपने बारे में। अपने आस-पास के लोगों के बारे में?"

"अगर तुम्हें मालूम हो गया कि फलां आदमी मेरी जान लेना चाहता है तो तुम क्या करोगे?"

"अभी मैं कुछ नहीं कह सकता कि क्या करूंगा। ये सब तो आगे के हालातों पर निर्भर है।" देवराज चौहान ने कहा—"लेकिन इतना वादा करता हूं कि तुम्हें इस मुसीबत से निकाल दूंगा।"

"मेरे लिए तुम इतना कर रहे हो। क्या तुम मुझे पसंद करने लगे हो।" कामनी बोली—"ऐसा है तो तुम्हें निराशा हाथ लगेगी। मैं अपना जीवन साथी चुन चुकी हूं। मेरे पेट में उसी का बच्चा है।"

"मैं शादीशुदा हूं। ये बात तुम्हें बता चुका हूं। मेरी जिंदगी में पहली और आखिरी सिर्फ मेरी पत्नी ही है। इंसानियत के नाते मैं तुम्हारी सहायता कर रहा हूं क्योंकि मुझे नहीं लगता कि कोई तुम्हारी जान ले, तो वो ठीक करेगा।"

"मैंने तो कभी किसी को कोई नुकसान नहीं दिया।"

"तुम अपने बारे में बताओ। इतना तो स्पष्ट है कि तुम्हारी हत्या करने वाला, तुम्हारे आस-पास का ही है।"

कामनी के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

"किसी के बारे में बताना भूल मत जाना। क्योंकि कोई भी वो इंसान हो सकता है, जो तुम्हारी जान के लिए दस लाख खर्च कर रहा हो सकता है। अपने आस-पास के सब लोगों के बारे में मुझे बताओ।"

कामनी कुछ पल चुप रहकर कह उठी।

"मेरे आस-पास कोई खास लोग नहीं हैं। मेरे परिवार में मेरी मां, पापा और छोटा भाई हैं। भाई पढ़ रहा है, मैं मुम्बई में माडलिंग करती हूं और जानी-पहचानी मॉडल बनती जा रही हूं। सूरत में मेरे मां-बाप रहते हैं, मेरा परिवार सूरत का ही है। जब भी काम से फुर्सत मिलती है तो मैं घर पर आ

जाती हूं। अब भी चार दिन पहले मुम्बई से मैं सूरत अपने घर आई थी और आज-कल में मेरा मुम्बई जाने का प्रोग्राम था कि तुमसे मुलाकात हो गई।"

"मुम्बई कहां रहती हो?"

"मलॉड।"

"सूरत में और किस-किससे तुम्हारी पहचान है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"मेरे कोई खास पहचान नहीं थी। दो सहेलियां थीं स्कूल के वक्त की उनकी शादी हो चुकी है। सूरत में तो मेरा रहना कम ही होता है। आती हूं तो घर पर ही रहती हूं।" कामनी ने बताया।

"तुम्हारे परिवार वालों से तुम्हारा क्या रिश्ता है?"

"बहुत ही बढ़िया।"

"तुम्हारा मतलब कि सूरत में ऐसा कोई नहीं, जो तुम्हारी जान लेने की चाहत रखे।"

"ऐसा इंसान तो कहीं भी नहीं है जो मुझे मार...।"

"मुम्बई में, अपने बारे में बताओ।"

"मलॉड में रहती हूं और माडलिंग का काम करती हूं। बहुत लोगों से, बहुत कम्पनियों से मेरी पहचान है। कुछ लोग मुझे काम दिलाते हैं, कमीशन लेते हैं। सबसे बनाकर रखनी पड़ती है, काम ही ऐसा है।"

"इसका मतलब, मुम्बई से वास्ता हो सकता है तुम्हारी हत्या की कोशिश का।"

"कौन मुझे मारना चाहेगा?"

"कोई भी। कोई ऐसी मॉडल जिसका काम तुमने कई बार छीना हो। तुमसे खफा हो सकती है।"

"ये मामूली बात है। ऐसा अक्सर होता रहता है। कोई मेरा काम छीन लेता है तो कभी मैं किसी का काम हासिल कर लेती हूं। इस बात के पीछे कोई किसी की हत्या नहीं करवाता।" कामनी ने परेशान निगाहों से उसे देखा।

"ये तुम कहती हो, पर हत्यारे के विचार दूसरे हो सकते हैं।"

"मैं नहीं मानती।"

"सोचो कि पिछले दिनों में तुमने किसी दूसरी मॉडल को तगड़ी चोट दी हो।"

"ऐसा कुछ नहीं है। सब कुछ सामान्य चल रहा है। मैंने जानबूझ कर किसी का काम नहीं छीना। वैसे भी मुझे अक्सर काम मिलता रहता है। तुम टी. वी. देखते हो सुरेंद्र पाल?" कामनी ने एकाएक पूछा।

"बहुत कम।"

"शायद तुमने टी.वी. में मुझे विज्ञापनों में देखा हो, मैं गुलाब साबुन और काली मेहंदी की ऐड में...।"

comicsmylife.blogspot.in

"बेकार की बातें मत करो।"

"ये बेकार की बातें हैं?" कामनी के होंठों से निकला।

"इस वक्त मैं ये जानने की चेष्टा कर रहा हूं कि कौन तुम्हारी जान ले सकता है। अगर ये रंजिश माडलिंग को लेकर है तो तब मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकूंगा। ये इन्वेस्टिगेशन का काम है। तुम्हें पुलिस के पास जाना होगा।"

"अभी तो तुम कह रहे थे कि तुम हत्यारे को संभाल लोगे और अब...।"

"माडलिंग की दुनिया से मैं हत्यारे को नहीं ढूंढ़ सकता। इसमें मुझे समस्या आएगी। अगर पता चल जाए कि कौन ऐसी कोशिश करता हो सकता है तो उसे मैं संभाल सकता हूं। या फिर तुम मुझे सोचकर बताओ कि कौन ऐसी हरकत कर सकता है।"

"अगर मुझे किसी पर शक भी होता तो तुम्हें फौरन कह देती—परंतु...।"

"पेट का बच्चा किसका है?"

"हरीश मर्चेंट का।"

"ये कौन है?"

"ये मुम्बई का नामी बिजनेस मैन है। पैंतीस वर्ष का है और इसकी कई कम्पनियां हैं।" कामनी ने कहा—"जूते की कम्पनी, अंडरवियर-बनियान की कम्पनी और शैम्पू की कम्पनी। इसकी कम्पनियों का माल बाहर विदेश में भी जाता है। पुश्तैनी धंधा है, परंतु अकेला ही मालिक है। पांच साल पहले पिता की हार्ट अटैक से मौत हो गई। भाई-बहन हैं नहीं। सिर्फ मां है।"

"हरीश मर्चेंट से कैसे मिली तुम?"

"अंडरविचर-बनियान की ऐड में मैं मॉडल बनी थी। हालांकि ये मर्दों के कपड़े हैं परंतु कुछ नया करने की खातिर एक लड़के मॉडल के साथ, ऐड में मैंने भी काम किया। तब पहली बार हरीश मर्चेंट से मुलाकात हुई थी। वो मुझे पसंद करने लगा। मैं भी उसे पसंद करने लगी। वो हैंडसम तो है ही, उसके पीछे अरबों की दौलत भी है। परंतु मैं हरीश के साथ बहुत संभलकर चली। हम मिलने लगे। दस-पंद्रह दिन में एक बार तो हम मिल लेते थे। लंच एक साथ लेते। इस दौरान उसके व्यवहार से मुझे इस बात का एहसास हो गया कि वो मुझ पर फिदा है। सच बात तो ये है कि मैं भी उसे फंसाने पर लगी थी। किसी लड़की को ऐसा दौलतमंद इंसान मिल जाए तो उसे और क्या चाहिए।"

"फिर?"

"इन बातों का, इस वक्त का क्या फायदा?" कामनी कह उठी।

"तुम बताती रहो।" देवराज चौहान बोला—"मुझे सब कुछ जानना है, तभी कुछ पता चलेगा।"

गहरी सांस लेकर कामनी ने सिर हिलाया फिर बोली।

"इसी दौरान हरीश ने अपनी कम्पनी के शैम्पू की पांच-छः ऐड मुझे मॉडल लेकर तैयार करवाई और टी.वी. पर चला दी। मैं जब ऐड शूट के लिए मेकअप करती हूं तो डबल खूबसूरत लगती हूं। तुमने अभी देखा नहीं मुझे—मैं...।"

"काम की बात करो।" देवराज चौहान का स्वर सख्त हुआ।

"हां। मेरी उन ऐडों से शैम्पू की बिक्री में काफी बढ़ोतरी हो गई। हरीश मुझ पर और भी फिदा हो गया और मेरे सामने शादी करने की ऑफर रख दी। मैं भी ये ही चाहती थी, कुछ दिनों बाद मैंने उसे हां कह दी। उसके बाद हम लगभग रोज ही मिलने लगे। मुम्बई में उसके चार-पांच घर हैं। कभी-कभी हम रातें भी वहां बिताने लगे। हममें पति-पत्नी के सम्बंध बन गए थे।"

"शादी क्यों नहीं की?" देवराज चौहान ने पूछा।

"वो कहता है कि अभी शादी करने में व्यक्तिगत समस्या है। दो-तीन महीने बाद शादी करेगा। ये बात महीना पहले की है और पंद्रह दिन पहले मैंने उसे खबर दी कि मैं उसके बच्चे की मां बनने वाली हूं।"

"तो?"

"ये सुनकर वो खास खुश नहीं हुआ। कहने लगा शादी से पहले मां बनना ठीक नहीं। बच्चा गिरा दूं।"

"फिर?"

"मैंने उसे समझाया कि ये हमारे प्यार की निशानी है। इसे दुनिया में आने दो। हमारी शादी हो ही जानी है। क्या फर्क पड़ता है। कई दिन समझाने पर वो माना मेरी बात।"

"मान गया?"

"हां।"

"खुशी से माना?"

"कह नहीं सकती, परंतु वो मान गया।" कामनी ने देवराज चौहान को देखा।

"ये बात पंद्रह दिन पहले की है?"

"हां।"

"और अब तुम सूरत पहुंची तो तुम्हारी हत्या की कोशिशें होने लगीं।"

"तो?"

"तुम्हारे और हरीश के रिश्ते को और कौन जानता है? लोग जानते हैं?"

"लोग तो नहीं जानते। हरीश ने ही मना कर रखा है कि ये बातें मैं किसी

comicsmylife.blogspot.in

को बताऊं। शादी हो जाए तो तब बेशक बताना। मेरे मां-बाप इस बारे सब कुछ जानते हैं।" कामनी ने कहा।

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगा ली।

कुछ खामोशी छा गई।

कामनी उसे देखती रही फिर बोली।

"क्या हुआ। चुप क्यों हो गए?"

"तुम बहुत भोली हो।" देवराज चौहान ने कहा।

"क्या मतलब?"

"कोई बेवकूफ भी समझ सकता है कि तुम्हारी जान लेने का ख्वाहिशमंद हरीश मर्चेंट है।"

"क्या बकवास कर रहे हो।" कामनी भड़ककर कह उठी।

"मैं सही कह रहा...।"

"तुम सही नहीं कह रहे। गलत कह रहे हो। हरीश मुझे अपनी जान से भी ज्यादा चाहता है।"

"सिर्फ दिखावे के लिए।"

"पागलों वाली बातें मत करो। वो मेरा होने वाला पति है। उसका बच्चा मेरे पेट में...।"

"जबकि हकीकत ये है कि वो तुम्हें प्यार नहीं करता। तुम्हें पाना चाहता था और तुम्हें बातों में फंसाकर अपना काम निकाल लिया। वो तुम्हें इसी तरह बेवकूफ बनाता रहता, परंतु बीच में बच्चा आ गया। इस खबर ने उसे परेशान कर दिया कि तुम कभी भी उसके लिए मुसीबत खड़ी कर सकती हो। ऐसे में उसने तुम्हें रास्ते से हटा देना ही बेहतर समझा। तुम इधर सूरत आई तो हत्यारे तुम्हारे पीछे...।"

"लेकिन हरीश तो मेरे सूरत आने से एक दिन पहले चीन गया था बिजनेस के सिलसिले में।"

"तुम पर उन लोगों को लगा गया, जो अब तुम्हारे पीछे हैं। वो मुम्बई से ही तुम्हारे पीछे सूरत पहुंचे हैं और...।"

"मैं नहीं मानती। तुम बकवास कर रहे हो।" कामनी तेज स्वर में बोली

"तुम पहले भी मेरी बातों को बकवास समझ रही थी और अब मान रही हो उन बातों को।"

"वो अलग बात थी। मैं नहीं मान सकती कि हरीश मेरी जान लेगा। वो मुझे प्यार...।"

"वो प्यार का नाटक चला रहा था और अब तुम्हारी मौत के साथ ही नाटक खत्म हो जाएगा। वो पैसे वाला इंसान है तुम्हारी जान लेने के लिए दस लाख खर्च कर देना उसके लिए मामूली बात है।" देवराज चौहान ने कहा।

कामनी के होंठ भिंच गए।

वो देवराज चौहान को देखती रही।

देवराज चौहान कश लेकर कह उठा।

"सिर्फ एक वो ही है तुम्हारी जिंदगी में, जिसके पास वजह है तुम्हारी जान लेने की। आराम से मेरी बात पर सोचो। गौर करो कि क्या हरीश तुमसे पीछा छुड़ाने की चाहत रखता है या नहीं?"

कामनी देवराज चौहान को देखे जा रही थी।

एकाएक कामनी मुस्करा पड़ी।

देवराज चौहान ने आंखें सिकोड़कर उसे देखा फिर कहा।

"इसमें मुस्कराने वाली तो कोई बात नहीं है। ये गम्भीर मामला है।"

"तुम खतरनाक आदमी हो, जो दो बार मुझे बचाया। परंतु तुम शरीफ भी बहुत हो।" कामनी ने गहरी सांस लेकर कहा।

"मैं समझा नहीं।"

"सुरेंद्रपाल साहब। तुम बिना किसी लालच के मेरी जान बचाने पर लगे हो। जबकि इस मामले से तुम्हें कोई लेना-देना नहीं है। तुम अच्छे इंसान हो। वरना आजकल कौन किसी के काम आता है।"

देवराज चौहान ने कामनी की आंखों में देखते, शांत स्वर में कहा।

"मुझे शरीफ समझने की भूल मत करना। इस वक्त बात कुछ दूसरी है और पलटकर दूसरी बात पर आ...।"

"अब ही तो मैं सही बात पर आ रही हूं तुम असल में हो कौन?"

"सुरेंद्र पाल हूं। इससे ज्यादा जानने की तुम्हें जरूरत भी नहीं है।"

"मतलब कि तुम अपने बारे में कुछ नहीं बताओगे।"

"तुम्हारी जान खतरे में है, तुम्हें सिर्फ इस बारे में सोचना चाहिए।" देवराज चौहान ने कहा।

कामनी पुनः मुस्कराई। बोली।

"तुमने मुम्बई जाना है न?"

"हां क्यों?"

"मैंने भी मुम्बई जाना है। क्या तुम मुझे सुरक्षित मुम्बई तक पहुंचा सकते हो?"

"तुम अपने ऊपर हो रहे हमलों को लेकर अभी तक गम्भीर नहीं...।"

"मैं गम्भीर हूं। परंतु इन बातों का मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।"

"क्या मतलब?"

"सब कुछ जानना चाहते हो?"

"क्या सब कुछ?"

comicsmylife.blogspot.in

"मुझ पर हमले क्यों हो रहे हैं और कौन...।"
"मैंने बोला ना, हरीश ही तुम्हारी जान लेना चाहता है।" देवराज चौहान ने कहा।
"ऐसा कुछ नहीं है।"
"क्या मतलब?" देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ गईं।
"मैं तुम्हें इस बारे में कई नई बातें बता सकती हूं क्योंकि तुमने बिना किसी लालच के मेरी सहायता की है। परंतु वो बातें मुम्बई एयरपोर्ट पर बताऊंगी। शाम के पांच बजे तक मुझे सांताक्रुज एयरपोर्ट पर पहुंचा दो। रास्ते में मैं कोई बात नहीं करूंगी इस बारे में। जब तुम मुझे एयरपोर्ट पर पहुंचा दोगे तो तब मैं तुम्हें कई नई बातें बताऊंगी।"
देवराज चौहान सतर्क हो उठा।
"मतलब कि मुझे बताने के लिए तुम्हारे पास बहुत कुछ है?" देवरा चौहान कह उठा।
"हां।"
"क्या है?"
"जैसे कि हमले कौन करवा रहा है। या फिर मैं कौन हूं ऐसी ही बातें...।"
देवराज चौहान टकटकी लगाए, कामनी को देखने लगा।
"क्या हुआ?"
"मतलब कि तुम कामनी नहीं हो?"
"हूं। कामनी ही हूं, नाम के अलावा मैंने तुम्हें हर बात गलत बताई।"
"क्यों?"
"क्योंकि मैं तुम्हें जानती नहीं थी कि तुम कौन हो। जानती तो अब भी नहीं, परंतु इतना तो पक्का है कि तुम मेरे दुश्मन नहीं हो। इसलिए कुछ बातें अपने बारे में बताऊंगी।" कामनी का स्वर शांत था।
"और वो हरीश...?"
"कोई हरीश नहीं है मेरी जिंदगी में।"
देवराज चौहान अजीब-सी नजरों से उसे देखने लगा।
"कोई मेरी मम्मा नहीं है। सूरत में कोई मेरा परिवार नहीं है।"
"तो तुम मुझे बेवकूफ बना रही थी?"
"ऐसा मत कहो। मैं तुम्हें बेवकूफ नहीं बना रही थी, बल्कि ये जानने की कोशिश कर रही थी कि तुम कहीं मेरे दुश्मनों में से तो नहीं हो। मैं तुम्हें समझने की चेष्टा कर रही थी।" कामनी ने कहा।
"फोन किसके आते रहे तुम्हें?"
"मेरी पहचान का है।"
"मुम्बई एयरपोर्ट पर तुम्हें क्या काम है?"

"सवा सात बजे मेरी दुबई की फ्लाईट है। पांच बजे तक मेरा एयरपोर्ट पहुंचना जरूरी है। तुम ये काम नहीं कर सकते तो मेरे पास और भी रास्ते हैं, मुझे कोई समस्या नहीं है।"
"जो लोग तुम्हारे पीछे हैं?"
"उनसे निबटने का भी इंतजाम है।"
देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई और कश लिया
कामनी उसे देखे जा रही थी।
"तुम्हारा बदला रूप देखकर मुझे हैरानी हो रही है।"
"मेरा रूप नहीं बदला बल्कि अब तुम हकीकत से वाकिफ होने लगे हो। मैं जो पहले थी, वो ही अब हूं। बहरहाल जो भी हो तुमसे मिलकर मैं खुश हूं। तुम बढ़िया इंसान हो।"
"तुम प्रेग्नैंट हो?"
"नहीं। वो तो मैंने तुम्हें यूं ही कहा था।" कामनी सामान्य लहजे में बोली।
"अपने बारे में बताओ। ये बताओ कि ये सब क्या हो रहा...।"
"सब कुछ बताऊंगी, परंतु मुम्बई एयरपोर्ट पर पहुंचकर। अगर तुम मुझे वहां नहीं ले जाना चाहते तो...।"
"चलो। तैयार हो जाओ।" देवराज चौहान ने उसे गहरी निगाहों से देखा—"मैं तुम्हें पांच बजे तक मुम्बई एयरपोर्ट पहुंचा दूंगा।"
"मैं तो तैयार ही हूं।" कामनी मुस्कराई। उसने मोबाइल निकाला—"तैयारी तो तुमने करनी है। अपने कपड़े बैग में रखो। और कुछ है तो वो भी ले लो। बांह के इस जख्म के साथ कार ड्राइव कर लोगे?"
"हां।" देवराज चौहान कामनी को गहरी निगाहों से देख रहा था।
कामनी ने मोबाइल से नम्बर मिलाया और फोन कान से लगा लिया बात हो गई।
"हैलो।" उधर से आवाज आई।
"मेरा सूटकेस तैयार है?"
"जी मैडम।"
"कहां पर दोगे मुझे?"
"पलसाना के चौराहे पर मैं मिलूंगा।"
"एक मिनट रुको।" फिर कामनी देवराज चौहान से बोली—"हम कब यहां से चलेंगे?"
"बीस मिनट में।"
"पलसाना नाम की जगह जानते हो? सूरत में ही है।"
"नहीं जानता।"
"ठीक है, किसी से पूछ लेंगे। वहां से मैंने सूटकेस लेना है।" फिर वो

comicsmylife.blogspot.in

फोन पर बोली—"एक घंटे बाद तुम पलसाना के चौराहे पर मिलना। मुझे देर हो जाए, तो भी तुम वहीं रहना। वहां पहुंचकर, फोन पर सम्पर्क करूंगी तुमसे।" कहने के साथ ही कामनी ने फोन बंद करके देवराज चौहान को देखा।

"तुम्हारा बदला रूप देखकर मुझे अजीब-सा लग रहा है।"

"अभी तो तुमने मेरे मुंह से ऐसी कई बातें जाननी हैं, जो तुम्हें परेशान कर देंगी सुरेंद्र पाल।"

"ऐसा कुछ था तो ये बात तुम्हें पहले ही कह देनी चाहिए कि...।"

"मैं तुम्हारी शुक्रगुजार हूं कि तुमने दो बार मेरी जान बचाई। अब यहां से चलो। दिन के बारह बजने वाले हैं, अभी पलसाना के चौराहे से उस आदमी से मैंने अपना सूटकेस भी लेना है, उसमें मेरा पासपोर्ट, कपड़े और टिकट हैं।"

"तुम दुबई से आई हो?"

"हां।"

"कहां की हो तुम?"

"हिन्दुस्तान की। मुम्बई पहुंची थी कभी फिल्मों में काम पाने के लिए कि मेरा रास्ता बदल गया। ये बातें मुम्बई एयरपोर्ट पर पहुंचकर करेंगे। बहुत कुछ बताऊंगी तुम्हें। अब चलने की तैयारी करो।"

▭ ▭

पलसाना एक बड़ी जगह थी और भीड़ भरी जगह थी। पलसाना के मुख्य चौराहे पर तो और भी ज्यादा भीड़ थी। ट्रैफिक का शोर, लोगों के आने जाने का शोर। ये पुराना इलाका था सूरत का। देवराज चौहान ने सड़क किनारे, कार एक जगह रोकी और कामनी को देखा। देवराज चौहान चुप-चुप सा था।

कामनी ने आसपास देखते हुए कहा।

"ये ही है पलसाना का चौराहा?" साथ ही उसने फोन निकाला

"हां।"

कामनी ने फोन मिलाकर अपने आदमी से बात की।

"मैं पलसाना के चौराहे पर हूं तुम कहां हो?"

"मैडम आप बताइए किधर हैं?"

कामनी ने देवराज चौहान से कहा।

"उसे क्या बताऊं कि हम किधर हैं?"

देवराज चौहान ने आसपास देखते हुए कहा।

"पंजाब नेशनल बैंक के सामने, सड़क पार।"

कामनी ने ये ही शब्द फोन पर कहे।

कुछ ही मिनटों में एक युवक मीडियम साइज का सूटकेस थामे उनके पास आ गया।

"पीछे वाली सीट पर रख दो।"

"यस मैडम।" कहते हुए उसने पीछे वाली सीट पर सूटकेस रखा और दरवाजा बंद करके चला गया।"

देवराज चौहान ने बिना कुछ कहे कार आगे बढ़ा दी।

"तुम चुप-चुप क्यों हो?" कामनी बोली।

"मैं तुम्हें समझने की कोशिश कर रहा हूं कि तुम क्या हो।" देवराज चौहान ने कहा।

"मुम्बई एयरपोर्ट पर पहुंचकर बताऊंगी। हम चार घंटों में मुम्बई पहुंच जाएंगे?" वो बोली।

"साढ़े तीन घंटे।" देवराज चौहान ने कहा और कार को बारडोली जाने वाली सड़क पर डाल चुका था।

"रास्ते में कौन-कौन सी जगह आएंगी?"

"बारडोली नाम की जगह, फिर वलोड, उसके बाद बुहारी, वैन साडा रोड, पिमपरी, सुपुत्रा और फिर हम महाराष्ट्र में प्रवेश कर जाएंगे। साढ़े तीन घंटे में हम मुम्बई एयरपोर्ट पर होंगे।"

"बांह के जख्म की वजह से कार चलाने में अगर परेशानी हो रही हो तो मैं कार ड्राइव कर लेती हूं।"

"मुझे कोई परेशानी नहीं हो रही।" देवराज चौहान शांत था।

"मैं कार बहुत अच्छी ड्राइव करती हूं।"

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।

"तुम मेरी बातें सुनने के बाद चुप-चुप से क्यों हो गए हो?"

"मैंने एक मजबूर, मुसीबत की मारी लड़की की सहायता करने की सोची थी, परंतु शायद मेरा खयाल गलत निकला। तुम मजबूर नहीं हो और तुम कहती हो कि हमले के बारे में तुम्हें पहले से ही यकीन था कि...।"

"हां, मुझे पता था कि कौन मेरी जान लेने की कोशिश कर रहा है, परंतु सूरत पहुंचकर मैंने सोचा कि उन लोगों से मेरा पीछा छूट गया है, परंतु मैं गलत थी और जब तुम इस मामले में आए तो मैं समझ गई कि मैं खतरे में हूं।"

"फिर तुम मुझे ये क्यों दिखाती रही कि तुम्हें हमले के बारे में कुछ नहीं पता।"

"पहले तो मैंने तुम्हें उन लोगों का ही आदमी समझा जो मुझ पर हमला कर रहे थे। मैं इस बारे में हर वक्त तैयार थी कि अगर तुम मुझे नुकसान पहुंचाते हो तो तुम्हें सबक सिखा सकूं। लेकिन तुम सही आदमी निकले। फिर

comicsmylife.blogspot.in

कल रात जब मैं कॉटेज से निकल भागी, उन दोनों हत्यारों की वजह से मुझे वापस आ जाना पड़ा और वे भी पीछे आ गए और तुमने उनका मुकाबला करके उन्हें भगा दिया तो तब मुझे तुम पर पूरा यकीन आ गया कि तुम मेरे खिलाफ कोई चाल नहीं चल रहे। तुम कमाल के आदमी हो सुरेंद्र पाल।"

"अपने बारे में बताओ।"

"अभी नहीं। ये छोटा-सा सफर निकल जाने दो। मुम्बई एयरपोर्ट पर तुम जो भी जानना चाहोगे, बताऊंगी।"

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।

कामनी के चेहरे पर शांत भाव थे।

हाईवे आ चुका था और कार सौ से ऊपर की रफ्तार पर दौड़ रही

"तुम क्या काम करते हो सुरेंद्र पाल?"

"अपने बारे में तुम्हें बताने की जरूरत नहीं समझता।"

"सोच लो। तुम मुझे ठीक आदमी लगे। मैं तुम्हें बढ़िया काम दिला सकती हूं जिससे बढ़िया पैसा मिलेगा और...।"

"मुझे तुमसे कुछ नहीं चाहिए।" देवराज चौहान ने कहा।

कामनी ने देवराज चौहान को देखा फिर कह उठी।

"लाख, दो लाख महीना कैसा रहेगा?"

"मेरे बारे में सोचना छोड़ दो।"

कामनी गहरी सांस लेकर रह गई। बोली।

"अगर तुम ज्यादा काम के निकले तो और भी ज्यादा पैसा मिल सकता है।"

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।

कई मिनट से उसकी निगाह शीशे पर जा रही थी, जहां से कार के पीछे का दृश्य दिखता था।

"तुम अच्छे आदमी हो। तुमने एक बार भी मेरे शरीर के अंगों को घूरने की कोशिश नहीं की।"

"ये सोचो कि मैंने तुम्हें दो बार मरने से बचाया है।"

"हां। पहली बार तो मैं जरूर मारी जाती। वो आदमी मुझे आसानी से गोली मार सकता था।"

"और दूसरी बार?"

"कल रात तुमने मेरी सहायता अवश्य की, परंतु तब मैं खुद को बचा भी सकती थी।"

"कैसे?"

"छोड़ो। अभी तुम मुझे ठीक से जानते नहीं।"

"वो ही तो जानना चाहता हूं कि मैंने अनजाने में किस लड़की की सहायता

कर दी।" देवराज चौहान होंठ भींचे बोला—"मैंने तुम्हें साधारण-सी शरीफ लड़की समझा था, जबकि तुम ऐसी नहीं हो।"

कामनी मुस्करा पड़ी।

"तुम सब जानती थी कि तुम पर जानलेवा हमले हो रहे हैं परंतु तुम अनजान बनती रही और मैं बेवकूफों की तरह तुम्हें यकीन दिलाने में लगा रहा कि तुम पर सच में जानलेवा हमला हुआ है। तुम्हें सतर्क रहना चाहिए।"

"लगता है कि तुम इस बात का बुरा मान गए सुरेंद्र पाल।"

"अपनी बेवकूफी पर मुझे गुस्सा आ रहा है।"

"ऐसा मत कहो। मैंने तुम्हें कभी भी बेवकूफ नहीं समझा

देवराज चौहान ने शीशे में पीछे का दृश्य देखा फिर बोला।

"तुम बढ़िया कार चला लेती हो?"

"बहुत बढ़िया।"

"तो ड्राइविंग सीट संभाल लो। हमारे पीछे एक कार लगी है और वो कार पास आने का प्रयत्न कर रही है। उनके इरादे ठीक नहीं लगते। उनसे मुझे तुम्हारी नहीं, अपनी जान बचानी है। मैं बिना वजह इस मामले में आ फंसा।"

कामनी ने फौरन गर्दन घुमाकर पीछे देखा।

चंद पल पीछे देखने के बाद बोली।

"नीले रंग की कार है न?"

"हां।"

कामनी के होंठ भिंच गए। चेहरे पर खतरनाक भाव आ गए। वो सीट से उठी और पीछे वाली सीट पर जाने का प्रयत्न करने लगी। ये देखकर देवराज चौहान कह उठा।

"मैंने तुम्हें कार की ड्राइविंग संभालने को कहा है।"

"वो तुम संभालो। पीछे आने वालों को संभालना मेरे लिए मामूली बात है।" कामनी के होंठों से मध्यम-सी गुर्राहट निकली।

देवराज चौहान के होंठ सिकुड़ गए, उसकी गुर्राहट महसूस करके कामनी पीछे वाली सीट पर पहुंच गई। अपना सूटकेस खोला।

देवराज चौहान का ध्यान पूरी तरह ड्राइविंग पर था।

कामनी ने कपड़ों के नीचे हाथ डालकर रिवॉल्वर निकाली, जिसकी नाल, अन्य नालों से इंच भर ज्यादा लम्बी थी। उसकी मैग्जीन चैक की। जो कि फुल थी। फिर सूटकेस में कपड़ों के नीचे हाथ मारकर साइलेंसर निकाला और नाल पर चढ़ाने लगी। कामनी के खूबसूरत चेहरे पर खतरनाक भाव नाच रहे थे। देवराज चौहान रह-रहकर शीशे में निगाह मारकर, पीछे वाली सीट पर मौजूद कामनी की हरकतों को देख लेता था। उसके हाथ में रिवॉल्वर देखकर, देवराज चौहान के चेहरे पर कठोरता आ गई थी।

comicsmylife.blogspot.in

कामनी ने पीछे आती नीली कार पर निगाह मारी।
"तुम क्या करने वाली हो?" देवराज चौहान ने पूछा।
"देखते रहो सुरेंद्र पाल।"
"निशाना लगा लेती हो? कहीं सब कुछ गड़बड़ मत कर देना।"
कामनी के खतरनाक चेहरे पर जहरीली मुस्कान उभरी और लुप्त हो गई। उसने एक तरफ का शीशा नीचे कर लिया। तेज हवा में उसके बाल उड़ने लगे। सीट पर पोजीशन लेकर वो दुबक गई और बोली।
"कार को थोड़ा धीमे करो। उन्हें पास आने दो।"
"क्या तुम इस काबिल हो, जो करने जा रही हो।" देवराज चौहान ने कहा।
"जो कहा है वो करो सुरेंद्र पाल। जवाब तुम्हें खुद-ब-खुद ही मिल जाएगा।" कामनी गुर्रा उठी।
उसका ये लहजा सुनकर देवराज चौहान के दांत भिंच गए। पहले की कामनी और अबकी कामनी में जमीन-आसमान का अंतर था। वो समझ गया कि अब तक कामनी के बारे में धोखे में रहा है।
देवराज चौहान ने कार की रफ्तार कुछ धीमी की।
पीछे आती कार एकाएक समीप आने लगी थी।
कामनी साइलैंसर लगी रिवॉल्वर थामे, पोजीशन लिए हुए थी।
"थोड़ा और धीमे करो।" कामनी के होंठों से मौत-भरा स्वर निकला।
देवराज चौहान ने ऐसा ही किया।
अगले चंद पलों में कारें ठीक बराबर में आ गईं।
उस कार को वो ही लड़का चला रहा था जो कि म्यूजिक सुनने का शौकीन था। बगल में वो ही आदमी बैठा था जो कामनी की जान लेने का प्रयत्न कब से कर रहा था।
कामनी रिवॉल्वर वाला हाथ ऊपर कर चुकी थी।
दूसरी कार में बैठे व्यक्ति के हाथों में गन की झलक मिली।
वो उसी पल गन को इस्तेमाल करने जा रहा था।
तभी कामनी ने निशाना लेते हुए ट्रेगर दबा दिया।
'पिट' मध्यम-सी आवाज देवराज चौहान के कानों में पड़ी।
अगले ही पल कामनी ने दूसरी कार चलाते लड़के की कनपटी में सुराख पैदा होते देखा और वो कार हाईवे पर बे-काबू होकर एकाएक लुढ़कती चली गई।
देवराज चौहान ने उसी पल कार की रफ्तार बढ़ा दी।
कामनी ने फुर्ती से कार का शीशा ऊपर कर लिया। उसका चेहरा कठोर हुआ पड़ा था। आंखों में दरिंदगी नाच रही थी। दो-तीन लम्बी सांसें ली उसने।

"तुम तो वास्तव में बहुत तगड़ी निशानेबाज हो।" देवराज चौहान कह उठा।
कामनी के चेहरे पर तनाव कम होता जा रहा था। वो मुस्करा पड़ी।
"मैंने बहुत ही गलत लड़की की सहायता की। मैंने तुम्हें मासूम समझा था।"
कामनी ने रिवॉल्वर सीट पर रखी और ठीक से सीट पर बैठती बोली
"वो लोग मेरी जान लेना चाहते थे। दो बार कोशिश कर चुके थे। जब मैं मुम्बई एयरपोर्ट पर उतरी थी और टैक्सी लेकर वहां से निकली तो तब भी मुझ पर जानलेवा हमला किया गया। मैं कठिनता से बची। परंतु टैक्सी का ड्राइवर मारा गया था। मुझे भी तो सालों को सबक सिखाना था।" स्वर में तीखे भाव थे।
"कौन थे कार वाले?"
"वो ही दोनों।" कामनी बोली—"जो कार चला रहा था, मैंने उसका निशाना लिया।"
"तुम बहुत खतरनाक हो।"
"तुम्हारे लिए नहीं।" कामनी ने कहा और अपना खुला पड़ा सूटकेस चैक करने लगी।
"तुम्हारे मामले में मैं धोखा खा गया और तुम्हें हत्यारों से बचाने की चेष्टा में लग गया। ये मेरा पागलपन था। तब मैं तुम्हारी हकीकत से वाकिफ नहीं था कि तुम बहुत खतरनाक हो।"
"मैं जैसी भी हूं, पर जब तुमने मुझे बचाया तो तब मैं सच में मरने वाली थी। ये तब की बात है, जब मैं शो-रूम से साड़ी खरीद कर निकली थी। तुमने मुझ पर बहुत बड़ा एहसान किया सुरेंद्र पाल।"
देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।
कार तेजी से दौड़े जा रही थी।
कामनी सूटकेस चैक करती रही। सामान को चैक करती रही
"अपना पासपोर्ट दिखाओगी?" देवराज चौहान ने कहा।
"क्यों?"
"यूं ही।"
कामनी ने सूटकेस में से पासपोर्ट निकाला और देवराज चौहान को दिया।
कार चलाते देवराज चौहान सावधानी से पासपोर्ट के पन्ने पलटने लगा।
दो मिनट में देख लेने के बाद पासपोर्ट लौटाता कह उठा।
"पासपोर्ट पर तुम्हारा नाम नसरीन शेख है।"
"मैं कामनी भी हूं और नसरीन शेख भी।" कामनी सूटकेस में पड़े सामान को चैक करते बोली।

comicsmylife.blogspot.in

"हिन्दू और मुस्लिम नाम, दोनों ही तुम्हारे कैसे हो सकते हैं?"
"दुबई में मैं नसरीन शेख हूं और इंडिया में कामनी।"
"असली नाम क्या है?"
"कामनी।"
"तुम मेरे लिए पहेली की तरह बनती जा रही हो।" देवराज चौहान कहा।
"ऐसा कुछ नहीं है। मुम्बई एयरपोर्ट पर पहुंचकर, तुम्हारे सारे सवालों का जवाब मिल जाएगा।"
"तो तुम जानती हो कि तुम्हारी हत्या करने की जो कोशिश कर रहे हैं, वो कौन हैं।"
"हां।"
"हमारे पास मुनासिब वक्त है, तुम अपने बारे में मुझे बता सकती...।"
"मैं नहीं जानती तुम कौन हो। ऐसे में मैं तुम्हें अपने बारे में बताकर सफर में रुकावट नहीं डालना चाहती।"
"सफर में रुकावट?" मैं समझा नहीं...।"
"जरूरी तो नहीं कि मेरा परिचय तुम्हें पसंद आए।"
"तुम्हारा परिचय कुछ भी हो। मुझे क्या लेना देना। तुम्हें मुम्बई एयरपोर्ट पर पहुंचा के रहूंगा।"
कामनी चुप रही।
"क्या तुम अपने बारे में बताना शुरू करने वाली हो?"
"नहीं।"
देवराज चौहान ने फिर कुछ नहीं कहा।
कामनी ने अपना सूटकेस बंद कर दिया।

▭ ▭

शाम 5.40 पर देवराज चौहान ने कार मुम्बई के शांताक्रुज एयरपोर्ट पर रोक दी।
कामनी मुस्कराकर बोली।
"तुम भी बढ़िया ड्राइवर हो, मेरी तरह। सुनो, कार की सीट के नीचे मेरी रिवॉल्वर पड़ी है, वो तुम्हारी हुई उसे मैं अपने साथ तो दुबई ले जा नहीं सकती।"
देवराज चौहान ने पलटकर पीछे देखते हुए कहा।
"तुम यहां अपने बारे में कुछ बताने वाली थी।"
"जरूर।" कामनी ने कहा और कार का दरवाजा खोला। बाहर निकली। अपना सूटकेस भी बाहर खींच लिया फिर दरवाजा बंद किया और सूटकेस खींचते, देवराज चौहान के तरफ वाली खिड़की के पास जा पहुंची।

देवराज चौहान उसे देख रहा था।
कामनी के चेहरे पर मीठी मुस्कान थी।
"तुम बढ़िया बंदे हो सुरेंद्र पाल। न भूलने वाले। तुम मेरे बारे में जानना चाहते हो। वैसे तो तुम्हें न बताती, परंतु तुमने मेरी जान बचाई है इसलिए बता रही हूं। तुमने इकबाल खान सूरी उर्फ भगता ठाकुर का नाम तो सुन रखा होगा।"
देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं।
"तुम उस अंडरवर्ल्ड डॉन की बात कर रही हो, जो मुम्बई लाशें बिछाकर दुबई भाग गया था।"
"वो ही। मैं उसी इकबाल की प्रेमिका हूं और उसकी सिक्योरिटी कंट्रोल करती हूं।"
देवराज चौहान अपलक कामनी को देखता रह गया।
"यकीन नहीं आया?" कामनी मुस्कराई।
देवराज चौहान के दिमाग में अजीब-सा तूफान उठ खड़ा हुआ था।
"मुझ पर हमले करवाने वाला, मुम्बई अंडरवर्ल्ड का डॉन बाबा रतनगढ़िया है। उसकी और इकबाल खान सूरी की लगी रहती है। जाने उसे कैसे पता चल गया कि मैं मुम्बई पहुंच रही हूं। इकबाल के किसी आदमी ने ही बाबा रतनगढ़िया को मेरे आने की खबर दी। दुबई पहुंचकर उस गद्दार को ढूंढ़ने की कोशिश करूंगी।" कहते हुए कामनी की आंखों में दरिंदगी के भाव उछले—"तुमने मेरी जान बचाई, इसलिए ये बातें तुम्हें बताईं। तुम जो जानना चाहते थे, वो मालूम हो गया है तुम्हें। अब मैं चलती हूं सुरेंद्र पाल। मुझे भीतर जाकर कागज चैक कराने हैं। दुबई की फ्लाइट पकड़नी है। बाय।" कामनी ने दायां हाथ हिलाया और सूटकेस खींचते, एयरपोर्ट के प्रवेश द्वार की तरफ बढ़ गई।
इकबाल खान सूरी।
देवराज चौहान के मस्तिष्क में धमाके हो रहे थे।
हिन्दुस्तान को इकबाल खान सूरी की सख्त जरूरत थी। अखबारों और टी.वी. न्यूज के दम पर उसे इतनी जानकारी थी कि इकबाल खान सूरी ने दुबई और पाकिस्तान में अपने ठिकाने बना रखे हैं, परंतु भरपूर चेष्टा के बाद भी हिन्दुस्तान की सरकार उसे पकड़ नहीं पा रही थी।
कामनी उर्फ नसरीन शेख उसी इकबाल खान सूरी की प्रेमिका है और उसकी सिक्योरिटी के इंतजाम भी देखती है और अब हिन्दुस्तान में खुले आम घूम रही है।
देवराज चौहान ठगा-सा बैठा कामनी को देखता रहा जो कि उसके देखते-ही-देखते एयरपोर्ट की इमारत में प्रवेश कर गई थी। अजीब-से भाव

comicsmylife.blogspot.in

छाए थे देवराज चौहान के चेहरे पर। क्या हिन्दुस्तान सरकार को कामनी के इंडिया आने की खबर नहीं लगी? वो आराम से आई और चली भी गई

तभी ट्रैफिक पुलिस वाला पास पहुंचा तो उसकी सोचें टूटी।

"चलो यहां से।" वो कह उठा।

देवराज चौहान ने कार स्टार्ट की और आगे बढ़ा दी। उसे यकीन नहीं आ रहा था कि तीन दिन उसने इकबाल खान सूरी की प्रेमिका कामनी के साथ बिताए हैं। उसे ध्यान आने लगा कि एक बार टी.वी. में इकबाल खान की प्रेमिका कामनी के बारे में सुना था। ये करीब दो-तीन साल पहले की बात थी।

और वो अनजाने में उसी कामनी की सहायता में लग रहा। उसकी जान बचाई उसने। जबकि अगर उसे हकीकत पता होती तो वो कभी भी कामनी को बचाने की चेष्टा न करता...। इन्हीं सोचों में उलझे देवराज चौहान कार को एयरपोर्ट से बाहर ले आया था।

कामनी का चेहरा बार-बार उसकी आंखों के सामने नाच रहा था। वो सच में खतरनाक थी। सिर्फ एक गोली में उसने, पीछे लगे हत्यारों की बाजी पलट दी थी। वो बाबा रतनगढ़िया के भेजे हत्यारे थे। बाबा रतनगढ़िया जो कि आज मुम्बई अंडरवर्ल्ड में अपना नाम रखता था। खतरनाक था वो

अनजाने में वो अंडरवर्ल्ड के बड़े दादाओं के मामले में आ फंसा था परंतु उसके लिए अब ये ही काफी था कि वो खामोशी से मामले के बाहर भी आ गया था।

तभी देवराज चौहान का फोन बजने लगा।

सोचों से बाहर निकलकर देवराज चौहान ने कॉल रिसीव की। दूसरी तरफ जगमोहन था।

"कामनी दुबई गई है ना?" उधर से जगमोहन ने कहा—"तभी तो वो एयरपोर्ट पर आई।"

देवराज चौहान बुरी तरह चौंका।

जगमोहन को ये सब बातें कैसे पता चलीं?

"क्या—तुम—तुम...।"

"दो रातें और तीन दिन तुमने उसके साथ बिताए। तुम्हें हैरानी हो रही होगी कि मुझे ये सब कैसे पता चला?"

"हां।" देवराज चौहान के होंठों से निकला। उसका दिमाग हवा में उड़ रहा था।

"दस मिनट पहले ही मामा जी आए हैं। वो पहले भी आए थे। उन्हीं से पता...।"

"कौन मामा जी?"

"मार्शल।"

देवराज चौहान कान से फोन लगाए कार ड्राइव करता रह गया। उसके होंठों से कुछ भी नहीं निकला। मार्शल उसके बंगले पर? वो कामनी के बारे में खबर रखता है, जबकि वो तो सोच रहा था कि भारत सरकार की एजेंसियों को कामनी के आने-जाने की खबर नहीं हो सकी।

"मार्शल का नाम सुनते ही चुप क्यों हो गए?" जगमोहन की आवाज कानों में पड़ी।

देवराज चौहान संभाला।

"मार्शल क्या कहता है?" देवराज चौहान के होंठ भिंच गए

"आ जाओ, तुम्हारे इंतजार में बैठा...।"

"वो अगर मेरा सम्बंध इकबाल खान सूरी से समझता है तो उसे समझा दो कि...।"

"ये बात नहीं है।"

"तो?"

"काम लेकर आया है हमारे लिए। पर अभी बताया कुछ नहीं। कहता है देवराज चौहान के सामने बताऊंगा।"

"मार्शल मुझ पर नजर रख रहा था?"

"हां वो...रुको...मार्शल मुझे मना कर रहा है बात न करूं और तुम्हें पहुंचने को कहूं।"

"मैं आ रहा हूं।" देवराज चौहान ने कहा और फोन बंद कर दिया।

सिर घूमा हुआ था देवराज चौहान का।

अभी-अभी उसने शुक्र किया था कि इकबाल खान सूरी की प्रेमिका कामनी से जान छूटी और किसी को पता नहीं चला कि वो कामनी के साथ था, परंतु मार्शल को पता था कि वो कामनी के साथ दो रातें और तीन दिन बिताकर आया है। मार्शल बंगले पर था। ये बात अपने आप में ही खतरे की तरफ इशारा करती थी क्योंकि मार्शल जैसा इंसान कहीं पर भी बिना वजह नहीं जाता। वो समझ नहीं पा रहा था कि मार्शल को ऐसा क्या काम पड़ गया, जबकि अभी 'मैं पाकिस्तानी' में मार्शल का काम निबटाया था।

▭ ▭

देवराज चौहान बंगले पर पहुंचा।

मार्शल और जगमोहन को मौजूद पाया।

मार्शल उसे देखकर मुस्कराया और कह उठा।

"अगर कोई जान ले कि तुमने कुछ दिन इकबाल खान सूरी की प्रेमिका के साथ बिताए हैं तो हल्ला मच जाए। सुनने वाले फौरन तुम्हारा सम्बंध इकबाल खान सूरी से जोड़ देंगे कि तुम उसके लिए काम करते हो।"

comicsmylife.blogspot.in

"ऐसा कुछ नहीं है मार्शल।" देवराज चौहान परेशान-सा कह उठा—"मैं तो ये भी नहीं जानता था कि वो कौन है उसका नाम ही जानता था। उसने एयरपोर्ट पर पहुंचकर अपनी हकीकत बताई।"

"मेरे एजेंट शुरू से इस मामले पर निगाह रखे थे और हम जानते हैं कि इकबाल खान सूरी से तुम्हारा कोई वास्ता नहीं है।"

देवराज चौहान सोफे पर जा बैठा।

"मेरे एजेंटों ने बताया कि रास्ते में पीछे लगी कार के ड्राइवर पर कामनी ने गोली चलाई। उस दौरान तुम कार चला रहे थे। उस कार में वो ही लोग थे जो कामनी की हत्या करना चाहते थे। उनसे ही तुम कामनी को बचा रहे थे।"

"तुम्हें कैसे पता?"

"मेरे एजेंट तब से ही कामनी पर नजर रखे थे जब वो मुम्बई पहुंची थी। उसकी जान लेने की कोशिश के पीछे अंडरवर्ल्ड डॉन बाबा रतनगढ़िया का हाथ रहा।" मार्शल ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तुम तो सब जानते हो।"

"ये मेरा मामला था। मेरे लोग कामनी पर नजर रखे थे कि तुम बीच में आ गए। अगर तुम बीच में न आते तो शायद कामनी उसी दिन, सूरत में मारी जाती। तुमने उसे क्यों बचाया देवराज चौहान?"

"मैंने उसे शरीफ लड़की समझकर बचाया। देखने पर वो शरीफ ही लगती है।" देवराज चौहान बोला।

"वो बहुत खतरनाक है।"

"इस बात का एहसास हो चुका है मुझे।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"दो रातें और तीन दिन तुम उससे क्या बातें करते रहे?" मार्शल ने पूछा।

"मैंने बताया न, एक घंटा पहले एयरपोर्ट पर उसने मुझे अपनी हकीकत बताई।"

"सफाई मत दो। मैंने पूछा है उसके साथ बिताए वक्त में तुम लोग क्या बातें करते रहे?"

देवराज चौहान ने बताया।

सब कुछ बताया।

मार्शल ने चेहरे पर गम्भीर भाव समेटे सब कुछ सुना।

देवराज चौहान के खामोश होते ही मार्शल बोला।

"तुम हाथ-मुंह धो लो। तुमसे बात करनी है मुझे।"

"कैसी बात?"

"तुम्हें मेरा काम करना होगा।"

"अभी तो 'मैं पाकिस्तानी' में मैं तुम्हारा काम करके हटा...।"

"मेरे मामले में तुमने ही दखल दिया है। बेशक अनजाने में सही। परंतु कामनी के साथ तुम्हारी इस तरह से पहचान हो जाना मेरे मिशन के लिए बहुत फायदेमंद है। ये ही वजह है कि मैंने तुम्हें इस काम में लेने की सोची और योजना भी तैयार है मेरी। मेरे एजेंट तुम्हारे इंतजार में दुबई और पाकिस्तान में तैयार हो चुके हैं।"

"क्या मतलब?" जगमोहन के होंठों से निकला—"तुम हमें दुबई औ पाकिस्तान भेज रहे हो।"

"हां।"

"बकवास मत करो।" जगमोहन भड़क उठा—"हम तुम्हारा कोई काम नहीं करने वाले। तुम कौन होते हो हमारे बारे में फैसला करने वाले कि हम तुम्हारा काम करें। नौकर नहीं हैं तुम्हारे जो...।"

"ये काम तो करना ही पड़ेगा।" मार्शल ने गम्भीर स्वर में कहा।

"क्यों?" जगमोहन का चेहरा गुस्से से भर उठा।

"क्योंकि देवराज चौहान ही मेरे काम में आ पहुंचा...।"

"हम तुम्हारा काम नहीं करेंगे।" जगमोहन ने दृढ़ स्वर में कहा।

एकाएक मार्शल मुस्करा पड़ा।

"कम-से-कम सुन तो सकते हो कि मैं क्या कहना चाहता हूं।"

जगमोहन ने उखड़ी निगाहों से देवराज चौहान को देखा।

देवराज चौहान के चेहरे पर गम्भीरता थी।

"हमें मार्शल की बात सुन लेनी चाहिए जगमोहन।" देवराज चौहान बोला।

"लेकिन हम काम नहीं करेंगे इसका।" जगमोहन तीखे स्वर में कहा।

मार्शल के होंठों पर शांत मुस्कान थी।

"देखते हैं। पहले ये तो जान लो कि ये कहना क्या चाहता है। तुम कॉफी बना लो।" कहने के साथ ही देवराज चौहान बंगले के भीतर की तरफ बढ़ गया।

जगमोहन ने खा जाने वाली निगाहों से मार्शल को देखा और वहां से चला गया।

मार्शल चेहरे पर गम्भीरता समेटे, कमर पर हाथ बांधे टहलने लगा।

▭ ▭

देवराज चौहान ने कॉफी का घूंट भरा।

मार्शल के हाथ में कॉफी का प्याला थमा था।

जगमोहन की कॉफी टेबल पर पड़ी थी। तीनों सोफे पर बैठे थे, उनके बीच गहरी खामोशी थी।

"अब तुम दोनों ये तो समझ ही चुके हो कि ये मामला इकबाल खान सूरी

comicsmylife.blogspot.in

वे वास्ता रखता है। जो कि कभी मुम्बई अंडरवर्ल्ड का जाना पहचाना नाम था, परंतु मुम्बई में उसने ऐसी तबाही मचाई कि उसे दुबई भागना पड़ा।" मार्शल ने खामोशी को तोड़ते हुए गम्भीर स्वर में कहा—"तुम इकबाल खान सूरी के बारे में क्या जानते हो?"

"उतना ही, जितना कि बाकी लोग जानते हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

मार्शल कुछ कहने लगा कि जगमोहन उखड़े स्वर में बोला।

"मैं कुछ कहूं?"

"क्या?" मार्शल ने उसे देखा।

"मैं पहले भी कई बार कह चुका हूं और आज भी कह रहा हूं तुम कमीने और घटिया इंसान हो।"

मार्शल ने मुस्कराकर, जगमोहन को देखा।

"'डैथ वारंट' में तुमने तगड़ी कमीनगी दिखाई। 'मैं पाकिस्तानी' में भी तुमने कोई कसर नहीं छोड़ी। अब फिर हमारे पीछे आ पड़े हो और हमें पाकिस्तान और दुबई भेजने की सोचे बैठे हो, हमसे पूछा तक नहीं। तुम हमसे अपने एजेंटों की तरह बात कर रहे हो। लेकिन तुम भूल में हो कि हर बार हम तुम्हारी बात मान जाएंगे या तुम हमें किसी तरह फंसा लोगे।"

"तुम हमेशा मेरे से नाराज क्यों रहते हो?" मार्शल बोला।

"क्योंकि तुम महा कमीने इंसान हो। हमें हर बार मौत के मुंह में फेंकक खुद दूर खड़े तमाशा देखते रहते हो और...।"

"ऐसा कुछ नहीं...।"

"क्या पिछली दोनों बार ऐसा नहीं हुआ क्या?"

"वो सिर्फ इत्तफाक था कि दोनों बार...।" मार्शल ने कहना चाहा।

"वो इत्तफाक क्या तीसरी बार नहीं हो सकता।" जगमोहन उखड़े अंदाज में बोला फिर देवराज चौहान से कहा—"ये हमें दुबई और पाकिस्तान भेजने का इरादा रखता है। पराए देशों में ढेरों अंजाने खतरे हम पर...।"

"मेरी बात तो सुन लो।" मार्शल मुस्कराया।

"क्या मैं गलत कह रहा हूं?"

"हां।"

"खतरे नहीं आएंगे?"

"इस बार तुम दोनों को ऐसा काम करना होगा कि खतरा दूर ही रहेगा।"

"तुम इतने ज्यादा कमीने और मक्कार हो कि अपने काम की खातिर कुछ भी कर सकते हो। इकबाल खान सूरी से वास्ता रखता काम है और कहते हो कि खतरा नहीं है। कौन मानेगा तेरी बात?"

"मेरी बात सुनोगे तो समझोगे कि मैं जो कह रहा हूं वो सही है।"

"तुम तो...।"

"जगमोहन।" देवराज चौहान कह उठा—"इसकी बात सुन लो।"

जगमोहन ने होंठ भींचकर मुंह घुमा लिया।

मार्शल ने कॉफी का घूंट भरा।

देवराज चौहान की निगाह मार्शल पर थी।

"मैं शुरू से बात शुरू करता हूं। सबसे पहले इकबाल खान सूरी को बताता हूं कि वो अंडरवर्ल्ड में महत्त्वपूर्ण हिस्सा कैसे बना। इसमें उसकी कुछ व्यक्तिगत बातें भी हैं।" मार्शल ने कहा—"इकबाल खान मुम्बई के साधारण-से मुस्लिम परिवार में पैदा हुआ था। जब ढाई साल का था तो हाजी अली की दरगाह पर वो परिवार सहित गया और वहां इकबाल खान गुम हो गया और उस भीड़ में इकबाल खान राकेश नाथ सूरी नाम के व्यक्ति को मिल गया सूरी ने बहुत कोशिश की कि उस बच्चे को उसके परिवार से मिला दूं परंतु उसकी कोशिश कामयाब नहीं हो सकी और इकबाल खान को वो अपने साथ ले गया। ढाई साल का इकबाल खान सिर्फ अपना नाम ही बोल पाता था। सूरी के परिवार में उसके दो लड़के और पत्नी थी। इकबाल खान भी उनके बीच रहकर पलने लगा। सूरी ने उसे स्कूल में भी डाल दिया। सूरी छोटा-सा बिजनेस मैन था। परंतु जबसे इकबाल खान ने उसके घर में कदम रखा उसका बिजनेस बढ़ने लगा। इकबाल खान को सूरी अपने लिए लक्की मानने लगा। यूं भी वो इकबाल खान को अपने बेटों के बराबर प्यार करता था। बाकी परिवार वाले भी उसे प्यार से बच्चों की तरह रखते थे।"

जगमोहन की निगाह भी अब मार्शल पर जा टिकी थी।

"अगले दो सालों में सूरी पैसे वाला आदमी बन गया। इकबाल खान आने से पहले सूरी का सिर्फ काम ही चलता था, परंतु अब वो पैसे से खेलने लगा था। इकबाल खान स्कूल में पढ़ने जाता था। सूरी की जिंदगी बढ़िया हो गई। पैसा आ जाने से वो नए-नए कामों में हाथ डालने लगा और उसने ड्रग्स का काम शुरू कर दिया। पाकिस्तान और अफगानिस्तान से ड्रग्स मंगवाता और हिन्दुस्तान में भारी मुनाफे पर बेचता। विदेशों में भी ड्रग्स भेजता। इस तरह राकेश नाथ सूरी के कदम अंडरवर्ल्ड में पड़ गए, जो कि इकबाल खान के अपराधों की दुनिया की बुनियाद थी।"

मार्शल के चेहरे पर गम्भीरता नजर आ रही थी।

"इकबाल खान जब आठ साल का हुआ तो उसे उसका पिता मिल गया, जो कि सूरी की ड्रग्स को लाने, ले जाने का काम करता था। उसने अपने बेटे इकबाल खान को पहचान लिया था। परंतु तब तक सूरी को उससे बेटे की तरह प्यार हो गया था। दूसरे की औलाद लौटानी तो थी ही, सूरी ने इच्छा जताई कि इकबाल खान अपने नाम के आगे सूरी लगाए, ताकि ये रिश्ता इकबाल खान को हमेशा याद रहे। इकबाल खान के पिता ने बात मान ली,

comicsmylife.blogspot.in

इस तरह इकबाल खान, इकबाल खान सूरी बन गया। इकबाल खान के जाने के बाद, सूरी के काले धंधे बढ़ते चले गए।"

मार्शल कहते-कहते रुका।

देवराज चौहान और जगमोहन ध्यान से उसकी बातों को सुन रहे थे इकबाल खान के बारे में ये जानकारी उनके लिए नई थी। ये सब उन्होंने पहले नहीं सुना था।

"सालों बाद सूरी अंडरवर्ल्ड में जाना-पहचाना नाम बन गया। उसके धंधे काफी फैल चुके थे। उसके दोनों बेटे अमेरिका में सैटल हो चुके थे। तभी सत्रह साल का इकबाल खान सूरी, सूरी के पास आया और उसके साथ काम करने की इच्छा जाहिर की। सूरी को उस वक्त विश्वसनीय आदमी की सख्त जरूरत थी। वो ये भी सोचता था कि इस धंधे में जिंदगी का कोई भरोसा नहीं, अगर उसे कुछ हो गया तो उसके धंधों को कौन संभालेगा, ऐसे में सूरी ने खुशी-खुशी इकबाल खान सूरी को अपने साथ ले लिया। इकबाल खान को तो सूरी वैसे भी पसंद करता था। अपनी औलाद की तरह मानता था। सूरी उसे धंधा सिखाने लगा। अगले दो सालों में इकबाल खान, सूरी की आशा से कहीं ज्यादा धंधों में अपने पैर जमाता चला गया। सूरी को बहुत अच्छा लगा इकबाल खान की कामयाबी देखकर, उसने इकबाल खान को अपना वारिस घोषित कर दिया। बीस का होते-होते इकबाल खान का नाम अंडरवर्ल्ड में सुनाई देने लगा। सूरी से सब कुछ सीख चुका था इकबाल खान। वो सूरी को पीछे और खुद को हर काम में आगे रखने लगा। अब वो कामों के बारे में सूरी से राय भी नहीं लेता था और खुद ही फैसले करने लगा था। धंधा चलाने लगा। सूरी को उस पर पूरा भरोसा था। इकबाल बीस का था और उसे धंधे में आए तीन साल हो गए थे। वो खतरनाक माना जाने लगा था सूरी के सारे धंधों पर अपना कंट्रोल कर चुका था। ऐसे में एक दिन सड़क पर कार में जाते सूरी को दो लड़कों ने गोलियों से भून दिया।"

"दो लड़के?" देवराज चौहान के होंठ सिकुड़े।

"आज तक पता नहीं चल सका कि सूरी को मारने वाले दो लड़के कौन थे। उस समय अंडरवर्ल्ड में जो सुगबुगाहट उठी वो ये थी कि सूरी को इकबाल खान ने ही रास्ते से हटाया है। परंतु ऐसी बातें, बातें बन कर ही रह गईं, क्योंकि सच सामने नहीं आ सका और इकबाल खान सूरी, सूरी के धंधों का मालिक बन बैठा। अपने नाम के आगे वो सूरी लगाता था, ताकि उसे हर कोई सूरी का वारिस समझे। सूरी की मौत के बाद, वारिस को लेकर, सूरी के खास आदमी ब्यावर पालेकर ने पंगा खड़ा किया तो एक दिन उसे भी किसी ने गोलियों से भून दिया। उसके बाद इकबाल खान सूरी के खिला किसी ने आवाज नहीं उठाई और बीस साल के इकबाल खान सूरी के अपराधों

का सफर शुरू हो गया। वो जवान था, हिम्मती था, अंडरवर्ल्ड में नाम कमाना चाहता था, उसके पास ताकत थी, पैसा था। अपने सफर में उसने कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। कुछ ही सालों में अंडरवर्ल्ड का बड़ा बन गया। पंद्रह सालों तक पूरी ताकत के साथ इकबाल खान सूरी ने अंडरवर्ल्ड पर राज किया और राजा बन कर रहा।"

मार्शल ने खामोश होकर दोनों पर निगाह मारी।

"फिर?" जगमोहन ने कहा।

"जब इकबाल खान सूरी पैंतीस बरस का था तो अंडरवर्ल्ड में दूसरी ताकतें सिर उठाने लगीं, जो कि इकबाल खान सूरी का राज खत्म करके अपना पंचम लहराना चाहती थी। इन्हीं में से एक ताकत थी ओम भौंसले। ओम भौंसले मुम्बई की झोपड़पट्टी से उठकर अंडरवर्ल्ड में आया था और ख्वाब लिए था कि उसे, इकबाल खान सूरी की जगह लेनी है। कई सालों की मेहनत के बाद वो अंडरवर्ल्ड में पांव जमा चुका था और धीरे-धीरे इकबाल खान सूरी से मुकाबले को भी तैयार करता रहा। वो अपने आदमियों के साथ दोस्ताना व्यवहार रखता था, इसलिए उसके आदमी उसके लिए कुछ भी करने को तैयार रहते थे। सबसे पहले ओम भौंसले ने मुम्बई की उस पुलिस को तोड़ा जो इकबाल खान सूरी की बराबर सहायता करती थी। इन पुलिस वालों के पास नोटों से भरे ब्रीफकेस पहुंचने लगे। काम सिर्फ ये था कि जब ओम भौंसले कहे, तब उन्हें, इकबाल खान सूरी की तरफ से सहायता के हाथों को खींचना होगा। ओम भौंसले चुपचाप पूरी योजना से चल रहा था। पुलिस वालों के पास ओम भौंसले की तरफ से बार-बार नोटों के भरे ब्रीफकेस पहुंचने लगे। इस प्रकार ओम भौंसले ने पुलिस को तोड़ा और अपने आदमियों के दल भेज दिए इकबाल खान सूरी के ठिकानों पर हमला करने के लिए एक ही दिन में उसने इकबाल खान के पंद्रह ठिकाने गोलियों और बमों से तबाह कर दिए। चालीस-पचास लोग इकबाल खान के मरे। ओम भौंसले के इशारे पर पुलिस इकबाल खान सूरी को तलाश करने लगी। इस कत्लेआम और तबाही का जिम्मेवार इकबाल खान सूरी को माना गया और कानून इकबाल खान सूरी के खिलाफ हो गया। चूंकि ये सब अचानक हुआ, ऐसे में इकबाल खान सूरी को अंडरग्राउंड हो जाना पड़ा। इस प्रकार ओम भौंसले और इकबाल खान सूरी में जंग छिड़ गई। परंतु पुलिस पर ओम भौंसले के भेजे नोटों से भरे ब्रीफकेस का बोझ था, जो कि वो अब भी भेज रहा था। कानून को अपने खिलाफ पाकर इकबाल खान सूरी कमजोर पड़ने लगा।"

"फिर?" जगमोहन बोला।

"ओम भौंसले ने अपनी चालों से इकबाल खान सूरी को हरा दिया। इकबाल खान सूरी ने ओम भौंसले का भरपूर जवाब दिया परंतु जहां भी ओम भौंसले

comicsmylife.blogspot.in

कमजोर पड़ता, पुलिस को आगे कर देता। इकबाल खान सूरी की सबसे बड़ी गलती या मजबूरी ये रही कि उसके आदमियों के हाथों बारह-पंद्रह पुलिस वाले मारे गए। ऐसे में पुलिस वाले गुस्से से भर उठे और उन्होंने इकबाल खान सूरी को जड़ से उखाड़ फेंकने की मुहिम चला दी। ये देखकर ओम भौंसले आराम से बैठ गया कि अब इकबाल खान सूरी बचने वाला नहीं, जो कि सही बात भी थी। पूरा पुलिस डिपार्टमेंट इकबाल खान सूरी के पीछे था। तभी पुलिस को एक जगह इकबाल खान सूरी के मौजूद होने की खबर मिली आनन-फानन पुलिस के डेढ़ सौ हथियारबंद जवान उस जगह पर जा पहुंचे जहां इकबाल खान सूरी के होने की खबर थी। परंतु ये सब इकबाल खान सूरी की पागलपन से भरी चाल थी। वो हताश हो चुका था इन हालातों से और जानता था कि अब वो कभी खड़ा नहीं हो पाएगा अंडरवर्ल्ड में। क्योंकि उसके आदमियों के हाथों पंद्रह से ऊपर पुलिस वाले मारे जा चुके थे। और कुछ न पाकर पैंतीस वर्ष के इकबाल खान सूरी ने इस झूठी खबर के बहाने, पुलिस वालों को एक जगह इकट्ठा किया, जहां कि उसने पहले ही बारूद बिछा दिया था। जब पुलिस वाले वहां पहुंचे तो उन्हें बारूद से उड़ा दिया गया। इस दिन अड़सठ पुलिस वाले मारे गए। यानी कि करीब चौरासी-पिचासी पुलिस वालों का हत्यारा बन गया इकबाल खान सूरी। ओम भौंसले ने उसकी जिंदगी पलटाकर रख दी। पिचासी पुलिस वालों को इस तरह मार देने से हिन्दुस्तान में कोहराम मच गया। हर पुलिस वाला पागल हुआ उसे ढूंढ़ रहा था कि तभी खबर आई कि दो दिन पहले पानी के रास्ते इकबाल खान सूरी दुबई जा पहुंचा है। दुबई की सरकार के साथ हिन्दुस्तान की ऐसी कोई संधि नहीं है कि वहां से हिन्दुस्तान भगोड़े अपराधी को पकड़ सके। हिन्दुस्तान में इकबाल खान सूरी को पकड़ने या मार देने की कोशिशें होने लगी। परंतु दुबई में अंडरग्राउंड हुआ वो सुरक्षित रहा। उसे मोस्ट वांटेड अपराधियों की श्रेणी में डाल दिया गया और देखते ही मार देने के आदेश जारी कर दिए गए। परंतु सब जानते थे कि वो हिन्दुस्तान आने वाला नहीं। पचासी पुलिस वालों का हत्यारा, हिन्दुस्तान में पांव रखने का भी हौसला नहीं करेगा। चंद महीने बीते कि मुम्बई में फिर से इकबाल खान सूरी का नाम गूंजने लगा। दुबई में बैठे-बैठे उसने, मुम्बई में अपना गिरोह फिर से तैयार कर लिया। अपने बिखरे आदमियों को इकट्ठा किया और उसके नाम पर फिर से काम होने लगे। फिर एक दिन ओम भौंसले को सरेआम उसके ठिकाने पर पहुंचकर कुछ लड़कों ने उसे गोलियों से भून दिया। ये इकबाल खान सूरी का बदला था उससे। अपने सबसे खास दुश्मन को उसने खत्म कर दिया।"

मार्शल चुप हुआ।

देवराज चौहान और जगमोहन की निगाह उस पर थी।

मार्शल पुनः गम्भीर स्वर में कह उठा।

"वक्त बीतने लगा। सालोंसाल बीतने लगे। इकबाल खान सूरी का नाम अक्सर हिन्दुस्तान के अखबारों में आता रहा। उसे पकड़ने के असफल प्लान बनते रहे। दुबई के कानून के मुताबिक, हिन्दुस्तान की पुलिस दुबई जाकर इकबाल खान सूरी को नहीं पकड़ सकती थी। दुबई इकबाल खान सूरी का घर बन गया। पांच सालों में, हिन्दुस्तान में उसे 'दुबई का आका' कहने लगे। क्योंकि दुबई में बैठे-बैठे वो मुम्बई के अंडरवर्ल्ड को संभाल रहा था। पुलिस परेशान थी कि उसे कैसे खत्म किया जाए। सरकार को भी वो हर हाल में चाहिए था क्योंकि पचासी पुलिस वालों की हत्या उसके सिर पर थी। आए दिन अखबारों और टी.वी. न्यूज चैनलों में असफलता की बात कही जाने लगी कि सरकार उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। फिर खबर लगी थी कि इकबाल खान सूरी हिन्दुस्तान आया था चुपके से नेपाल के रास्ते। अपने आदमियों का हौसला बढ़ाने। तब तक वो चालीस साल का हो चुका था। उसका खौफ हिन्दुस्तान में अपनी जगह कायम था। उसका मामला इंटैलिजेंस ब्यूरो के पास था परंतु आई.बी. भी उस तक नहीं पहुंच सकी। अब कुछ ऐसे ही चलता रहा और वो पैंतालीस साल का हो गया। दस साल बीत गए। बात अगर यहीं तक ही रहती तो, सब कुछ ऐसे ही चलता रहता, परंतु अब इकबाल खान सूरी ने पाकिस्तान की सरकार और वहां के आतंकवादियों से हाथ मिला लिया है। उसके पांव पाकिस्तान में जम चुके हैं। पाकिस्तान की सरकार उसे भरपूर सुरक्षा और सुविधाएं दे रही है और वो वहां से ड्रग्स के बिजनेस को संभाले संसार-भर में ड्रग्स भेजकर मोटा पैसा कमाता है। सैकड़ों-करोड़ों रुपया उसने पाकिस्तान की सरकार को दिया है। वहां पर बड़े-बड़े बिजनेस फैलाकर वो शक्तिशाली हो गया है। हाल ही में जो मुम्बई पर हमला हुआ, उसमें भी उसका हाथ माना जा रहा है। वो पाकिस्तान के आतंकवादी गुटों को बताता है कि हिन्दुस्तान को कमजोर करने के लिए कहां-कहां पर हमला करना चाहिए। सबसे बड़ी बात तो ये है कि इकबाल खान सूरी को शरण देकर पाकिस्तान हमारे देश को नीचा दिखा रहा है। उसने हमारे पिचासी पुलिस वालों की जान ली है और हम उस तक कभी पहुंच भी नहीं पाए। ये सच में बुरी बात है। पूरा हिन्दुस्तान देखता है कि इकबाल खान सूरी कभी दुबई में होता है तो कभी पाकिस्तान में, परंतु हम उसका कुछ नहीं बिगाड़ पा रहे। हद तो अब इस बात की हो गई कि वो पाकिस्तान के साथ मिलकर, हिन्दुस्तान के खिलाफ साजिशें रच रहा है। ये ही शर्म की बात है हमारे लिए। छः महीने पहले सरकार ने मुझे ये मामला सौंपा। इन छः महीनों में मैंने इकबाल खान सूरी पर पूरी स्टडी की। दुबई स्थित अपने एजेंटों से, पाकिस्तान स्थित एजेंटों से इकबाल खान की सारी जानकारी इकट्ठी की। मैं कोई योजना बनाना चाहता था। इकबाल खान सूरी के लिए

comicsmylife.blogspot.in

कि तभी दुबई स्थित मेरे एजेंट कमल चावला ने मुझे खबर दी कि इकबाल खान सूरी की प्रेमिका कामनी उर्फ नसरीन शेख मुम्बई आ रही है। पैंतालीस वर्ष के इकबाल खान सूरी ने दस साल पहले कामनी को मुम्बई से दुबई बुलवा लिया था। टी.वी. में उसके विज्ञापन देखकर, इकबाल खान ने उसे पसंद किया था। परंतु आज की तारीख में कामनी, उसकी सबसे खास बनी हुई है और उसकी सुरक्षा के कामों को भी संभालती है। वो खतरनाक है। शायद तुमने ये बात महसूस कर ली होगी देवराज चौहान।"

"कह नहीं सकता।" देवराज चौहान ने सोच-भरे स्वर में कहा—"मुम्बई आते वक्त तो उसने पीछे लगी कार पर शानदार निशाना लिया था, परंतु उससे एक रात पहले जब वो चुपके से कॉटेज से निकल गई थी, बाद में जब लौटी तो घबराई हुई थी और भीतर आते ही उसने खुद को कमरे में बंद कर लिया। मैंने ही उन दोनों का मुकाबला किया। अगर उसमें दम-खम होता तो वो खुद को कमरे में न बंद कर लेती। उनसे निबटने में मेरा साथ देती

मार्शल ने कुछ नहीं कहा।

परंतु जगमोहन बोला।

"पीछे लगे उन दोनों हत्यारों के पास रिवॉल्वरें थीं?"

"हां।"

"उसके पास रिवॉल्वर नहीं थी?"

"शायद नहीं।"

"तो तब ये ही वजह उसके घबरा जाने की थी कि रात के अंधेरे में हत्यारे रिवॉल्वरें लिए उसके पीछे थे और उसके पास रिवॉल्वर नहीं थी। रही बात कि कॉटेज पर आकर उसने खुद को कमरे में बंद कर लिया तो ऐसा दिखावा करना उसकी मजबूरी थी, क्योंकि तुम्हारे सामने वो साधारण लड़की बनी हुई थी। अगर तब वो कुछ करती तो उसके साधारण लड़की न होने का भेद खुल जाता। इसलिए उसने तुम्हारा साथ नहीं दिया लड़ाई में।"

"ये सम्भव है।"

"वो बेहद खतरनाक है।" मार्शल कह उठा—"इकबाल खान सूरी की खास वो यूं ही नहीं बनी। उसे खतरनाक बनाने में इकबाल खान का हाथ है। उसे यूरोप भेजा कि जूडो-कराटे सीख सके। ब्लैक बैल्ट हासिल की उसने और पाकिस्तान जाकर निशानेबाजी सीखी। वो तेज दिमाग की है और इकबाल खान सूरी का साथ पाकर वो खतरनाक बन गई।"

"तुम हमसे क्या चाहते हो?" देवराज चौहान बोला।

"कामनी यहां किस काम से आई, अभी तक समझ नहीं आया मुझे, जबकि मेरे आदमी उस पर बराबर नजर रखते रहे। वैसे वो मुम्बई में सड़क पर राह चलते तीन अलग-अलग आदमियों से कुछ-कुछ मिनटों के लिए मिली।

इसी प्रकार सूरत में दो अलग-अलग लोगों से मिली। वो पांचों लोग मेरे आदमियों की नजर में है। परंतु मेरे लिए सबसे अच्छी बात ये रही कि तुम इस मामले में आ गए। कामनी को लेकर मैंने कुछ और ही योजना बना रखी थी कि उसे अब दुबई नहीं जाने दूंगा। एयरपोर्ट पर उसके सामान से ड्रग्स की बरामदगी दिखाकर उसे गिरफ्तार कर लिया जाएगा और उस स्थिति में उससे सौदा किया जाता कि वो इकबाल खान सूरी को पकड़वाने या उसे शूट करने में हमारी मदद करे। परंतु जब तुम्हारे बारे में खबर मिली कि, सूरत में उस लड़की पर हमला हुआ और तुमने ऐन मौके पर आकर उसे बचा लिया तो मुझे अपनी योजना बदलनी पड़ी और नई योजना।"

"तुम सीधे-सीधे काम की बात पर क्यों नहीं आते?" जगमोहन कड़वे स्वर में बोला।

मार्शल ने मुस्कराकर जगमोहन को देखा और कह उठा।

"मेरे एजेंट दुबई और पाकिस्तान में सक्रिय हैं। यहां तक कि प्रभाकर पहले दुबई और अब चोरी-छिपे पाकिस्तान पहुंच चुका है।"

"प्रभाकर?" जगमोहन के होंठ सिकुड़े।

"मेरा ऐसा बेहतरीन एजेंट जिसके साथ तुम दो बार काम कर चुके जगमोहन।"

"वो वास्तव में बेहतरीन है।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

मार्शल ने दोनों को देखकर सिर हिलाया फिर कह उठा।

"मैं चाहता हूं तुम दोनों इकबाल खान सूरी के ठिकाने का सही पता लगाओ कि वो कहां पर है। तुम दोनों को सिर्फ ये ही पता लगाना है और खबर प्रभाकर को दे देनी है, बस, ये ही काम है।"

"प्रभाकर क्या करेगा?" देवराज चौहान बोला।

"बाकी एजेंटों की सहायता से इकबाल खान सूरी को खत्म कर देगा।" मार्शल ने गम्भीर स्वर में कहा।

देवराज चौहान और जगमोहन की नजरें मिलीं।

"बहुत आसान काम है। मैं नहीं समझता कि तुम लोगों को ये काम करके कोई खतरा आएगा। इकबाल खान सूरी के ठिकाने का सही पता लगाकर सिर्फ प्रभाकर को बताना है और तुम लोगों का काम खत्म। इकबाल खान सूरी की प्रेमिका और उसकी सुरक्षा का ध्यान रखने वाली कामनी उर्फ नसरीन शेख से तुम्हारी पहचान हो चुकी है देवराज चौहान। ये अच्छी बात रही और तुम चाहो तो इस बात का फायदा भी उठा सकते हो इस काम में।"

"तुम्हारा मतलब कि कामनी मुझे इकबाल खान सूरी की सारी खबर दे देगी।"

मार्शल ने देवराज चौहान को देखकर गम्भीर स्वर में कहा।

comicsmylife.blogspot.in

"ये तुम पर निर्भर है। क्या मालूम उससे तुम्हारी पहचान किस हद तक हुई है।"

"गलत मत सोचो। तुम इतना कह सकते हो कि हममें नई पहचान हुई है।" देवराज चौहान बोला।

"दोस्तों की तरह?"

"पूरी तरह तो ये बात नहीं कह सकता। लेकिन हमारे बीच हालात ठीक ही रहे।"

"तुमने उसकी जान बचाई, ये बात वो मानती है?"

"हां।"

"इतना ही काफी है कि इस बात को मानती है। अगर तुम समझदारी से चलो तो उससे जान सकते हो कि...।"

"वो मुझे मजबूत लड़की लगी।"

"वो मजबूत है। चालाक है, फुर्तीली है। उसने तुम्हें अंत तक महसूस नहीं होने दिया कि वो असल में क्या है। तुम्हें भी इस बात का शक नहीं हुआ कि वो कुछ हो सकती है।" मार्शल ने पूछा।

"नहीं हुआ।"

"वो जानती है कि तुम डकैती मास्टर देवराज चौहान हो।"

"वो मुझे सुरेंद्र पाल के नाम से जानती है।"

"वो तुम्हारी हकीकत भी जान ले तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा। कम-से-कम तुम पुलिस के आदमी नहीं हो। हिन्दुस्तान सरकार के आदमी नहीं हो। इस काम के लिए तुम्हारा डकैती मास्टर होना प्लस प्वाइंट है। बोलो, मेरा ये आसान-सा काम करना चाहोगे? इकबाल खान सूरी का सही ठिकाना, मालूम करके, पाकिस्तान में मौजूद प्रभाकर को...।"

"ये काम तो तुम्हारे एजेंट भी कर...।"

"मेरे एजेंट दुबई में ताजा-ताजा धोखा खा चुके हैं। वो इकबाल खान सूरी के काफी करीब पहुंचने जा रहे थे कि अचानक ही इकबाल खान सूरी गायब हो गया। इस बात को महीना हो गया परंतु वो इकबाल खान सूरी की कोई खबर हासिल नहीं कर पाए कि वो कहां पर है। ये भी पता नहीं चल पाया कि उसे किसी प्रकार का शक हो गया था तब वो गायब हुआ या कहीं जाने का प्रोग्राम उसका पहले से ही था। मेरे एजेंट दुबई में इन बातों में उलझे पड़े थे कि तभी कामनी के मुम्बई आने की खबर आई। उधर मुझे लगा कि हो सकता है इकबाल खान सूरी पाकिस्तान न पहुंच गया हो। पाकिस्तान में मेरे ढेरों एजेंट काम कर रहे हैं, सबको इकबाल सूरी के बारे में खबर देने को कहा गया, परंतु वो भी महीने भर से कोई खबर नहीं दे सके तो मैंने प्रभाकर के हवाले ये काम करके उसे दुबई भेज दिया। ये दस दिन पहले की बात है।

इस वक्त प्रभाकर पाकिस्तान पहुंच चुका है, इकबाल खान सूरी की तलाश में। परंतु अब तुम इस मामले में आ गए, तुम्हारी कामनी से पहचान हो गई तो मुझे लगा कि तुमसे ये काम लेना बेहतरीन होगा। तुम कामनी की पहचान का फायदा उठा सकते हो।"

"हाल ही में अमेरिका ने भी पाकिस्तान में कुछ ऐसा किया है।" देवराज चौहान बोला।

"हां। अपने दुश्मन आतंकवादी को ढूंढ़कर उसकी हत्या कर दी।" मार्शल ने गम्भीर स्वर में कहा—"सच बात तो ये है कि अमेरिका की इस हरकत से ही मुझे ऐसी योजना बनाने का खयाल आया। वो पाकिस्तान में अपने दुश्मन को ढूंढ़कर उसे मार सकता है तो हम क्यों नहीं दुबई या पाकिस्तान में ऐसे मिशन को अंजाम दे सकते।"

चंद पलों के लिए वहां चुप्पी छा गई।

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाकर कश लिया।

"इस काम में सबसे ज्यादा फायदा इस बात का मिलेगा देवराज चौहान कि कामनी से अच्छे माहौल में मुलाकात हो चुकी है तुम्हारी। और वो इस बात को भी मानती है कि तुमने उसकी जान बचाई।"

"वो इकबाल खान सूरी का खास है?"

"बेहद खास।"

"और तुम समझते हो कि वो मुझे इकबाल खान का ठिकाना बता देगी उस मुलाकात की खातिर।"

"ये तो तुम पर निर्भर है कि तुम कामनी को कैसे संभालते हो।"

"तुम गलत सोच रहे हो मार्शल। वो कभी नहीं बताएगी मुझे, इकबाल खान का ठिकाना।"

"ये तुम जानो।" मार्शल ने गम्भीर स्वर में कहा—"इस बार मेरा काम बहुत कम खतरे वाला है। इकबाल खान सूरी का ठिकाना मालूम करो और पाकिस्तान में मौजूद प्रभाकर को बता दो। प्रभाकर का फोन नम्बर तुम्हें मिल जाएगा। यहां से तुम दोनों दुबई जाओगे। वहां मेरे एजेंट तुम लोगों को मिलेंगे। जो जानकारी उनके पास होगी, तुम्हें बता देंगे। आगे तुमने देखना है कि काम कैसे करना है। इस सारे काम के बदले मैं तुम लोगों को एडवांस में मोटी रकम दूंगा।"

"कितनी?" जगमोहन के होंठों से निकला।

मार्शल ने मुस्कराकर जगमोहन को देखा।

"क्या खयाल है तुम्हारा।" जगमोहन बोला—"हम ये काम करेंगे नहीं?"

देवराज चौहान ने कश लेकर सिर हिलाया फिर बोला।

comicsmylife.blogspot.in

"इकबाल खान सूरी का पता लगाकर, प्रभाकर को बताना है। हम सकते हैं ये काम।"

"सुन लो मार्शल, सिर्फ इतना ही काम है।"

"इतना ही काम है।" मार्शल शराफत से बोला—"हिन्दुस्तान के लिए इकबाल खान सूरी को खत्म करना, नाक का सवाल बन गया है। वो पचासी पुलिस वालों को हत्यारा है और अब पाकिस्तान के साथ मिलकर, हमारे देश के खिलाफ काम कर रहा है। अमेरिका ने हमें रास्ता दिखा दिया कि हम भी ऐसा कर सकते हैं।"

"लेकिन हमारा काम इतना ही है कि इकबाल खान सूरी को खोजकर, उसके ठिकाने के बारे में प्रभाकर को बताना। इसके अलावा मामले से हमारा कोई मतलब नहीं है।" जगमोहन ने जैसे बात पक्की की।

"तुम लोगों का इतना ही काम है।" मार्शल गम्भीर था—"दोनों मेरे साथ चलो।"

"कहां?"

"मेरे ठिकाने पर। वहां तुम लोगों के पासपोर्ट तैयार किए जाएंगे और कल की फ्लाईट से दुबई...।"

"पहले जरा नोटों की बात कर लें।" जगमोहन मुस्कराकर कह उठा—"नोट ले भी लूं। उसे ठिकाने भी लगा दूं। इस काम में शाम हो जाएगी। उसके बाद तुम्हारे काम शुरू होंगे।" वो उठते हुए बोला—"इधर आना जरा।"

"क्यों?" जबकि मार्शल सब समझ रहा था।

"नोटों की बात हो जाए।"

मार्शल और जगमोहन वहां से कई कदम दूर जाकर धीमे स्वर में बात करने लगे।

देवराज चौहान ने उन्हें देखा। कश लिया और नजरें घुमा लीं। चेहरे पर सोचें नाच रही थीं। वो गम्भीर था। आंखों के सामने कामनी का चेहरा नाच रहा था।

▭ ▭

दुबई!

अगले दिन शाम के छः बजे देवराज चौहान और जगमोहन दुबई चमचमाते एयरपोर्ट से बाहर निकले और टैक्सी में बैठकर वहां से चल दिए। ड्राइवर को बता दिया था कि 'अलजीरा' होटल जाना है जो कि कादिर खान रोड पर स्थित था। बाहर अभी भी धूप थी। टैक्सी के शीशे काले थे और धूप से उन्हें राहत मिल रही थी। दोनों क्लीन शेव्ड थे और पैंट-कमीज में थे।

सारी रात मार्शल के एजेंट उन्हें दुबई और पाकिस्तान स्थित एजेंटों की

तस्वीरें दिखाते रहे। फोन नम्बर याद कराते रहे। हर जरूरी जानकारी देते रहे। उन्हें उन ठिकानों की भी तस्वीरें दिखाई जिन्हें इकबाल खान सूरी दुबई में इस्तेमाल करता था। हर छोटी-बड़ी जानकारी उन्हें दे दी गई। बाकी बातें अब दुबई स्थित एजेंटों पर निर्भर थीं। असल रास्ता तो उन्होंने ही दिखाना था।

"सुना है दुबई की शामें बहुत शानदार होती हैं।" जगमोहन बोला।

"तुम कितनी बार दुबई आ चुके हो?" देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा।

"बहुत बार।"

"तो अनाड़ियों की तरह बातें क्यों कर रहे हो दुबई के बारे में?"

"ड्राइवर को सुनाने के लिए।"

"वो हिन्दी नहीं समझने वाला।" देवराज चौहान ने बाहर देखते हुए कहा जबकि देवराज चौहान की इस बात पर ड्राइवर के चेहरे पर छोटी-सी मुस्कान उभरी और लुप्त हो गई। वो दुबई का स्थानीय व्यक्ति ही लग रहा था। सांवला पका, रंग। चौड़ी नाक। मोटी आंखें, सिर के बाल छोटे-छोटे।"

अभी टैक्सी तीन-चार किलोमीटर ही आगे गई होगी कि तभी पीछे से एक कार ने तेजी से उनकी टैक्सी को ओवरटेक किया फिर पीछे वाला शीशा खुला और एक हाथ बाहर निकला।

हाथ से खास इशारा किया गया।

उसके बाद हाथ भीतर आया और शीशा ऊपर चढ़ गया।

टैक्सी ड्राइवर शांति से टैक्सी ड्राइव करता रहा।

परंतु देवराज चौहान और जगमोहन ये देखकर चौंके।

"ये क्या था?" देवराज चौहान ने आंखें सिकोड़कर, उसकी भाषा में पूछा।

"आप मुझसे अपनी भाषा में बात कर सकते हैं।" ड्राइवर कह उठा।

"ओह, तुम हिन्दी समझते हो। ये आगे वाली कार ने क्या इशारा किया?"

"अपने पीछे आने को कहा।" टैक्सी ड्राइवर ने शांत स्वर में कहा।

"पीछे? क्या मतलब...।" जगमोहन चौंककर बोला।

"पीछे का मतलब पीछे होता है।" ड्राइवर ने कहा।

वो कार, सौ मीटर आगे सड़क पर जा रही थी।

"तुम्हें बताया था कि हमें अलजीरा होटल जाना...।"

"हम वहां नहीं जा रहे।" टैक्सी ड्राइवर ने शांत स्वर में कहा—"आ दोनों की मंजिल कहीं और है।"

देवराज चौहान और जगमोहन की नजरें मिलीं।

"आराम से बैठे रहिए। मैं मार्शल का एजेंट हूं और आगे वाली कार भी आपके दोस्त ही हैं।"

comicsmylife.blogspot.in

"परंतु यहां ऐसा कुछ होगा, मार्शल ने नहीं बताया...।" देवराज चौहान ने कहना चाहा।

"करना पड़ा। हमारा ऐसा कोई इरादा नहीं था, परंतु सावधानी के नाते ये सब किया जा रहा है। दुबई में इकबाल खान सूरी के हाथ बहुत लम्बे हैं। एयरपोर्ट पर उसके आदमी नजर रखते हैं, खासतौर से इंडिया से आने वाले लोगों पर। ऐसे में अलजीरा में ठहरना आपके लिए ठीक नहीं। जब से इकबाल खान सूरी गायब हुआ है, तब से हम भी सतर्क हो गए हैं कि कहीं उन्हें हमारे बारे में खबर न मिल गई हो।"

"इकबाल खान सूरी तो...।"

"चुप रहिए।" ड्राइवर बोला—"मेरे खयाल में एक कार हमारा पीछा कर रही है। पीछे मत देखिए।" कहने के साथ ही ड्राइवर ने मोबाइल निकाला और नम्बर मिलाकर बात की—"कोई हमारे पीछे है एयरपोर्ट से ही।"

वो कुछ पल उधर से सुनता रहा फिर फोन बंद करके जेब में रखा। शीशे में पीछे आती कार देखी।

"हमें नहीं पता वो कार किसकी है।" ड्राइवर ने कहा—"मैं आप दोनों को एक जगह पर उतार दूंगा। बता दूंगा कि किस तरफ जाना है। उधर ही चले जाना। हमारा आदमी आपको मिल जाएगा। पहले हमारा प्लान दूसरा था परंतु अब पीछे आने वाली कार की वजह से हमें नया प्लान बनाना पड़ा

"तुम किसके आदमी हो?" जगमोहन ने पूछा।

"बताया तो, मार्शल का...।"

"मेरा मतलब है यहां किसके अंडर काम करते हो। तुम्हारा कोई तो बड़ा होगा।"

"मिस्टर कमल चावला। हमें सारे निर्देश कमल चावला साहब से ही मिलते हैं।"

"वो कहां है?"

"सब ठीक रहा तो जल्दी ही मुलाकात हो जाएगी।" ड्राइवर ने कहा।

"क्या तुम लोग ज्यादा सावधानी नहीं बरत रहे?"

"ये जरूरी हो गया है।" ड्राइवर ने गम्भीर स्वर में कहा—"आप लोगों को पता ही होगा कि हम इकबाल खान सूरी के बहुत करीब पहुंच गए थे। एक-आध दिन में हमने मौका पाते ही उसकी हत्या कर देनी थी और ऐसे वक्त में उसका गायब हो जाना हमारी समझ में नहीं आ रहा। ऐसी स्थिति में उसने हम पर कोई हमला भी नहीं करवाया। हमारे जो दो एजेंट उसके करीब पहुंचे थे वो भी अभी तक सही-सलामत हैं। स्पष्ट तौर पर हम भ्रम की स्थिति में हैं कि असल बात क्या है। इकबाल खान कहां गायब हो गया अचानक...।"

"क्या पता उसने कहीं जाना ही हो।"

"ऐसा नहीं था। उसके पास पहुंच चुके हमारे एजेंट बताते हैं वो एक दस मंजिला होटल का सौदा कर रहा था और तीन दिन के बाद उसने उस सौदे को पक्का करना था। इसी काम में वो व्यस्त था कि अचानक ही वो गायब हो गया। जबकि अगले दिन हमारे एजेंट उसकी हत्या का प्लान बना चुके थे। परंतु वो कैसे गया, उसके जाने तक की भी कोई खबर नहीं लगी।"

"और कामनी?" देवराज चौहान ने पूछा।

"वो दुबई में थी। सबके सामने। वो गायब नहीं हुई। जबकि वो इकबाल खान सूरी के करीब ही रहती है हमेशा। एक महीना वो अकेली ही दुबई में दिखती रही फिर मुम्बई चली गई। कुछ दिन लगाकर कल ही वापस लौटी है।"

"कामनी, इकबाल खान से फोन पर बातें करती होगी।" देवराज चौहान ने कहा।

"जरूर करती होगी। परंतु उसे बातें करते किसी ने देखा-सुना

"वो मुम्बई क्यों गई?"

"मालूम नहीं।"

"जबसे इकबाल खान सूरी गायब हुआ है, उसके बाद से कामनी के व्यवहार में कोई बदलाव देखा गया?"

"नहीं। वो सामान्य दिखी हमेशा।"

"तुम लोगों के दो एजेंट इस वक्त कहां पर हैं, जो इकबाल के पास पहुंचकर उसकी हत्या करने वाले थे।"

क्षणिक खामोश रहकर ड्राइवर ने कहा।

"इससे ज्यादा बातें आप मुझसे मत पूछें। कमल चावला से ही बात करें तो बेहतर होगा। वो जगह आने वाली है जहां आपको उतरना है। सामान की आप चिंता न करें। वो आपको फौरन मिल जाएगा। आपको जहां उतारूंगा, वहां पर मैं दस मिनट खड़ा रहूंगा ताकि पीछे लगी कार को भ्रम में डाल सकूं। उसके बाद चला जाऊंगा। तब तक आप हमारे आदमियों के हाथों में पहुंच चुके होंगे।"

"इस पर भरोसा करना ठीक होगा?" जगमोहन ने देवराज चौहान से कहा।

देवराज चौहान खामोश रहा। कुछ न बोला।

कुछ ही देर में ड्राइवर ने कार सड़क किनारे, एक गली के सामने रोककर कहा।

"आप दोनों सामने वाली गली में चले जाइए। वहां हमारे आदमी आपको पहचान जाएंगे।"

comicsmylife.blogspot.in

"हमारा सामान?" जगमोहन ने पूछा।
"आप दोनों ने जहां पहुंचना है, आपका सामान पहले ही वहां पहुंच जाएगा। निश्चिंत रहें।" वो बोला।
देवराज चौहान ने छिपी निगाहों से पीछे देखा।
सौ कदम पीछे एक काली कार आ कर रुकी थी। उसमें से बाहर कोई न निकला था।
दोनों कार से बाहर निकले। दरवाजे बंद किए।
जगमोहन गली की तरफ बढ़ने लगा कि देवराज चौहान ने कहा।
"रुको।"
जगमोहन ने ठिठककर देवराज चौहान को देखा।
"इस प्रकार का कोई प्रोग्राम नहीं था कि कोई एयरपोर्ट पर हमें मिलेगा।" देवराज चौहान ने कहा—"ये ठीक बंदा भी हो सकता है और इकबाल खान सूरी का आदमी भी हो सकता है। शायद हम पहचान लिए गए हों। पता नहीं, असल मामला क्या है, हमें इसकी बातों का जरा भी भरोसा नहीं करना चाहिए।"
जगमोहन सतर्क हुआ।
तभी ड्राइवर सिर आगे करके उनसे बोला।
"वक्त क्यों खराब कर रहे हो। यहां से जाते क्यों नहीं? गली में जाओ।"
"हमने गली में नहीं जाना है। वहां हमारे लिए इंतजाम किए हो सकते हैं।" देवराज चौहान ने पीछे वाली कार की तरफ देखते हुए कहा—"हमें यहां से भागना है। अलग-अलग हो जाना है। मार्शल के दिए यहां के एजेंटों के नम्बर तुम्हारे पास हैं, बाद में उन पर बात कर लेना। हमारे भागते ही ये लोग हमारे पीछे आएंगे। ये टैक्सी वाला भी और पीछे वाली कार भी है। कोशिश करना कि इनके हाथ न लगो। हमें नहीं पता कि कौन मार्शल का एजेंट है और कौन इकबाल खान सूरी का।"
"परंतु इकबाल खान सूरी को हमारी खबर कैसे लग सकती है। मार्शल का सारा काम खामोशी से...।"
"जो भी हो बात बाहर जा चुकी है तभी तो यहां दो कारें हैं एक ने टैक्सी वाला बनकर हमें रिसीव किया और दूसरी कार पीछे लग गई। अगर सब कुछ सामान्य होता तो ये सब न हो रहा होता।"
उसी पल टैक्सी ड्राइवर ने पुनः खींझ भरे स्वर में कहा।
"वक्त क्यों खराब कर रहे हो, तुम दोनों जल्दी से गली में जाओ।"
दोनों की निगाहें मिलीं और अगले ही पल दोनों सड़क के किनारे-किनारे भाग खड़े हुए।
ये देखकर टैक्सी ड्राइवर हक्का-बक्का रह गया।

उसी पल पीछे वाली कार स्टार्ट हुई और उन दोनों की तरफ बढ़ती चली गई। सड़क पर से वाहन तेजी से आ-जा रहे थे। देवराज चौहान ने एकाएक सीधा भागना छोड़कर सड़क पार की और उल्टी दिशा में भागने लगा। जबकि जगमोहन सड़क किनारे सीधा भागे जा रहा था। कुछ आगे सड़क का मोड़ था, वो उस मोड़ पर पहुंचकर अपनी दिशा बदलने की सोच रहा था कि तभी पीछे से आती काली कार उसके पास रुकी।
"भीतर आ जाओ।" ऊंची आवाज उसके कान में पड़ी।
दौड़ते हुए जगमोहन ने कार में देखा।
उस कार में दो आदमी थे। जो कि आगे वाली सीटों पर बैठे हुए थे
वो दौड़ता रहा।
कार मध्यम-सी रफ्तार से उसके साथ चलने लगी।
"हम मार्शल के एजेंट हैं मिस्टर जगमोहन। जल्दी से कार में आ जाओ।"
इन शब्दों के साथ ही जगमोहन को खतरे का एहसास हुआ। वो टैक्सी ड्राइवर भी खुद को मार्शल का एजेंट कह रहा था। इतना तो उसे महसूस हो गया कि भारी गड़बड़ हो चुकी है।
दौड़ता जा रहा था जगमोहन।
कार उसके बराबर धीमी गति से चल रही थी।
"कार में आ जाओ मिस्टर जगमोहन। हमें कमला चावला ने भेजा है। हम एयरपोर्ट से तुम पर नजर रखते आ रहे हैं।"
जगमोहन चौराहे पर पहुंच गया। तभी उसकी निगाह पुलिस कार पर पड़ी जो चौराहे के पास आधी फुटपाथ पर चढ़ी खड़ी थी। जगमोहन पुलिस कार की तरफ दौड़ा। ये देखकर उस काली कार ने रफ्तार पकड़ी और सड़क पर सीधी दौड़ती चली गई।
जगमोहन पुलिस कार के पास पहुंचकर ठिठका और गहरी सांसें लेने लगा। जाती कार को उसने जाते देख लिया था। उसे इस तरह आते देखकर, कार के पास खड़ा पुलिस वाला बोला।
"क्या बात है?"
"कुछ लोग मुझे लूटने के लिए मेरे पीछे लग गए थे।" जगमोहन ने कहा
पुलिस वाले की आंखें सिकुड़ीं।
"यहां पर ऐसी घटनाएं नहीं होतीं।" वो बोला।
"लेकिन मेरे पीछे वो बदमाश...।"
"किस देश के रहने वाले हो?"
"हिन्दुस्तान का।"
"पासपोर्ट दिखाओ।"
पासपोर्ट जेब में ही था। जगमोहन ने फौरन पासपोर्ट निकालकर उसे दिया।

comicsmylife.blogspot.in

उसने पासपोर्ट देखा और वापस करते हुए कहा।

"जाओ यहां से, संभलकर रहो।"

जगमोहन ने पासपोर्ट जेब में रखा और आगे बढ़ गया। उसका खयाल था कि पीछे लगी कार जा चुकी है, परंतु गलत खयाल था, वो कार फिर वापस आ गई थी और दूर रहकर उस पर नजर रख रही थी।

▭ ▭

उन्हें इस तरह भागते पाकर टैक्सी ड्राइवर हक्का-बक्का रह गया था। अगले ही पल उसने मोबाइल निकाला और नम्बर मिलाकर बात की। बोला।

"उन दोनों को पता नहीं क्या हुआ, कार से निकलते ही, गली में जाने की अपेक्षा दूसरी तरफ भाग गए।"

"तुम पर शक हो गया होगा।" उधर से कहा गया।

"मैंने तो उनसे सही बात की थी। फिर...।"

"अब क्या स्थिति है?"

"पीछे आने वाली कार जगमोहन के पीछे गई है। देवराज चौहान सड़क पार करके दूसरी दिशा में...।"

"तुम कहां हो?"

"मैं वहीं पर हूं और...।"

"बेवकूफ देवराज चौहान के पीछे जाओ।" उधर से झल्लाकर कहा गया—"वो सड़क के दूसरी तरफ है।"

"हां।"

"फौरन किसी कट से कार वापस लो और उसे ढूंढ़ो। वो तुम्हारी नजरों से दूर हो गया तो तुम्हारी खैर नहीं।"

ड्राइवर ने तुरंत फोन बंद किया और कार दौड़ा दी।

▭ ▭

देवराज चौहान आधा घंटा सड़क किनारे और गलियों में घुसकर सड़क बदलता रहा। वो नहीं जानता था कि वो कहां है, परंतु अगर कोई उसके पीछे है तो उससे पीछा छुड़ा लेना चाहता था।

जब इसी प्रकार काफी देर बीत गई और पीछे लगा कोई न दिखा तो दिखाई पड़ने वाली कॉफी शॉप में जा घुसा। वहां सैल्फ सर्विस थी। उसने पेमेंट देकर कॉफी ली और एक टेबल पर जा बैठा था। रैस्टोरेंट में ज्यादा भीड़ नहीं थी। वो उस ड्राइवर को नहीं देख पाया था जो कि उस पर नजर रखे, दूर रहकर पैदल ही उसका पीछा करते कॉफी शॉप तक आ गया था और बाहर ही खड़ा रह कर उसने फोन पर किसी को देवराज चौहान के बारे में खबर दे दी। जवाब में जो निर्देश मिले, उन्हें सुनने के बाद उसने फोन बंद करके जेब में रखा और वहीं टहलने लगा।

▭ ▭

देवराज चौहान ने कॉफी समाप्त की। तब तक उसे वहां लगा फोन बूथ नजर आ गया था। वो फोन बूथ में गया और मार्शल के दिए फोन नम्बरों में से एक पर फोन किया। बात हो गई।

"मैं देवराज चौहान बोल रहा हूं।" देवराज चौहान ने कहा।

"हिन्दुस्तान से आए हो?" उधर से पूछा गया।

"हां।"

"किसके साथ?"

"जगमोहन के।"

"होटल अलजीरा पहुंच गए तुम दोनों।"

देवराज चौहान ने गहरी सांस ली और कहा।

"तो तुम लोग हमारे अलजीरा पहुंचने की सोचे बैठे हो।"

"ये ही तो प्रोग्राम बताया गया हमें। हमारे दो एजेंट होटल अलजीरा तुम्हारे इंतजार में मौजूद हैं।"

"तुम्हारे एजेंट एयरपोर्ट पर थे?"

"नहीं। सावधानी के नाते हमने तुम्हें एयरपोर्ट पर रिसीव करना ठीक नहीं समझा। बात क्या है?"

"एयरपोर्ट पर हमें मार्शल के आदमियों ने रिसीव किया और...।"

"ओह नहीं, वो हमारे आदमी नहीं थे।" उधर से तेज स्वर में कहा गया।

"तुम लोगों ने गलती की। एयरपोर्ट से ही हम पर नजर रखनी चाहिए थी। हमें रिसीव करने वाले इकबाल खान सूरी के आदमी हो सकते हैं या कोई और ही मामला हो रहा है यहां।"

"वो इकबाल खान सूरी के आदमी ही रहे होंगे। ये तो बुरा हुआ।"

"जगमोहन का फोन आया?"

"जगमोहन? क्या वो तुम्हारे साथ नहीं है?" उधर से उलझन-भरे स्वर में पूछा गया।

देवराज चौहान को लगा कि जगमोहन कहीं मुसीबत में न पड़ गया हो।

"मैं होटल अलजीरा जा रहा...।"

"लेकिन अब तुम कहां हो। जगमोहन तुम्हारे साथ क्यों नहीं हैं। तुम लोगों के साथ क्या हुआ?"

"फोन पर बातें नहीं हो सकतीं। मैं अलजीरा होटल पहुंचकर ही तुमसे बात करूंगा। तुम्हारा नाम?"

"जैकी।"

"तुम्हारा बड़ा कमल चावला है?"

"हां।"

comicsmylife.blogspot.in

"तुम्हारे दुश्मनों के पास तुम सबकी खबरें हैं। मेरे खयाल में तुम सब खतरे में हो।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"तुम लोग क्या सोचते हो कि इकबाल खान सूरी को तुम सबकी खबर है कि नहीं?"

"अभी ये स्पष्ट नहीं हो सका। इस बात को लेकर हम उलझन में हैं कि...।"

"इकबाल खान के पास तुम लोगों की सब खबरें हैं।"

"नहीं, ये कैसे हो...।"

देवराज चौहान ने रिसीवर वापस रख दिया और फोन बूथ से निकलकर कॉफी शॉप के दरवाजे की तरफ बढ़ गया। दरवाजा खोलकर बाहर निकला कि ठिठक गया। सामने ही वो ही टैक्सी ड्राइवर खड़ा था।

देवराज चौहान के होंठ सिकुड़ गए उसे देखते ही।

वो मुस्कराया। आगे बढ़ा। देवराज चौहान के पास आ पहुंचा

"आप तो भाग खड़े हुए।"

"कौन हो तुम?" देवराज चौहान सख्त स्वर में बोला—"तुम मार्शल के एजेंट नहीं हो।"

"कैसे जाना?" वो शांत स्वर में बोला।

देवराज चौहान कठोर निगाहों से उसे देखता रहा।

"तुम तब से मेरे पीछे हो?" देवराज चौहान ने कहा।

उसने सहमति से सिर हिला दिया।

"किसके भेजे हो तुम?"

"आपको कुछ देर इसी कॉफी शॉप में रहना होगा। आपसे मिलने आ रहा है कोई।"

"कौन?"

"ये तो मुझे भी नहीं पता। परंतु मुझे कहा गया है कि कुछ देर आपको यहीं पर रोकूं।"

"कैसे रोकोगे?" देवराज चौहान की आवाज में सख्ती उभरी।

उसने जेब थपथपाई।

देवराज चौहान उसकी पैंट की जेब का उभार देखकर समझ गया कि वहां रिवॉल्वर है।

"तुम्हारे पास रिवॉल्वर नहीं हो सकती। क्योंकि अभी तुम प्लेन पर सफर करके आए हो। झगड़ा करने का क्या फायदा। कुछ देर रुक जाना ही ठीक है। अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी तो मैं तुम्हें बेहिचक शूट कर दूंगा।"

देवराज चौहान के चेहरे पर कठोरता छाई रही। बोला।

"जगमोहन कहां है?"

"उसके पीछे हमारे ही आदमी हैं।" वो शांत स्वर में कह उठा।

"तुम लोग मार्शल के बारे में काफी कुछ जानते हो। कहां से मिली जानकारी?" देवराज चौहान ने पूछा।

"कॉफी शॉप के भीतर जाओ। अगले बीस मिनट तक बाहर मत निकलना।"

"उसके बाद तो जा सकता हूं।" व्यंग से बोला देवराज चौहान।

"नहीं। कोई तुमसे मिलने आ रहा है। पता नहीं अब तुम्हारा क्या होगा मेरा काम तो ऑर्डर की तामील करना है। लेकिन इतना तो कह ही सकता हूं कि तुम्हारा दुबई का सफर बढ़िया नहीं रहने वाला।" कहते हुए उसका स्वर सख्त हो गया था।

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा और पलटकर वापस कॉफी शॉप में प्रवेश कर गया। सीधा भीतर मौजूद फोन बूथ में पहुंचा और वहां से जैकी को फोन किया। बात हुई।

"मुझे लगता है कि मुझे घेर लिया गया है। इस वक्त मैं कॉफी शॉप में हूं।" देवराज चौहान ने फोन पर कहा।

"कॉफी शॉप किधर है?"

"मैं नहीं जानता।"

"वहां के लोगों से पूछो और मुझे बताओ।" उधर से जैकी ने तेज स्वर में कहा।

"मैं अभी तुम्हें फोन करता हूं।" कहकर देवराज चौहान ने रिसीवर रखा और फोन बूथ से बाहर निकला।

परंतु अगले ही पल ठिठक गया।

नजरें कॉफी शॉप के शीशे के दरवाजे पर जा टिकीं, जहां से कामनी भीतर प्रवेश कर रही थी। वो कमीज-सलवार पहने थी और बेहद खूबसूरत लग रही थी। उसके साथ वो ही ड्राइवर था। देखते-ही-देखते ड्राइवर ने उसकी तरफ इशारा किया और फिर पलटकर बाहर निकलता चला गया।

देवराज चौहान एकटक कामनी को देख रहा था। कामनी ने उसे देखा, अगले ही पल उसने कामनी को चौंकते और संभलते देखा।

स्पष्ट था कि वो नहीं जानती थी कि यहां पर वो उसे देखेगी।

देवराज चौहान के सामने ये बात भी साफ हो गई थी कि दुबई पहुंचने पर उसके आस-पास इकबाल खान सूरी के ही आदमी थे। देवराज चौहान एकाएक सतर्क हो उठा था। स्पष्ट था कि कामनी यहां अकेले नहीं आई होगी। बाहर उसके आदमी मौजूद होंगे। कामनी अब उसकी तरफ बढ़ने लगी थी उसकी आंखों में सिकुड़न मौजूद थी।

देवराज चौहान की निगाह उस पर टिकी थी। शांत-सी मुस्कान होंठों पर आ गई थी।

comicsmylife.blogspot.in

"मुझे आशा नहीं थी कि हम इतनी जल्दी फिर मिलेंगे।" कामनी शांत स्वर में बोली—"कल मैं दुबई पहुंची हूं और आज तुम दुबई में मुझे मिल गए। मुझे सच में हैरानी हो रही है। कहीं तुम मुझे प्यार तो नहीं करने लगे और मेरे लिए दुबई आ गए। आओ, हमें काफी बातें करनी हैं। वहां बैठकर बात करते हैं।" कामनी ने एक खाली टेबल को देखा।

"कॉफी लोगी?" देवराज चौहान के होंठों पर मुस्कान थी।

"जरूर।"

देवराज चौहान कॉफी के काउंटर की तरफ बढ़ गया।

कामनी खाली टेबल के पास पड़ी कुर्सी पर आ बैठी।

देवराज चौहान का दिमाग तेजी से दौड़ रहा था। वो जानता था कि कामनी से ये मुलाकात सुख-भरी नहीं होने वाली। कामनी यहां खामखाह नहीं आई। बातें तो होंगी ही।

वो कॉफी के दो प्याले लिए टेबल पर पहुंचा। एक प्याला उसने कामनी के सामने रखा और दूसरा, खुद बैठते हुए अपने सामने किया और कामनी को देखा।

कामनी गम्भीर निगाहों से उसे देख रही थी। वो कह उठी।

"तुम्हें सुरेंद्र पाल कहूं या देवराज चौहान?"

"देवराज चौहान।"

"तो तब तुमने मुझे अपना गलत नाम बताया था जब सूरत में हम मिले कामनी बोली।

"कुछ भी कह लो। मैं देवराज चौहान हूं।" देवराज चौहान मुस्कराया। कॉफी का घूंट भरा।

"मार्शल के लिए कब से काम करते हो?"

"मैं मार्शल के लिए काम नहीं...।"

"तुम मार्शल के एजेंट हो।" कामनी का स्वर सख्त हो गया—"सूरत में तुमने जानबूझ कर मेरे नजदीक आने की चेष्टा की। ये मार्शल का ही कोई प्लान था जबकि मैं सोचती रही कि मुझ पर हमला करने वाले बाबा रतनगढ़िया के आदमी...।"

"वो बाबा रतनगढ़िया के ही आदमी थे।" देवराज चौहान ने कहा।

"और तुम मार्शल के आदमी।"

"मैं मार्शल का एजेंट नहीं, डकैती मास्टर देवराज चौहान हूं।"

"डकैती मास्टर देवराज चौहान?" कामनी के माथे पर बल पड़े।

"हां।"

"डकैती मास्टर देवराज चौहान का नाम मैंने सुन रखा है, परंतु वो तुम नहीं हो सकते।"

"क्यों?"

"क्योंकि तुम मार्शल के एजेंट हो और सूरत में भी तुमने मुझ पर कोई चाल चलनी चाही, परंतु...।"

"मैं डकैती मास्टर देवराज चौहान हूं। सूरत में हमारी मुलाकात महज इत्तफाक थी। मैंने दो बार तुम्हारी जान बचाई।"

कामनी, देवराज चौहान को घूरने लगी।

"तुम जानते हो कि मैं कुछ घंटों में ही देवराज चौहान की तस्वीर हिन्दुस्तान से ई-मेल के जरिए यहां मंगा सकती हूं।"

"ऐसा जरूर करो। ताकि मेरी हकीकत जान सको।"

"तो तुम्हारा मतलब है कि तुम मार्शल के एजेंट नहीं...।"

"नहीं हूं। इस काम के लिए उसने मुझे किराए पर लिया है।"

"इस काम के लिए?" कामनी ने शब्दों को चबाया।

"हां।"

"क्या काम?"

"इकबाल खान सूरी का पता लगाना।"

कामनी देवराज चौहान को घूरने लगी।

देवराज चौहान ने कॉफी का घूंट भरा।

"मार्शल के पास बेहतरीन एजेंट हैं। वो तुम्हें काम क्यों करने को कहे कामनी बोली।

"वो दो बार पहले भी मेरे से काम ले चुका है।"

"कल शाम तुमने मुझे मुम्बई एयरपोर्ट पर छोड़ा। आज तुम दुबई पहुंच चुके हो और कहते हो कि मार्शल ने तुम्हें इकबाल खान सूरी का पता लगाने भेजा है। कल शाम के बाद मार्शल से बात हो गई और आज तुम दुबई आ गए।"

"उसने इस काम के पैसे भी दे दिए हैं। पूरे पैसे।"

"बेशक काम हो या न हो।"

"इस बारे में मार्शल जाने। मुझे पैसे मिल चुके हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

"साथ में कौन आया है तुम्हारे?"

"जगमोहन। मेरा दोस्त। मेरा साथी।" देवराज चौहान की निगाह कामनी के चेहरे पर थी।

"मार्शल जानता था कि सूरत में तुम मेरे साथ हो?"

"हां।"

"समझी। तो मार्शल सोचता है कि हमारी पहचान का फायदा तुम्हें मिल जाएगा। मैं तुम्हें इकबाल खान सूरी का पता बता...।"

comicsmylife.blogspot.in

"इस बारे में मार्शल ने मुझे कुछ नहीं कहा।"
कामनी कठोर निगाहों से देवराज चौहान को देखती कह उठी।
"इकबाल खान सूरी का पता लगाकर मार्शल क्या करेगा?"
"तुम बेहतर जानती हो कि मार्शल क्या करेगा।"
"तुम बोलो।"
"वो इकबाल खान सूरी को खत्म करेगा।"
"ये काम भी तुम करोगे, है न?"
"नहीं। मेरा काम इकबाल खान सूरी का पता लगाते ही खत्म हो जाएगा।" देवराज चौहान ने कहा।
"तुम मेरे भरोसे दुबई आए हो न कि मैं तुम्हें इकबाल खान सूरी पता बता दूंगी।"
"मैंने ऐसा नहीं सोचा।"
"दिमाग में तो होगा कि...।"
"नहीं। मैं इस तरह काम नहीं करता।" देवराज चौहान बोला—"इस तरह के सहारे लेना मेरी आदत नहीं है।"
"तुम बेवकूफ हो। क्यों यहां मरने आए हो। वापस हिन्दुस्तान चले जाओ।" बेहद सख्त स्वर में कहा कामनी ने—"मैं किसी से इस तरह बात नहीं करती। परंतु ये तुम हो, इसलिए आराम से बात कर रही हूं। वापस हिन्दुस्तान चले जाओ।"
"तुम मेरी बहुत चिंता कर रही...।"
"मैंने कहा है, शाम की फ्लाईट से हिन्दुस्तान लौट जाओ। वरना, बे-मौत मरोगे।" कामनी धीमे स्वर में गुर्रा उठी।
"मार्शल के बारे में तुम्हें इतनी खबरें कहां से मिल जाती हैं?" देवराज चौहान बोला—"जैसे कि मेरे और जगमोहन के दुबई आने की खबर। तुम्हारा कोई आदमी मार्शल के लोगों में मौजूद है।"
कामनी कुछ पल उसे घूरती रही फिर बोली।
"हमारा कोई आदमी मार्शल के एजेंटों में मौजूद नहीं है। महीना भर पहले ही हमें मार्शल के बारे में पता लगा।"
"जब इकबाल खान सूरी अचानक गायब हो गया था।" देवराज चौहान बोला।
कामनी के होंठ भिंच गए। बोली।
"तुम काफी कुछ जानते हो।"
"ये मार्शल की दी जानकारी है।"
"मार्शल के दो एजेंट, मेरे आदमियों में किसी तरह शामिल हो गए थे और हमारा विश्वास जीतकर वो इकबाल खान से भी कुछ बार

किसी-न-किसी काम के सिलसिले में मिल चुके थे। इकबाल खान की सुरक्षा के काम मैं देखती हूं। वो दोनों मेरी निगाहों में आ गए। मैंने C.C.T.V. कैमरे द्वारा संदिग्ध हालत में उन्हें बातें करते देखा। उन्हें पकड़ लिया गया और सख्ती करने पर उन्होंने इस बात को कबूला कि वो मार्शल के एजेंट हैं और उन्हें इकबाल खान सूरी की हत्या करने भेजा गया है।"
"परंतु वो तो अभी पकड़े नहीं गए।" देवराज चौहान के होंठों से निकला।
"बाहर उतनी ही खबर जाएगी, जितनी हम चाहते हैं। वो महीना-भर पहले ही पकड़े गए थे। उससे अगले दिन इकबाल खान सूरी गायब हुआ था।" कामनी ने शब्दों को चबाकर कहा।
"परंतु मार्शल के पास तो खबर है कि वो नहीं पकड़े गए।"
"बोला तो, जो मैं चाहूंगी वो ही बात बाहर जाएगी। हमने उन्हें पकड़ा। उनके मुंह से सब निकलवा लिया। परंतु उनके साथियों से हमने सम्पर्क भी नहीं टूटने दिया। वे दुबई स्थित अपने कांटैक्ट से बात करते रहे और तब रिवॉल्वर उनके सिर पर लगी होती। वो वो ही बातें कहते जो हम चाहते। इस तरह उन्हें अभी तक जिंदा रखा हुआ है।"
"ओह।"
"उन्होंने अपने कांटैक्ट से बातें की और हमें पता चला कि मार्शल इंडिया से दो लोगों को भेज रहा है जो इकबाल खान सूरी की तलाश करेंगे। उन दोनों के नाम देवराज चौहान और जगमोहन बताए गए।"
"सही है।"
"तुम सुरेंद्र पाल हो या देवराज चौहान?" कामनी ने चुभते स्वर में पूछा।
"देवराज चौहान नाम है मेरा।"
"सुरेंद्र पाल नहीं?"
"नहीं।"
"तो तुमने सूरत में मुझे गलत नाम क्यों बताया?"
"अजनबी लोगों को मैं अक्सर सुरेंद्र पाल ही नाम बताता हूं।" देवराज चौहान ने कहा।
"तुम शाम की फ्लाईट से वापस चले जाओ।"
"नहीं। मैं इस तरह वापस जाने वाला नहीं।" देवराज चौहान ने उसकी आंखों में झांका।
"तुम्हें चले जाना चाहिए। यहां रहे तो तुम्हारी जान भी जा सकती है। मार्शल के काम से ही हाथ खींच लो।"
"तुम्हें इकबाल खान सूरी बहुत प्यारा है?" देवराज चौहान बोला।
"बेकार के सवाल मत करो।"
"जवाब दो मेरी बात का कि तुम्हें इकबाल खान सूरी बहुत प्यारा है?

comicsmylife.blogspot.in

जबकि उसका कोई भविष्य नहीं है। हिन्दुस्तान की सरकार उसके पीछे पड़ी है। अब नहीं तो बाद में, वो मरेगा जरूर। कब तक वो जिंदा रह सकता है। ऐसे इंसान से तुम्हारा प्यार या वफादारी कब तक चल सकती है। तुम्हें रास्ता बदल लेना चाहिए।"

"तुम्हारा मतलब कि रास्ता बदलकर तुम्हें इकबाल खान के बारे में बता दूं।"

"बुरा क्या है। उसके साथ रहकर तुम भी बदनाम होती जा रही हो।"

"मेरी बदनामी की फिक्र मत करो। वैसे मेरा खयाल ठीक निकला कि तुम सूरत की छोटी-सी पहचान को कैश कराना चाहते हो कि मैं तुम्हें इकबाल खान सूरी के बारे में बता दूं। परंतु ये बात अपने दिमाग में रख लो कि तुम कभी भी मुझसे कुछ नहीं जान पाओगे। मैं धोखेबाज नहीं हूं जो मुंह खोल दूं।"

"मत बताओ। मैं दोबारा नहीं पूछूंगा।" देवराज चौहान मुस्कराया—"लेकिन सूरत की मुलाकात को कैश कराने मैं दुबई नहीं आया हूं। मुझे अपना काम करना आता है।"

"तो तुम दुबई से जाने वाले नहीं?"

"नहीं।"

"ठीक है। सौदा करते हैं।" कामनी ने गम्भीर स्वर में कहा

"सौदा?"

"तुम्हारा साथी जगमोहन इस वक्त मेरे आदमियों के कब्जे में है।" कामनी बोली।

देवराज चौहान चौंका।

"जगमोहन, तुम्हारे कब्जे में?"

"हां। जब मैं यहां पहुंची, बाहर थी तो मुझे फोन पर ये खबर मिली। बोलो, जगमोहन को मार दूं?"

"तुम ऐसा नहीं कर सकती।" देवराज चौहान स्वर कठोर हो गया।

"मैं सब कुछ कर सकती हूं। चैक करना चाहते हो तो यहीं पर बैठे-बैठे तुम्हें जलवा दिखा देती हूं।" कामनी ने मोबाइल को अपनी छातियों के बीच में से निकाला—"जगमोहन को मारने का ऑर्डर दे दूं।"

"बहुत बुरी मौत मरोगी तुम, अगर तुमने ऐसा किया तो।" देवराज चौहान धीमे स्वर में गुर्राया।

"मैं तुम्हें भी अभी मरवा सकती हूं। बाहर मेरे आदमी मौजूद हैं

देवराज चौहान के दांत भिंच गए। नजरें कामनी पर थीं।

"तुम आज शाम की फ्लाइट से जगमोहन के साथ वापस इंडिया जा रहे

हो। समझ गए न।" कामनी का स्वर कठोर हो गया—"मेरे से रहम की आशा मत करना। जो मैं कहूं वो हो जाना चाहिए।"

देवराज चौहान के चेहरे पर खतरनाक भाव उभरे।

कामनी ने मोबाइल से नम्बर मिलाया और फोन कान से लगा लिया।

"हां—मैं।" बात होते ही कामनी ने कहा और कैफे का पता बताकर बोली—"उसे कैफे से बाहर ले आओ।" कहने के साथ ही कामनी ने फोन बंद किया और वापस ब्रा में फंसाकर बोली—"मैं किसी के साथ रियायत नहीं करती। मैं तो यहां मार्शल के एजेंट को समझाने आई थी कि इकबाल खान सूरी का खयाल छोड़ दे। वरना वे सब मारे जाएंगे। परंतु ये तुम निकले तुम्हारे साथ मैं नर्मी से पेश आ रही हूं क्योंकि हमारी पिछली मुलाकात ठीक रही थी। परंतु मेरी नर्मी का गलत मतलब मत लेना। आज शाम को वापस इंडिया चले जाना जगमोहन के साथ, वरना अंजाम के तुम जिम्मेवार होगे।"

"जगमोहन यहां लाया जा रहा है?" देवराज चौहान ने सख्त स्वर में पूछा।

"हां।"

"और वो दो एजेंट जो तुम्हारे पास हैं, उन्हें भी वापस कर दो।"

"उन पर मेरा हक है।" कामनी ने ठंडे स्वर में कहा—"आज शाम तक उन्हें खत्म कर दिया जाएगा।"

"ऐसा मत करना।"

"ये होकर रहेगा। हम भीतर घात करने वाले कमीने को कभी भी जिंदा नहीं छोड़ते। उन्होंने हमारा भरोसा जीता। हमारे आदमी बने और वो इकबाल खान सूरी की हत्या करने जा रहे थे कि सही मौके पर हमारे हाथ लग गए।"

"इकबाल खान सूरी कहां गायब हुआ है?"

कामनी ने उसकी आंखों में झांका।

"वो दुबई में ही कहीं छिपा है या पाकिस्तान जा पहुंचा है?" देवराज चौहान उसकी आंखों में झांक रहा था।

"इंडिया वापस जाने का इरादा नहीं लगता तुम्हारा?" कामनी ने गर्दन सीधी की।

देवराज चौहान चुप रहा। उसे देखता रहा।

"मैंने तुम्हें एक मौका दिया है दुबई से निकल जाने का। जगमोहन को जिंदा छोड़कर जा रही हूं। अगर तुमने ये मौका गंवा दिया तो पछताओगे। यहां मार्शल के गिनती के एजेंट हैं और सबके बारे में हम जान चुके हैं। समझ लो कि सब पर हमारी नजर है। वो कभी भी मारे जा सकते हैं। उनके ठिकानों पर हमारी नजर है। इकबाल खान सूरी की ताकत का ठीक से अंदाजा नहीं लगा रहे तुम। जितनी ताकत वो मुम्बई में आज भी रखता है, उससे कहीं ज्यादा ताकत वो दुबई में रखता है। 'दुबई का आका' उसे यूं ही नहीं कहते

comicsmylife.blogspot.in

लोग। दुबई की सरकार से भी उसकी अच्छी बनती है। इकबाल खान सूरी के लिए, दुबई में तुम लोग मच्छर की तरह हो। ये रास्ता छोड़ दो और वापस इंडिया चले जाओ।" कठोर स्वर में कहने के साथ ही कामनी उठी और पलटकर दरवाजे की तरफ बढ़ गई।

देवराज चौहान उसे गम्भीर निगाहों से तब तक देखता रहा जब तक दरवाजा खोलकर वो बाहर न निकल गई। ये कामनी का नया रूप उस सामने था। खतरनाक और शातिर औरत का रूप।

उसके बाहर निकलते ही देवराज चौहान उठा और फोन बूथ की तरफ बढ़ गया।

देवराज चौहान ने फोन से जैकी से बात की।

"मेरी बात ध्यान से सुनो, तुम सब लोग, मार्शल के सब एजेंट और तुम सबके ठिकाने इकबाल खान सूरी की निगाहों में हैं। वो हर एजेंट की, हर ठिकाने की निगरानी कर रहे...।"

"ये कैसे हो सकता है।" जैकी की आवाज कानों में पड़ी—"उन्हें कैसे पता हमारे बारे में और हमारे ठिकाने के बारे...।"

"तुम्हारे वो दो एजेंट जो इकबाल खान सूरी की हत्या करने के लिए, इकबाल खान के करीब जा पहुंचे थे, वो पकड़े जा चुके हैं और बेशक वो तुमसे अभी भी बातें कर रहे हैं, परंतु रिवॉल्वर के साए में। वो वो ही बात करते हैं जो उनसे कहा जाता है वो वो ही पूछते हैं जो उन्हें समझाया जाता है। उन्हें मालूम है कि मैं और जगमोहन इंडिया से मार्शल के आदमी बनकर दुबई पहुंच रहे हैं?"

"मालूम है।"

"उसी वजह से ये बात इकबाल खान सूरी तक पहुंची और...।"

"तुम्हें ये सब बातें कैसे मालूम हुईं?"

"अभी-अभी मेरी मुलाकात कामनी से होकर हटी है।"

"कामनी? तुम्हारा मतलब कि नसरीन शेख?" उधर से जैकी चौंके स्वर में कहा।

"वो ही।"

"तुमसे क्यों मिली वो?"

"वो मुझे पहले से ही जानती है। जो मैंने तुम्हें बताया, वो सब उसी ने बताया है और वो झूठ कहती नहीं लगी। तुम लोग अपने ठिकाने छोड़ दो। सावधानी से अपनी जगहें बदल लो। उसने सबको खत्म करने की धमकी दी है। वो ऐसा कर भी सकती है। मुझे तो ऐसा ही लगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"वो सच में खतरनाक है।"

"मुझे उसने शाम तक इंडिया वापस जाने को कहा है। जगमोहन उसकी कैद में पहुंच चुका है, परंतु उसे वो वापस मेरे हवाले करने जा रही है। तुम्हारे वो दो एजेंट जो उनके कब्जे में हैं और अब तक तुमसे बात करते रहे हैं, उनसे अब शायद बातें न हो सकें। क्योंकि कामनी ने मुझे सब कुछ बता दिया है और उन्हें वो शाम तक खत्म करने को कह रही थी।"

जैकी के गहरी सांस लेने की आवाज आई।

"तुम लोग अपनी चिंता करो। मुझे कामनी के इरादे ठीक नहीं लगे।" देवराज चौहान ने कहा।

"अगर तुम्हारी बातें सच हैं तो ये मुसीबत वाली बात हो गई।"

"मैं फोन बंद करता...।"

"तुमने कमल चावला से बात की?"

"नहीं। मैंने पहला नम्बर तुम्हारा ही मिलाया था। क्योंकि तुम दुबई एजेंटों को कंट्रोल करते हो।"

"और क्या पता लगा नसरीन शेख से?"

"जो पता लगा, बता दिया। इकबाल खान सूरी के बारे में कोई खबर है तुम्हारे पास?"

"नहीं। उसके बारे में कोई खबर नहीं है।"

"ठीक है। जो बातें मैंने कहीं हैं उन पर सोचो और अपने बचाव में जो कर सकते हो, कर लो।" कहकर देवराज चौहान ने रिसीवर रखा और बूथ से बाहर निकलकर शीशे के दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

दरवाजा धकेलकर बाहर निकला।

सामने वो ही टैक्सी ड्राइवर खड़ा दिखा।

देवराज चौहान उसके पास पहुंचता कह उठा।

"जगमोहन नहीं आया अभी तक?"

"हमारे आदमी उसे लेकर आ रहे हैं।" उसने कहा।

तब तक देवराज चौहान ने सब तरफ नजर मार ली थी। कामनी कहीं भी नहीं थी।

"कामनी गई?"

"मैडम के बारे में पूछ रहे हैं?" वो बोला।

"हां।"

"मैडम का यहां क्या काम?"

देवराज चौहान ने उस आदमी को गहरी निगाहों से देखा फिर कहा।

"काफी हाथ-पांव फैला रखे हैं इकबाल खान सूरी ने दुबई में?"

"वो तो 'दुबई का आका' है।" उसने मुस्कराकर कहा—"मुम्बई के बाद दुबई उसका दूसरा घर है।"

comicsmylife.blogspot.in

"और तीसरा घर पाकिस्तान।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।
उसने देवराज चौहान को देखा और कह उठा।
"मेरे खयाल में मैडम जरूर तुम्हें कुछ समझा के गई होंगी...।"
"हां। वापस इंडिया चले जाने को कहा।"
"तो तुम्हें चले जाना चाहिए। वरना जिंदा नहीं बचोगे।" उसने तीखे स्वर में कहा।
"इकबाल खान सूरी कहां है?" देवराज चौहान ने पूछा।
"मैडम से क्यों नहीं पूछा।" उसका स्वर तीखा ही रहा।
"पूछा था। बताया नहीं उसने।"
तभी एक काली कार वहां आकर रुकी।
देवराज चौहान ने पहचान लिया कि ये वो ही काली कार है, जो एयरपोर्ट से उनके पीछे लगी थी।
"तब तुमने बताया नहीं कि पीछे आने वाली कार में भी तुम्हारे आदमी हैं।" देवराज चौहान बोला।
"तब क्या तुम्हें मुझ पर कोई शक हो गया था जो एकाएक भाग निकले।"
देवराज चौहान की नजर कार पर जा टिकी थी।
उस कार का पीछे का दरवाजा खुला और एक आदमी जगमोहन के साथ बाहर निकला। बाहर निकलते ही उस आदमी ने रिवॉल्वर जेब में रख ली थी। जाहिर था कि जगमोहन को रिवॉल्वर से दबा रखा था। जो ड्राइविंग सीट पर बैठा था वो बैठा ही रहा। देवराज चौहान ने उन दोनों के चेहरों की पहचान की।
जगमोहन देवराज चौहान के पास आ पहुंचा था। उसने ड्राइवर को देखकर कड़वे स्वर में कहा।
"तो तुम भी यहां हो।"
जवाब में वो मुस्कराकर रह गया।
"क्या हो रहा है ये सब?" जगमोहन ने देवराज चौहान को देखा।
"चलो यहां से।" देवराज चौहान ने कहा।
वे जाने लगे तो टैक्सी ड्राइवर कह उठा।
"मैडम की बात याद रखना और शाम तक दुबई छोड़ देना
देवराज चौहान, जगमोहन के साथ आगे बढ़ गया।
"ये किस मैडम की बात कर रहा...।"
"कामनी की।"
"वो कहां है?"
"अभी मुझे मिली थी। उसके आदमी बराबर मेरे पीछे रहे...।"
"दुबई छोड़ने की क्या बात हो रही...।"

देवराज चौहान ने कामनी से हुई सारी बातचीत बता दी।
"ओह। वो इतनी जल्दी सामने आ जाएगी। हमने नहीं सोचा था।" जगमोहन बोला।
देवराज चौहान खामोश रहा।
"इन बातों से तो लगता है कि वो इकबाल खान सूरी के बारे में तुम्हें बताने वाली नहीं कि वो कहां है।"
"मैंने इस बात की आशा भी कभी नहीं रखी।"
"अब हम कहां जा रहे हैं?"
"अलजीरा होटल। मार्शल के एजेंटों के सब ठिकाने, सब एजेंट कामनी की नजरों में हैं। ये सारी जानकारी उन्हें उन दोनों एजेंटों से मिली, जो इकबाल खान सूरी की हत्या करने के लिए उसके पास जा पहुंचे थे।"
"जिन्हें आज शाम तक मार दिया जाएगा?"
"कामनी ने तो ऐसा ही कहा।"
"मुझे पूरा भरोसा है कि इकबाल खान सूरी के आदमी इस वक्त हम पर नजर जरूर रख रहे होंगे।"
"जरूर, ऐसा ही हो रहा होगा।"
तभी उन्हें टैक्सी मिल गई। वे अलजीरा होटल की तरफ चल पड़े।
"अब हम क्या करेंगे?" जगमोहन ने पूछा—"उनकी नजर हम पर है।"
"पहले ये देखना है कि कामनी क्या करती है। मार्शल के एजेंट उसकी नजरों में हैं और उसने मुझे धमकी दी है कि वो उन्हें खत्म कर सकती है। मुझे वो खतरनाक लगी।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

▭ ▭

अलजीरा की तीसरी मंजिल पर उन्हें कमरा मिला। मार्शल ने उन्हें यहीं टिकने के लिए कहा था। सामान के नाम पर उनके पास सिर्फ पासपोर्ट थे, जो कि जेबों में थे तो बचे रह गए थे। उनका सामान तो उसी टैक्सी से चला गया था। नहा-धोकर देवराज चौहान ने वो ही कपड़े पहन लिए। जगमोहन नहाने गया हुआ था। शाम के पांच बज गए थे। देवराज चौहान ने मन-ही-मन प्रोग्राम बनाया कि किसी मार्किट जाकर, सबसे पहले कुछ जोड़ी कपड़े खरीदेंगे
तभी डोर बैल बज उठी।
देवराज चौहान की समझ में नहीं आया कि कौन हो सकता है। जबकि वेटर कुछ देर पहले ही गया था।
दरवाजे पर पहुंचकर देवराज चौहान ने पूछा।
"कौन?"
"मार्शल ने तुम्हारे लिए फोन भेजा है।" बाहर से धीमी आवाज आई।
देवराज चौहान ने दरवाजा खोला। सामने पच्चीस वर्ष का स्थानीय युवक

comicsmylife.blogspot.in

खड़ा था। उसने हाथ में दबा मोबाइल देवराज चौहान को थमाया और पलटकर वापस चला गया। देवराज चौहान कुछ पल उसे जाते देखता रहा फिर दरवाजा बंद किया। हाथ में थमे फोन को देखा फिर आगे बढ़कर उसे टेबल पर रखा कि तभी वो बजने लगा।

"हैलो।" देवराज चौहान ने कॉलिंग स्विच दबाकर बात की।

"सुरेंद्र पाल कहूं या देवराज चौहान।" कामनी का शांत स्वर कानों पड़ा।

देवराज चौहान के होंठ भिंच गए। आंखें सिकुड़ीं।

"देवराज चौहान कहो।" देवराज चौहान बोला।

"फोन मार्शल ने नहीं, मैंने भेजा है कि तुमसे बात कर सकूं।"

"तुम बताना चाहती हो कि मुझ पर तुम्हारी नजर है।" देवराज चौहान बेहद शांत था।

"वो तो रहेगी ही, बेशक दुबई में तुम कहीं भी चले जाओ।"

"अब क्या चाहती हो?"

"फौरन एयरपोर्ट पहुंचो। मेरा आदमी वहां तुम्हें मुम्बई की दो टिकटें देगा। दो घंटों बाद ही फ्लाइट है। मैं तुम्हें यहां से निकल जाने का मौका दे रही हूं। इस मौके को छोड़ो मत। दुबई से निकल जाओ।"

"मेरा इरादा दुबई छोड़ने का नहीं है।"

"यहां रहे तो मरोगे।"

"मैं इस तरह वापस जाने के लिए दुबई नहीं आया। हमने सूरत में कुछ वक्त साथ बिताया था क्या वो सब देखकर तुम्हें अभी तक इस बात का एहसास नहीं हुआ कि मैं भागने वालों में से नहीं हूं।" देवराज चौहान ने कहा।

"इसे भागना नहीं, समझदारी कहते हैं।"

"मेरे से ऐसी समझदारी की आशा मत रखो। तुम्हारा ऐसा बदला देखकर मुझे हैरानी हो रही है।"

"ये ही मेरा असली रूप है देवराज चौहान। रूप तो मैंने सूरत में बदला था कि तुम मुझे कमजोर लड़की समझो और मेरे साथ रहो। वहां मैं जिस तरह तुमसे पेश आई, वो सब ड्रामा था कि तुम मेरे में उलझे रहो। मेरा वक्त बीत जाए और दुबई के लिए फ्लाइट पकड़ने का वक्त आ जाए और ऐसा ही हुआ। मैंने तुम्हें खूब उल्लू बनाया और तुम बने। इसलिए मेरा दुबई का रूप तुम्हें पसंद नहीं आएगा।"

"मैंने वहां तुम्हें दो बार बचाया था।"

"तो?"

"तो यहां पर तुम बेशक मेरे काम न आओ, परंतु मेरे लिए परेशानी भी खड़ी मत करो। ये सब।"

"देवराज चौहान, तुम मार्शल के भेजे हो। इकबाल खान सूरी के लिए आए हो, जिसकी सुरक्षा मेरे जिम्मे है। मैं तुम्हें कभी भी इकबाल तक नहीं पहुंचने दूंगी। जरूरत पड़ी तो तुम्हारी जान भी लूंगी। ऐसा न हो, इसी वास्ते तुम्हें दुबई छोड़ने को कह रही हूं।"

"ये मेहरबानी क्यों?"

"क्योंकि सूरत में तुमने मेरी जान बचाई थी। इस खातिर तुम्हें मरने से बचा रही हूं।"

"मेहरबानी तो तुम्हारी तब होती जब तुम मुझे इकबाल खान सूरी का सही ठिकाना बता देती।"

"इतनी भी मेहरबान नहीं हूं कि खुद ही आग लगा दूं। तुम दोनों यहां से जा रहे हो या नहीं?"

तब तक जगमोहन भी नहाकर आ गया था।

"मैं तुम्हें जवाब दे चुका हूं, कहो तो एक राय दूं?"

"क्या?"

"तुम जो चाहती हो करो और मैंने जो करना है, वो मैं करूंगा।" देवराज चौहान का स्वर सख्त हो गया।

"ये राय तुम्हें बहुत महंगी भी पड़ सकती है।" उधर आने वाला कामनी का स्वर भी सख्त हो गया।

"तुम जो करना चाहो, करो।"

"तीन घंटों में तुम्हें दिखाई दे जाएगा कि मैं क्या कर सकती हूं।" उधर से तीखे स्वर में कामनी ने कहा और फोन बंद कर दिया गया था।

देवराज चौहान ने मोबाइल टेबल पर रखा।

"ये फोन कहां से आया?" जगमोहन के चेहरे पर उलझन थी।

"कामनी का आदमी दे गया था।"

"क्या बोलती है वो?" जगमोहन के माथे पर बल थे।

"हमें एयरपोर्ट पहुंचने को कह रही है।" देवराज चौहान तीखे अंदाज में मुस्कराया।

"दिमाग खराब हो गया है उसका।" जगमोहन ने कड़वे स्वर में कहा।

"उसे हलके में मत लो। वो खतरनाक है और इकबाल खान सूरी की ताकत रखती है।"

"उसकी बात छोड़ो। ये बताओ कि अब हमने क्या कदम उठाना है?"

"तीन घंटों का इंतजार करेंगे। उसने तीन घंटों में मुझे कुछ दिखाने को कहा है।" देवराज चौहान गम्भीर हो गया।

"क्या?"

comicsmylife.blogspot.in

"सामने आ जाएगा और उसकी बात खोखली नहीं है, ये उसकी आवाज से लगा।"

"तुम्हारा मतलब कि हम होटल से न निकलें?"

"ऐसे में बाहर निकलना समझदारी नहीं। हमें तीन घंटे यहीं पर रहकर इंतजार करना होगा।"

"क्या वो होटल के भीतर, हम पर हमला करा सकती है?" जगमोहन ने देवराज चौहान को देखा।

"कह नहीं सकता।"

"बेशक हम होटल से बाहर न निकलें, परंतु तीन घंटे के लिए हमें ये कमरा खाली छोड़ देना चाहिए कि...।"

"हम इसी कमरे में रहेंगे।" देवराज चौहान सख्त और दृढ़ स्वर में कह उठा।

"उसके आदमी यहां आ गए तो हम उसका मुकाबला भी नहीं कर सकेंगे। हमारे पास हथियार नहीं हैं।"

"हथियार मंगाए जा सकते हैं।" देवराज चौहान ने आगे बढ़कर फोन उठाया—"मैं जैकी को फोन कर देता हूं।"

जगमोहन गम्भीर-सा देवराज चौहान को देखता रहा। देवराज चौहान ने जैकी का नम्बर मिलाकर बात की। उधर जैकी से ही बात हुई।

"हमें रिवॉल्वर और फालतू राउंड चाहिए।" देवराज चौहान ने कहा।

"एक घंटे में ये सब सामान लेकर मेरा आदमी अलजीरा पहुंच जाएगा।" उधर से जैकी ने कहा।

"तुम्हें कैसे पता कि हम अलजीरा में हैं।"

"मेरे दो आदमी तुम दोनों के लिए होटल अलजीरा के बाहर मौजूद हैं। उन्होंने तुम दोनों के पहुंचने की खबर दी।"

"यहां पर हम ज्यादा देर नहीं रह सकते। कामनी की निगाह हम पर है वो निगरानी करवा रही है। जब तक हम कामनी की निगाहों से ओझल नहीं होते, जब तक हमें टिकने को सुरक्षित जगह नहीं मिलती, तब तक हम ठीक से काम नहीं कर पाएंगे।"

"सही कहा तुमने।" उधर से जैकी का गम्भीर स्वर आया—"मैं अभी कमल चावला से बात करता हूं।"

"कमल चावला है कहां?"

"मैं नहीं जानता। वो हमारा चीफ है पर इकबाल खान सूरी की खबर पाने के लिए फील्ड में रहता है। उससे फोन पर तुम बात क्यों नहीं करते?"

"करूंगा।" देवराज चौहान बोला—"तुम्हें जो सामान कहा है, वो भिजवा दो।" कहकर देवराज चौहान ने फोन बंद कर दिया।

"हालात ज्यादा अच्छे नहीं हैं दुबई के। इकबाल खान सूरी अपना साम्राज्य यहां भी फैला रखा है।" जगमोहन बोला।

देवराज चौहान सोफा चेयर पर जा बैठा।

"हमें इकबाल खान सूरी की बातें, जो मार्शल और उसके एजेंटों ने बताई थीं, उन पर गौर करना चाहिए और कोई ऐसी रणनीति तैयार करनी चाहिए कि इकबाल खान की गर्दन तक पहुंचा जा...।"

"हमने उसकी गर्दन नहीं पकड़नी।" देवराज चौहान ने सिर हिलाकर कहा—"उसकी पक्की खबर आगे देनी है कि वो कहां पर है।"

"इकबाल खान के आदमी हम पर नजर रखे हुए हैं, ऐसे में हम क्या कर सकेंगे। वो...।"

"अभी इंतजार करो। साढ़े पांच बजे हैं। देखें तो सही कि तीन घंटों में कामनी क्या रंग दिखाती है।" देवराज चौहान बोला।

▭ ▭

आठ बज गए थे।

देवराज चौहान और जगमोहन होटल के कमरे में ही थे। अभी तक वहां ऐसी-वैसी कोई बात नहीं हुई थी। न ही अभी तक जैकी का भेजा बंदा रिवॉल्वरें लेकर आया था, जो कि उसने एक घंटे में बंदे के पहुंच जाने की बात कही थी। देवराज चौहान ने जैकी को कई बार फोन किया। बेल जाती रही, परंतु कॉल रिसीव नहीं की गई।

देवराज चौहान के लिए हैरानी की बात थी कि जैकी कॉल रिसीव नहीं कर रहा था। उसने हर बार कॉल रिसीव की थी, परंतु अब उससे बात नहीं हो पा रही थी। देवराज चौहान ने कमल चावला को फोन किया।

फौरन ही उधर से आवाज कानों में पड़ी।

"हैलो।"

"कौन बोल रहा है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"क-कमल चावला।" उधर से थकी-सी आवाज आई।

"मैं देवराज चौहान हूं। तुम्हें मेरे बारे में पता होगा कि...।"

"सब पता है मैं...।"

"जैकी मेरी कॉल रिसीव नहीं कर रहा। उसने किसी के हाथ रिवॉल्वरें भेजने को कहा...।"

"ओह, शायद तुम्हें कोई खबर नहीं है।" उधर से कमल चावला ने एकाएक कहा।

"कैसी खबर?"

"इकबाल खान सूरी की तरफ से हमारे एजेंटों पर हमला हुआ है। कोई काम में जा रहा था तो कोई अपने आफिस में था, कोई ठिकाने पर था तो

comicsmylife.blogspot.in

कोई बाजार में खरीददारी कर रहा था। सब पर लगभग एक ही समय में हमला हुआ। हमारे बहुत-से एजेंट मारे गए। मेरे खयाल में सारे ही मारे गए। परंतु कोई पक्की खबर नहीं है। मैं भी बाल-बाल बचा। तब मैं कार से उतरकर अपने ठिकाने की तरफ जाने ही वाला था कि गोलियों की आवाजें सुनीं और वहीं रुक गया। इस तरह मैं बचा।"

देवराज चौहान के होंठ भिंच गए। बोला।

"मैंने पहले ही जैकी से कह दिया था कि ऐसा हो सकता है। कामनी मुझे ऐसा करने की धमकी दी थी।"

"मालूम है। जैकी ने ये बात मुझे भी बताई थी, मैंने उसे सावधानी बरतने को कहा था। परंतु ख्वाब में भी नहीं सोचा था कि ये सब इतनी जल्दी हो जाएगा। हम लोग गुप्त रूप से दुबई में जमे, अपना काम कर रहे थे। हमारी किसी को खबर नहीं...।"

"उन दो एजेंटों ने सब कुछ खोला जो इकबाल खान सूरी को मारने वाले थे और पकड़े गए।"

"जो भी हुआ, बहुत बुरा हुआ। इन हालातों में, मेरे खयाल में तुम्हें वापस चले जाना चाहिए। कम-से-कम मैं तो अब दुबई में रहकर काम नहीं कर सकता। वो लोग अब मुझे पहचानने लगे हैं। इस प्रकार मैं कोई काम नहीं कर...।"

"तुम कहां हो?"

"मैं सड़क के किनारे मौजूद पार्किंग में कार खड़ी किए, उसके भीतर मौजूद हूं। मेरे लिए ये खतरे का वक्त है।"

"मुझे ठीक से अपनी जगह बताओ। मैं तुम्हारे पास आता हूं।"

"खतरा मोल मत लो। मेरे बहुत एजेंट मारे जा चुके हैं। मार्शल का दुबई का खेल खत्म हो गया है। हम अब तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकते। बेहतर यही है कि तुम वापस चले...।"

"तुम मुझे बताओ कि कहां हो तुम?"

उधर से कमल चावला के गहरी सांस लेने की आवाज आई फिर वो बोला।

"इकबाल खान तुम पर भी नजर रख रहा होगा।"

"हां। ऐसा ही है।"

"तुम मेरे पास आओगे तो इससे मैं खतरे में पड़ जाऊंगा। वो मुझे मार सकते हैं।" कमल चावला की आवाज आई।

देवराज चौहान के होंठ भिंच गए।

"मैं तुम्हारे पास होटल अलजीरा में आता...।"

"इस तरह भी तो तुम्हें खतरा हो सकता है।"

"इस तरह कम खतरा आएगा। मैं अपने हिसाब से तुम तक पहुंचूंगा। वैसे भी मुझे रात बिताने के लिए कोई जगह चाहिए। अपनी किसी जगह पर जाने की मैं हिम्मत नहीं कर सकता। मैं तुम्हारे पास आऊंगा।"

"कब?" देवराज चौहान ने पूछा—"कब तक पहुंचोगे। तुम्हें यहां आने के लिए बहुत सावधानी बरतनी पड़ेगी। इकबाल खान सूरी के आदमी होटल के भीतर या बाहर कहीं मौजूद हैं। वो संख्या में ज्यादा भी हो सकते हैं।"

"रात भर में कभी भी आ जाऊंगा। मेरी फिक्र मत करो। मैं सतर्क रहूंगा।"

देवराज चौहान ने फोन बंद किया।

जगमोहन टकटकी लगाए देवराज चौहान को देख रहा था। वो बोला।

"क्या हुआ?"

"कामनी ने मार्शल के एजेंटों पर हमला कर दिया है।" देवराज चौहान दांत भींचकर बोला—"काफी सारे मारे गए हैं। कमल चावला का कहना है कि मार्शल का दुबई का नैटवर्क फिलहाल तो खत्म हो गया हे।"

जगमोहन ठगा-सा बैठा रह गया। देवराज चौहान को देखता रहा।

"क्या हुआ?" देवराज चौहान उसे देखकर भिंचे होंठों से बोला।

"म-मुझे तुम्हारी बात का विश्वास नहीं आ रहा कि मार्शल के आदमी...।"

"कमल चावला ने बताया है अभी। कामनी सच में...।"

तभी हाथ में पकड़ा मोबाइल बज उठा।

"हैलो।" देवराज चौहान ने बात की। आवाज में सख्ती उभरी हुई थी।

"तुमने क्या सोचा था कि मैं तुम पर हमला कराऊंगी।" कामनी का स्वर कानों में पड़ा—"तुम पर हमला कराने की अभी नौबत नहीं आई, अभी तो तुम्हें समझा रही हूं कि मैं तुम्हारे साथ क्या-क्या कर सकती हूं अगर तुम दुबई छोड़कर नहीं गए तो।"

"तुम बचोगी नहीं।" देवराज चौहान के होंठों से गुर्राहट निकली।

"तो तुम्हें पता चल गया कि मैंने दुबई से मार्शल के एजेंटों को साफ कर दिया है। ये है मेरी ताकत का छोटा-सा नमूना। मुझे सूरत वाली कामनी समझने की भूल मत करना, मैं दुबई की नसरीन शेख हूं और मेरे इशारे पर कुछ भी हो सकता है। मार्शल के सत्रह एजेंट मारे गए। कुल बाईस एजेंट मेरी नजर में थे। बचे हुए पांच अपनी जान बचाने के लिए भागे फिर रहे होंगे। कम-से-कम वो अब मार्शल के लिए काम नहीं करने वाले, करेंगे तो दुबई से बाहर, कहीं और ही करेंगे। जिनके भरोसे तुम दुबई आए थे, वो तो रहे नहीं। समझदारी ये ही है कि तुम दुबई छोड़ दो। वरना मेरे एक इशारे पर तुम पर ऐसा हमला होगा कि मारे जाओगे। कामनी कभी भी कोई बात गलत नहीं कहती।"

"तुम मुझे डराने की चेष्टा कर रही हो।" देवराज चौहान ने खतरनाक स्वर में कहा।

comicsmylife.blogspot.in

"मैं तुम्हें हकीकत दिखा रही हूं।" कामनी का शांत स्वर कानों में पड़ा।

"तुमने अपना कर दिखाया अब मैं अपना करूंगा।" देवराज चौहान ने दांत पीसकर कहा—"मार्शल के एजेंटों को इस तरह मारकर तुमने बहुत बुरा किया है। इसका हिसाब तुम्हें देना होगा।"

"तुम कुछ नहीं कर सकोगे। उससे पहले ही मारे जाओगे देवराज चौहान मार्शल के कामों में कुछ नहीं रखा। तुम्हें उसका कोई काम हाथ में नहीं लेना चाहिए था। तुम भी कानून तोड़ने वाले हम भी कानून तोड़ने वाले, फिर...।"

"बहुत फर्क है तुम्हारे और मेरे में। मैं बेगुनाहों की जान नहीं लेता, जबकि तुम...।"

"दुबई से जा रहे हो या नहीं?"

"इकबाल खान सूरी मेरे हवाले कर...।"

"मतलब कि तुम मरना चाहते हो।" इस बार कामनी के स्वर में गुर्राहट आ गई—"चूंकि तुमने मेरी जान बचाई थी इसलिए मेरी कोशिश थी कि मैं तुम्हारी जान न लूं। समझाकर तुम्हें दुबई से बाहर भेज दूं परंतु मेरी बात तुम्हारी समझ में नहीं आई।"

"तुम मेरी चिंता करनी छोड़ दो। हम दोनों अब दुश्मन हैं, दोस्त नहीं।" देवराज चौहान ने खतरनाक स्वर में कहा—"मैं बहुत जल्द तुमसे मिलूंगा और इस बार हमारी मुलाकात यादगार रहेगी। सूरत में मैंने तुम्हें बचाया था अब मैं ही तुम्हारी जान लूंगा।"

"तुम मेरी ताकत को समझ नहीं रहे। तब समझोगे तुम्हारी जिंदगी का आखिरी वक्त तुम्हारे सामने होगा।"

देवराज चौहान ने फोन बंद कर दिया।

धधक रहा था देवराज चौहान का चेहरा।

आंखों में मौत नाच रही थी। जगमोहन ने देवराज चौहान का ये हाल देखा तो संभल गया। कभी-कभी ही देवराज चौहान को गुस्सा आता था। भिंचे दांत। दरिंदगी थी चेहरे पर। जगमोहन को देखकर देवराज चौहान गुर्राया।

"हमें कामनी तक पहुंचना है।"

"लेकिन हम तो इकबाल खान सूरी के लिए...।"

"जहां वो है, वहीं इकबाल खान है।" खतरनाक स्वर में बोला देवराज चौहान—"वो इकबाल खान से दूर नहीं रहने वाली।"

"कमल चावला ने कब आना है हमारे पास?"

"रात में वो कभी भी आ सकता है।" गुस्से से भरा पड़ा था देवराज चौहान।

"कामनी और इकबाल खान के बारे में वो शायद बता सके कि, वो कहां मिल सकते हैं।" जगमोहन ने कहा।

□□

रात के तीन बज रहे थे कि होटल का दरवाजा धीमे से थपथपाया गया।

देवराज चौहान आंखें बंद करके लम्बे सोफे पर लेटा था। जगमोहन बेडरूम में था। होटल में इस वक्त शांति छाई हुई थी। देवराज चौहान ने फौरन आंखें खोल दीं। उसे लगा कि दरवाजा थपथपाया गया है। परंतु आवाज इतनी धीमी थी कि वो कुछ फैसला न कर पाया कि उसी वक्त फिर दरवाजा थपथपाया गया। बेहद धीमे से।

देवराज चौहान तुरंत उठा और दरवाजे की तरफ बढ़ गया। पास पहुंचकर कान दरवाजे से लगाया। बाहर पूरी शांति महसूस हुई। देवराज चौहान ने दरवाजे की चेन फंसाई दरवाजा खोलकर बाहर झांका। चेन फंसी होने के कारण, दरवाजा मात्र चार इंच ही खुल सका था। बाहर वेटर ट्राली लिए खड़ा था।

देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं। इस वक्त बिना बुलाए वेटर के आने का क्या मतलब?

"देवराज चौहान?" वेटर बोला। आवाज जानी-पहचानी लगी।

देवराज चौहान ने हौले-से सिर हिलाया।

"मैं कमल चावला, जल्दी से दरवाजा खोलो, मुझे भीतर आने दो।" वो व्याकुलता से कह उठा।

देवराज चौहान चौंका। इसी आवाज के मालिक से तो उसने बात की थी। कमल चावला था ये।

देवराज चौहान ने फौरन लगी चेन हटा दी।

कमल चावला ट्राली धकेलते भीतर आ गया। देवराज चौहान ने दरवाजा बंद किया।

"वेटर बनकर आए हो?" देवराज चौहान पलटकर बोला।

"क्या करता। होटल के बाहर इकबाल सूरी के कई आदमी मौजूद हैं।"

"तो तुम कैसे आए?"

"किसी प्रकार उनकी निगाहों से बचकर होटल में आ गया फिर वेटर के कपड़ों का इंतजाम करके पहना और यहां आ गया।" कमल चावला ने गहरी सांस ली—"हम लोगों के लिए बाहर बहुत खतरे भरे पड़े हैं।"

तभी जगमोहन ने वहां कदम रखा।

"तुम जगमोहन हो।" उसे देखते ही कमल चावला कह उठा।

"कमल चावला?"

"हां।" कमल चावला परेशान स्वर में कह उठा—"बहुत बुरा हुआ हमारे साथ। तुम लोगों ने दुबई में क्या कदम रखा, इकबाल खान ने मार्शल के सारे एजेंटों को मार दिया। मैंने नहीं सोचा था कि ऐसा होगा।"

comicsmylife.blogspot.in

"ये सब उन दोनों के मुंह खोलने के कारण हुआ, जो इकबाल खान सूरी की हत्या करने पहुंचे और फंस गए।" देवराज चौहान बोला।

"मुझे हैरानी है कि इकबाल खान को तुम दोनों के बारे में पता है, फिर भी तुम लोग सलामत हो।"

देवराज चौहान के होंठ भिंच गए।

जगमोहन के चेहरे पर भी कठोरता नाच उठी।

"वो लोग बचने वाले नहीं।" जगमोहन बोला।

"मार्शल का सारा नैटवर्क बिखर गया है। खत्म हो गया है ऐसे में तुम लोग क्या करोगे?"

"जो करने आए हैं, वो ही करेंगे।"

"अकेले?"

"हम हर काम अकेले ही करते हैं।" जगमोहन ने सख्त स्वर में कहा।

"मुझे पता लगा कि तुम कामनी को पहले से जानते हो?" कमल चावला ने देवराज चौहान को देखा।

"थोड़ा-सा। परंतु उस पहचान का इस मामले से कोई मतलब नहीं।"

"मार्शल को ये पता है कि तुम कामनी को जानते...।"

"पता है।" देवराज चौहान ने कहा—"इन बातों को छोड़कर तुम कामनी की बात करो। इकबाल खान सूरी की बात करो। उनके बारे में जो भी जानकारी है वो बताओ। जैकी ने बताया था कि तुम फील्ड में रहते हो।"

"हां। इकबाल खान सूरी की जानकारी पाने के लिए मैं भागा-फिरता रहता था।"

"तो क्या पता लगाया तुमने?"

कमल चावला एकाएक परेशान और दुखी दिखने लगा।

"इकबाल खान ने मेरे कई एजेंटों को मार दिया।" उसका स्वर भर्रा उठा।

"तुम्हारे सत्रह लोग मारे गए हैं।"

"तुम्हें कैसे पता?"

"पता चल गया किसी तरह।" देवराज चौहान होंठ भींचकर बोला—"तुम मुझे इकबाल खान सूरी के बारे में जानकारी दो।"

कमल चावला सूखे होंठों पर जीभ फेरकर कह उठा।

"यहां रहना, तुम लोगों के लिए भी खतरे से खाली नहीं है। इकबाल खान सूरी की नजरों में हो तुम लोग। कामनी बहुत ही खतरनाक है। मैं जानता हूं कि उसी के आदेश पर, मेरे एजेंटों को मारा गया है। वो तुम पर भी कभी हमला करा सकते हैं। मेरा एक एजेंट से सम्पर्क हुआ है, जो कि बच गया है। उसने बताया कि वो कहां छिपा हुआ है। वो जगह सुरक्षित है। मेरी मानो तो बेहतर ये ही होगा कि होटल से निकल चलो। इस वक्त अच्छा मौका है

निकल जाने का। जब तक हम सुरक्षित जगह नहीं पहुंच जाते, तब तक आराम से बातें नहीं कर सकते। क्या पता यहां इकबाल खान कब हमला करा दे।"

"इस बात की क्या गारंटी है कि हम यहां से सुरक्षित निकल जाएंगे?" जगमोहन बोला।

"मैं जिस रास्ते से आया हूं वो सुरक्षित है। कुछ दूर मेरी कार खड़ी है। निकल चलो यहां से।" कमल चावला ने व्याकुल स्वर में कहा—"इस प्रकार हम इकबाल खान की निगाहों से बच जाएंगे। सबसे पहले उससे बचना जरूरी है।"

जगमोहन ने देवराज चौहान को देखा।

"ये ठीक कहता है। जब तक हम इकबाल खान की निगाहों में रहेंगे, तब तक कुछ नहीं कर सकेंगे खतरा बना रहेगा, वो अलग। हमें यहां से निकल चलना चाहिए अगर ये कमल चावला, हमें यहां से निकालकर ले जा सकता है तो।"

"भरोसा रखो। हम यहां से निकल जाएंगे।" कमल चावला ने कहा।

▭ ▭

कमल चावला, देवराज चौहान और जगमोहन को, अलजीरा होटल से सुरक्षित निकालकर ले गया था। अलजीरा से कुछ दूर उसकी कार खड़ी थी, उसमें बैठकर वे आधे घंटे का सफर करने के बाद एक मकान पर जा पहुंचे। इस दौरान देवराज चौहान और जगमोहन ने इस बात का ध्यान रखा कि कोई पीछे न आ रहा हो।

परंतु किसी ने उनका पीछा नहीं किया।

उस छोटे-से मकान में एक व्यक्ति मिला जिसका नाम करीम मियां था। वो पैंतीस वर्ष का, छोटे कद का, पतला और चुस्त व्यक्ति था। छोटी-सी दाढ़ी थी उसकी। कमल चावला ने बताया कि करीम मियां, दुबई स्थित उसका सबसे पुराना एजेंट था और वो इसलिए बचा रह गया कि हमले के वक्त वो रिश्तेदार की शादी में था। रात को ही लौटा तो हमले और अपने साथियों के मारे जाने का पता चला। करीम मियां के चेहरे पर दुख और गम्भीरता नजर आ रही थी।

इस वक्त सुबह के साढ़े चार बज रहे थे।

"करीम मियां।" कमल चावला ने कहा—"मैं नहीं चाहता कि हम पर और मुसीबतें आएं। मुसीबतों के बोझ से हम पहले ही दबे पड़े हैं। तुम बाहर खड़ी मेरी कार को कहीं दूर छोड़ आओ। इकबाल खान के लोग मेरी कार की पहचान कर सकते हैं।"

करीम मियां, कमल चावला की कार लेकर चला गया।

रात के जगे, वो तीनों ही थके पड़े थे।

comicsmylife.blogspot.in

"यहां हम सुरक्षित हैं और इकबाल खान, कामनी की निगाहों से दूर हैं।" कमल चावला सिर हिलाकर व्याकुल स्वर में कह उठा—"उनकी निगाहों से बचना जरूरी था वरना हम भी दूसरों की तरह मारे जाते। इकबाल खान के पास पूरी ताकत है।"

"दुबई पुलिस उसे कुछ नहीं कहती?"

"नहीं कहती। दुबई सरकार से इकबाल खान के अच्छे सम्बंध हैं। सरव के कई प्रोजेक्ट में इकबाल खान ने मोटा पैसा लगा रखा है। दुबई सरकार उससे खुश है। इकबाल खान तो जैसे दुबई का मालिक बना बैठा है।"

"तुम हमें इकबाल खान के ठिकानों के बारे में बताओ। मार्शल ने सब कुछ बताया था। लेकिन तुम भी बताओ।"

"अभी?" कमल चावला ने देवराज चौहान को देखा—"रात-भर के जगे पड़े हैं, कुछ नींद ले लें तो।"

"ये बातें अभी जरूरी हैं।"

कमल चावला ने सिर हिलाया और कह उठा।

"इकबाल खान के दुबई में कई ठिकाने हैं। सबके बारे में तो मैं भी अभी तक नहीं जान पाया। परंतु कुछ के बारे में मैं जानता हूं। एक ठिकाने पर तो काफी वक्त से कामनी टिकी हुई है, जबकि कामनी हमेशा इकबाल खान सूरी के करीब ही रहती है।"

"तुम्हारा मतलब कि उस ठिकाने पर इकबाल खान सूरी हो सकता है"

"सम्भव है, हो...।"

"ये वो ही ठिकाना है, जहां पर तुम्हारे एजेंट इकबाल खान सूरी को मारने वाले थे।"

"हां। वो ही ठिकाना है।"

"अभी तक तो ये ही खबर है कि तब इकबाल खान सूरी, वहां से गायब हो गया था।"

"देवराज चौहान, ये खबर भी हमें, उन्हीं दो एजेंटों ने दी थी, जिनके बारे में तुमने बताया कि वो पकड़े गए थे और उनकी निगरानी में हमें वो ही खबरें दे रहे थे, जो वो देना चाहते थे।" कमल चावला ने कहा।

"तुम्हारा मतलब कि इकबाल खान सूरी वहां हो सकता है।" देवराज चौहान बोला।

"कुछ भी हो सकता है। मेरा अपना सत्तर प्रतिशत खयाल है कि इकबाल खान सूरी वहां हो सकता है। कामनी वहीं है और वहां पर सख्त पहरा चौबीसों घंटे रहता है। वो एक रिहायशी इलाके का बंगला है, उस इलाके में दुबई के बड़े लोग रहते हैं, काफी बड़ी जगह में वो बंगला बना हुआ है। करीब तीन हजार गज जगह में। बारह फुट ऊंची चारदीवारी है, भीतर पंद्रह सौ गज में

तीन मंजिला वो बंगला है। वैसे उसे छोटा-मोटा किला कहना ठीक होगा। सुरक्षा के जबर्दस्त इंतजाम हैं। किसी चिड़िया का भी भीतर चले जाना सम्भव नहीं है।" कमला चावला ये कहकर चुप हुआ।

"तुम्हें वहां के इंतजाम का क्या पता है?"

"बहुत कुछ पता है। शायद सब ही। मेरे जो दो एजेंट, इकबाल खान के आदमी बनकर वहां पहुंच गए थे, वो वहां की सारी खबर मुझे देते रहते थे उन्होंने वहां के बारे में काफी कुछ बताया।"

"मुझे वहां के सुरक्षा इंतजामों के बारे में बताओ।" देवराज चौहान के दांत भिंच गए।

"तुम क्या करने का इरादा रखते हो?"

"मैं वहां जाऊंगा।"

जगमोहन बेचैन हो उठा।

"वहां जाओगे? पागल हो, मारे जाओगे।" कमल चावला के होंठों से निकला।

"जो काम करने आया हूं वो तो पूरा करना ही...।" देवराज चौहान ने कहना चाहा।

"इकबाल खान सूरी के ठिकाने के भीतर जाने का हमारा क्या मतलब है।" जगमोहन उसी पल कह उठा—"हम इकबाल खान सूरी पर हाथ डालने नहीं आए। इकबाल खान कहां पर टिका हुआ है, जब हमें उस जगह के बारे में यकीन हो जाएगा तो उसकी खबर मार्शल को देकर हम इस काम से हट जाएंगे। इसके लिए हमें उस जगह पर नजर रखनी चाहिए। मान लो हम भीतर चले गए तो तब क्या होगा? झगड़ा होगा। इकबाल खान का वो मजबूत ठिकाना है, अगर वो वहां रहता है तो, वहां से वापस निकल आना आसान नहीं होगा। वैसे भी वहां जाकर कुछ किया तो क्या उसके बाद इकबाल खान सूरी वहीं टिका रहेगा। वो फौरन ठिकाना बदल लेगा। हम जो काम करने आए हैं, वो ही करेंगे। इकबाल खान के बारे में पक्का पता चलते ही मार्शल या उसके आदमियों को खबर कर देंगे। इसी के साथ हमारा काम खत्म हो जाएगा।"

"उससे पहले ही इकबाल खान हमें तलाश करके, हम पर वार कर देगा।" देवराज चौहान ने कहा—"हम उसका पता लगाते रहें और वो खामोश बैठा रहे। ऐसा नहीं होगा। हमने नहीं सोचा था कि दुबई पहुंचते ही हम इकबाल खान से घिर जाएंगे। ऐसा उन दोनों एजेंटों के पकड़े जाने और मुंह खोलने से हुआ। खुद को अगर इकबाल खान से बचाना है तो हमें अपने काम में तेजी लानी होगी। वरना जितना वक्त बीतेगा, हमारे लिए खतरा बढ़ेगा।"

कमल चावला दोनों को देख रहा था। सुन रहा था।

"लेकिन हम इकबाल खान के ठिकाने में गए तो, हमारे खत्म होने

comicsmylife.blogspot.in

साथ ही खतरा खत्म हो जाएगा। बिना सुने ही ये बात मैं जानता हूं कि इकबाल खान सूरी के ठिकाने पर सुरक्षा के जबर्दस्त इंतजाम होंगे।"

"इस तरह तो हम अपना काम पूरा नहीं कर सकेंगे।" देवराज चौहान बोला।

"क्यों?"

"हमें कैसे पता चलेगा कि इकबाल खान सूरी उस ठिकाने पर है या नहीं? सतर्कता के नाते वो बाहर भी नहीं निकलेगा। हम वहां ज्यादा देर नजर नहीं रख सकते। जल्दी ही उनकी नजरों में आ जाएंगे और वे हमें खत्म कर देंगे। ऐसे में नजर रखने से बेहतर है उस जगह के भीतर जाना। तभी कुछ हो...।"

"मान लो, हम भीतर जाते हैं।" जगमोहन बोला—"हमें इकबाल ख सूरी मिल जाता है तो हम क्या करेंगे?"

देवराज चौहान के होंठ भिंच गए।

जगमोहन की निगाह देवराज चौहान पर थी।

कमल चावला गम्भीर-सा दोनों को देख रहा था।

"हम उसे मार देंगे।" देवराज चौहान कह उठा।

"क्यों?"

"क्योंकि अगर वो जिंदा रहा तो हमें मार देगा। मार्शल की ये लड़ाई, हमारी व्यक्तिगत होती जा रही है। पहले हमने खामोशी से इकबाल खान का पता लगाना था, परंतु इकबाल खान या कामनी ने हालात ऐसे पैदा कर दिए हैं कि ये काम अब खामोशी से नहीं हो सकता। हमें खुलकर इकबाल खान सूरी के सामने जाना होगा।" देवराज चौहान ने सख्त स्वर में कहा।

"लेकिन हमारा काम तो इकबाल खान का पता लगाकर मार्शल को बताना है। महीने-भर से वो गायब है, मार्शल के एजेंटों की निगाहों से दूर है। इसी कारण तो मार्शल ने हमें...।"

"जगमोहन।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"मार्शल का काम जरूरी है या अपनी जान बचाना जरूरी है?"

"जान बचाना जरूरी है।"

"तो वो ही मैं कर रहा हूं। इकबाल खान हाथ धोकर हमारे पीछे पड़ चुका है। उसे नहीं पसंद कि हम मार्शल के लिए उसे तलाश करें। ऐसे में इकबाल खान सूरी पर वार कर देना ही ठीक है।"

"परंतु हमारा सौदा तो मार्शल को, इकबाल खान की खबर देने तक का है।"

"सौदे की तरफ ध्यान मत दो। हालातों को देखो, इकबाल खान खुलकर हमारे पीछे पड़ चुका है। हमें अपनी जान बचानी है और काम को किसी-न-किसी रूप में पूरा करना है।" देवराज चौहान गम्भीर था

"हम काम को छोड़ भी सकते हैं।" जगमोहन बोला।

"मतलब कि सिर झुकाकर हम इंडिया पहुंचें और मार्शल को कहें कि हम काम पूरा नहीं कर सके।" बरबस ही देवराज चौहान के होंठों पर छोटी-सी मुस्कान उभरी और लुप्त हो गई—"तुम कहते हो तो मैं वापस चलने को तैयार हूं।"

"ये गलत होगा।" जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"तो फिर काम ऐसे ही होगा, जैसे कि मैंने कहा...।"

"इकबाल खान सूरी के ठिकाने के भीतर घुसकर?"

"हां।"

"उसे मारकर?"

देवराज चौहान ने सहमति से सिर हिलाया।

"फिर तो मुझे मार्शल से बात करनी पड़ेगी।" जगमोहन ने कहा

"क्यों?"

"सौदे की रकम बढ़ाने के लिए कहना पड़ेगा। हम उसका काम निबटाने जा रहे हैं।"

"जल्दबाजी मत करो। वहां हम भी निबट सकते हैं। इस वक्त मार्शल की नहीं, हमारी जान पर खतरा आ बना है। उसी खतरे से बचने के लिए हमें ये फैसला लेना पड़ रहा...।"

"लगे हाथ मार्शल से बात कर लेने में क्या हर्ज है। मैं कुछ और रकम तय कर लूंगा।"

"इन बातों को छोड़ो और काम की तरफ ध्यान दो।" देवराज चौहान का स्वर सख्त हो गया। उसने कमल चावला को देखा जिसके चेहरे पर गम्भीरता के भाव थे—"तुम हमें इकबाल खान के उस ठिकाने के सुरक्षा इंतजामों के बारे में बताओ।"

"हां-हां, मैं बताने को तैयार हूं।" कमल चावला फौरन कह उठा—"वहां पर कम-से-कम पंद्रह गनमैन हर वक्त पहरे पर रहते हैं। आगे-पीछे, दाएं-बाएं। चारदीवारी बारह फुट ऊंची है। दो गनमैन हमेशा बाहर के प्रवेश गेट पर खड़े रहते हैं। ऐसे में किसी के भीतर चले जाने का सवाल ही नहीं उठता...।"

"रात को क्या इंतजाम होता है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"ये ही इंतजाम होता है। रात में गनमैनों के पास पावर फुल टॉर्चें होती हैं। हर छः घंटे बाद गनमैन बदलते रहते हैं। गनमैन नीचे की मंजिल पर रहते हैं। ऊपर की दो मंजिलों पर उन्हें जाने की इजाजत नहीं है। ऊपर कामनी और इकबाल खान सूरी ही रहते हैं। इनके अलावा दो नौकर होते हैं। वो भी तब तक ही वहां रहते हैं, जब तक उनका काम

comicsmylife.blogspot.in

होता है उसके बाद वो नीचे की मंजिल पर अपने कमरे में चले जाते हैं। नीचे का फ्लोर हर वक्त चहल-पहल से भरा रहता है क्योंकि वहां हर वक्त करीब चालीस के आसपास गनमैन होते हैं। जिनमें से पंद्रह ड्यूटी पर। वहां पर शायद ही कभी-कभार इकबाल खान सूरी या कामनी से मिलने कोई आता है। ऐसा होने पर मुलाकात पहली मंजिल पर होती है। परंतु ऐसा बहुत कम होता है। वो अपने काम मोबाइल फोन पर ही पूरे करते हैं।"

"इकबाल खान सूरी बाहर तो निकलता होगा?"

"निकलता है तो पता नहीं चलता। समझो दो गनमैन कार पर कहीं गए हैं तो देखने वाला नहीं समझ सकता कि उस कार में छिपा इकबाल खान सूरी भी हो सकता है। वो यकीनन इसी तरह छिपकर बाहर जाता होगा। परंतु महीना-भर पहले वहां पहुंच चुके मेरे दो एजेंटों ने पकड़े जाने से पहले बताया था कि रात को गनमैन लापरवाही कर जाते हैं। कम-से-कम आधे सो जाते हैं। इकबाल खान सूरी और कामनी को ये बात पता है, परंतु वो परवाह नहीं करते। शायद इस भरोसे कि हर वक्त वहां पर उनके ढेरों गनमैन रहते हैं कभी कोई गड़बड़ हुई तो वो संभाल लेंगे। उन एजेंटों का कहना था कि रात को पीछे की दीवार फलांगकर रेन वाटर पाइप के सहारे आसानी से छत पर पहुंचा जा सकता है। फिर वहां से सीढ़ियों के रास्ते नीचे आया जा सकता है। इस तरह गनमैनों को उनके भीतर चले जाने की जरा भी खबर नहीं लगेगी।"

"छत पर पहरा नहीं होता?" जगमोहन बोला।

"होता है। दो गनमैन छत पर होते हैं, परंतु उन्हें संभाला जा सकता है कहने के साथ ही कमल चावला ने दोनों पर निगाह मारी—"ये ही एक रास्ता है, जहां से आसानी से भीतर पहुंचा जा सकता है।"

"तुम्हें भरोसा है कि उन दोनों एजेंटों ने ये बात सही बताई थी?" देवराज चौहान ने पूछा।

"पूरा भरोसा है। क्योंकि तब वो पकड़े नहीं गए थे और गनमैनों के रूप में वहां ड्यूटी देते थे।" कमल चावला ने कहा।

"ठीक है। हम इसी रास्ते से उस जगह के भीतर पहुंचेंगे।" देवराज चौहान बोला।

"तुम कितनी आसानी से ये बात कह रहे हो, जबकि वहां खतरा इतना ज्यादा है कि...।" जगमोहन ने कहना चाहा।

"तुम मेरे साथ मत जाना।"

"क्या बात करते हो। मैं साथ में क्यों नहीं जाऊंगा।" जगमोहन ने झल्लाकर कहा।

"चावला।" देवराज चौहान बोला—"हमें रिवॉल्वरें और गोलियों की जरूरत होगी।"

"इंतजाम हो जाएगा। कब जाना चाहते हो वहां?"

"रात को। तैयारी के लिए हमारे पास पूरा दिन पड़ा है।" देवराज चौहान बोला।

तभी करीम मियां वहां आ पहुंचा।

"कार ठिकाने लगा दी?" कमल चावला ने पूछा।

"दूर छोड़ आया हूं।"

"बढ़िया किया। अब हम नींद लेंगे। तब तक तुम खाने को कुछ बना लेना। जागेंगे तो भूख लग रही होगी।"

"इकबाल खान और कामनी के बारे में क्या सोचा है।" करीम मियां कहा—"हमारे लोग बहुत संख्या में मारे गए हैं।"

"इस बारे में मार्शल से बात करेंगे।" कमल चावला ने सिर हिलाया—"हम इस तरह हार नहीं मानेंगे। दो रिवॉल्वर और कुछ राउंड फालतू गोलियों का भी इंतजाम कर देना।"

"वो किस लिए?"

"देवराज चौहान और जगमोहन को चाहिए।" कमल चावला ने गम्भीर स्वर में कहा।

वे लोग सोने की तैयारी करने लगे कि देवराज चौहान के पास मौजूद मोबाइल बजने लगा।

जगमोहन ने देवराज चौहान को देखा। होंठ सिकुड़ गए। कमल चावला ने भी उसे देखा।

"हैलो।" देवराज चौहान ने बात की।

अलजीरा से बच निकले देवराज चौहान।" कामनी का शांत स्वर कानों में पड़ा—"मेरे आदमी वहां पहुंचे अभी तो उन्हें कमरा खाली मिला। कैसे निकले, मेरे आदमी तुम्हें जाते हुए देख नहीं पाए।"

देवराज चौहान के होंठ भिंच गए।

"कहां हो तुम?" कामनी की आवाज पुनः कानों में पड़ी—"अब मार्शल के एजेंट तो तुम्हारी सहायता करने की स्थिति में नहीं हैं। दुबई से जाने की सोच रहे हो, या किसी दूसरे होटल में जा छिपे हो।"

देवराज चौहान के चेहरे पर दरिंदगी उभरी रही।

"इकबाल खान सूरी तक पहुंच पाने का खयाल छोड़ दो। ये दुबई है यहां इकबाल खान की चलती है। तुम अभी तक बचे हुए हो तो ये तुम्हारी किस्मत है पर ज्यादा देर नहीं बच सकते। अगर तुम होटल अलजीरा में होते तो अब तक मेरे आदमियों ने तुम्हें मार दिया होता। तुम जहां भी हो कभी भी मेरे आदमी तुम तक पहुंच सकते हैं। हिन्दुस्तान के डकैती मास्टर की मौत दुबई में ही होगी। इकबाल खान सूरी तक पहुंचना नामुमकिन है।"

comicsmylife.blogspot.in

देवराज चौहान के होंठों से गुर्राहट निकली।

"सिर्फ एयरपोर्ट ही ऐसी जगह है जहां तुम्हें कोई कुछ नहीं कहेगा। वापस इंडिया जाने के लिए सही-सलामत एयरपोर्ट पर पहुंच गए तो सलामत रह सकते हो। तुम्हें इकबाल खान सूरी के मामले में दखल नहीं देना चाहिए था। उसके सामने तुम चींटी से भी छोटे हो। तुम्हारी हैसियत कुछ भी नहीं है तुम महज एक डकैती करने वाले हो।"

"मैं तुमसे जल्द ही मिलूंगा।" देवराज चौहान ने भिंचे स्वर में कहा।

"मुझसे मिलोगे?" इधर से कामनी हंसी—"ख्वाब है ये तुम्हारा। मुझ तक मेरी मर्जी के बिना कोई भी नहीं पहुंच...।"

"बहुत जल्दी हमारी मुलाकात होगी।"

"मेरी मानो तो अभी भी इंडिया जा सकते हो। इकबाल खान सूरी तुम्हारे बस का नहीं है। कहां तुम और कहां इकबाल खान सूरी। मामला किसी भी तरफ से टक्कर का नहीं बैठता। बहुत बुरी मौत मरोगे तुम।"

देवराज चौहान ने फोन बंद कर दिया। चेहरे पर कठोरता नाच रही थी

"किसका फोन था?" जगमोहन ने समझते हुए भी पूछा।

"कामनी का।" देवराज चौहान गुर्रा उठा।

"ओह नसरीन शेख।" कमल चावला कह उठा—"ये बहुत ही खतरनाक...।"

"ये कितनी भी खतरनाक क्यों न हो। आज रात कुछ फैसला तो हो ही जाएगा।" देवराज चौहान ने दरिंदगी से कहा।

▭ ▭

दुबई की काली रात में आसमान पर तारे चमक रहे थे। दिन का मौसम बेहद गर्म रहता था। परंतु शाम के बाद, रात में मौसम अच्छा हो जाता था। दुबई का समुद्र, बहती हवाओं को ठंडा कर देता। यूं भी दुबई की मिट्टी में रेत के कण थे जिसकी वजह से जमीन का ऊपरी हिस्सा जल्दी ठंडा हो जाता था। इस वक्त तेज ठंडी हवा चल रही थी।

रात का एक बजने जा रहा था। देवराज चौहान ने जगमोहन को हाथ पर चढ़ाकर ऊपर किया तो वो दीवार की मुंडेर थामकर लटका और फिर ऊपर होते हुए दीवार पर लेट गया। उसकी निगाह दीवार के भीतर वाले हिस्से पर घूम रही थी, जो कि इकबाल खान सूरी के विशाल बंगले का, पीछे वाला हिस्सा था। काफी खुली जगह थी। दाएं और बाएं कोने में लाइटें ऑन थी और नीचे की मखमली घास बहुत साफ दिखाई दे रही थी। भीतर हर तरफ शांति थी। उन लाइटों की रोशनी दीवार के ऊपर तक नहीं आ पा रही थी। जगमोहन कई पलों तक नजरें दौड़ाता रहा।

एकाएक जगमोहन सतर्क-सा दीवार पर चिपककर लेट गया।

बाईं तरफ वाले कोने में रोशनी में कोई नजर आया था। उसने काले कपड़े पहने हुए थे और कंधे पर गन लटका रखी थी। जगमोहन समझ गया कि वो गनमैन है। चंद पल वो वहीं खड़ा रहा फिर बंगले के दूसरी तरफ चला गया। अब पीछे की तरफ कोई भी गनमैन नहीं था।

जगमोहन बांह नीचे करके, चुटकी बजाकर देवराज चौहान को आने का इशारा किया और अगले ही पल दीवार के उस तरफ कूदते हुए जमीन पर लेट गया। देवराज चौहान ने दोनों बांहें ऊपर करके जम्प ली और दीवार की मुंडेर थामी फिर शरीर को खास अंदाज में झटका दिया और दीवार के ऊपर जा पहुंचा और अगले ही पल नीचे, जगमोहन के पास कूद गया।

दोनों दम साधे पास-पास लेटे थे।

"यहां तो कोई भी नहीं है।" जगमोहन फुसफुसाकर कह उठा—"एक गनमैन उस तरफ दिखा था फिर चंद पल ठहरकर वापस उधर ही चला गया।" इस दौरान जगमोहन की निगाह हर तरफ घूम रही थी।

देवराज चौहान भी पीछे की सारी जगह खाली देखकर उलझन में था।

"मुझे कुछ ठीक नहीं लग रहा जगमोहन।" देवराज चौहान धीमे स्वर में बोला।

"क्या मतलब?"

"इस तरफ किसी का भी न होना। इकबाल खान या कामनी इस तरह लापरवाह नहीं हो सकते।"

"क्या कहना चाहते हो?"

"हम क्या किसी की चाल में फंसने तो नहीं जा रहे।" देवराज चौहान ने कहा।

"हम भला चाल में कैसे फंस सकते हैं। इकबाल खान या कामनी को क्या पता कि हम क्या करने वाले हैं।"

"परंतु पीछे की तरफ जरा भी पहरा न होना देखकर लगता है कि हमारे लिए रास्ता साफ किया गया हो।"

"मैं तुम्हारी बात नहीं मानता।"

"आओ, वक्त खराब न करो।" कहते हुए देवराज चौहान उठा औ बंगले की दीवार की तरफ दौड़ा।

जगमोहन ने भी ऐसा ही किया।

आठ पलों में ही दोनों बंगले की दीवार के साथ लगे खड़े थे। ये खतरे का समय था कोई भी इस तरफ आ सकता था। पास ही रेन वाटर पाइप था जो कि ऊपर की तरफ जा रहा था। देवराज चौहान ने पाइप पकड़ा और फुर्ती से ऊपर चढ़ने लगा। जगमोहन ने भी देर न लगाई। वो भी देवराज चौहान के पीछे ऊपर चढ़ता चला गया।

comicsmylife.blogspot.in

पहली मंजिल पार करके देवराज चौहान ने नीचे देखा तो थम-सा गया। नीचे दो गनमैन टहलते दिखे।

वो ऊपर भी देख सकते थे। परंतु राहत की बात ये थी कि ऊपर अंधेरा था और वो सोच भी नहीं सकते थे कि कोई भीतर आकर रेन वाटर पाइप पर चढ़ सकता है। तभी तीसरा गनमैन भी वहां टहलता दिखने लगा।

ऐसे में देवराज चौहान और जगमोहन धीमे-धीमे चढ़ते तीसरी मंजिल की छत की दीवार तक जा पहुंचे।

देवराज चौहान ने हाथ आगे बढ़ाकर उछाल मारी और दीवार थाम ली फिर सिर ऊपर करके छत पर झांका। जगमोहन नीचे पाइप थामे चिपका रहा। सबसे नीचे खुली जगह में गनमैन टहल रहे थे। वो तीन थे।

छत में दो गनमैन दिखे। एक सामने की तरफ वाली दीवार से झांककर नीचे देख रहा था। दूसरा उससे कुछ कदमों की दूरी पर खड़ा दूसरी तरफ देख रहा था कि देवराज चौहान उसी पल उछलकर दीवार पर चढ़ा और बे-आवाज छत पर आया और दीवार के साथ दुबक कर बैठ गया। मिनट भर ही बीता होगा कि जगमोहन भी उसके पास बैठ गया। आकाश में तारे अवश्य थे, परंतु चंद्रमा कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। ऐसे में वो छत पर इस प्रकार कुछ देर ही सुरक्षित रह सकते थे।

"दो ही हैं।" जगमोहन फुसफुसाया।

"कमल चावला ने भी दो होने की ही बात कही थी।"

"चलें, इन्हें निबटाया जाए।"

"अभी यहीं रहो। फासला ज्यादा है। छत काफी बड़ी है। वे हमें अपने तरफ आते देख भी सकते हैं।" देवराज चौहान ने धीमे से कहा।

▭ ▭

'पंछी फंस गया जाल में।' कामनी बड़बड़ा उठी।

कामनी उर्फ नसरीन शेख एक ऐसे कमरे में थी, जहां मध्यम रोशनी फै थी। सामने आठ टी.वी. जैसी स्क्रीनें लगी थीं, जिस पर अलग-अलग दृश्य उभर रहे थे बंगले के बाहर के। इस वक्त एक स्क्रीन पर देवराज चौहान और जगमोहन नजर आ रहे थे जो कि बंगले की छत पर दुबके बैठे थे। अंधेरे की वजह से स्क्रीन पर वे मध्यम से दिखाई दे रहे थे। स्क्रीनों के नीचे कॉफी बड़ा स्विच बोर्ड नजर आ रहा था, जिनके पास दो आदमी बैठे थे और उनकी निगाह भी स्क्रीनों पर थी।

कामनी ने इस वक्त स्लैक्स और स्कीवी पहन रखी थी। उसके शरीर का पूरा कटाव स्पष्ट झलकता दिखाई दे रहा था। वो बेहद चुस्त लग रही थी और पैनी नजरें स्क्रीन पर नजर आते देवराज चौहान और जगमोहन पर थीं।

"छत वालों को खबर कर दो कि वो छत पर आ चुके हैं।" कामनी ने कहा।

दोनों आदमियों में से एक ने मोबाइल निकाला और नम्बर मिलाने लगा।

"मोबाइल की रिंग टोन तो ये दोनों भी सुन लेंगे।" कामनी बोली।

"उन्होंने फोन वाइब्रेशन पर कर रखा है। पहले ही उन्हें समझा दिया था।" वो व्यक्ति बोला।

फिर उसकी छत वाले से बात हो गई।

"कहो।" उसके कानों में आवाज पड़ी।

"वो छत पर आ पहुंचे हैं और दीवार के साथ लगे बैठे हैं।" उसने फोन पर कहा।

"समझ गया।"

"उनके शिकार बनो।" कहने के साथ ही उसने फोन बंद कर दिया।

कामनी के चेहरे पर जहरीली मुस्कान नाच रही थी।

'मेरी चाल कामयाब रही। यू आर ग्रेट कामनी। तेरा जवाब नहीं।' वो पुनः बड़बड़ा उठी।

तभी वो आदमी बोला।

"हमारे दोनों आदमी अब टहलते हुए उनके पास पहुंचने का प्रयत्न कर रहे हैं।"

"नजरें स्क्रीन पर गड़ाए रखो।" कामनी ने कहा।

पांच मिनट बीते कि वो आदमी बोला।

"उन दोनों ने हमारे आदमियों को बेहोश कर दिया।"

"वैरी गुड।" कामनी बांह हिलाकर बोली—"अब वे क्या कर रहे हैं?"

"वे सीढ़ियों की तरफ बढ़ रहे हैं।"

"और वहां का दरवाजा बंद है।"

"यस मैडम।"

"अब उस आदमी को ऊपर भेजो, जो दरवाजा खोलेगा। उसे सब समझा रखा है न?"

"यस मैडम।" वो मोबाइल निकालकर नम्बर मिलाने लगा।

बात हुई।

"वो छत पर पहुंच चुके हैं। अब तुम्हें जाकर दरवाजा खोलना है। जानते हो न कैसे?"

"कितनी बार बताओगे। सब पता है।" उधर से कहकर फोन बंद कर दिया गया।

कामनी की निगाह स्क्रीन पर थी जहां अंधेरे में, थोड़े-बहुत देवराज चौहान और जगमोहन नजर आ रहे थे।

comicsmylife.blogspot.in

"सीढ़ियों का दरवाजा तो बंद है।" जगमोहन के होंठों से निकला।
"इस तरफ से बंद होगा।" पास आते देवराज चौहान ने कहा।
"नहीं, भीतर से बंद है।"
छत वाले दोनों गनमैन कुछ दूरी पर, छत पर बेहोश पड़े थे।
देवराज चौहान ने करीब आकर दरवाजा चैक किया वो लोहे का था और भीतर की तरफ से बंद था।
"सारी मेहनत खराब गई।" जगमोहन कह उठा—"हमें वापस लौटना होगा।"
"हम यहीं इंतजार करेंगे।" देवराज चौहान ने दृढ़ स्वर में कहा—"सारी रात तो ये दरवाजा बंद रहेगा नहीं। कोई तो आएगा।"
जगमोहन ने पूरी छत पर निगाह मारी।
सन्नाटा था चारों तरफ।
"हमें रात भर भी इंतजार करना पड़ सकता है।" जगमोहन कह उठा—"अब जो भी दरवाजा खोलकर ऊपर आएगा, वो यहां के हालात देखकर समझ जाएगा कि गड़बड़ है। ये तो खतरे वाली बात हो...।"
जगमोहन के शब्द अधूरे रहे गए।
भीतर से सीढ़ियां चढ़ने की आवाज आ रही थी।
कोई ऊपर आ रहा था। देवराज चौहान और जगमोहन की नजरें मिलीं। वे फौरन दीवार की ओट में खड़े हो गए।
तभी भीतर से लोहे की कुंडी खोले जाने की आवाज आई।
देवराज चौहान के होंठ भिंचे थे। जगमोहन बेहद सतर्क था कि अब कुछ भी हो सकता था।
तभी दरवाजा खुला। कोई छत पर पहुंचा। चलने की आवाज आई।
"किधर हो दोस्तो।" आने वाले ने ऊंची आवाज में कहा—"चाय बन गई है। जाकर ले लो।"
दीवार की ओट में खड़े देवराज चौहान और जगमोहन को वो नजर आया।
वो छत पर नजरें घुमा रहा था।
"किधर हो?" उसने पुनः आवाज लगाई। तभी उसकी निगाह छत पर बेहोश पड़े दोनों गार्डों पर पड़ गई थी। वो तुरंत उनकी तरफ बढ़ता कह उठा—"ये तो साले दारु पीकर लुढ़के पड़े हैं, ड्यूटी कर रहे हैं या पार्टी। आज तो इनकी खैर नहीं। मैडम इन्हें छोड़ने वाली नहीं। ड्यूटी के वक्त दारु...।"
उसी पल दीवार के साथ चिपका खड़ा देवराज चौहान तेजी से उसकी तरफ झपटा।

आहट सुनकर उसने घूमना चाहा।
तभी देवराज चौहान का जोरदार हाथ उसकी गर्दन पर पड़ा।
"आह...।" उसके होंठों से कराह-सी निकली और घुटने मुड़ते चले गए। वो नीचे जा गिरा।
परंतु वो थोड़ा-थोड़ा हिल रहा था।
देवराज चौहान ने जूते की ठोकर उसकी कनपटी मारी तो वो पूरी तरह बेहोश हो गया।
तब तक जगमोहन पास आ पहुंचा था।
"आओ।" देवराज चौहान ने कहा और सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया।
जगमोहन ने रिवॉल्वर निकाल ली।
देवराज चौहान को रिवॉल्वर की झलक मिली तो कह उठा।
"कोशिश करना कि तब तक गोली न चले जब तक हम इकबाल खान सूरी तक न पहुंच जाएं।"
"वो होगा भी...।"
"देखते हैं।"
"कमल चावला के मुताबिक ऊपर की मंजिलों पर गनमैन नहीं आते परंतु रात के वक्त छत पर गनमैनों का पहरा होता होगा।"
"हो सकता है सीढ़ियों का रास्ता बाहर-बाहर से ही हो।" देवराज चौहान सीढ़ियां उतरता कह उठा।
जगमोहन भी सीढ़ियां उतरने लगा था।
जल्दी ही वे नीचे की मंजिल पर जा पहुंचे। वहां कम रोशनी का बल्ब जल रहा था। सीढ़ियां अभी और भी नीचे जाती दिखाई दे रही थीं। परंतु सामने एक दरवाजा भी नजर आ रहा था।
"ये सेकंड फ्लोर है। इकबाल खान यहां भी हो सकता है।" जगमोहन फुसफुसाया।
देवराज चौहान ने रिवॉल्वर निकाली और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।
करीब जाकर देखा तो दरवाजा बंद था।
"बंद है?" जगमोहन ने देवराज चौहान को देखा।
"हां। इसे बाद में देखेंगे, पहले नीचे का फ्लोर भी चैक कर लें।" देवराज चौहान ने कहा और आगे बढ़कर सीढ़ियां उतरने लगा। जगमोहन उसके पीछे था। जल्दी ही वे नीचे के फ्लोर पर पहुंचे। वहां भी, ऊपर की तरह कोई नहीं था। मध्यम-सी लाइट वहां भी जल रही थी।
देवराज चौहान ने वहां का दरवाजा चैक किया तो वो खुला मिला।
पहले देवराज चौहान, फिर जगमोहन, बे-आवाज, आहिस्ता से भीतर प्रवेश करते चले गए।

comicsmylife.blogspot.in

भीतर बहुत बड़ा खुला हॉल था। मध्यम-सी पर्याप्त रोशनी वहां फैली थी। हॉल का फर्श शीशे की भांति चमक रहा था। बीच-बीच में मोटे गोल पिलर खड़े थे जिन पर छोटे-छोटे शीशों द्वारा शानदार ढंग से काम किया हुआ था और वे इस मध्यम रोशनी में, गजब ढंग से चमक रहे थे। इस काफी बड़े हॉल में सिर्फ लम्बा सोफा और दो सोफा चेयर के अलावा सेंटर टेबल पड़ी नजर आ रही थी। इसके अलावा उस हॉल में कोई सामान नहीं था।

दोनों की निगाह सावधानी से हर तरफ जा रही थी। हाथ में रिवॉल्वर दबे थे।

वहां कोई भी नहीं दिखा था।

दोनों सतर्कता से आगे बढ़ने लगे। कुछ दूर हॉल के भीतर की तरफ लगते दरवाजे दिखाई दे रहे थे जो कि बंद थे।

"यहां तो कोई भी नहीं है।" जगमोहन बोला।

"मुझे सिग्रेट की स्मैल आ रही है।" देवराज चौहान ने कहा—"यहां कोई हमारे आने से पहले था।"

"हां, सिग्रेट की स्मैल वातावरण में है। पहले मैंने ध्यान नहीं दिया।" जगमोहन बोला—"ये कैसी जगह है। शीशे की तरह चमकता खाली हाल है। सिर्फ सोफा पड़ा ही नजर आ रहा है।"

"हमें उन दरवाजों की तरफ जाना चाहिए।" देवराज चौहान ने दूर नजर आते दरवाजों को देखा।

वे लोग उस तरफ बढ़ गए।

परंतु सोफे के पास से निकलने लगे तो ठिठक गए।

सैंटर टेबल पर ऐश-ट्रे में सुलगती सिग्रेट रखी थी। मध्यम-सा धुआं उठ रहा था।

दोनों सतर्क हो गए।

"इकबाल खान सूरी यहां बैठा होगा। परंतु किसी के भीतर आने का एहसास पाकर खिसक गया होगा।" जगमोहन ने कहा।

देवराज चौहान की सख्त निगाह पुनः हर तरफ घूमी।

"कुछ गड़बड़ जरूर है जगमोहन।" देवराज चौहान होंठ भिंचे कह उठा—"हम कितनी आसानी से भीतर तक आ गए। जब हमने दीवार फलांगकर भीतर प्रवेश किया तो कोई पहरेदार नहीं था पीछे की तरफ। पाइप द्वारा हम छत पर पहुंचे तो वहां भी हमें कोई परेशानी नहीं आई और दोनों गनमैनों को बेहोश कर दिया। नीचे जाने के लिए दरवाजा बंद था तो वो भी अचानक खोल दिया गया और अब नीचे पहुंचे तो यहां भी हमें कोई नजर नहीं आ रहा...।"

"वहम है तुम्हारा। कोई गड़बड़ नहीं है। हमने यहां पहुंचने में मेहनत की है।" जगमोहन बोला।

"उस दरवाजे की तरफ बढ़ो।" देवराज चौहान ने कहा—"कभी भी हमारा सामना। इकबाल खान सूरी से हो सकता है।"

ठीक उसी पल वो दरवाजा खुला और दो गनमैनों के साथ कामनी ने भीतर प्रवेश किया।

कामनी को देखते ही वे ठिठक गए।

"फंस गए।" जगमोहन की आवाज में खतरनाक भाव आ गए थे।

देवराज चौहान की आंखों में दरिंदगी ने उछाल मारी।

"तुम्हारा स्वागत है देवराज चौहान।" कामनी ने शांत आवाज में कहा—"रिवॉल्वरें गिरा दो।"

देवराज चौहान और जगमोहन खड़े उसे देखते रहे।

"रिवॉल्वरें गिरा दो।"

"ये जानती है कि हम यहां हैं।" जगमोहन ने कहा—"तभी गनमैनों साथ लेकर आई है।"

"यहां C.C.T.V. कैमरे लगे हैं। वहां से हमें जरूर देख लिया गया होगा।" देवराज चौहान ने होंठ भींचकर कहा।

"चुपके से इकबाल खान सूरी तक पहुंचने का इरादा तो बेकार गया। अब हम खतरे में हैं।"

देवराज चौहान कठोर निगाहों से दूर खड़ी कामनी को देखता रहा।

"रिवॉल्वर फेंक दो।" कामनी की आवाज कठोर हो गई—"वरना ये गोलियां चला देंगे।"

उसी पल गनमैनों की गनें उनकी तरफ उठ गईं।

देवराज चौहान ने होंठ भींचे रिवॉल्वर फेंक दी।

"हम बुरी तरह फंस गए हैं।" जगमोहन खतरनाक स्वर में कह उठा।

"रिवॉल्वर फेंको। तुम्हें रिवॉल्वर गिरानी ही पड़ेगी।" देवराज चौहान ने कहा—"हम खुले में हैं और वो गोलियां चला सकते हैं।"

जगमोहन ने रिवॉल्वर गिरा दी।

तभी एक गनमैन आगे बढ़ने लगा। वो पास आ पहुंचा। सावधानी से वो नीचे गिरी रिवॉल्वरें उठाकर, उसने गन की नाल जगमोहन की कमर पर लगा दी और कठोर स्वर में बोला।

"चलो।"

"कहां?" जगमोहन के दांत भिंच गए।

"यहां से हिलो। सिर्फ तुम और तुम यहीं खड़े रहो।" आखिरी शब्द उसने देवराज चौहान से कहे।

comicsmylife.blogspot.in

जगमोहन उसके साथ चल पड़ा। गन कमर से लगी थी। वो उसे वापस दूसरे गनमैन के पास ले गया। अब दो गनें जगमोहन की तरफ थीं। जगमोहन ने पास खड़ी कामनी को देखा जो, देवराज चौहान को देख रही थी।

"तुम हो कामनी?" जगमोहन बोला।

"हां।"

"तुम्हारी शादी हो गई?"

"नहीं।"

"मेरी भी नहीं हुई।"

"चिंता मत करो। अब तुम्हारी शादी हो जाएगी।"

"किससे?"

"मौत से।" कामनी फुंफकारी और देवराज चौहान की तरफ बढ़ गई वो।

जगमोहन ने दोनों गनमैनों को देखा जो कि उसके प्रति सतर्क थे

"क्या बात है?" एक गनमैन ने पूछा।

"कुछ नहीं।" जगमोहन ने सख्त स्वर में कहा।

"आराम से खड़े रहना। हमें पूरा ऑर्डर है मैडम का कि जरूरत पड़ने पर तुम्हें गोली मार दें।"

"इकबाल खान कहां है?"

"जुबान बंद रखो।" गनमैन गुर्रा उठा।

जगमोहन की निगाह कामनी और देवराज चौहान की तरफ उठ गई।

कामनी देवराज चौहान के पास पहुंच चुकी थी।

दांत भींचे देवराज चौहान कामनी को देख रहा था।

"तुमने क्या सोचा कि इस तरह इकबाल खान तक पहुंच जाओगे।" कामनी जहरीले स्वर में कह उठी।

देवराज चौहान उसे घूरता रहा।

"जब तक मैं जिंदा हूं तुम इकबाल खान सूरी की हवा भी नहीं पा सकते।" कामनी की आवाज में खतरनाक भाव आने लगे थे—"ये सूरत जैसा मामूली मामला नहीं है देवराज चौहान। इकबाल खान सूरी से वास्ता रखता मामला है जिसके पीछे पूरे हिन्दुस्तान की पुलिस लगी है। तब भी इकबाल खान को कोई उसकी मर्जी के बिना देख भी नहीं सका। मार्शल ने क्या सोचा कि ये मामला इतना आसान है कि डकैती मास्टर देवराज चौहान इकबाल खान सूरी के ठिकाने का पता लगा लेगा।"

देवराज चौहान के चेहरे पर दरिंदगी के भाव सिमटने लगे।

"आज तक यहां कोई नहीं पहुंच सका, जहां तुम खड़े हो। परंतु तुम आ पहुंचे।"

"अब महसूस हो रहा है कि सूरत में तुम्हें बचाना नहीं चाहिए था।" देवराज चौहान ने दांत पीसकर कहा।

"वो वक्त अब बहुत पीछे रह गया है।" कामनी कमर पर हाथ रखे देवराज चौहान को घूर रही थी—"मैंने तुम्हारे बारे में पता किया। तुम्हारी तस्वीर भी हिन्दुस्तान से ई-मेल के रास्ते मुझ तक पहुंच गई है। तुम तो बहुत शानदार डकैती मास्टर हो। ये मार्शल के चक्कर में कैसे फंस गए?"

देवराज चौहान की एकटक निगाह कामनी पर थी।

"तुम तो अब गए देवराज चौहान। यहां तक पहुंचकर जिंदा वापस लौट पाना नामुमकिन है। ये इकबाल खान सूरी की मौत की गुफा है, जहां पर तुम फंस चुके हो। मौत तुम्हारे भाग्य में लिखी जा चुकी है।"

देवराज चौहान ने नजरें उठाकर दूर खड़े दोनों गनमैनों को देखा जो जगमोहन को संभाले हुए थे।

"अपने हथियारबंद लोगों के सामने तुम किस तरह चौड़ी हो रही हो। सूरत में तो तुम्हारी आवाज नहीं निकलती थी।"

"वहां मेरी आवाज निकलती तो मेरा भेद खुल जाता और फिर तुम मुझे बचाते नहीं।"

"इंडिया क्या करने आई थी तुम?"

"इन बातों का क्या फायदा?"

"बता सकती हो तो बता दो। तुमने ही तो कहा है कि अब मैं मरने वाला हूं।"

"बेशक।" कामनी गुर्रा उठी—"तुम मरने वाले हो। इकबाल खान सूरी ने मुम्बई में हमले का खास प्लान बनाया है। साथ में दूसरे लोग भी शामिल हैं, जैसे कि पाकिस्तान की सरकार और वहां का एक आतंकवादी संगठन। हमले कहां-कहां होने हैं और कैसे होने हैं, इसका एक ब्लू प्रिंट तैयार करके, उसकी फिल्म बनाई गई। परंतु हम कोई खतरा नहीं लेना चाहते थे कि नेट के रास्ते उसे भेजें और वो पकड़ में आ जाए। इसलिए मुम्बई स्थित इकबाल खान के आदमियों को वो पहुंचाने गई थी।"

"तब मार्शल की निगाह तुम पर थी। तुम्हें देखा नहीं, किसी को कुछ देते?"

"बेवकूफों की तरह मैं काम नहीं करती कि कोई मुझे ऐसा करते देख ले। वैसे भी हमें इस बात का शक था कि मुम्बई पहुंचने पर मुझ पर नजर रखी जा सकती है। वो छोटी-सी माईक्रोफिल्म थी जो कि मैंने किसी से हाथ मिलाते, उसके हाथ में सरका दी।"

देवराज चौहान का चेहरा बेहद सख्त हो उठा।

"हमला कब होना है मुम्बई पर?" देवराज चौहान ने पूछा।

"इसमें अभी दो महीने का वक्त है, पर तुम अब मरने जा रहे...।"

comicsmylife.blogspot.in

उसी पल देवराज चौहान कामनी पर झपटा और जोरों का घूंसा उसके गाल पर मारा। कामनी के पांव उखड़ गए। वो धड़ाम से पीछे जा गिरी।

देवराज चौहान भी गिरा।

परंतु दोनों फुर्ती से खड़े हो गए।

कामनी के होंठों के कोने में खून छलक आया था। उसने हाथ से खून साफ किया और मौत भरी निगाहों से देवराज चौहान को देखा। देवराज चौहान के चेहरे पर दरिंदगी मचल रही थी।

"मैडम।" तभी दूर खड़े गनमैन ने ऊंची आवाज में कहा—"शूट कर दें इसे।"

"नहीं।" कामनी गुर्रा पड़ी—"मरने से पहले ये देख ले कि कामनी में ताकत कितनी है। कोई भी बीच में नहीं आएगा। ये मामला मेरा और इसका है। मैं इसे अब अपने हाथों से मौत दूंगी।" कहने के साथ ही कामनी ने देवराज चौहान पर छलांग लगा दी।

देवराज चौहान सतर्क था। उसने बचने के लिए तुरंत अपनी जगह छोड़ दी।

लेकिन तब तक कामनी का वेग से आता शरीर उस तक पहुंच चुका था। उसके कंधे से कामनी का शरीर टकराया और देवराज चौहान फर्श पर लुढ़कता चला गया, जबकि कामनी हवा में ही करवट लेकर, पैरों के बल खड़ी हो गई थी।

देवराज चौहान संभला और तुरंत खड़ा हो गया। इतना तो समझ चुका था कि उसके सामने जबर्दस्त योद्धा है जो कि लड़ने की कला में माहिर है। बहुत सोच-समझकर उसे परास्त करना होगा।

कामनी के चेहरे पर मौत के भाव नजर आ रहे थे।

"अब तुम मेरे किसी भी वार पर अपनी जान गंवा सकते हो। तुम कुछ भी सही, पर लड़ने की कला में मेरे बराबर नहीं हो सकते।"

देवराज चौहान धीमे-धीमे कामनी की तरफ बढ़ने लगा।

कामनी दोनों बांहें फैलाए, थोड़ी-सी झुकी, उसे देखने लगी।

देवराज चौहान अभी चंद कदम ही आगे आया था कि एकाएक कामनी ने तेजी से खुद को फर्श पर गिराया और चिकनी मछली की तरह, देवराज चौहान की तरफ खिसकती चली गई।

ये सब इतना अचानक हुआ कि देवराज चौहान संभल न सका।

कामनी का शरीर उसकी टांगों से आ टकराया।

वो 'धड़ाम' से आगे को गिरा। दोनों बांहें आगे कर लेने से चेहरा फर्श से टकराने से बच गया। परंतु उसके संभलने से पहले ही कामनी उछलकर खड़ी हुई और खड़े होते देवराज चौहान की कमर में जोरदार ठोकर मारी।

देवराज चौहान के होंठों से चीख निकली और वो पुनः फर्श पर जा लुढ़का।

कामनी ने छलांग लगाई और सीधी उसकी छाती पर जा बैठी। इसके साथ ही खास अंदाज में दाएं हाथ की उंगली चाकू की तरह उसकी गर्दन पर रखते हुए कहा।

"चाकू की तरह ये उंगली तेरे गले में घुस जाएगी देवराज चौहान और तू अब...।"

तभी देवराज चौहान से पूरी ताकत लगाकर कामनी को अपने ऊपर से उछाल दिया।

कामनी पास ही फर्श पर जा गिरी।

देवराज चौहान खड़ा हुआ और कामनी पर झपटने को हुआ कि तभी कामनी की टांग घूमी जो कि उसकी टांगों में जा फंसी। देवराज चौहान बुरी तरह लड़खड़ाकर नीचे जा गिरा। परंतु उसने हाथ बढ़ाकर कामनी की पिंडली थाम ली और फुर्ती से खड़ा होकर कामनी को गोल-गोल घुमाने लगा। जब घुमाने की रफ्तार तेज हो गई तो उसने पिंडली छोड़ दी।

कामनी का शरीर हवा में लहराता दस कदम दूर फर्श से टकराने ही वाला था कि तभी कामनी ने दोनों बाहें फर्श पर टिकाई और खास अंदाज में शरीर को झटका दिया कि हवा में लहराकर, वो पैरों के बल खड़ी हो गई।

खतरनाक भाव थे कामनी के चेहरे पर। वो उसी पल हवा में उछली और तीर की भांति देवराज चौहान की तरफ आई कि देवराज चौहान ने झुकते हुए हाथ ऊपर करके उसके पांवों को थामा परंतु उसी पल कामनी ने अपनी टांगों को खास अंदाज में झटका दिया और उसकी पीठ पर ठोकर जमाते, चंद कदम दूर जा खड़ी हुई।

देवराज चौहान लड़खड़ाया फिर संभल गया।

दोनों एक-दूसर को मौत की-सी निगाहों से देखने लगे थे।

दोनों गनमैन और जगमोहन दूर खड़े ये मौत का तमाशा देख रहे थे। जगमोहन बेचैन था। वो बार-बार गनमैनों को देख रहा था और उनसे छुटकारे का मौका तलाश कर रहा था। परंतु वे दोनों उसके प्रति सतर्क थे।

तभी कामनी किसी बूढ़ी औरत की भांति झुकी और तेजी से देवराज चौहान की तरफ दौड़ पड़ी।

ऐसा होते ही देवराज चौहान ने उस पर छलांग लगा दी।

दोनों के शरीर वेग से टकराए और नीचे जा गिरे। उसी पल कामनी रबड़ की गुड़िया की भांति उछलकर खड़ी हो गई। खड़े होते देवराज चौहान की सतर्क निगाह, कामनी पर थी।

"कोई इतनी देर तक मेरा मुकाबला नहीं कर सकता। तू हिम्मत वाला है देवराज चौहान।" कामनी गुर्रा उठी।

comicsmylife.blogspot.in

देवराज चौहान दांत भींचे कामनी को देखे जा रहा था। उसे इस बात का इंतजार था कि कामनी अब कौन-सा वार करती है। तभी कामनी अपनी जगह पर खड़ी फिरकी की भांति घूमी और अगले ही पल हवा में उड़ता वेग के साथ उसका शरीर देवराज चौहान की तरफ लपका और पांव की जबर्दस्त ठोकर देवराज चौहान के पेट में पड़ी।

देवराज चौहान के होंठों से चीख निकली और नीचे गिरता, वो फर्श पर फिसलता चला गया। कामनी फर्श पर आ खड़ी हुई थी और देवराज चौहान की तरफ बढ़ने लगी।

देवराज चौहान ने दोनों हाथों से पेट पकड़ रखा था। चेहरे पर पीड़ा के भाव थे। परंतु कामनी को करीब आते पाया तो उसे संभल जाना पड़ा। चेहरे और आंखों में दरिंदगी के भाव नाच रहे थे। कामनी अभी पांच कदम दूर थी कि देवराज चौहान उसकी तरफ दौड़ा और उछलकर कामनी से जा टकराया।

कामनी इस बार कुछ लापरवाह थी।

कामनी का शरीर जोरों से उछला और पीछे को गिरता चला गया। तब तक देवराज चौहान लुढ़कता हुआ उसके पास जा पहुंचा था। वो नीचे पड़ी कामनी पर काबू पा लेना चाहता था कि तभी कामनी ने अपनी दोनों टांगें उसकी गर्दन में फंसाकर झटका दिया तो देवराज चौहान फर्श पर लुढ़कता चला गया। इससे पहले कि संभल पाता, कामनी ने उसके लुढ़कते शरीर को संभाला और उसकी छाती पर बैठती दाएं हाथ की तर्जनी उंगली पुनः उसकी गर्दन पर रख दी।

"अब मैं तेरा दांव नहीं चलने दूंगी।" वो गुर्रा उठी।

जबकि देवराज चौहान उसे अपने ऊपर से हटाने के लिए अपने शरीर में ताकत इकट्ठी करने लगा।

"इकबाल खान सूरी चाहिए तो पाकिस्तान के इस्लामाबाद में पहुंच।" कामनी दांत भींचे कह उठी—"वो वहां है। यहां तेरे को इकबाल खान सूरी नहीं मिलने वाला। मैं भी वहीं जा रही हूं। मां का दूध पिया है तो इकबाल खान सूरी को छू के दिखा। मेरे होते हुए तू उसका बाल भी बांका नहीं कर सकता। तू कीड़ा है उसके सामने। मामूली-सा कीड़ा। उसके सामने तेरी कोई औकात नहीं है। मरने से पहले तेरे दिल में ये इच्छा न बाकी रह जाए कि अगर मौका मिलता तो तू इकबाल खान सूरी की जान ले सकता था, इसलिए तेरे को जीने का एक और मौका दे रही हूं ताकि तू इस्लामाबाद पहुंचकर अपनी एक कोशिश और कर सके। मैं तेरे को तेरे अंत तक पहुंचाकर, तुझे मौत दूंगी देवराज चौहान, लेकिन तेरे पास इस बात का भी पूरा मौका होगा कि तू वापस मुम्बई चला जाए।"

देवराज चौहान कामनी के सुलगते चेहरे को देखने लगा।

"इकबाल खान सूरी इस्लामाबाद में है।" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"हां। वो पाकिस्तान में है। मां का दूध पिया है तो पहुंच पाकिस्तान में। इकबाल खान सूरी की तरफ बढ़ के दिखा। ये खुली चुनौती है मेरी तरफ से। मर्द होगा तो पाकिस्तान जरूर पहुंचेगा और वहीं पर तेरी मौत होगी। कुत्ते की मौत। अब मैं तेरे को यहां से निकल जाने का मौका दे रही हूं। जैसे आया है वैसे ही निकल जा। रास्ता साफ मिलेगा तेरे को। मां का दूध पिया है तो पाकिस्तान के इस्लामाबाद शहर जरूर पहुंचेगा इकबाल खान सूरी के लिए और वहीं पर तू कुत्ते की मौत मरेगा।"

देवराज चौहान की एकटक निगाह कामनी के सुलगते चेहरे पर थी।

कामनी की दरिंदगी-भरी निगाह, उसकी आंखों पर थी।

कामनी ने एकाएक उसे छोड़ा और उस पर से हटकर खड़ी हो गई।

देवराज चौहान नीचे पड़ा कामनी को देखता रहा। माथे पर बल आ गए थे। एकाएक कामनी पलटी और अपने आदमियों से कह उठी।

"जाने दो इन्हें। जैसे आए हैं, वैसे खुद ही यहां से चले जाएंगे।" फिर पलटकर देवराज चौहान से बोली—"तूने सूरत में मेरी जान बचाई थी, अब मैंने तेरी जान बख्श दी। हिसाब बराबर हो गया। अब तेरा कोई एहसान नहीं रहा...।"

देवराज चौहान खड़ा होते हुए बोला।

"तुमने मेरी जान कैसे बख्श दी। अभी तो बहुत कुछ होना बाकी था।" स्वर में कठोरता थी।

"तो ये बात है।" कामनी गुर्रा उठी।

"हां, अभी तो...।"

"तेरे सारे अरमान पूरे करूंगी।" कामनी खतरनाक स्वर में कह उठी—"तूने भी अरमान पूरे कराने हो तो इस्लामाबाद आ जा।"

दोनों कई पलों तक एक-दूसरे की आंखों में देखते रहे।

चेहरों पर दरिंदगी सिमटी रही।

एकाएक कामनी पलटी और उस दरवाजे की तरफ बढ़ गई, जहां से वो दोनों गनमैनों के साथ आई थी। देखते-ही-देखते वो उन दोनों गनमैनों के साथ वहां से बाहर निकल गई। दरवाजा बंद हो गया।

जगमोहन हक्का-बक्का सा रह गया।

अचानक कामनी ने जो करवट ली थी, उससे वो हैरान था। देवराज के पास जा पहुंचा।

देवराज चौहान के माथे पर बल दिखाई दे रहे थे। होंठ भिंचे हुए थे।

comicsmylife.blogspot.in

"ये क्या हुआ? हम इकबाल खान सूरी के ठिकाने पर हैं और वो हमें यूं छोड़कर चली गई। लड़ाई भी बीच में छोड़ दी।"

"यहां से निकलो।" देवराज चौहान ने कठोर स्वर में कहा।

"वो हमें जाने देगी?"

"हां। उसी ने जाने को कहा है। जैसे आए हैं, वैसे ही जाना होगा। रास्ता साफ मिलेगा। कामनी ने कहा।"

"ये हो क्या रहा है?"

"आओ।" कहने के साथ ही देवराज चौहान उस दरवाजे की तरफ बढ़ा, जिधर से वे आए थे।

"लेकिन हमारी रिवॉल्वरें तो वो ले गए।" उसके पीछे जगमोहन कह उठा—"और इकबाल खान सूरी को देख भी नहीं पाए। ऐसे में हमारे यहां आने का क्या फायदा हुआ...।"

"यहां से निकलने के बाद सोचेंगे कि हमने क्या किया और क्या हुआ।"

देवराज चौहान ने दरवाजा खोला। जगमोहन के साथ बाहर निकला कि ठिठक गया।

सामने ही तीस-पैंतीस साल का व्यक्ति पड़ा कराह रहा था। वो घायल था। उन्हें देखते ही वो डर-सा गया। कराहने की आवाज धीमी करने की कोशिश में लग गया।

"कौन हो तुम?" देवराज चौहान ने आगे बढ़कर झुकते हुए पूछा।

वो फौरन कुछ न कह सका।

"बोलो। डरो मत, हम यहां के लोग नहीं हैं। कौन हो तुम और तुम्हारी ये हालत क्यों हुई?"

"म-मैं कमल चावला हूं। ये लोग मुझे उठाकर...।"

"कमल चावला?" देवराज चौहान बुरी तरह चौंका—"तुम कमल चावला हो?"

उसने सहमति से सिर हिला दिया।

जगमोहन भी इस बात पर ठगा-सा रह गया था।

"कौन-से कमल चावला हो तुम?"

"क्या मतलब?" उसने सूखे होंठों पर जीभ फेरकर पूछा।

"तुम—तुम मार्शल वाले कमल चावला।"

"वो ही हूं मैं। पर तुम कौन हो। क्या मार्शल को जानते हो?" वो कह उठा।

"मैं देवराज चौहान हूं।"

"देवराज चौहान?" वो चौंका—"तुम देवराज चौहान, हां—तुम्हारी सूरत पहचानी लग रही है। मार्शल ने नैट पर तुम्हारी तस्वीर...।"

"ये असली कमल चावला है तो वो कौन है जो हमें कमल चावला के रूप में अलजीरा होटल में मिला था।" जगमोहन बोला।

देवराज चौहान के होंठ भिंच गए।

"क्या कोई और भी कमल चावला है। कोई कमल चावला बनकर तुमसे मिला?" वो कह उठा।

"यहां से निकलो।" देवराज चौहान बोला—"कहीं हम नई मुसीबत में न फंस जाएं। तुम चल सकते हो?"

"ह-हां, चल लूंगा। मुझे क्या करना होगा।" वो खड़ा होने की कोशिश में कह उठा।

देवराज चौहान ने उसे सहारा देकर खड़ा किया।

उसकी आंखों से आंसू बह निकले। वो भर्राए स्वर में बोला।

"मुझे बहुत बुरी तरह टॉर्चर किया गया है। मैं—मैं शायद ठीक से चल न सकूं।"

देवराज चौहान ने उसे कंधे पर लादा और सीढ़ियां चढ़ने लगा।

पीछे आता जगमोहन कह उठा।

"तुम कब से यहां पर हो?"

"चार दिन से।" देवराज चौहान के कंधे पर पड़े उसने हांफते हुए कहा।

"यहां तुमने इकबाल खान सूरी को देखा?"

"वो यहां नहीं है। पाकिस्तान में है। मैं धोखे में इनके हाथों में जा फंसा।" कमल चावला कह रहा था—"मेरे दो एजेंट इकबाल खान सूरी के आदमियों में शामिल थे। वो पकड़े गए? परंतु हमें इस बात की खबर न मिली और रिवॉल्वरों के साए में उन्हें, हमसे बात करने को कहा जाता। इस तरह इन्हें नई खबरें मिलती रहीं हमारी। तभी उन्होंने मुझे फोन करके एक जगह पहुंचने को कहा कि इकबाल खान सूरी के बारे में खास खबर देनी है। मैं वहां पहुंचा तो, इन लोगों ने मेरा अपहरण कर लिया।"

"क्या किया अपहरण करके?"

"यातना देकर जानकारियां जानने की चेष्टा करते रहे। कुछ बातें बताईं तो कुछ नहीं बताईं।"

"तुम बाहर फर्श पर कैसे पड़े थे?"

"दो आदमी मुझे वहां छोड़ गए थे।"

"कामनी ने तुम्हें हमारे हवाले कर दिया है।" देवराज चौहान कह उठा—"वो चाहती है, हम तुम्हें ले जाएं। इसका मतलब तुम पहले इनकी कैद में पहुंच गए और हम बाद में दुबई पहुंचे।"

"जब मैं इनकी कैद में पहुंचा तो, तब तक तुम दोनों नहीं पहुंचे थे।" कमल चावला ने थके स्वर में कहा।

comicsmylife.blogspot.in

वे छत पर जा पहुंचे थे।

यहां कोई भी बेहोश आदमी मौजूद नहीं था। अब छत पर कोई पहरा नहीं था।

"यहां के लोग कहां गए?" जगमोहन के होंठों से निकला।

"हम बहुत ही गहरी चाल में फंसकर यहां पहुंचे हैं। अब हमें बाहर जाने का रास्ता दिया जा रहा है। इससे पहले कि वो इरादा बदले, हमें यहां से निकल जाना चाहिए।" देवराज चौहान ने कहा।

"गहरी चाल? मैं समझा नहीं। कैसा रास्ता हमें दिया जा रहा...।"

देवराज चौहान कमल चावला से बोला।

"हमने छत से बरसाती पाइप से नीचे जाना है परंतु तुम बुरे हाल में हो और नीचे नहीं उतर...।"

"मुझे यहां छोड़कर मत जाना।" कमल चावला जल्दी-से कह उठा।

"तुम्हें अपने साथ ही ले जा रहे हैं। तुम मुझे पीठ की तरफ से मजबूती से पकड़कर लटक जाओगे। तुम्हारा बोझ लिए मैं पाइप से नीचे उतरूंगा। जगमोहन पीछे की तरफ के हालात देखो।" देवराज चौहान बोला।

जगमोहन फौरन छत की दीवार के पास पहुंचा।

पीछे की तरफ कोई भी गनमैन नहीं दिखा। वहां मध्यम लाइट रोशन थी।

"सब ठीक है।" जगमोहन ने कहा।

तब तक कमल चावला कंधे से उतरकर, देवराज चौहान को पीछे से कसकर पकड़ चुका था।

"मुझे छोड़ा तो उसके तुम ही जिम्मेदार होगे।" देवराज चौहान ने कहा।

"नहीं छोडूंगा।" कमल चावला ने थके स्वर में कहा—"इन लोगों ने मेरी हालात बिगाड़कर रख दी है।"

देवराज चौहान दीवार पर चढ़ा फिर कमल चावला का बोझ संभाले किसी प्रकार नीचे होते हुए पाइप को थामा और नीचे उतरने लगा। कमल चावला ने उसे कसकर पकड़े रखा।

मिनट-भर में ही कमल चावला को लिए देवराज चौहान नीचे था। उसने ऊपर देखा। जगमोहन नीचे आ रहा था। कमल चावला को सहारा देते हुए देवराज चौहान पीछे दिखाई दे रही दीवार की तरफ बढ़ गया। वे दीवार के पास पहुंचे कि तब तक जगमोहन भी पास आ गया।

"इसे सहारा देकर दीवार पर चढ़ाओ।" देवराज चौहान ने कहा।

"यहां कोई आदमी नजर क्यों नहीं...।"

"क्या तुम उनके नजर आने का इंतजार कर रहे हो।" देवराज चौहान ने सख्त स्वर में कहा।

दो मिनट में ही वो तीनों दीवार के उस पार पहुंच चुके थे।

कार वहीं खड़ी थी, जहां वे छोड़कर आए थे। ये कार उन्हें पहले वाले कमल चावला ने दी थी। देवराज चौहान ने स्टेयरिंग सीट संभाली। जगमोहन बगल में बैठा। कमल चावला पीछे वाली सीट पर जा लुढ़का। कार तेजी से दौड़ पड़ी।

"चार दिन में उन लोगों ने मेरी बुरी हालत कर दी। चौबीस घंटों में जरा-सा कुछ खाने को देते थे कि मैं जिंदा रहूं ऊपर से उनका टॉर्चर करना। अपनी टांगों पर खड़ा रहने की हिम्मत नहीं बची।" कमल चावला टूटे स्वर में कह उठा।

"तुम जिंदा रहे, ये बहुत बड़ी बात है।" देवराज चौहान बोला—"बाहर की शायद तुम्हें खबर नहीं है।"

"कैसी खबर?"

"तुम्हारे बहुत-से एजेंटों को कल शाम मार दिया गया। वे सब पर नजर रखे...।"

"जानता हूं। कल रात कामनी ने मुझे बता दिया था।" कमल चावला ने पुनः दुख-भरे स्वर में कहा।

"इकबाल खान सूरी ने मार्शल का दुबई का सारा नैटवर्क खत्म कर दिया। दो-चार एजेंट बचे भी हैं तो वो कहीं छिपकर रह रहे होंगे।"

कमल चावला ने कुछ नहीं कहा।

"अब हम कहां जा रहे हैं?"

"वहीं। कमल चावला और करीम मियां के पास। जहां से निकले थे।"

"क्या मतलब? वो तो नकली कमल चावला।"

"क्या पता ये नकली हो। वैसे वो ही नकली कमल चावला है। हम कामनी की तगड़ी चाल के शिकार हुए।

"कैसी चाल?"

"बताऊंगा। कुछ देर इंतजार करो।"

▭ ▭

देवराज चौहान कार से निकला और सामने नजर आ रहे फ्लैटों की तरफ बढ़ गया। सुबह के चार बज रहे थे। सड़क के किनारे पर स्ट्रीट लाइट रोशन थी। हर तरफ सूनसानी, खामोशी थी। कहीं-कहीं कोई कार जाती दिख जाती थी।

"तुम लोग इकबाल खान सूरी के ठिकाने पर कैसे...।" कमल चावला ने पूछना चाहा।

"अभी चुप रहो।" जगमोहन बोला।

"मेरे से चुप नहीं रहा जा रहा, चार दिन बहुत कठिनता से बिताए हैं। अगर तुम लोग मुझे वहां से निकाल न लाते तो...।"

comicsmylife.blogspot.in

देवराज चौहान को अब तक आ जाना चाहिए था।

"मैं अभी आया।" जगमोहन कार का दरवाजा खोलता बोला—"तुम कार से बाहर मत...।"

"देवराज चौहान की तरफ जा रहे हो।"

"हां, उसके पास रिवॉल्वर भी नहीं...वो आ रहा है—ठीक है।" जगमोहन ने कार का दरवाजा बंद कर दिया।

देवराज चौहान आकर कार में बैठा और स्टार्ट करके, आगे बढ़ाता कह उठा।

"उस फ्लैट में कोई भी नहीं है। वहां पर ताला लगा है।"

"मतलब कि वे खिसक गए। ये ही असली कमल चावला है।"

"जरूरी तो नहीं। ये भी कामनी की कोई चाल हो सकती...।"

"मैं किसी की कोई चाल नहीं हूं। कमल चावला हूं।" पीछे मौजूद कमल चावला ने कहा।

"तो ये हमें कैसे पता चलेगा कि ये असली है या नहीं?" जगमोहन ने पूछा।

"मार्शल से बात करके। इसकी बात मार्शल से कराएंगे।" देवराज चौहान बोला।

जगमोहन गहरी सांस लेकर रह गया।

"कमल चावला।" देवराज चौहान बोला—"तुम जिन ठिकानों को इस्तेमाल कर रहे थे वो सारी जगहें कामनी की नजरों में है और कल वहीं पर हमले हुए थे। क्या अब कोई ऐसी जगह है, जहां हम जा सकें।"

"हां। ऐसी कई जगहें हैं। कुछ के बारे में तो सिर्फ मैं ही जानता हूं।"

"तो ऐसी किसी जगह पर चलो।" उठकर बैठो और हमें रास्ता बताओ।"

कमल चावला उठकर बैठ गया।

कार चलाते देवराज चौहान पुनः बोला।

"मैं तुम्हारी बात मार्शल से कराना चाहता हूं ताकि तसल्ली कर सकूं कि तुम ही कमल चावला हो।"

"मैं ही कमल चावला...।"

"तुम्हें मार्शल से बात करने में कोई एतराज है?"

"कोई एतराज नहीं।"

देवराज चौहान ने मोबाइल निकालकर जगमोहन को देते कहा।

"मार्शल का नम्बर मिलाओ।"

जगमोहन ने फोन ले लिया तो कमल चावला बोला।

"तुम लोग इकबाल खान सूरी के ठिकाने पर कैसे पहुंच गए?"

"अभी कोई बात मत करो। कोई सवाल मत पूछो।" देवराज चौहान ने कहा।

जगमोहन ने नम्बर मिलाकर फोन कान से लगा लिया था। उधर बेल जा रही थी।

"हैलो।" एकाएक मार्शल की आवाज कानों में पड़ी।

"मैं जगमोहन...।"

"तुम लोग कहां हो?" मार्शल ने तेज स्वर में उधर से पूछा।

"दुबई।"

"मुझे बहुत बुरी खबरें मिल रही हैं सुनने को। क्या हो रहा है वहां?"

"यहां सब कुछ बुरा हो रहा है। तुम्हारे लिए तो वो बुरा ही है। मैं किसी से तुम्हारी बात कराने जा रहा हूं। पहचान कर बताओ कि वो कौन है। ये आदमी अपने को कमल चावला कहता है।"

कमल चावला ने मार्शल से बात की।

"हैलो मार्शल।" कमल चावला कह उठा—"इकबाल खान सूरी की तरफ से हम पर जबर्दस्त हमला हुआ है। वो नहीं चाहता कि हम उसका पीछा करें। चार दिन बाद मुझे अभी, देवराज चौहान और जगमोहन ने इकबाल खान के ठिकाने से आजाद कराया है। हमारे बहुत-से आदमी मारे जा चुके हैं। अभी मुझे भी ठीक से पता नहीं कि क्या हो रहा है और...।"

अगले ही पल उसने फोन जगमोहन की तरफ बढ़ाते हुए कहा।

"मार्शल तुमसे बात करना चाहता है।"

जगमोहन ने बात की।

"मैंने जिससे अभी बात की, वो कमल चावला है। मेरा दुबई का सबसे बड़ा एजेंट। मामला क्या है?"

"मामला देवराज चौहान से पूछना।"

"देवराज चौहान कहां है?"

"वो अभी तुमसे बात नहीं कर पाएगा। जल्दी ही तुम्हें फोन करेगा।"

"मैं पूछता हूं दुबई में हो क्या रहा...।"

"देवराज चौहान बताएगा। हमारा नम्बर तुम्हारे फोन पर आ गया होगा। तुम इस नम्बर पर कॉल कर सकते हो, लेकिन अभी मत कर देना। पांच-सात घंटों बाद करना। हम रात-भर के जगे हुए हैं और यहां पर काफी मुसीबतें खड़ी हो गई हैं।" कहने के साथ ही जगमोहन ने फोन बंद कर दिया। बोला—"मार्शल काफी परेशान लग रहा था।"

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा। कमल चावला के बताए रास्ते पर कार दौड़ती रही।

comicsmylife.blogspot.in

ये दो कमरों का छोटा-सा फ्लैट था और दुबई के बीचोबीच मौजूद एक कालोनी में था। उस वक्त फ्लैट की चाबी कमल चावला के पास नहीं थी। देवराज चौहान ने गहरी अंधेरी रात में पंद्रह मिनट लगाकर किसी तरह दरवाजा खोला और तीनों ने भीतर प्रवेश किया। कमल चावला की हालत ज्यादा बेहतर नहीं थी। वो कमजोर और थका हुआ था। भीतर आते ही वो बेड पर जा लेटा और जल्दी ही नींद में डूब गया।

एक कमरे में डबल बेड था। दूसरे कमरे में बैठने के लिए तीन कुर्सियां और छोटा-सा सेंटर टेबल मौजूद था। स्पष्ट था कि कमल चावला इस फ्लैट को ज्यादा इस्तेमाल नहीं करता था। देवराज चौहान ने किचन में जाकर चाय-कॉफी का सामान तलाशा। दूध को छोड़कर चाय का बाकी सामान मिल गया। देवराज चौहान ने बिना दूध की चाय बनाई और दो प्यालों में डाले बाहर कमरे में आया। उसके चेहरे पर गम्भीरता और सोच के भाव नजर आ रहे थे। चेहरे से जाहिर था कि वो बहुत कुछ सोच रहा था।

कुर्सी पर बैठे जगमोहन को काली चाय का प्याला थमाते पूछा।

"कमल चावला सो गया?"

"हां। परंतु मैं बीते वक्त के हालातों को देखकर बड़ी उलझन में हूं कि हम क्या कर रहे हैं। इकबाल खान सूरी के उस ठिकाने पर क्या करने गए थे और कामनी ने हमें इतनी आसानी से वापस क्यों आने...।"

"ये सब कामनी की ही चाल थी।" देवराज चौहान कुर्सी पर बैठता कह उठा।

"कैसी चाल?"

देवराज चौहान ने चाय का घूंट भरकर कहा।

"कामनी अपना खेल खेल रही थी। उसकी चालों में हम फंस गए, जबकि हम ये सोचते रहे कि हम सब कुछ अपनी मर्जी से कर रहे हैं, जबकि हम कामनी की चालों में फंसे इकबाल खान सूरी के ठिकाने पर जा पहुंचे थे।"

"खुलकर कहो, मैं समझा नहीं।"

"उस रात अलजीरा होटल से हमने कमल चावला को फोन किया, जबकि कमल चावला कामनी के कब्जे में था और उसका मोबाइल भी कामनी के पास था। फोन रिसीव करके उधर से किसी ने कहा कि वो कमल चावला बोल रहा है। तब उसने बताया कि जान बचाकर, वो कार को एक जगह पार्क करके उसके भीतर बैठा हुआ है। बहरहाल उसने रात को किसी वक्त होटल अलजीरा पहुंचकर, मिलने को कहा।"

"ये तो स्पष्ट हो गया कि वो असली कमल चावला नहीं था।" जगमोहन ने कहा।

"हां। वो कामनी का आदमी था। कामनी के इशारे पर ही सब कुछ कर रहा था। मुझे पूरा विश्वास है कि तब तक उन्होंने असली कमल चावला से ये जान लिया होगा कि हम, कमल चावला को नहीं पहचानते।"

"लेकिन मार्शल तो हमें कमल चावला की तस्वीर दिखा सकता था।"

"न उसने दिखाई न हमने कहा। उसने हमें दुबई के एजेंटों के फ़ोन नम्बर ही दिए थे।" देवराज चौहान बोला—"अगर मार्शल ने हमें दुबई के एजेंटों की तस्वीरें दिखा दी होती तो कामनी की चाल कामयाब नहीं होती। खैर, कमल चावला हमारे पास अलजीरा होटल में आया। बातें हुईं, उससे बात करके हमें जरा भी ये शक न हुआ कि वो कमल चावला नहीं है। असली कमल चावला से वो पर्याप्त जानकारी हासिल करके आया था। वो हमें अलजीरा से उस फ्लैट पर ले गया। वहां पर बातों के दौरान उसने हमें झांसे में लिया कि इकबाल खान सूरी के ठिकाने के पीछे की तरफ रात को पहरे में लापरवाही बरती जाती है। यानी कि ये सब कामनी के इशारे पर कहा जा रहा था। वो चाहती थी हम उसके उस ठिकाने पर आएं।"

"क्यों?"

"कुछ समझ में नहीं आता। हम वहां गए तो हमें रास्ता साफ मिला। किसी से भी भिड़ंत नहीं हुई। हम आसानी से ठिकाने के भीतर तक पहुंच गए। ये बात मुझे वहां भी खटकी थी कि हमें रास्ता साफ क्यों मिल रहा है। इकबाल खान सूरी के ठिकाने पर तो बेहद मजबूत पहरा होना चाहिए, परंतु वहां ऐसा कुछ नहीं था। फिर कामनी दो गनमैनों के साथ नजर आई और हमें घेर लिया। हमारे हथियार ले लिए। वो आसानी से हमें मार सकती थी, परंतु ऐसा नहीं किया। उसने मेरे साथ मौत की लड़ाई लड़ी। दो बार मैं उसके काबू में आ गया, परंतु उसने कोई घातक वार नहीं किया फिर उसने मुझे बताया कि इकबाल खान सूरी वहां नहीं है। वो पाकिस्तान के इस्लामाबाद में है।"

"कामनी ने बताया?" जगमोहन की आंखें सिकुड़ीं।

"हां। कामनी ने बताया। परंतु उसके बताने का अंदाज निराला था। कहा कि मां का दूध पिया है तो इस्लामाबाद पहुंच कर इकबाल खान को छूकर दिखाऊं। मार कर दिखाऊं। ऐसी उकसाने वाली उसने कई बातें कहीं। साथ में धमकी भी देती रही कि वो मुझे बहुत बुरी मौत मारेगी, अगर मैं इस्लामाबाद पहुंचा। उसने ये भी बताया कि कल वो इस्लामाबाद जा रही है।"

"आखिर कामनी चाहती क्या है?"

"ये मैं स्पष्ट तौर पर नहीं समझ पाया। अगर उसे ये सब ही कहना था तो फोन पर भी कह सकती थी। दूसरी बात ये है कि उसने मुझे क्यों बताया कि इकबाल खान सूरी पाकिस्तान के इस्लामाबाद में है। मुझे क्यों बताया कि कल वो भी इस्लामाबाद जा रही है। उसे तो चाहिए था कि मुझे इस बात

comicsmylife.blogspot.in

की हवा भी नहीं लगने देती कि कहां पर है इकबाल खान। उसने मुझे आगे बढ़ने का रास्ता भी बताया और उकसाने वाली बातें भी की कि मैं इस्लामाबाद जरूर पहुंचूं।"

"तो क्या कामनी चाहती है तुम इकबाल खान सूरी को मार दो।" जगमोहन कह उठा।

"मैं नहीं समझ पाया कि वो क्या चाहती है। उसने मुझे वापस मुम्बई जाने को भी कहा।" देवराज चौहान काली चाय का घूंट लेता कह उठा—"लेकिन ये सब उसी की चाल थी कि हम इकबाल खान सूरी के उस ठिकाने पर पहुंचें। जबकि ऐसी बात वो फोन पर कह सकती थी। जो फोन मेरे पास है वो अलजीरा होटल में उसी ने ही पहुंचाया था।"

"लेकिन ये सब करके कामनी को क्या मिला?"

"मुझे नहीं पता। सोचने पर ये ही लगता है कि वो चाहती है मैं इस्लामाबाद पहुंचूं। परंतु जिस अंदाज में उसने कहा उससे मैं उसके मन की बात नहीं जान पाया और कमल चावला को भी मेरे हवाले कर दिया।"

"क्या इससे कामनी ने नहीं सोचा कि कमल चावला के हाथ लगते ही हम उसकी चाल भांप जाएंगे।" जगमोहन बोला।

"ये सब बहुत उलझन वाली बातें हैं कि आखिर कामनी के मन में क्या है।"

"एक बात तो पक्की है कि वो तुम्हारे साथ नर्मी से पेश आ रही है, परंतु इसका एहसास नहीं होने दे रही। जब हम दुबई पहुंचे, मैं उसके आदमियों के हाथों में पड़ गया। वो तुमसे कैफे में मिली। जब उसने देखा कि ये तुम हो तो मुझे तुम्हारे हवाले कर दिया था। उसके बाद हम अलजीरा पहुंचे। उसकी नजर में रहे। उसने मार्शल के सब एजेंटों पर जानलेवा हमला करा दिया और कई मारे गए, परंतु हम पर उसने कोई हमला नहीं कराया। उसने हमें ऐसी बातों से बचाकर रखा।

देवराज चौहान ने जगमोहन की आंखों में झांका।

"मेरे खयाल में।" जगमोहन पुनः बोला—"ये तुम्हारी और उसकी सूरत में हुई मुलाकात का असर है कि अपनी ताकत वो हम पर नहीं दिखा रही। परंतु ऐसी बात उसने दर्शाई कभी नहीं। यूं वो सख्ती से ही पेश आती रही।"

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।

"तुम्हें कामनी के बारे में और सोचना चाहिए कि उसके इरादे तुम्हारे सामने स्पष्ट हो सकें।"

"मैं हर पल उसी के बारे में, उसकी बातों के बारे में ही सोच रहा हूं।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"मेरे खयाल में वो चाहती है कि इकबाल खान सूरी के लिए मैं इस्लामाबाद पहुंचूं।"

"खयाल में?"

"हां।" देवराज चौहान ने सिर हिलाया—"क्योंकि मैं अभी तक पूरी तरह कामनी को समझ नहीं पाया।"

जगमोहन गम्भीर निगाहों से देवराज चौहान को देखते कह उठा।

"तो क्या तुम्हारा इरादा अब पाकिस्तान जाने का है?"

"जाना पड़ेगा। इकबाल खान सूरी के ठिकाने पाकिस्तान में भी हैं। मार्शल ने तो पहले ही हमारे पाकिस्तान जाने की बात कह दी थी। क्योंकि उसे एहसास था कि ज्यादा खतरा देखकर वो पाकिस्तान भी जा सकता है। अब कामनी ने उसके इस्लामाबाद में होने की बात कही है। हमें पाकिस्तान जाना ही होगा।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

▭ ▭

दिन के बारह बजे देवराज चौहान की आंख खुली।

कमल चावला करीब ही बेड पर टेक लगाए बैठा था। उसकी हालत रात से बेहतर थी परंतु ज्यादा बेहतर नहीं थी। चेहरे पर फीकापन छाया हुआ था। शेव बढ़ी हुई थी। यातना दिए जाने के निशान जिस्म पर से कई जगहों से झलक रहे थे। वो देवराज चौहान को देखकर फीके अंदाज में मुस्कराया फिर कह उठा।

"मुझे बचा लाने का एक बार फिर शुक्रिया।" थका-सा था स्वर उसका।

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई और कश लेकर बोला।

"अब कैसा महसूस कर रहे हो?"

"बुरा। मेरी हालत ठीक नहीं है। मुझे डॉक्टर की जरूरत है। परंतु यहां मुझे इकबाल खान सूरी का खतरा है। मेरे अधिकतर एजेंट मारे जा चुके हैं। फिलहाल तो हिन्दुस्तान चले जाना ही बेहतर...।"

"इकबाल खान सूरी के डर से दुबई छोड़ रहे हो तो उससे मत डरो। इस वक्त वो इस्लामाबाद में है और कामनी भी आज दुबई से इस्लामाबाद जा रही है। यहीं रहकर अपना इलाज करवाओ।"

"तुम्हें कैसे पता कि कामनी आज इस्लामाबाद जा रही है।"

"ज्यादा सवाल मत पूछो। तुम्हें खबर चाहिए थी, वो मैंने दे दी। तुम्हें कोई खतरा नहीं आएगा।"

"पक्का?"

"पक्का। अब क्या करोगे?"

"अपने एजेंटों से सम्पर्क बनाऊंगा। पता लगाना पड़ेगा कि कौन-कौन जिंदा बचे हैं। जो भी हुआ, बुरा हुआ। मैं अपने इतने एजेंटों के एक साथ मारे जाने के बारे में सोच भी नहीं सकता था। उनका मुझे बहुत दुख है।"

"इस काम में ये तो होता ही है कि कभी हम नहीं तो कभी सामने वाला

comicsmylife.blogspot.in

नहीं।" देवराज चौहान गम्भीर स्वर में बोला—"मेरे खयाल में तुम्हें आगे की सोचना चाहिए। तुम बच गए, ये ही बड़ी बात रही।"

कमल चावला गहरी सांस लेकर रह गया।

तभी जगमोहन ने कमरे में प्रवेश किया। वो नहाकर आया था।

"उठ गए। मैं कॉफी बनाता हूं। अभी बाजार जाकर कॉफी का सामान ले आया था।" कहने के साथ ही जगमोहन बाहर निकल गया।

"तुम मेरा कोई काम कर सकते हो या तुम्हारा सारा नैटवर्क खत्म हो गया।" देवराज चौहान ने कमल चावला से कहा।

"कैसा काम?"

"मुझे और जगमोहन को पाकिस्तान के इस्लामाबाद जाना है। कैसे जा सकेंगे दुबई से हम?"

"ये इंतजाम मैं कर दूंगा। मुझे पासपोर्ट दो। शाम तक पाकिस्तान का वीजा लग जाएगा और जब भी कहोगे टिकट भी हो जाएगी। मेरे एजेंट नहीं रहे। लेकिन मेरा नैटवर्क अभी भी कायम है। तुम क्या इकबाल खान सूरी के लिए इस्लामाबाद...।"

"हां। उसके पीछे जा रहा हूं। वो महीने भर से इस्लामाबाद में ही है, जब से तुम्हारे वो दो आदमी उनके हाथों में पकड़े गए थे। तभी ही वो खतरा भांपकर इस्लामाबाद चला गया था और कामनी यहीं रही।"

"जबकि हम कामनी को यहां देखकर सोचते रहे कि इकबाल खान सूरी भी दुबई में है। वो दोनों एजेंट कामनी के दबाव में हमें गलत खबरें देते रहे और हम तगड़े भ्रम में रहे। यहीं से हमारा बुरा वक्त शुरू हो गया था।"

देवराज चौहान चुप रहा।

"तुम इकबाल खान सूरी का क्या करोगे देवराज चौहान?"

"पता नहीं। मैं नहीं जानता इस्लामाबाद के क्या हालात हैं। वहीं जाकर ही...।"

"तुमने तो इकबाल खान का पता लगाकर, हमारे एजेंटों को खबर देनी है। आसान काम है। पाकिस्तान में हमारे एजेंटों का जाल फैला है। लेकिन मैं नहीं जानता कि वहां के काम किस एजेंट के हाथ में हैं।"

देवराज चौहान चुप रहा। सोचें थीं चेहरे पर।

तभी जगमोहन कॉफी का प्याला लेके भीतर आया और देवराज चौहान को थमाते कहा।

"कामनी के बारे में और कुछ सोचा?"

"इतना ही कि वो चाहती है मैं इस्लामाबाद पहुंचूं। परंतु ये बात उसने ढके-छिपे शब्दों में कही। उसके मन में कुछ है परंतु मैं नहीं जानता कि क्या है। इस बात के पीछे जरूर उसका कोई गेम है।"

"पाकिस्तान जाना है अब?"

"हां।"

"कैसे जाएंगे?"

"कमल चावला शाम तक हमारे पासपोर्ट पर वीजा लगवा देगा शाम तक...।"

"तुम कर लोगे ये काम?" जगमोहन ने उसे देखा।

कमल चावला ने सहमति से सिर हिला दिया। बोला।

"इसके लिए मुझे यहां से बाहर जाना होगा। मैं किसी को यहां बुलाकर ये जगह नहीं दिखाना चाहता। तुममें से किसी एक को मेरे साथ चलना होगा। मेरी हालत देख ही रहे हो कि...।"

"मैं तुम्हारे साथ चलूंगा।" जगमोहन बोला।

"मैं हाथ-मुंह धो लूं। फिर निकलते हैं।"

उसके बाद कमल चावला बेड से उठकर धीमे-धीमे अपने कामों में व्यस्त हो गया।

देवराज चौहान ने कॉफी समाप्त की और मोबाइल निकालकर नम्बर मिलाने लगा।

"किसे?" जगमोहन बोला।

"मार्शल को।" देवराज चौहान ने मोबाइल कान से लगा लिया।

जगमोहन के चेहरे पर गम्भीरता आ गई।

"हमें इकबाल खान का सिर्फ पता लगाना है या उसे खत्म भी करना है?" जगमोहन ने पूछा।

"अभी मैं आने वाले हालातों को नहीं जानता कि पाकिस्तान में क्या...।"

"हैलो।" तभी देवराज चौहान के कानों में मार्शल का स्वर पड़ा।

"मार्शल।" देवराज चौहान बोला।

"दुबई में क्या हो रहा है। सुनने में आ रहा है कि मेरे सारे एजेंट मारे गए।" मार्शल का स्वर परेशानी-भरा था।

"तुम्हारे सत्रह एजेंटों के मारे जाने की खबर मेरे पास है। बाकी कितने बचे ये तुम जानो।"

"बहुत बुरा हुआ। मेरे इतने लोग एक साथ मारे गए, ओह, ये हुआ कैसे? इकबाल खान सूरी को मेरे एजेंटों के बारे में कैसे पता चल सकता है। वो सब तो बहुत खामोशी के साथ काम कर रहे थे।"

"महीना भर पहले तुम्हारे दो एजेंट जो इकबाल खान के आदमियों में शामिल थे और उसके करीब जा पहुंचे थे। वे इकबाल खान को खत्म करने जा रहे थे, याद है उनके बारे में?"

comicsmylife.blogspot.in

"हां। पर अचानक ही मामला गड़बड़ हो गया। इकबाल खान गायब हो...।"

"वो कहीं गायब नहीं हुआ। इस्लामाबाद चला गया। परंतु उसके बाद तुम लोगों को अपने उन्हीं दो एजेंटों के माध्यम से जो खबरें मिलती रहीं वो गलत थीं। वो पकड़े जा चुके थे। वहां उनका भेद खुल गया था। और वे तुम लोगों को वो ही खबरें देते जो उन्हें कहा जा रहा था। साथ ही तुम लोगों से खबरें लेते रहे। उन दोनों के मुंह खोलने पर ही इकबाल खान ने जाना कि तुम्हारा कौन-सा एजेंट कहां-कहां पर है और उसके आदमी तुम्हारे एजेंटों पर नजर रखने लगे। फिर जब उन्होंने ठीक समझा, उन पर हमला करके उन्हें मार दिया गया। ये सब कुछ उन्हीं दो एजेंटों के मुंह खोलने की वजह से हुआ। तभी इकबाल खान सूरी को तुम्हारे बारे में पता चला कि भारत सरकार ने तुम्हें उसके पीछे डाल दिया है। ऐसे में वो इस्लामाबाद चला गया।"

"बुरा हुआ। मेरा एक-एक एजेंट बहुत कीमती...।"

"मुम्बई में एक बार फिर आतंकवादी हमला होने वाला है। उसी की तैयारी के सिलसिले में कामनी मुम्बई और सूरत आई थी। ये हमला दो महीने तक हो सकता है। अभी इकबाल खान पाकिस्तान सरकार के साथ मिलकर तैयारी में लगा है।"

"तुम मुझे सब कुछ बताओगे जो दुबई में हुआ, तुम्हारे साथ हुआ।" मार्शल की आवाज कानों में पड़ी।

देवराज चौहान ने सब कुछ बताया।

हर वो बात बताई, जो वो जानता था।

देवराज चौहान के खामोश होने के कुछ पलों तक मार्शल की आवाज नहीं आई।

"देवराज चौहान।" फिर मार्शल की गम्भीर आवाज कानों में पड़ी—"मेरे खयालों में कामनी तुम्हें इस्लामाबाद बुलाना चाहती है।"

"लेकिन साथ में बुरी तरह धमकी भी दे रही है।" देवराज चौहान ने कहा।

"ठीक कहा। पर ये मत भूलो कि उसे बेहतरीन मौका मिला तुम्हें और जगमोहन को खत्म करने का। परंतु उसने तुम दोनों को छोड़ दिया। उसने तुम दोनों पर कोई हमला भी नहीं कराया, जबकि उसका आदमी नकली कमल चावला बनकर तुम्हारे साथ था। हर बार उसने तुम्हें छोड़ा है। इस बात का मतलब जानते हो?"

"क्या?"

"ये तुम्हारी और उसकी सूरत की पहचान का असर है।" उधर से मार्शल ने कहा।

"मुझे ऐसा नहीं लगता।" देवराज चौहान गम्भीर था—"मुझे नहीं लगता

कि उस पर सूरत की मुलाकात का असर हुआ है। मेरा खयाल है कि उसके मन में कुछ है। वो अपनी ही चालें खेल रही है।"

"ये भी हो सकता है।" उधर से मार्शल के गहरी सांस लेने की आवाज आई।

तभी जगमोहन पास आकर बोला।

"मैं उसके साथ बाहर जा रहा हूं। अपना पासपोर्ट दो।"

"होल्ड करो मार्शल।" देवराज चौहान ने कहा और पैंट की जेब से पासपोर्ट निकालकर जगमोहन को दिया—"यहां से निकलने के बाद सतर्क रहना। वैसे मुझे आशा नहीं कि कामनी तुम पर हमला करवाए।"

"तुम अपना ध्यान रखना।"

"मेरे पास तो रिवॉल्वर भी नहीं है, जरूरत पड़ी तो मैं...।"

कमल चावला पास आता बोला।

"एक रिवॉल्वर यहां है। मैं तुम्हें वो देता हूं।" कहकर वो किचन की तरफ चला गया।

वापस आया तो हाथ में रिवॉल्वर थी।

"ये लोडेड है। रखो।"

देवराज चौहान ने रिवॉल्वर जेब में रख ली।

जगमोहन और कमल चावला के जाने के बाद देवराज चौहान ने दरवाजा बंद किया और फोन पर बात की।

"कहो मार्शल?"

"मैं सोच रहा हूं कि हो सकता है कामनी तुम्हारी सहायता करे इस काम में।"

"वहम में मत रहो। मुझे ऐसा नहीं लगता। ऐसा कुछ होता तो अब तक वो अपनी बात मुझसे कह चुकी होती।"

"इस बात को ध्यान में रखना कि वो तुमसे कोई गेम खेल रही है।"

"मालूम है।"

"वक्त आने पर ही ये बात सामने आएगी कि वो क्या चाहती है।"

"प्रभाकर पाकिस्तान में कहां है?"

"कराची में।"

"उसे इस्लामाबाद पहुंचने को कहो। बता दो कि इकबाल खान सूरी इस्लामाबाद में है।"

"बेहतर होगा ये बात तुम ही उससे करो। उसका फोन नम्बर तुम्हारे पास है ही। आगे के वक्त में तुम दोनों ने साथ काम करना है। मेरे से कुछ सुनेगा तो सवाल जरूर करेगा। जिसका जवाब तुम्हारे पास होगा।"

"ठीक है। प्रभाकर से मैं बात करता हूं। इस्लामाबाद में तुम्हारे कितने एजेंट हैं?"

comicsmylife.blogspot.in

"तीस से ऊपर।"
"पूरे भरोसे के हैं?"
"पूरी तरह। अगर कोई गद्दारी पर उतर जाए तो मैं गारंटी नहीं लेता।"
"वो आपस में एक-दूसरे को जानते हैं?"
"अधिकतर नहीं। एक-दो आपस में मेल रखते हों तो जुदा बात है। कोई काम होता है तो बशीर उन्हें इकट्ठा कर लेता है।"
"बशीर कौन?"
"ये उन सब एजेंटों पर कंट्रोल रखता है। उनका बड़ा है बशीर।"
"प्रभाकर को बशीर के बारे में पता है?"
"प्रभाकर पाकिस्तान के हर लिंक से वाकिफ है।" मार्शल की गम्भीर आवाज कानों में पड़ी।
"ठीक है। अब फोन बंद करो। मुझे प्रभाकर से बात करनी है।"
"कामनी इस्लामाबाद में कहां होगी, इस बारे में कामनी ने कोई इशारा दिया?"
"नहीं। ऐसा कुछ नहीं हुआ।"
"ऐसा कुछ हुआ होता तो तुम्हारे हक में बढ़िया रहता। सम्भव है कामनी फिर तुमसे बात करे।"
"कह नहीं सकता।" देवराज चौहान ने बात खत्म करने वाले अंदाज में कहा।
बातचीत खत्म हो गई।
देवराज चौहान ने प्रभाकर का पाकिस्तान का नम्बर मिलाया।
एक ही बार में बेल गई और बात हो गई।
"हैलो।" प्रभाकर की आवाज कानों में पड़ी।
"कैसे हो प्रभाकर?" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।
"ओह, देवराज चौहान, तुम...।"
"पाकिस्तान में कहां पर हो?"
"कराची में और तुम?"
"दुबई।"
"जगमोहन साथ है?"
"हां।"
"वहां पर क्या हो रहा है?"
देवराज चौहान ने मोटे तौर पर दुबई के हालात बता कर कहा।
"इकबाल खान सूरी इस वक्त इस्लामाबाद में है।"
"पक्का?"
"मेरे खयाल में तो पक्का ही है।"

"पर मुझे खबर मिली है कि वो कराची में है।"
"किसने दी खबर?"
"दो दिन पहले ही एक स्थानीय एजेंट में खबर दी। जबकि तुम उसके इस्लामाबाद होने की बात कर रहे हो।"
"तुम अपनी खबर को पक्का करो। मैं कल तक जगमोहन के साथ इस्लामाबाद पहुंच जाऊंगा। इस्लामाबाद का कोई कांटेक्ट नम्बर मुझे बताओ कि जरूरत पड़ने पर उससे सम्पर्क कर सकूं।"
"मैं तुम्हें बशीर का नम्बर देता हूं। मार्शल के इस्लामाबाद के मामले वो ही देखता है।"
प्रभाकर ने एक मोबाइल नम्बर देवराज चौहान को बताया।
"अब तुम क्या करोगे?" देवराज चौहान ने पूछा।
"मैं यहां ये बात अच्छी तरह पता लगाने की कोशिश करूंगा कि इकबाल खान सूरी कराची में है भी या नहीं? तुम जब बशीर को फोन करो तो कोडवर्ड 'दुबई का आका' बताना।"
"दुबई का आका?"
"हां। इससे वो फौरन समझ जाएगा कि तुम मार्शल के आदमी हो और इकबाल खान सूरी के मामले में काम कर रहे हो। इस मिशन का कोडवर्ड 'दुबई का आका' ही रखा है मार्शल ने।"
"समझ गया।"
"इकबाल खान सूरी का पता चलते ही फौरन मुझे खबर करना। पक्के तौर पर वो किस ठिकाने पर है। उसके बाद तुम्हारा काम खत्म हो जाएगा। ये मिशन मेरे हवाले है। उसे खत्म किए बिना पाकिस्तान से वापस नहीं जाने वाला। पिचासी पुलिस वालों का हत्यारा है वो और अब पाकिस्तान के साथ मिलकर, हमारे देश के खिलाफ काम कर रहा है।"
"दो महीने तक वो मुम्बई में फिर हमला कराने वाला है।"
"कैसे पता?"
देवराज चौहान ने सारी बात बताई।
"कामनी को बहुत खतरनाक माना जाता है। पाकिस्तान में वो नजरीन शेख के नाम से जानी जाती है। मुझे हैरानी है कि कामनी जैसी औरत सूरत में तुम्हारे साथ आराम से कैसे रह ली?"
"इसकी दो वजहें थीं। उसे तब तक वक्त बिताना था, जब उसकी वापसी की फ्लाइट थी और वो ये जान चुकी थी कि मुझ में इतना दम है कि उसके पीछे लगे, हत्यारों को, उससे दूर रख सकूं। तब वो मेरे सामने मासूम गुड़िया बनकर रही। वो नहीं चाहती थी कि मैं उसके बारे में जान लूं कि वो खतरनाक औरत है।"

comicsmylife.blogspot.in

"तुम जान भी जाते तो क्या फर्क पड़ता इससे?"

"बहुत फर्क पड़ता। जब मैं ये जान लेता कि वो अपनी रक्षा करने में सक्षम है तो उसे छोड़कर चला आता। जबकि उस वक्त वो मेरे साथ रहकर अपने को सुरक्षित समझ रही थी और प्लेन पकड़ने का इंतजार कर रही थी। वो जिस काम के लिए इंडिया आई थी, वो काम कर चुकी थी। जब वो मेरे साथ थी, तब एक पल के लिए भी मुझे उसके खतरनाक होने का एहसास नहीं हुआ। वो जबर्दस्त नाटकबाज रही। खुद को टी.वी. विज्ञापनों की मॉडल बता रही...।"

"विज्ञापन उसने किए हैं। इकबाल खान सूरी ने उसे विज्ञापनों में देखकर ही उसे दुबई बुला लिया था और फिर कामनी अपराध की दुनिया की गहराइयों में प्रवेश करती चली गई। आज वो इकबाल खान सूरी की प्रेमिका के साथ उसकी सुरक्षा कामों की चीफ भी है। इकबाल खान उसका लोहा मानता है।"

"वो सर्च में जबर्दस्त है और लड़ने की कला में बहुत माहिर है। उसका निशाना भी बहुत अच्छा है।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैं इन मामलों में उसे करीब से देख चुका हूं।"

"कामनी इस मामले में तुम्हारा साथ देने को तैयार नहीं?" उधर से प्रभाकर ने पूछा।

"अभी तक तो ऐसा कुछ नहीं है। तुम इकबाल खान के बारे में पता करो कि वो कराची में है या नहीं। अगर यकीन हो जाए कि वो वहां नहीं है तो इस्लामाबाद चले आना। अगर वहीं हो तो मुझे खबर कर देना।"

बातचीत खत्म हुई।

देवराज चौहान इस्लामाबाद स्थित बशीर का नम्बर मिलाया। दो-तीन बार मिलाने पर नम्बर मिला। बेल गई फिर मर्दाना आवाज कानों में पड़ी।

"हैलो।"

"दुबई का आका।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

पलों की खामोशी के बाद वो ही आवाज आई।

"नाम?"

"तुम मुझे ऐसा कुछ कहो कि मुझे विश्वास आ जाए कि मैं सही आदमी से बात कर रहा हूं।" देवराज चौहान बोला।

"मार्शल।" उधर से कहा गया।

"ठीक है। मेरा नाम देवराज चौहान है।"

"मैं बशीर हूं।" उधर से कहा गया।

"मेरी जानकारी के मुताबिक इकबाल खान सूरी इस्लामाबाद में है।" देवराज चौहान बोला।

"मेरे पास तो ऐसी कोई खबर नहीं।"

"वो महीने-भर से इस्लामाबाद में है।" देवराज चौहान ने कहा।

"ओह।"

"तुम्हें कोई खबर नहीं है।"

"नहीं।"

"आगे ये खबर है कि सम्भव है आज दुबई से कामनी, इस्लामाबाद पहुंचे।"

"कामनी? तुम्हारा मतलब कि नसरीन शेख।"

"वो ही। वो आज नहीं तो कल पहुंच जाएगी। परंतु मेरे पास खबर है कि वो आज ही पहुंचेगी। तुम अपने आदमी एयरपोर्ट पर लगा दो, जो कामनी उर्फ नसरीन शेख को पहचानते हों। मैं चाहता हूं एयरपोर्ट से ही वो नजरों में आ जाए और उसका पीछा किया जाए कि वो कहां जाती है। मेरे खयाल में वो इकबाल खान सूरी के पास ही जाएगी।"

"मैं अभी अपने कुछ आदमी एयरपोर्ट भेज देता हूं।"

"जो कामनी को जानते हों।"

"मेरे पास नसरीन शेख की तस्वीरें हैं। मैं उन्हें तस्वीरें दिखा दूंगा"

"ये तो और भी अच्छा है।"

"पाकिस्तान में वो कामनी नहीं नसरीन शेख के नाम से जानी जाती है।"

"मैं इस बात का ध्यान रखूंगा।" देवराज चौहान ने कहा—"कुछ आदमी इकबाल खान सूरी का पता लगाने के लिए लगा दो। क्या तुम इस्लामाबाद में इकबाल खान सूरी के ठिकानों के बारे में जानते हो?"

"तीन ठिकानों के बारे में जानता हूं। वो उन्हीं में से किसी ठिकाने पर आकर रहता है।"

"अपने आदमियों से कहना कि इस प्रकार पता लगाएं कि किसी को कानों कान खबर न हो कि हम क्या कर रहे हैं। इकबाल खान सूरी तक ये बात न पहुंचे कि कोई उसके बारे में पूछता फिर रहा है।" देवराज चौहान ने सोच-भरे स्वर में कहा।

"समझ गया।"

"इस्लामाबाद में उसके कुछ खास आदमी भी होंगे।"

"नासिर और काले खान उसके ठिकानों की देखभाल करते हैं और जब भी इकबाल इस्लामाबाद में होता है तो उसके साथ रहते हैं। दोनों ही खतरनाक हैं। तीसरा मसूद है, जो कि हर वक्त इकबाल के साथ रहता है, बेशक वो किसी भी देश में जाए।"

"मसूद क्या चीज है?"

"ये इकबाल खान का पूरी तरह वफादार है। उसकी देखभाल करता है और उसे हर मुसीबत से बचाता है। अपने इस काम के अलावा मसूद को

comicsmylife.blogspot.in

किसी बात से मतलब नहीं है कि इकबाल खान क्या करता है। क्रूर इंसान है मसूद। कभी ये इकबाल खान के गनमैनों में से एक हुआ करता था, परंतु नसरीन शेख ने उसकी क्रूरता भरी काबलियत को पहचाना और उसे इकबाल खान के साथ लगा दिया। दो सालों से मसूद, हमेशा इकबाल खान के साथ रहता है, बेशक वो महत्त्वपूर्ण मीटिंग में ही क्यों न हो। मैंने पहले भी कहा है कि मसूद सिर्फ अपने काम से मतलब रखता है। इकबाल खान क्या करता है, उसे मतलब नहीं।"

"मसूद का परिवार?"

"इससे ज्यादा मसूद के बारे में कोई जानकारी नहीं। मुझे कभी ऐसी खबर नहीं मिली कि इकबाल खान सूरी को छोड़कर मसूद कभी दो-चार दिन की छुट्टी पर गया हो। वो हमेशा इकबाल खान के पास रहता है, यहां तक कि कभी बीमार भी नहीं हुआ।"

"मसूद ने कभी इकबाल खान को बचाया?"

"दो बार। एक बार इकबाल का एक आदमी गुस्से में आकर उसे मारने लगा था कि मसूद ने उसे शूट कर दिया। उस आदमी को इकबाल खान से शिकायत थी कि उसकी ड्यूटी रात की ही क्यों लगाई जाती है। दूसरी बार लाहौर में एक आतंकी संगठन के लोगों के साथ मीटिंग हो रही थी, इकबाल खान सूरी उनकी कोई बात नहीं मान रहा था। इस बात पर गुस्से में आकर एक आदमी उठा और इकबाल खान पर गोली चला दी। पास खड़ा मसूद सतर्क था, उसने इकबाल खान को कुर्सी सहित धक्का देकर नीचे गिरा दिया कि उसे गोली न लगे और गोली चलाने वाले को उसी पल शूट कर दिया। तब मसूद ने ये भी परवाह नहीं की कि ये उन लोगों का ही ठिकाना है। यहां उनके बहुत-से लोग मौजूद हैं। वे उन्हें मार सकते हैं। परंतु सब ठीक रहा। उन लोगों ने अपनी गलती मानी कि, उनके आदमी को ऐसा नहीं करना चाहिए था।"

देवराज चौहान के चेहरे पर गम्भीरता नजर आ रही थी।

"नासिर और कालेखान पर नजर रखो। इन दोनों का परिवार है?

"कालेखान का है। दो बीवियां हैं। सात-आठ बच्चे हैं और सब एक साथ एक बंगले में रहते हैं।"

"सुरक्षा के कोई इंतजाम हैं इस परिवार पर?"

"चार गनमैन बंगले पर पहरा देते हैं। दो गेट पर। एक बरामदे में बैठा रहता है। चौथा घूमता रहता है वहां।"

"तुमने पहले से ही जान रखा है ये सब?"

"जानकारी तो रखनी पड़ती है कि, जाने कब किस बात की जरूरत पड़ जाए।" उधर से बशीर ने कहा।

"नासिर कैसे रहता है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"वो इकबाल खान के ही एक ठिकाने पर रहता है।" बशीर की आवाज कानों में पड़ रही थी।

"जैसे कि अब नसरीन शेख इस्लामाबाद आ रही है तो तुम्हारे खयाल से वो कहां रहेगी?"

"इकबाल खान सूरी के साथ ही रहती है वो। इससे इकबाल खान की सुरक्षा भी हो जाती है और प्यार भी हो जाता है। इकबाल खान नसरीन शेख को बहुत पसंद करता है।"

"अगर नसरीन शेख पर हाथ डाल दिया जाए तो इकबाल खान क्या करेगा?"

"तुम शेर को चूहेदान में बंद करने की सोच रहे हो देवराज चौहान।" बशीर की आवाज में तीखापन आ गया।

"वो कैसे?"

"शायद तुम्हें अंदाजा नहीं कि नसरीन शेख कितनी खतरनाक है। वो इकबाल खान सूरी जैसे इंसान को सुरक्षा देती है तो सोचो वो कैसी होगी। उसे तो छू पाना भी आसान नहीं। मैंने सुना है वो गजब की निशानेबाज है और लड़ाई में माहिर है।"

"तुमने सही सुना है। उसका निशाना और लड़ाई मैं देख चुका हूं।"

"कब?"

इंडिया में उसने किसी पर निशाना लगाया था तब मैं उसके साथ और लड़ाई कल ही मेरी उसके साथ हुई है।"

बशीर की तरफ से फौरन कुछ नहीं कहा गया।

"चुप क्यों हो गए?"

"तुम—तुम नसरीन शेख से वास्ता रखते हो? क्या उसकी करीबी हासिल है तुम्हें?"

"नहीं।"

"अभी तुमने कहा कि इंडिया में उसने किसी पर निशाना लगाया और तुम उसके साथ थे।"

"हां। ये बात मार्शल को पता है। जब ऐसा हुआ तो वो मुझे नहीं जानती थी और मैं उसे नहीं जानता था।"

"और कल तुम्हारी लड़ाई कहां हुई?"

"दुबई में।"

"क्या तुम दुबई में हो इस वक्त?"

"हां। मार्शल ने मुझे इकबाल खान सूरी के लिए भेजा है। मैं कल उसके ठिकाने पर घुस गया और कामनी से झगड़ा हुआ।"

comicsmylife.blogspot.in

"ये तुम कैसी बातें कर रहे हो। ऐसा हुआ तो उसने तुम्हें जिंदा आने दिया। वो कितनी खतरनाक...।"

"बशीर।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"ये पता करने की कोशिश करो कि इकबाल खान सूरी इस्लामाबाद में कहां पर टिका है। नासिर और काले खान को भी नजरों में लो। अपने कुछ आदमी एयरपोर्ट पर भेज दो, जो कामनी को पहचानते हों। मेरे खयाल में वो आज आ सकती है इस्लामाबाद। ऐसा हुआ तो देखना है कि वो कहां जाती है। वो जहां जाएगी, वहां इकबाल खान सूरी जरूर मौजूद होगा। मैं तुमसे कल या परसों मिलूंगा।"

"तुम भी इस्लामाबाद आ रहे हो?"

"हां।" देवराज चौहान ने कहा और फोन बंद कर दिया

▭ ▭

मसूद।

29 वर्ष का, छः फुट को छूता, अच्छी सेहत वाला इंसान था। गोरा रंग। लाल गाल, थोड़ा-सा तीखा नाक। सिर के बाल छोटे, भूरी आंखें, आकर्षक व्यक्तित्व वाला इंसान था। उसकी भूरी आंखों में हमेशा मौत के सर्द भाव सिमटे रहते। पतले होंठ बंद ही नजर आते थे। वो बहुत कम बोलता था। सत्रह वर्ष का था तो पाकिस्तान के एक आतंकी संगठन में शामिल हो गया था। वहां उसने गोली चलाना, लड़ाई करना, हथियारों और हथगोलों को इस्तेमाल करना सीखा। इस तरह साधारण-सा मसूद खतरनाक मसूद बन गया था। जब से परिवार छोड़ा फिर पलटकर परिवार को नहीं देखा। मन में धुन थी कुछ कर जाने की और ढेर सारा पैसा कमाने की परंतु जल्दी ही उसे समझ आ गया कि ये आतंकी संगठन उसके तो क्या, किसी के भी सगे नहीं हैं। उसके देखते-ही-देखते उसके कई साथी पुलिस के साथ लड़ाई में मारे गए थे। उन्हें बम फोड़ने या भीड़ भरे बाजार में फायरिंग करने भेजा जाता और संगठन के बड़े, इस तरह दहशत फैलाकर, लोगों से पैसा वसूल करते। ये खेल उसकी समझ में आ गया था जो कि उसे पसंद नहीं था। पढ़ा-लिखा वो कम था परंतु दिमाग का तेज था। जुबान कम चलती थी लेकिन उसका दिमाग बोलता था। उसके हर सवाल का जवाब फौरन उसका दिमाग दे देता था।

फिर एक दिन वो उस कैम्प से भाग गया।

ऐसा भागा कि आजाद हो गया। उस संगठन ने उसे ढूंढ़ा जरूर होगा परंतु वो मजे से अपनी जिंदगी जीने लगा। लाहौर सिक्योरिटी एजेंसी के द्वारा एक बैंक के ए.टी.एम. पर गार्ड की नौकरी करने लगा।

चार साल उसने ए.टी.एम. पर गार्ड की नौकरी की। इस दौरान एक बार कुछ लड़कों ने ए.टी.एम. की मशीन को लूटना चाहा, परंतु उसने दो को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। ऐसे में कोई सोच भी नहीं सकता था कि वो खुद ही ए.टी.एम. लूट लेगा। करीब चार साल नौकरी करने के दौरान उसने ए.टी.एम. मशीन की बारीकियां नोट कर ली। जाने कितनी बार मशीन को ठीक करने वाले कर्मचारी आते। वो देखता रहता कि ए.टी.एम. कैसे खुलता है और एक रात ए.टी.एम. मशीन को खोलकर, नोटों को सूटकेस में भरकर, ड्यूटी वाली गन वहीं रखकर चलता बना और पूरे पाकिस्तान, अफगानिस्तान खूब घूमा। फिर तीन सालों बाद नोट कम होने लगे तो अफगानिस्तान में ही टिक गया। वहां ड्रग्स मिट्टी के भाव मिलती थी और वहां से जितनी दूर ड्रग्स जाती, उतनी ही महंगी होती चली जाती ये धंधा बढ़िया लगा उसे और सस्ते दामों पर ड्रग्स खरीदकर रूस के बॉर्डर पर जाकर बड़ी रकम में बेच आता। ये धंधा उसने पांच साल किया और इस दौरान उसके सम्बंध ऐसे लोगों से बन गए थे जो कि अपराध की दुनिया के कीड़े थे।

जान-पहचान बढ़ी तो दो लोगों के साथ मिलकर सोने का बिजनेस करने लगा। इसके लिए सोना लेने वो अक्सर दुबई जाता रहता। अब उसकी दुबई से बढ़िया पहचान हो गई। पैसा उसने खूब कमाया और उजाड़ा भी खूब। जिंदगी को उसने सफर बना लिया था। कहीं भी वो ज्याद देर नहीं रुकता था। सोने का बिजनेस छोड़कर वो दुबई में टिक गया। पास में पैसा था। मजे से जिंदगी बिताता नया काम खोज रहा था कि पहचान वाले एक व्यक्ति ने उसे इकबाल खान सूरी का गनमैन बनने की ऑफर दी। इकबाल खान सूरी का नाम उसने अच्छी तरह सुन रखा था और जानता था कि वो अपराध की दुनिया का बड़ा मगरमच्छ है। उसके करीब रहकर वो फायदा उठा सकता है। जिंदगी में आगे बढ़ सकता है। वो तुरंत इकबाल खान सूरी का गनमैन बनने को तैयार हो गया। इसे कामनी के पास ले जाया गया। कामनी ने उसका टैस्ट लिया उसे गनमैन के तौर पर रख लिया।

ये दो साल पहले की बात थी।

अब तक वो इकबाल खान सूरी के साथ टिका हुआ था और सब जानता था कि इकबाल खान सूरी अपने काम कैसे करता है। उसका मुंह हमेशा बंद रहता और दिमाग चलता रहता। बात सिर्फ यहीं तक होती तो ठीक था। परंतु असल मामला कुछ और ही चल रहा था दो सालों से, जबसे वो इकबाल खान सूरी का सबसे खास गनमैन कामनी की रजामंदी से बना था।

इस वक्त मसूद इस्लामाबाद के एयरपोर्ट पर मौजूद था। वो अकेला था और इकबाल खान सूरी ने उसे खासतौर से भेजा था कि वो ही कामनी को लेकर आए। इकबाल खान को मसूद पर पूरा भरोसा था। जबकि इकबाल खान ने उसे अपने साथ और लोग ले जाने को भी कहा था, परंतु मसूद ने

comicsmylife.blogspot.in

स्पष्ट कहा कि किसी और की जरूरत नहीं, वो अकेला ही काफी है। रास्ते में कोई समस्या आती है तो वो निबट लेगा।

इस तरह मसूद कामनी को लेने एयरपोर्ट पर अकेला ही आया था अनाउंसमेंट सुन चुका था कि दुबई से आने वाला प्लेन बीस मिनट पहले ही एयरपोर्ट पर लैंड कर चुका है। उसने थोड़ी देर और इंतजार किया फिर कामनी को आते देखा जो ट्रॉली में एक सूटकेस रखे, ट्रॉली धकेलती आ रही थी। गजब की खूबसूरत लग रही थी। सुनहरी जैसे बाल। लाल रंग का चमकदार टॉप और नीचे क्रीम कलर की जींस और हील वाली बैली।

मसूद ने कामनी को देखकर गहरी सांस ली।

कामनी मसूद को देख चुकी थी। वो मुस्कराई। मसूद ने मुस्कराकर हाथ हिलाया। वो पास आई तो मसूद ने ट्राली थाम ली।

"तुम कैसे आ गए मुझे लेने? " कामनी ने धीमे स्वर में कहा।

"इकबाल ने खासतौर से मुझे भेजा है कि तुम्हें हिफाजत से लाऊं।" मसूद बोला।

दोनों ट्रॉली सहित आगे बढ़े जा रहे थे। नजरें हर तरफ घूम रही थीं।

"साथ में कितने लोग हैं?"

"एक भी नहीं।"

कामनी ने मसूद को देखा।

"तुम्हारा मतलब कि इकबाल ने मुझे लाने, तुम्हें अकेला भेजा है। मैं नहीं मान सकती।"

"अपनी जानकारी में तो मैं अकेला ही हूं। अगर इकबाल ने कुछ को सुरक्षा के नाते हम पर नजर रखने को भेज दिया है तो इस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता।" आगे बढ़ते हुए मसूद का स्वर धीमा था—"इकबाल तुम्हारे आने से खुश है। उसने अपनी खास कार दी कि उस कार में तुम्हें लाऊं। अपनी कार में तो वो माइक्रोफोन नहीं लगाएगा।"

"तुम्हें नहीं आना चाहिए था। कोई बहाना लगा देते।" कहते हुए कामनी इधर-उधर देख रही थी।

"मैं क्यों न आता। तुम्हें देखे महीना बीत गया। मेरा भी तो मन था तुम्हें देखने का।"

"तुम मरवाओगे कभी।"

"मसूद के होते तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

"गलतफहमी में रहना छोड़ दो इकबाल को जितना मैं जानती हूं उतना कोई नहीं जानता। वो एक नम्बर का धूर्त और चालाक इंसान है। उसे समझ पाना तुम्हारे बस का नहीं कि उसके मन में क्या है।" कामनी के चेहरे पर सामान्य भाव थे।

"मैं सिर्फ तुम्हारे मन की बात समझता हूं। दो साल पहले तुम ही पहले मेरी तरफ आकर्षित हुई और...।"

"तुम मेरे पर नहीं मर मिटे थे।"

"मैं तुम्हारी बात कर रहा हूं।"

"और मैं तुम्हारी कर रही हूं।"

"खैर, छोड़ो इस बात को। इसमें दो राय नहीं कि तुम्हारी मेहरबानी से ही मैं इकबाल खान सूरी का सबसे खास आदमी बन पाया। लाखों रुपया मोटी तनख्वाह मिलती है। काम खास कुछ नहीं है। मजे से जिंदगी कट रही है, परंतु परेशानी ये रहती है कि तुम मेरे से हमेशा दूर रहती हो। जबकि तुमने कहा था कि इस बारे में कुछ करोगी।"

"जब मौका लगता है हम रात को मिल तो लेते हैं।"

"उस मिलने में मजा नहीं है।" ट्राली धकेलता मसूद धीमे स्वर में कह रहा था—"अंधेरे में, छिपकर पंद्रह-बीस मिनट के लिए डर भरी मुलाकात कि कोई हमें देख न ले।"

"मसूद।" सिर झुकाए आगे बढ़ती कामनी कह उठी—"मैं तुम्हें सच्चा प्यार करती हूं।"

"मैं भी तुम्हें सच्चा प्यार करता हूं तभी तो शिकायत कर रहा हूं। ऐसा कब तक चलेगा। इकबाल खान नाम का पहाड़ हमारे सामने मौजूद है। जबकि तूने कहा था कि इस समस्या का जल्दी ही कोई हल निकालूंगी। दो साल हो गए और...।"

"इकबाल खान को खत्म करना कोई मजाक का काम नहीं है।" कामनी का स्वर बेहद सामान्य था।

"तुम एक इशारा करो मैं आज ही...।"

"पागलों वाली बातें मत करो मसूद। अगर ऐसा मुमकिन होता तो कबका हो चुका होता।" चलते हुए कामनी दबे स्वर में कह रही थी—"ऐसा करते ही इकबाल खान के आदमी तुम्हें नहीं छोड़ेंगे। मैं तुम्हें खो दूंगी। इकबाल खान सूरी की पहाड़ जैसी दौलत मैंने पानी है, ऐसा तभी हो सकता है, जब वो ऐसी मौत मरे कि जिसमें हमारा कोई हाथ न हो। इस तरह सब कुछ मेरे द्वारा संभाला जाएगा और सब मेरा ही आदेश मानेंगे। इन हालातों में हमें दूसरों के सामने दूरी बनाए रखनी है कि हमारा वास्ता ही नहीं है जैसे।"

"कभी-कभी ये दूरी मुझे अच्छी नहीं लगती।"

"बचपना मत करो।" कामनी के चेहरे के भाव सामान्य थे—"और चुप रहो। हमें इतनी देर बातें नहीं करनी चाहिए। अगर इकबाल खान के भेजे लोग हम पर नजर रख रहे हैं तो, हमारा देर तक बात करना, संदिग्ध हो जाएगा।"

comicsmylife.blogspot.in

मसूद चुप हो गया।
"वैसे तुम्हारे खूबसूरत चेहरे और भूरी आंखों की मैं दीवानी हूं।"
"मैं भी अक्सर तुम्हारे बारे में सोचता हूं। तुम्हारा चेहरा मेरी आंखों के सामने घूमता है।"
"मैंने इकबाल का कुछ इंतजाम करने की कोशिश की है। अभी पता नहीं मैं कितनी कामयाब हुई हूं।" कामनी ने कहा।
तभी वे कार के पास आ पहुंचे। मसूद ने चाबी से कार की डिग्गी खोली और ट्रॉली से सूटकेस उठाकर डिग्गी में रखा फिर डिग्गी बंद करके बेहद अदब से कार का पिछला दरवाजा खोलकर खड़ा हो गया। कामनी भीतर जा बैठी। मसूद ने दरवाजा बंद किया और ड्राइविंग डोर खोलकर भीतर जा बैठा। दरवाजा बंद करके कार आगे बढ़ा दी।
"तुम किस इंतजाम के बारे में...।"
"खामोश रहो।" कामनी एकाएक सख्त स्वर में बोली—"कार में माइक्रोफोन लगे हो सकते हैं।"
"मैंने पहले ही बता दिया था कि कार में माइक्रोफोन नहीं हो सकता। क्योंकि इसे सिर्फ इकबाल ही इस्तेमाल करता है। वो अपनी कार में माइक्रोफोन क्यों लगाएगा।" मसूद ने विश्वास भरे स्वर में कहा—"इस कार में बैठकर वो कई लोगों के साथ बेहद महत्त्वपूर्ण बातें करता है और मैं कार चलाता रहता हूं।"
कामनी ने होंठ भींच लिए।
"मसूद को तुम बेवकूफ मत समझो कामनी। इस कार में माइक्रोफोन होता तो मुझे पता होता।"
कामनी खामोश रही।
"बोलो, तुमने इकबाल का क्या इंतजाम करने की कोशिश की है?" मसूद ने कहा।
"इसके लिए तुम्हें देवराज चौहान के बारे में जानना पड़ेगा।" कामनी कह उठी।
"वो कौन है?"
"हिन्दुस्तान का डकैती मास्टर। खतरनाक इंसान है। मैंने उसे अच्छी तरह चैक किया है। उसमें हौसला है इकबाल खान सूरी को खत्म करने का। मैंने उससे झगड़ा भी किया और उसने बखूबी मेरा मुकाबला किया।"
"तुम्हारा मुकाबला कोई कर सका, ये हैरानी की बात है।"
"वो मेरा मुकाबला नहीं कर सका। मैं चाहती तो उसे मार सकती थी। परंतु मैं तो उसे चैक कर रही थी कि वो कितना हौसला रखता है। चाल चलकर मैंने उसे इकबाल खान सूरी के दुबई वाले ठिकाने पर बुलाया। अगर वो भीतर

से डरपोक होता तो कभी भी वो वहां नहीं आता। परंतु वो आया। जबकि वो जानता था कि वहां उसे शूट भी किया जा सकता है। मेरी हर परीक्षा पर वो खरा उतरा। उसमें दम है कि वो इकबाल को खत्म कर सके।"
"पर वो क्यों खत्म करेगा? क्या तुमने उसे पैसे का लालच...।"
"ये बात नहीं है मसूद। मार्शल के बारे में तो तुम जान ही चुके हो जिसके दो आदमी हमारी नौकरी पाकर गनमैनों में शामिल हो गए और वे इकबाल को खत्म करने का इरादा कर रहे थे कि पकड़े गए।"
"हां। उसके बाद ही तो इकबाल दुबई से इस्लामाबाद निकल आया था।"
"वो ही मार्शल। भारत की खुफिया जासूसी संस्था का चीफ। उसने देवराज चौहान जैसे खतरनाक इंसान को इकबाल को मारने के लिए, किराए पर लिया है और दुबई भेज दिया। मार्शल ने अपने इस काम के लिए गलत आदमी का चुनाव नहीं किया होगा, परंतु मैंने देवराज़ चौहान को आजमाया और वो खरा उतरा। वो इकबाल खान सूरी की तलाश में दुबई भटक रहा है और मैं उसे बता आई हूं कि इकबाल इस्लामाबाद जा चुका है।"
"ओह। तुम्हारा मतलब कि वो इकबाल खान को मारने इस्लामाबाद आएगा?" मसूद के होंठों से निकला।
"आशा तो है।"
"अगर देवराज चौहान ने इकबाल को बता दिया कि तुमने उसके इस्लामाबाद में होने की बात बताई है तो...।"
"मुझे बच्ची समझता है मसूद।"
"क्या मतलब?"
"मैंने ये बात उसे ऐसे हालातों में बताई है कि बेशक वो इकबाल को बता दे, मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा। मैंने उसे कहा कि अगर मां का दूध पिया है तो इस्लामाबाद आकर इकबाल खान को मार के दिखा। जब तक मैं जिंदा हूं तू उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। इस तरह की और भी कई बातें कहीं। देवराज चौहान भी भ्रम में पड़ गया होगा कि मैं क्या कह रही हूं। मैंने उस पर ऐसे शब्द इसलिए इस्तेमाल किए कि भड़ककर वो इस्लामाबाद आ जाए और इकबाल खान को ढूंढ़ने लगे।"
"समझ गया। सब समझ गया। मान लो वो इस्लामाबाद आ जाता है तो...।"
"मान लो नहीं, वो पक्का आएगा। अपने इरादों का पक्का लगा वो मुझे। उससे मेरी पहली मुलाकात हिन्दुस्तान के सूरत शहर में हुई थी। तब उसने मुझे बाबा रतनगढ़िया के आदमियों से बचाया, वरना वो मेरी हत्या कर देते। वो सच में काबिल इंसान है। धीरे-धीरे मैंने उसे पहचाना है कि वो क्या चीज है। मार्शल ने सही आदमी चुना है सच बात तो ये है कि वो मार्शल के लिए

comicsmylife.blogspot.in

काम कर रहा है, पर मेरे अंजान इशारों पर वो नाच रहा है। वो मेरा काम करेगा। इस्लामाबाद जरूर आएगा वो।"

"वो आ गया तो क्या तब भी तुम कुछ करोगी?"

"मैं समझी नहीं?"

"मेरा मतलब इकबाल तक पहुंचने में उसकी सहायता करोगी?"

"उसे इसकी जरूरत नहीं। वो अपना काम करना जानता है। जरूरत महसूस हुई तो किसी तरह उसे थोड़ी राह दिखा दूंगी। इस तरह कि वो नहीं समझ पाएगा कि, मेरे इशारों पर ही उसके कदम बढ़ रहे हैं।" कामनी के चेहरे पर खतरनाक मुस्कान नाच उठी।

"कामनी।" एकाएक मसूद बोला—"हमारा पीछा हो रहा है।"

कामनी चौंकी। माथे पर बल पड़े।

"एक कार देर से हमारे पीछे है।" मसूद ने पुनः कहा।

"ये बात हमें पता चलनी चाहिए कि कौन हमारे पीछे है। ये इकबाल के भेजे आदमी भी हो सकते हैं। तुम अकेले ही मुझे लेने आ गए तो इकबाल ने एहतियात के तौर कुछ को पीछे भेज दिया होगा। तुम इकबाल को फोन करके पूछो। वरना पीछे लगे लोग हमारे दुश्मन भी तो हो सकते हैं। हम कहीं गफलत में न मारे जाएं।"

"ये बुलटप्रूफ कार है।"

"तुम फोन करके इकबाल से पूछो। मेरे पास तो दुबई वाला फोन है। यहां काम नहीं करेगा।"

मसूद ने जेब से मोबाइल निकाला और कार चलाते नम्बर मिलाया। बात हुई।

"जनाब।" मसूद बोला—"मैडम कार में हैं। हम आ रहे हैं। परंतु पीछे एक कार लगी है। क्या आपने आदमी भेजे हैं?"

"....?"

"ठीक है जनाब।"

"....?"

"आप बेफिक्र रहें जनाब। मसूद के होते मैडम को कुछ नहीं हो सकता।" कहकर मसूद ने फोन बंद किया और बोला—"पीछे लगे लोग इकबाल के नहीं हैं। ये कोई और ही लोग हैं।" मसूद के चेहरे पर कठोरता आ गई थी।

कामनी के चेहरे पर दरिंदगी उभर आई।

"कौन हो सकते हैं ये।" मसूद बोला—"तुम्हारे आने के बारे में किसे पता था?"

कामनी की आंखों के सामने देवराज चौहान का चेहरा उभरा।

परंतु साथ में ये भी विचार आया कि इतनी जल्दी देवराज चौहान

इस्लामाबाद नहीं पहुंच सकता। आधी रात के बाद तो उसके ठिकाने से गया है। वीजा लगवाने में भी उसे वक्त लगेगा। बहुत जल्दी भी करे तो आज का दिन वीजा लगवाने में तो लगेगा ही। स्पष्ट था कि पीछे देवराज चौहान नहीं था।

"हमें पीछे आने वालों से उलझना नहीं है।" कामनी शब्दों को चबाकर बोली—"हम...।"

"मैं सबको खत्म कर...।"

"बेवकूफी मत करो। उनकी संख्या ज्यादा भी हो सकती है। मेरे पास कोई हथियार नहीं है। एक कार में वो लोग हैं हो सकता है कि पास में उनके साथियों की दूसरी कार भी हो। क्या पता उनके इरादे क्या हैं। तुम एक रिवॉल्वर से उनका मुकाबला नहीं कर सकते। यहां से निकल जाने में ही इस वक्त हमारी भलाई है।"

"क्या मतलब?"

"इनसे पीछा छुड़ा लो।" कामनी ने दांत भींचकर कहा।

"लेकिन...।" मसूद ने कहना चाहा।

"इस वक्त तुम वो ही करो जो मैं कह रही हूं। बहस मत करो। इनसे पीछा छुड़ाओ।" कामनी ने गुस्से से कहा।

"ठीक है।" मसूद सख्त स्वर में बोला—"ये मेरे लिए मामूली काम है, तुम आराम से बैठो। ये सोचो कि पीछे लगे लोग कौन हैं?"

"मैं इनके बारे में कोई अनुमान नहीं लगा पा रही हूं। तुम पीछा छुड़ाने की तरफ ध्यान दो।"

अगले ही पल कार की रफ्तार अचानक ही बेहद तेज हो गई। जबकि सड़कों पर खास ट्रेफिक था।

▭ ▭

बशीर अल्लाही।

पाकिस्तान के इस्लामाबाद स्थित मार्शल का एजेंट।

पचास वर्ष की उम्र। स्वस्थ शरीर। चेहरे पर हमेशा काली सफेद दाढ़ी रहती। बीस सालों से वो इस्लामाबाद में मार्शल के लिए काम कर रहा था। इस्लामाबाद के एजेंटों का चीफ था। उनसे काम लेता था। परंतु कोई भी उसे चेहरे से नहीं जानता था। सब काम फोन पर होते। बातें फोन पर होतीं और काम भी फोन पर समझाया जाता। सिर्फ उसकी आवाज ही बाकी के एजेंट पहचानते थे। कभी किसी खास काम के तहत मिलना भी पड़ा एजेंटों से तो उस स्थिति में वो भी एक एजेंट बनकर मिलता था और तब उसकी आवाज भी बदली होती।

मार्शल से बशीर अल्लाही और एजेंटों को हर महीने मोटी रकमें मिलती

comicsmylife.blogspot.in

थीं। इसलिए हर काम ये लोग पूरा करने की कोशिश करते। ऐसे में कई एजेंट खतरनाक कामों में उलझकर मारे भी जाते तो मार्शल की तरफ से मरने वाले के परिवार को एक मुश्त मोटी रकम पहुंचा दी जाती। जासूसी का ये सिलसिला था जो कि खामोशी से, सालों से चल रहा था और किसी को कानों कान खबर भी नहीं थी। अगर किसी को पता भी था तो उसे एजेंटों की पहचान नहीं थी।

बशीर अल्लाही।

दिखावे के लिए इस्लामाबाद के अली बाजार में ड्राइक्लीन की दुकान चलाता था। जबकि वो चाहता था कि दुकान पर ज्यादा काम न आए, परंतु उसकी दुकान खूब चलती थी। हर समय व्यस्तता रहती। तीन लोग दुकान पर काम करते थे। एक प्रेस वाला, दूसरा बुकिंग करने वाला और तीसरा आने वाले ग्राहकों को कपड़ों की डिलीवरी देने के लिए।

इस वक्त भी बशीर दुकान पर ही मौजूद था।

कुछ ग्राहक भी थे जो काम करने वालों के साथ कपड़ों के लेन-देन में व्यस्त थे।

बशीर दुकान पर बैठता जरूर था परंतु काम नहीं करता था। काम पर नजर रखता था। इस वक्त शाम के साढ़े आठ बज रहे थे। नौ बजे तक वो दुकान बंद कर देता था और अब दुकान के लगभग बंद करने की तैयारी हो रही थी कि उसका मोबाइल बज उठा। उसने स्क्रीन पर आया नम्बर देखा और उठकर दुकान से बाहर आकर बात की।

"हैलो।"

"जनाब मैं महबूब।"

"एयरपोर्ट से कामनी कहां पर गई।" बशीर ने शांत स्वर में पूछा।

"जनाब गड़बड़ हो गई है। उन्हें पता चल गया कि उनका पीछा किया जा रहा...।"

"हुआ क्या? बशीर का स्वर सख्त हो गया।

"वो लोग नजरों से निकल गए। गाड़ियों की भीड़ की वजह से हम पीछे न जा सके।"

"बेवकूफ, जानते हो ये कितना जरूरी था।" बशीर ने धीमे स्वर में, गुस्से में कहा।

"माफी चाहता हूं जनाब। पहली बार ही ऐसा हुआ है कि...।"

"मुझे भी ऊपर जवाब देना पड़ता है। क्या कहूंगा उनसे कि मेरे आदमी निकम्मे निकले।"

महबूब खान की आवाज नहीं आई।

"सलमान मोहम्मद कहां है?" बशीर ने गुस्से से पूछा।

"मेरे पास ही...।"

"बात कराओ।"

अगले ही पल दूसरी आवाज उसके कानों में पड़ी।

"जनाब, पता नहीं ये सब कैसे हो...।"

"क्या तुम्हारा जवाब सही है सलमान?"

"नहीं हमसे बड़ी चूक हो गई।"

"मैं ऊपर क्या कहूं कि तुम लोग चूक गए। वो नजरों से निकल गए।"

"फिर से ऐसा नहीं होगा।"

"हमें काम पूरा करने के पैसे दिए जाते हैं न कि असफल रहने के। ये बात तुम जानते भी हो कि हमारे ऊपर वाले हर हाल में काम पूरा हुआ देखना चाहते हैं। कितनी परेशान करने वाली बात है कि तुम लोग एक कार का पीछा न कर सके।" क्रोध में बशीर ने कहा और फोन बंद कर दिया। फौरन ही खुद को सामान्य करने की चेष्टा में लग गया। दुकान बंद की जा रही थी।

दुकान बंद होने के बाद बशीर ने चाबी लेकर जेब में डाली और पार्किंग की तरफ बढ़ गया, जहां वो रोज कार खड़ी करता था। कुछ ही देर में वो कार पर घर जा रहा था कि उसका फोन बजने लगा।

"हैलो।" बशीर ने कार चलाते बात की।

"मैं दुबई से देवराज चौहान।" इधर से देवराज चौहान की आवाज कानों में पड़ी।

"मैं तुम्हें याद ही कर रहा था, परंतु तुम्हारा कोई ठीक नम्बर मेरे पास नहीं था। तुम्हारे लिए बुरी खबर है।"

"क्या?"

"तुमने जिस नसरीन शेख के बारे में कहा था, वो इस्लामाबाद एयरपोर्ट पर उतरी, मेरे आदमियों ने उस पर नजर रखी। उसके पीछे गए परंतु वो भांप गए कि पीछा हो रहा है और मेरे आदमियों को धोखा देकर भाग निकले।"

"ओह। ऐसा हो जाने से मेरे काम का रास्ता लम्बा हो गया।" देवराज चौहान की आवाज, बशीर के कानों में पड़ी।

"मुझे सख्त अफसोस है कि...।"

"तुम नसरीन शेख और इकबाल खान सूरी के बारे में पता लगाने की कोशिश करो कि वो कहां मिलेंगे।"

"मैं अपने एजेंट अभी इस काम पर लगा देता हूं।"

"नसरीन शेख या इकबाल को भनक नहीं मिले कि उन्हें कोई खोज रहा...।"

"मैं इस बात का ध्यान रखूंगा। क्या इकबाल खान सूरी पक्का इस्लामाबाद में है?"

comicsmylife.blogspot.in

"आशा तो पूरी है इस बात की।"

"ठीक है।"

"मेरे पासपोर्ट पर पाकिस्तान का वीजा लग गया है। साथ में जगमोहन भी है। हम दोनों परसों दोपहर को इस्लामाबाद पहुंच रहे हैं।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने फ्लाइट नम्बर और समय बताया—"सम्भव है नसरीन शेख मुझ पर नजर रखवाए। वो मेरे प्लेन के बारे में तो नहीं जानती, परंतु इतना एहसास है उसे कि हम दुबई से कभी भी इस्लामाबाद पहुंच सकते हैं। ऐसे में तुम जो ठीक समझो, वो कर सकते हो एयरपोर्ट पर।"

"ठीक है। मैं देखूंगा मुझे क्या करना है। लेकिन तुम्हारी और जगमोहन की कोई तस्वीर नहीं है मेरे पास।"

"इस बारे में मार्शल से बात करो। वो तुम्हें मेरी और जगमोहन की तस्वीर तुम्हारी ई-मेल आई-डी पर भेज देगा।"

बातचीत खत्म हुई।

बशीर ने सड़क के किनारे कार रोकी और मार्शल का नम्बर मिलाया। बात हो गई।

"मार्शल।" बशीर ने कहा—"देवराज चौहान और जगमोहन परसों इस्लामाबाद पहुंच रहे हैं। मुझे उनकी तस्वीरें भेज दो।"

"पंद्रह मिनट में तुम्हारी ई-मेल आई-डी पर ये काम हो चुका होगा।" मार्शल की आवाज कानों में पड़ी—"वो अपने काम की किस राह पर है उनकी कही कोई खास बात?"

"देवराज चौहान का कहना है कि इकबाल खान सूरी इस्लामाबाद में है।"

"क्या तुम्हें ये बात पता है?"

"नहीं। मुझे कोई खबर नहीं है।"

"देवराज चौहान जैसा कहता है वैसा ही करना। उसका पूरा साथ देना है। वो मेरा बेहतरीन आदमी है।"

"फिक्र मत करो मार्शल। मैं पूरी तरह उनके साथ हूं।"

बशीर ने फोन बंद किया और कार आगे बढ़ा दी।

बशीर अपने घर तक पहुंचा ही था कि पुनः उसका फोन बज उठा।

"हैलो।"

"बशीर।" तभी प्रभाकर की आवाज कानों में पड़ी—"मैं प्रभाकर। देवराज चौहान का फोन आया?"

"हां।"

"क्या कहा उसने?"

"इकबाल खान सूरी इस्लामाबाद में है। उसे ढूंढ़ने को कहा। परसों वो जगमोहन के साथ खुद भी आ रहा है।"

"इकबाल खान सूरी वास्तव में इस्लामाबाद में है? मेरे पास तो खबर है कि वो कराची में है। मैं उसे कराची में ढूंढ़ रहा हूं।"

"ये देवराज चौहान की बताई खबर है। मेरे पास पक्की जानकारी नहीं है कि वो कहां है।"

"तुम्हें मालूम करना चाहिए।"

"अब इसी काम पर लग रहा हूं। इकबाल खान के तीन ठिकाने मेरी नजर में हैं। उन्हें चैक करूंगा। परंतु इकबाल खान के बारे में कोई खबर पाना आसान काम नहीं है। वो कभी भी, कहीं भी नजर नहीं आता। अकसर वो रंग-रूप बदलकर ठिकाने से बाहर निकलता है और लोगों की भीड़ में खो जाता है। कोई उसे पहचान नहीं पाता।"

"तुम उसे ढूंढ़ो बशीर। खुद को साबित करने का बढ़िया मौका तुम्हारे पास आया है।"

"मैं पूरी कोशिश करता हूं।"

"इकबाल खान सूरी के बारे में कोई खबर मिले तो फौरन मुझे खबर करना।"

"हां। इस बारे में मार्शल की तरफ से कबका मेरे पास आदेश आ चुका है।" बशीर ने कहा—"नसरीन शेख आज इस्लामाबाद पहुंची है दुबई से। देवराज चौहान ने ये खबर पहले ही मुझे दे दी थी और उसका पीछा करने को कहा। देवराज चौहान जानना चाहता था कि वो कहां पर जाती है, परंतु मेरे आदमी उसका पीछा करने में असफल रहे।"

"नसरीन शेख इस्लामाबाद में हैं तो संभावना बढ़ जाती है कि इकबाल खान भी इस्लामाबाद में हो।"

"इस बारे में मुझे पता चलते ही, फौरन तुम्हें फोन कर दूंगा

▭ ▭

देवराज चौहान और जगमोहन इस्लामाबाद के एयरपोर्ट से बाहर निकले तो दोपहर बाद के 3.45 हो रहे थे। तीखी धूप फैली हुई थी। व्यस्त एयरपोर्ट था इस्लामाबाद का। हैवी ट्रेफिक और लोग नजर आ रहे थे। वहां बने बूथ पर जाकर उन्होंने टैक्सी बुलाने को कहा। बशीर से बात करके ही देवराज चौहान और जगमोहन ने दुबई छोड़ी थी। बशीर ने उन्हें बता दिया था कि कहां पहुंचना है उन्हें। वहां का पूरा पता दोनों को ठीक से याद था।

तभी एक टैक्सी आई। दूसरी आई, परंतु उसमें दूसरे लोग सवार होकर चले गए।

"हमारी टैक्सी नहीं आई?" जगमोहन ने बूथ वाले कर्मी से पूछा।

"अभी दो टैक्सियां आई तो थीं।"

"उस पर दूसरे लोग सवार हो गए।" जगमोहन ने मुंह बनाया।

comicsmylife.blogspot.in

"उन्हें पकड़कर पीछे खींचकर, तुम दोनों भीतर बैठ जाते।" उसने दोनों को गहरी निगाहों से देखा—"हिन्दुस्तानी हो?"

"हां।" देवराज चौहान ने कहा।

"ये हिन्दुस्तानी भी अजीब लोग होते हैं।" उसने गहरी सांस ली।

"किसने कहा?"

"हमारे पाकिस्तान में ऐसा ही कुछ कहते हैं, पाकिस्तान में क्या करने आए हो?"

"काम है।"

"काम? तुम लोग तो मुसलमानों को हिन्दुस्तान से बाहर निकालने आमादा हो।"

"ऐसा तो कुछ नहीं है।"

"ऐसा ही है। तुम्हारे देश के एक-दो नेता कुछ ऐसा ही बोलते रहते हैं। मैंने अखबार में पढ़ा है।"

"एक-दो नेता?"

"हां।"

"वो कोई सिरफिरे नेता होंगे। जबकि ऐसा कुछ भी नहीं है। तुम लोग पाकिस्तान को मुसलमानों का देश कहते हो, जबकि हिन्दुस्तान सिर्फ हिन्दुस्तान है। वहां हिन्दू-मुसलमान नहीं रहते, हिन्दुस्तानी रहते हैं। जितने मुसलमान पाकिस्तान में हैं, उससे ज्यादा हिन्दुस्तान में बसते हैं, परंतु वो हिन्दुस्तानी कहलाते हैं। हिन्दू-मुसलमान में कोई फर्क नहीं हिन्दुस्तान में।"

"सही कहते हो?" उसने देवराज चौहान को देखा।

"कभी हिन्दुस्तान गए हो?"

"नहीं।"

"एक बार जाकर तो देखो।"

"उससे क्या होगा?"

"तुम्हें हिन्दुस्तान का माहौल पता चल जाएगा। सुनी हुई बातें और देखी बातों में फर्क होता है।" देवराज चौहान मुस्कराया।

"लगता तो नहीं कि तुम सच कह रहे हो।"

"तुम्हारे कान अच्छी तरह से भर दिए गए हैं। इसलिए मेरी बातों पर शक कर रहे हो।"

"किसने कान भरे?"

"पाकिस्तान के नेताओं ने। जो अपनी कुर्सी बचाने की खातिर गलत बयान देते हैं। हिन्दुस्तान के बारे में। ये नेता ही हैं जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी पाकिस्तान की औलादों में हिन्दुस्तान के खिलाफ जहर भर रहे हैं और नफरत की आग

जलती रहती है। हिन्दुस्तान के मुसलमानों से पूछो तो वो ये ही कहेंगे कि हम हिन्दुस्तान में खुश हैं। ये ही हमारा देश है।"

"भरोसा नहीं होता तुम्हारी बात का।"

"एक बार हिन्दुस्तान का चक्कर लगा लो। भरोसा खुद-ब-खुद ही हो जाएगा।"

"कश्मीर के हालात पता हैं न, वहां...।"

"अपने नेताओं को कहो कि कश्मीर पर से ध्यान हटा लें। वहां अपने आदमी और पैसा भेजना बंद कर दें तो कश्मीर के हालात खुद-ब-खुद ही सुधर जाएंगे।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

"तुम मेरे देश के नेताओं पर बुरा इलजाम लगा रहे हो कि...।"

"इलजाम नहीं लगा रहा, सच्चाई बता रहा...।"

तभी जगमोहन कह उठा।

"टैक्सी आ गई। चलो।"

दोनों कंधों पर बैग लादे टैक्सी की तरफ बढ़ गए।

"सुनो तो।" पीछे से बूथ वाले ने पुकारा।

परंतु वे टैक्सी के भीतर जा बैठे थे। टैक्सी आगे बढ़ गई।

पीछे वाली सीट पर बैठे थे वे। जगमोहन जब ड्राइवर का पता बताने लगा तो ड्राइवर कह उठा।

"मुझे पता है आपने कहां जाना है।"

"कहां जाना है?" जगमोहन के होंठों से निकला।

ड्राइवर ने सही पता बता दिया, जहां को पता वो बताने वाला था जगमोहन ने हड़बड़ाकर देवराज चौहान को देखते हुए कहा।

"इस्लामाबाद में तो टैक्सी ड्राइवर बिना बताए ही जानते हैं कि सवारी ने कहां जाना है।"

"कौन हो तुम?" देवराज चौहान बोला।

तब तक ड्राइवर हाथ आगे बढ़ाकर डैशबोर्ड खोल चुका था।

भीतर दो रिवॉल्वरों पर उनकी निगाह पड़ी।

उसने दोनों रिवॉल्वरें निकालकर, पीछे उनकी तरफ बढ़ाई।

"ये बशीर ने आपके लिए भेजी है।"

देवराज चौहान सिर हिलाकर रह गया। जगमोहन ने दोनों रिवॉल्वरें थामी और चैक करने लगा कि वो लोडिड हैं भी या नहीं।"

ड्राइवर ने पुनः डैशबोर्ड में हाथ डालकर मोबाइल निकाला और उनकी तरफ बढ़ाया।

"ये भी दिया है।"

देवराज चौहान ने फोन थाम लिया।

comicsmylife.blogspot.in

"दोनों रिवाल्वरें फुल हैं।" जगमोहन बोला।

"मेरा नाम महबूब खान है और मैं इस्लामाबाद में मार्शल का एजेंट हूं।" ड्राइवर ने कहा।

"हम तुम्हारी टैक्सी में कैसे आ गए?"

"मैंने बूथ वाले को तुम दोनों की तस्वीरें दिखाकर, हजार रुपया दिया था कि तुम्हें मेरी टैक्सी में ही बिठाए। परंतु मुझे आने में कुछ देर हो गई। मैंने तुम लोगों को वहां खड़े देख लिया था।"

"तभी उसने हमें बातों में लगा लिया था।" जगमोहन बोला।

"मैंने उसे कह दिया था कि अगर मेरा काम न हुआ तो हजार रुपया वापस ले लूंगा।" महबूब खान बोला।

"तो तुम मार्शल के एजेंट और बशीर के साथी हो।"

"जी हां। वैसे बशीर हमारा चीफ है इस्लामाबाद में। वो ही हमें काम देता है

"अब क्या कहा बशीर ने?" देवराज चौहान ने पूछा।

"तुम लोगों को सुरक्षित एयरपोर्ट से लाना है और उस पते पर पहुंचाना है। इस दौरान अगर कोई पीछा करे तो उस बात की खबर बशीर को देनी है। पीछे हमारे आदमी की एक कार और भी है, उसका नाम सलमान मोहम्मद है। वो भी इस बात का ध्यान रख रहा होगा कि कोई पीछे न हो।"

"बशीर ने पूरा इंतजाम कर रखा है।" जगमोहन ने देवराज चौहान से कहा।

"तुमने जो फोन दिया है, उससे मैं कहां तक बात कर सकता हूं।"

"जहां भी आप चाहें। फोन बंद नहीं होगा। 'बिल' बशीर देगा। बशीर ने बताया कि तुम लोग मार्शल के ही एजेंट हो।"

"ऐसा ही समझो।"

"बशीर ने ये भी बताया कि तुम लोगों को शंका है कि एयरपोर्ट से तुम लोगों का पीछा किया जा सकता है।"

"ऐसा हो सकता...।"

तभी महबूब खान का फोन बज उठा।

फोन निकालकर महबूब खान ने फौरन बात की।

"हैलो।"

"महबूब।" बशीर की आवाज कानों में पड़ी—"सलमान ने अभी मुझे बताया कि तुम्हारे पीछे एक कार है।"

"तो पीछा हो रहा है।" महबूब शीशे में पीछे का दृश्य देखता कह उठा—"पीछे कई कारें हैं।"

"क्रीम कलर की कार बताई है सलमान ने।"

"हां। मेरी कार से पीछे-के-पीछे क्रीम कलर की कार है।" महबूब शीशे में देखता कह उठा।

"उसके पीछे वाली कार में सलमान है तुम उस कार से पीछा छुड़ाओ। समझ गए?"

"समझ गया। पंद्रह मिनट में मैं उस कार से पीछा छुड़ा लूंगा।" कहकर महबूब ने फोन बंद किया और ड्राइविंग पर ध्यान लगा दिया। वो बार-बार शीशे में पीछे आती कारों पर नजर मार रहा था।

"तुम क्या करने वाले हो?" देवराज चौहान ने होंठ सिकोड़कर कहा।

"बशीर ने कहा है कि पीछे वाली कार से पीछा छुड़ाऊं।" महबूब बोला।

"ये मामला मैं अपने हाथ में ले रहा हूं। तुम वो ही करोगे जो मैं कह रहा...।"

"बशीर मेरा चीफ है। उसकी बात मानना मेरे लिए ज्यादा जरूरी है।"

"बशीर से मैं बात कर लेता हूं।" कहने के साथ ही देवराज चौहान हाथ में दबे मोबाइल से नम्बर मिलाने लगा।

जगमोहन ने पीछे देखते हुए कहा।

"कामनी के लोग हैं ये?"

"यकीनन।" नम्बर मिलाकर देवराज चौहान ने फोन कान से लगाया।

"अब क्या करना चाहते हो?"

"देखते जाओ।" दूसरी तरफ बेल जाने लगी थी—"कामनी ये जानना चाहती है कि कहां रुकता हूं और...।"

तभी बशीर की आवाज कानों में पड़ी।

"तुम हो देवराज चौहान?"

"हां।"

"मैंने फोन नम्बर से पहचान लिया। तुम्हारे लिए ही फोन भेजा था। इस्लामाबाद में स्वागत है तुम्हारा।"

"शुक्रिया दोस्त। मैं इस वक्त महबूब की टैक्सी में...।"

"सब पता है मुझे...।"

"मैं ये मामला खुद संभालना चाहता हूं। जो पीछा कर रहे हैं, उनकी बात कर रहा हूं।"

"ठीक है। लेकिन तुम क्या करना चाहते...।"

"तुम एक कार और यहां भेजो। मेरा प्लान ये है कि अभी पीछा करने वालों को सड़कों पर घुमाते रहेंगे, जब तक तुम्हारी एक और कार नहीं आ जाती। उसके बाद हम पीछा छुड़ाएंगे और पीछे लगी कार का पीछा किया जाएगा। हमें जानना है कि वो लोग कौन हैं। उनसे हमें हमारे काम की जानकारी मिल सकती है।"

"समझ गया, परंतु सलमान उस कार के पीछे है, ये काम तो वो भी...।"

comicsmylife.blogspot.in

"एक बंदा धोखा खा सकता है। दो होंगे तो एक की नजरों में वो कार रहेगी ही।"

"समझ गया। मैं अभी एक और को कार पर भेजता...।"

"तुम मुझसे सम्बंध बनाए रखो, मैं तुम्हें बताता रहूंगा कि हम कहां पर से निकल रहे हैं।"

"उसकी जरूरत नहीं। जिसे भेजूंगा वो सलमान से बात करके लोकेशन पता कर लेगा। मेरे खयाल में आधे-पौन घंटे में बंदा तुम लोगों तक पहुंच जाना चाहिए।" उधर से बशीर कह रहा था।

"जब तक बंदा पहुंचने का फोन नहीं आएगा, तब तक हम यूं ही सड़कों पर चलते रहेंगे। जरा होल्ड करो।" फिर देवराज चौहान महबूब से बोला—"तुम बशीर से बात करना चाहोगे?"

"जरूर।"

देवराज चौहान ने महबूब को मोबाइल थमा दिया।

"जनाब, ये मुझे अपनी बात मानने को कह रहे हैं...।"

बीस सेकंड हां-हूं करने के बाद मोबाइल देवराज चौहान को वापस दे दिया।

"अब तुम जो कहोगे, मैं वो ही करूंगा।" महबूब ने कहा।

"टैक्सी को इस तरह सड़कों पर लेते रहो कि पीछे लगे लोगों को ये न लगे कि हम उन्हें खामखाह सैर करा रहे हैं। इसके लिए रास्तों का चुनाव तुम्हें ही करना होगा।" देवराज चौहान बोला।

"मुकरबा चौक की तरफ चलता हूं वो जगह यहां से डेढ़ घंटे के फासले पर पड़ती है।"

"तुम्हारे एक और साथी ने कार लेकर हम तक आना है।" जगमोहन बोला—"उसका भी ध्यान रखना।"

"कोई फर्क नहीं पड़ता। बशीर के एजेंट इस्लामाबाद में हर जगह मौजूद हैं। वो कहीं से भी हमसे आ मिलेंगे। तुम जरा बशीर को ये खबर कर दो कि हम मुकरबा चौक की तरफ जा रहे हैं।"

देवराज चौहान ने फोन पर ये बात बशीर से कह दी।

▭ ▭

घंटे भर बाद सलमान का फोन महबूब को आया।

"मुफ्ती कार पर आ पहुंचा है। मेरी फोन पर उससे बात हो गई है। वो मेरे पीछे है।"

"देवराज चौहान से बात करो।" कहकर महबूब ने फोन देवराज चौहान की पीछे किया—"हमारा आदमी आ पहुंचा है।"

देवराज चौहान ने सलमान से बात की।

"उसे क्रीम कलर की कार की पहचान करा दो जिसके पीछे अब तुम दोनों को लेकर जाना है।" देवराज चौहान ने कहा।

"मुफ्ती को ये बात मैंने पहले ही समझा दी है। वो उस कार को पहचानता है।"

"बढ़िया, अब हम पीछे लगी क्रीम कलर की कार से पीछा छुड़ाने वाले हैं। मुफ्ती को ये बात बता दो।"

"ठीक है जनाब।"

देवराज चौहान ने फोन बंद करके, महबूब को देते हुए कहा।

"पीछे लगी कार से पीछा छुड़ाओ।"

"अभी लो।" महबूब ने होंठ भींचकर कहा।

▭ ▭

बीस मिनट लगे महबूब को, क्रीम कलर की कार से पीछा छुड़ाने में। क्रीम कलर की कार पीछा करने में भटक चुकी थी। वो पीछे नहीं थी।

"अब वहां चलो, जहां हमने पहुंचना था।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"इस बात का पूरा ध्यान रखना कि पीछे कोई दूसरी कार न लगी हो। हमारा दुश्मन बहुत चालाक है।"

"पीछे अब भी कोई कार हुई तो मुझे पता चल जाएगा।" महबूब बोला।

परंतु अब उनके पीछे लगी, कोई कार नहीं थी।

चालीस मिनट के बाद महबूब ने टैक्सी को रिहायशी इलाके की एक गली में ले जा रोका, जहां हर तरफ फ्लैट बने हुए थे। महबूब ने जेब से एक चाबी निकालकर उन्हें देते हुए कहा।

"वो सामने सीढ़ियां हैं, चढ़ जाइए। पैंतालीस नम्बर फ्लैट है जहां आ दोनों को जाना है। खाने-पीने का सामान फ्रिज और किचन में भरा पड़ा है खाने-पीने के लिए बस, थोड़े-से हाथ-पांव चलाने होंगे।"

"तुम भी साथ आओ।" देवराज चौहान ने चाबी नहीं ली।

"मेरी क्या जरूरत है, मैं कुछ और काम कर लेता...।

"तुम्हारी बहुत जरूरत है हमें। बैग संभाले देवराज चौहान ने कार का दरवाजा खोलते हुए कहा—"हम इस्लामाबाद के रास्तों से अंजान हैं और कुछ ही देर में हमें फिर निकलना है। फ्लैट पर पहुंचकर सलमान और मुफ्ती को फोन करके पूछो कि जिसका पीछा किया गया है, वो कहां पर गया है?" देवराज चौहान कार से बाहर निकल गया।

"इसके इरादे तो मुझे ठीक नहीं लगते।" महबूब ने गहरी सांस लेकर जगमोहन से कहा।

"तू इस्लामाबाद बहुत घूमा होगा।" जगमोहन बैग संभालते हुए कार से निकलते बोला—"बाकी की सैर अब तू हमारे साथ करेगा।"

comicsmylife.blogspot.in

कुछ मिनटों में ही वो फ्लैट में थे।
तीन कमरों का फ्लैट था। दो बेडरूम थे, एक ड्राइविंग रूम। बेडरूमों में बेड लगे थे। ड्राइंग रूम में सोफा। और डायनिंग टेबल लॉबी में लगा था। सब कुछ साफ और एकदम चमक रहा था।
उन्होंने बैग रखे। देवराज चौहान बाथरूम में चला गया।
जगमोहन सोफे पर पसर गया। बाहर शाम हो चुकी थी। साढ़े छः बज रहे थे। महबूब ने मोबाइल निकाला और सलमान को फोन किया।
"मैं तुम्हें फोन करने ही वाला था।" बात होते ही उधर से सलम बोला—"मुफ्ती पीछा नहीं कर सका। वो भटक गया।"
"और तू?" महबूब की आवाज तेज हो गई।
"मैं उनके पीछे ही रहा।"
"अब कहां है वो?"
"हामीदा के एक मकान में...।"
"हामीदा में?" महबूब के होंठ सिकुड़े।
"मैं वहां पर नजर रख रहा हूं। पर मुझे लगता है कि वो ही उनका ठिकाना है। भीतर और लोग भी हैं। मैं क्या करूं?"
"देवराज चौहान से बात करके तुझे फोन करता हूं।"
"जल्दी बताना। ये खतरनाक इलाका है।"
महबूब ने फोन बंद करके जगमोहन को देखा।
"क्या हुआ?" जगमोहन ने पूछा।
"सलमान उस कार के पीछे लगा रहा। वो लोग हामीदा के एक मकान में जा पहुंचे हैं। सलमान को लगता है कि वो ही उनका ठिकाना है। हामीदा एक जगह का नाम है और बदनाम जगह है वो। वहां बदमाशों और खतरनाक दादाओं ने अपने ठिकाने बना रखे हैं। आए दिन वहां खून-खराबा होता है। ये आपस में भी झगड़ जाते हैं। तंग गलियों की वो बुरी जगह है। शरीफ आदमी वहां पर नहीं जाते। पुलिस के एक-दो आदमी वहां जाने का हौसला नहीं करते। बहुत जरूरत पड़ने पर भी पुलिस जाती है तो चालीस-पचास पुलिस वाले इकट्ठे होकर जाते हैं।"
"मतलब कि उस जगह पर जाने में हर कोई डरता है।" जगमोहन बोला।
"हां। वो जगह ही ऐसी है। कभी भी गोली चल जाती है। सलमान वहां है, उसे क्या कहूं?"
"वहीं रहने को कहो। बाकी बात देवराज चौहान से पूछना।"
"तुम नहीं बता सकते कि...।"
"ये मामला वो ही देख रहा है तो वो ही तुम्हें बताएगा कि आगे क्या करना...।"

तभी देवराज चौहान वहां आ पहुंचा। नहा आया था वो। अंडरवियर में था और बैग से कपड़े निकालकर पहनने लगा। तब तक महबूब ने सलमान की स्थिति बताई।
"उसे कहो हम वहां आ रहे हैं।" देवराज चौहान बोला।
"क्या?" महबूब ने अजीब-से स्वर में कहा—"हम हामीदा जा रहे हैं?"
"हां।"
"तुमने शायद ठीक से सुना नहीं कि वो कैसी जगह है। वहां पर...।"
"मैंने सब सुन लिया है। परंतु हमारा वहां जाना जरूरी है।" देवराज चौहान ने कहा।
"क्यों?"
"मुझे उन लोगों से मिलना है जो हमारा पीछा कर रहे थे। वो नसरीन शेख के बारे में बता...।"
"वहां पर और लोग भी हैं।"
"कोई फर्क नहीं पड़ता।"
"वहां गोलियां चलें तो कोई पुलिस को खबर नहीं करता। वहां पुलिस नहीं जाती। वो इस्लामाबाद का खतरनाक इलाका माना जाता है। रात तो क्या लोग दिन में भी उधर नहीं जाते। इस्लामाबाद में कैसा भी क्राइम करो और हामीदा चले जाओ तो अपराधी सुरक्षित हो जाता है। ऐसी जगह पर जाकर तुम अपनी मनमानी करने को कह रहे हो।"
"इस वक्त मेरे लिए ये काम करना जरूरी है।"
"इसमें मैं तुम्हारा साथ नहीं दूंगा।" महबूब ने स्पष्ट कहा।
"तुम मार्शल के एजेंट हो। काम से पीछे नहीं हट सकते।" देवराज चौह बोला।
"तुम मुझे आग के कुएं में कूदने को कहो तो मैं क्यों कूदूंगा।" महबूब नाराजगी से बोला।
"तुम मुझे हामीदा में, उस जगह तक तो पहुंचा सकते हो, जहां वो लोग गए हैं।"
"नहीं। मैं हामीदा जाना पसंद नहीं करूंगा।"
"तो मुझे बशीर से बात करनी पड़ेगी।"
महबूब के होंठ भिंच गए। वो कुछ नहीं बोला।
देवराज चौहान कपड़े पहन चुका था और मोबाइल निकालकर नम्बर मिलाने लगा।
जगमोहन उठकर बाथरूम में चला गया।
महबूब देवराज चौहान को घूर रहा था।
बात होने पर देवराज चौहान ने बशीर को सारी बात बताई।

comicsmylife.blogspot.in

"हामीदा जाना कोई पसंद नहीं करता।" उधर से बशीर ने कहा—"वो इलाका ही ऐसा है।"

"ये जरूरी है।"

"मैं समझता हूं। महबूब को फोन दो।"

देवराज चौहान ने महबूब को फोन दिया।

महबूब और बशीर की पांच मिनट तक बात होती रही। इस दौरान देवराज चौहान किचन में चला गया और कॉफी बनाने में व्यस्त हो गया। तभी महबूब वहां आया और बोला।

"बशीर से बात करो। कॉफी मैं बना देता हूं।"

देवराज चौहान फोन लेकर कमरे में आ पहुंचा।

"कहो बशीर।" बैठता हुआ देवराज चौहान बोला।

"महबूब तुम्हारे साथ रहेगा। मैंने उसे समझा दिया है जबकि हामीदा जा को जरा भी तैयार नहीं है।" बशीर का स्वर गम्भीर था—"तुम वहां जाकर जो करना चाह रहे हो, वो बहुत खतरनाक काम है। वहां पर कोई कानून लागू नहीं होता। वहां बिना वजह गोलियां चल जाती हैं और कोई पूछता भी नहीं है कि गोलियां क्यों चलीं? वहां पर तुम सामने वाले की गोली का इंतजार नहीं करोगे। ऐसा किया तो जिंदा नहीं बच सकोगे। पहले तुम्हें गोली चलानी होगी।"

"समझ गया।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"वहां पर जाना अकलमंदी नहीं है, तुम जाना चाहते हो तो बेशक जाओ। अगर ये सोचते हो कि नसरीन शेख या इकबाल खान सूरी हामीदा में होंगे तो ये तुम्हारी भूल है। वो उस जगह को कभी नहीं चुनेंगे।"

"मैं जानता हूं कि वो वहां पर नहीं हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

जगमोहन नहा आया और बातें सुनते कपड़े पहनने लगा।

"हामीदा में मेरी पहचान का कोई है। शायद वो तुम्हारी सहायता कर सके।"

"मैं वहां जंग लड़ने नहीं जा रहा जो मुझे सहायता की जरूरत...।"

"वहां जाना जंग के बराबर है।"

"तुम मुझे डराने की कोशिश में हो बशीर।"

उधर से बशीर ने गहरी सांस ली फिर आवाज आई।

"हकीकत को तुम डराने का नाम दे रहे हो तो मैं क्या कहूं।"

"महबूब और सलमान कहां तक मेरा साथ देंगे?" देवराज चौहान ने पूछा।

"ये उनकी मर्जी पर है। इस बारे में मैंने उन पर कोई दबाव नहीं डाला। वो तुम्हारे साथ हामीदा में जा रहे हैं, ये ही बड़ी बात है। सलमान की हिम्मत है कि वो हामीदा में मौजूद रहकर, वहां नजर रख रहा है।"

तभी महबूब प्यालों में कॉफी बना लाया।

"हम कॉफी के बाद यहां से निकलने जा रहे हैं।" देवराज चौहान बोला।

"और हथियार की जरूरत हो तो महबूब से कह देना।" उधर से बशीर ने व्याकुल स्वर में कहा।

देवराज चौहान ने फोन बंद करके रखा और कॉफी का प्याला उठाकर घूंट भरा।

"हम हामीदा जा रहे हैं?" जगमोहन बोला।

"हां।" कहने के साथ देवराज चौहान ने महबूब को देखा—"तुम हामीदा जाने की सोचकर डर रहे हो?"

"ये शब्द कहकर क्यों मेरी नाक काट रहे हो।" महबूब गम्भीर स्वर में बोला—"वैसे ये सही है कि मैं वहां नहीं जाना चाहता। क्योंकि मैं जानता हूं कि वहां क्या होता है।"

"मार्शल के एजेंट तो हर जगह जाने को तैयार रहते हैं।" देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।

"तुम मुझ पर व्यंग कस रहे हो। मुझे डरपोक बता रहे हो। लेकिन ये सच है कि आग के कुएं में कोई भी आंखें खोलकर छलांग नहीं लगाता। वहां जा ही रहे हो तो देख लेना।"

"हमें एक-एक रिवॉल्वर और चाहिए, जिसमें 18 गोलियों की मैग्जीन हो। नाल पर चढ़ाने वाला साइलेंसर चाहिए।"

"साइलेंसर क्या करोगे। हामीदा में गोलियों की आवाजों की कोई परवाह नहीं करता।"

"जो कहा है, उसका इंतजाम कर दो।"

"मैं कुछ सलाह दूं?"

"दो।"

"अगर वहां जाना ही चाहते हो तो दिन में जाना। रात में तो ये भी पता नहीं चलेगा कि गोली कहां से आई।"

"हम अभी वहां के लिए चल रहे हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

"जैसा कहो।"

"हामीदा में हमें वो घर या ठिकाना दिखाने के बाद तुम पर या सलमान पर कोई पाबंदी नहीं है कि हमारे साथ रहो। जब भी चाहो पलटकर वापस जा सकते हो।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"मन की इच्छा न हो तो वो काम कभी भी नहीं करना चाहिए। ऐसा काम ठीक से पूरा होता ही नहीं।"

"बड़ी मेहरबानी वाली बात कह रहे हो।" महबूब मुंह बनाकर बोला।

जगमोहन कॉफी का खाली प्याला रखते कह उठा।

"हमें चल देना चाहिए।"

comicsmylife.blogspot.in

देवराज चौहान ने उठते हुए महबूब से कहा।
"रिवॉल्वरें और साइलैंसर कहां से दोगे?"
"रास्ते में से। सब सामान रखा है।" महबूब भी उठ खड़ा हुआ। उसने सलमान का नम्बर मिलाकर बात की—"तुम वहां पर नजर रखे हुए हो, जहां पर पीछा करने वाले मौजूद हैं।"
"हां। उस जगह से पचास कदम दूर एक खटारा कार खड़ी है। मैं उसके भीतर छिपा हूं। अंधेरा हो चुका है और किसी की नजर मुझ पर नहीं पड़ सकती। लेकिन यहां पर खतरा है। ये हामीदा है तुम...।"
"हम वहां पहुंच रहे हैं।"
"हम—कौन?"
"मैं, देवराज चौहान, जगमोहन...।"
"तो कुछ करने का इरादा है। हामीदा में। तुमने उन्हें समझाया नहीं कि...।"
"वो पागल लोग हैं।" महबूब ने देवराज चौहान और जगमोहन पर नजर मारते शांत स्वर में कहा—"मेरी बातें उनकी समझ में नहीं आ रहीं। लेकिन वो जगह दिखाकर, हम जब चाहे वापस लौट सकते हैं।"
"ये तो अच्छी बात है हमारे लिए।"

▭ ▭

इस्लामाबाद के पश्चिमी छोर पर 'हामीदा' नाम की वो जगह स्थित थी, अगर ये कहा जाए कि इस्लामाबाद की सीमा पर वो जगह है तो गलत नहीं होगा। अलग-थलग बसी 'हामीदा' नाम की जगह।
महबूब ही कार चला रहा था। जगमोहन बगल में, देवराज चौहान पीछे बैठा था। बातचीत कम ही हो रही थी उनमें। महबूब तो बहुत ही कम बात कर रहा था। ज्यादातर वो चुप था।
इस्लामाबाद के शहरी इलाके से निकलकर कार अब वीरान सड़क पर दौड़ रही थी। सड़क के दोनों तरफ जंगल जैसा हाल था। गहरा अंधेरा था हर तरफ। सड़क पर कहीं भी रोशनी नहीं थी। ये सड़क हामीदा को पार करते हुए, दूसरे शहर को जोड़ती थी। कार की हैडलाइट ही रास्ता दिखा रही थी।
"ये कैसी जगह है। यहां अंधेरा क्यों है?" जगमोहन ने पूछा।
"हामीदा के आस-पास, तीन-चार किलोमीटर तक कोई आबादी नहीं है।" महबूब ने मुंह खोला।
"तुम्हारा मतलब कि हामीदा आने वाला है?"
"कुछ भी कहो, हामीदा अभी दूर है।"
उन्हें सफर करते एक घंटा हो चुका था।
"ये सड़क कहां जाती है?"

"दूसरे शहर तक। हामीदा जाने के लिए हमें एक खास जगह से मुड़ना होगा। वहां सड़क नहीं है। कच्चा रास्ता है। जंगल जैसा। दो किलोमीटर उस रास्ते पर जाकर 'हामीदा' है।"
"वहां रोशनी है?"
"पूरी। पानी भी है। वहां की लाइट-पानी बंद किया जाता है तो वो लोग इस्लामाबाद में बम विस्फोट करने लगते हैं। इस लिए वहां की लाइट-पानी का सरकार पूरा ध्यान रखती है।"
"सरकार भी अजीब है।"
"नेताओं के इशारे पर काम करने वाले भी तो हामीदा में रहते हैं।" महबूब बोला।
"तो नेताओं का हाथ है उनकी पीठ पर।"
काफी आगे जाकर महबूब ने सड़क छोड़ी और कच्चे रास्ते पर उतर आया।
"अब हम हामीदा जाने वाले रास्ते पर हैं। मुझे कार की हैडलाइट बंद करनी होगी। वरना हामीदा वालों को पता चल जाएगा कि कोई आ रहा है वैसे तो कोई फर्क नहीं पड़ता। रात में यहां गाड़ियां आती-जाती रहती हैं लेकिन हम किसी से न ही उलझें तो बेहतर है।" कहकर उसने कार की हैडलाइट बंद कर दी।
कार धीमी रफ्तार से खड्ढों में हिलती आगे बढ़ रही थी।
पीछे बैठा देवराज चौहान रिवॉल्वर की नाल पर घुमा-घुमाकर साइलैंसर चढ़ाने लगा।
पंद्रह मिनट के ऐसे सफर के बाद उन्हें दूर रोशनी दिखाई देने लगी।
"वो हामीदा की रोशनियां हैं?" जगमोहन ने पूछा।
"हां।" महबूब ने गम्भीर स्वर में कहा।
"रिवॉल्वर पर साइलैंसर चढ़ा लो।" देवराज चौहान ने जगमोहन से कहा।
"चढ़ा चुका हूं।"
"महबूब तुम भी।"
"मेरा यहां रुकने का इरादा नहीं है। जब सलमान तुम लोगों को वो जगह दिखा देगा तो हम दोनों वापस आ जाएंगे।"
"जैसा तुम ठीक समझो।"
फिर हामीदा आ गया। वहां ऊंचे, बड़े-छोटे, हर तरह के मकान बने दिख रहे थे। लाइट जल रही थी। परंतु तंग गलियों में कहीं कोई रोशनी नहीं थी। भीतर जलती लाइटें, कहीं-कहीं बाहर आ रही थीं।
महबूब एक जगह पर कार रोक चुका था। इंजन बंद करके फोन पर सलमान से बात की।

comicsmylife.blogspot.in

"हम आ पहुंचे हैं। तुम कहां हो?" महबूब गम्भीर स्वर में बोला।
उधर से सलमान ने कुछ बताया।
महबूब फोन बंद करता बोला।
"आओ।"
तीनों आगे बढ़ गए। सामने एक गली थी, उसमें प्रवेश कर गए। दोनों तरफ मकान बने हुए थे। मिट्टी की कच्ची गली थी। कहीं समतल तो कहीं ऊबड़-खाबड़। कहीं-कहीं घरों के भीतर से लाइट बाहर तक आ रही थी तो कहीं से म्यूजिक की तेज आवाजें तो कहीं से शराब पिए ठहाकों की आवाजें
"यहां औरतें नहीं रहतीं?" जगमोहन ने पूछा।
"रहती हैं। जैसे लोग हैं, वैसी ही औरतें हैं।" महबूब आगे बढ़ता कह उठा।
सौ कदमों के अंत पर गली खत्म होने वाली थी कि एक मकान के बाहर चार आदमी बातें करते खड़े दिखे। उन्हें आते पाकर सबका ध्यान उनकी तरफ हो गया। उनमें से एक ने बनियान और लुंगी पहन रखी थी। चेहरे पर दाढ़ी थी और पेट बढ़ा हुआ था। बाकी तीनों उससे कम उम्र के थे।
ज्योंही इन तीनों ने पास से निकल जाना चाहा कि लुंगी-बनियान वाले ने टोका।
"सुनो।" स्वर में नशा भरा पड़ा था।
तीनों ठिठके। उन्हें देखा।
यहां अंधेरा तो था, परंतु घर के भीतर से मध्यम-सी रोशनी बाहर तक आ रही थी।
"तुम लोगों को पहले कभी नहीं देखा।" वो पुनः बोला—"नए लगते हो?"
तब तक बाकी तीनों के हाथ कपड़ों के भीतर सरक गए थे।
"मेहमान हैं किसी के।" महबूब शांत स्वर में बोला। उसका हाथ जेब में पड़ी रिवॉल्वर तक जा पहुंचा था।
"मेहमान?" वो कड़वे स्वर में बोला—"तो हामीदा में मेहमान भी आने लगे। मैंने तो इजाजत नहीं दी।"
देवराज चौहान और जगमोहन भी सतर्क हो चुके थे।
"मेहमाननवाज कौन है, जरा नाम तो सुनें उस बेवकूफ का।" वो पुनः बोला।
"सरफराज।"
"ये कैसा मेहमान है, जिसका नाम मैं नहीं जानता। चलो, जेबें खाली करो
तीनों ठिठके-से खड़े रहे।
तभी लुंगी-बनियान वाले के एक साथी ने रिवॉल्वर बाहर निकाल ली।

उसी पल महबूब ने रिवॉल्वर निकालते हुए फायर कर दिया।
गोली की तेज आवाज गूंजी।
रिवॉल्वर निकालने वाले की छाती में गोली जा लगी।
ऐसा होते ही, बाकी दोनों लोगों ने फुर्ती से रिवॉल्वर निकाल लेनी चाही। जबकि लुंगी-बनियान पहने वो अभी तक वैसे ही खड़ा था। परंतु वो दोनों गोलियां न चला सके।
देवराज चौहान और जगमोहन के रिवॉल्वरों से निकली बे-आवाज गोलियों ने उनका काम कर दिया।
लुंगी-बनियान वाला ठगा-सा रह गया।
"अब समझे कि हम मेहमान हैं या तुम।" जगमोहन खतरनाक स्वर में बोला।
"चलो यहां से।" देवराज चौहान ने रिवॉल्वर निकालते हुए कहा।
तभी महबूब ने रिवॉल्वर वाला हाथ सीधा किया और ट्रेगर दबा दिया।
'धांय' गोली निकली और लुंगी-बनियान वाले के सिर में जा लगी।
"इसे शूट करने की क्या जरूरत थी?" देवराज चौहान कह उठा।
"बहुत जरूरत थी।" महबूब कड़वे स्वर में बोला—"ये हमारे लिए आफत खड़ी कर देता। हम ज्यादा आगे न जा पाते कि ये हमारे पीछे ढेर सारे लोगों को भेज देता। अब निकलो यहां से।"
लुंगी-बनियान वाले का शरीर नीचे गिर चुका था।
परंतु तब तक मकान के भीतर से पांच-छः लोग बाहर निकलने को हुए।
महबूब ने उन पर गोली चला दी। एक चीख गूंजी।
देवराज चौहान और जगमोहन भी रिवॉल्वर निकालकर फायर कर दिए। इस फायरिंग का ये फायदा हुआ कि वे बाहर निकलने की कोशिश छोड़कर वापस भीतर की तरफ भाग गए।
देवराज चौहान, जगमोहन और महबूब तेजी से आगे बढ़ गए। रिवॉल्वरें हाथ में थीं।
"अजीब जगह है ये।" जगमोहन कह उठा।
मोड़ पर से, वे तीनों बाईं तरफ मुड़ गए।
"तुम्हें मालूम है, कहां जाना है?" देवराज चौहान ने पूछा।
"कुछ-कुछ अंदाजा है।" महबूब ने होंठ भींचे कहा।
तभी कहीं और फायर हुआ फिर एकाएक काफी सारी गोलियां च लगीं।
"दो गुटों में फायरिंग हो गई है कहीं।" महबूब कह उठा।
तीनों तेजी से आगे बढ़े जा रहे थे।
उस वक्त अंधेरी गली में दो आदमी आते दिखे। वो सामने से आ रहे

comicsmylife.blogspot.in

थे। दोनों पिए हुए थे और झूम रहे थे। एकाएक वे उनके सामने खड़े हो गए। उन्हें रुकना पड़ा।

"अब्दुल्ला को देखा है?" एक ने नशे से भरे स्वर में कहा।

"नहीं।" कहने के साथ ही जगमोहन ने बगल में से आगे बढ़ जाना चाहा।

परंतु उसने जगमोहन की बांह पकड़ ली।

जगमोहन ठिठका।

देवराज चौहान और महबूब की निगाह उन पर ही थी। हाथ जेबों में सरक गए थे।

"नया रंगरूट लगता है।" जगमोहन की बांह पकड़े, नशे से भरी हंसी हंसा—"पहली बार देखा तुझे तो।"

"तुम क्या यहां रहने वाले सबको जानते हो?" जगमोहन ने शांत स्वर में कहा।

"सबको बेशक न जाने, पर तुम लोग तो नए लगते हो।" दूसरे की निगाह देवराज चोहान और महबूब पर गई। वहां अंधेरा था पर चेहरों के अक्स तो देखे ही जा सकते थे—इसके साथ ही उसने रिवॉल्वर निकाल ली—"माल निकालो।"

पल भर के लिए वे ठिठके से रह गए।

"माल निकालो, वरना तुम लोगों की लाशें गिराने के बाद, जेबों से निकालना पड़ेगा।"

देवराज चौहान ने बे-आवाज दो बार गोलियां चला दी।

एक गोली तो निशाने पर लगी। दूसरी सामने वाले की बांह पर लगी उसने तुरंत जवाबी फायर कर दिया। गोली देवराज चौहान की कमर को गर्म हवा देती निकली कि उसी पल 'धांय' महबूब ने फायर कर दिया जो कि सामने वाले के पेट में जा लगा। वो उछलकर नीचे जा गिरा।

तीनों पुनः तेजी से आगे बढ़ गए।

"देखा।" महबूब होंठ भींचे कह उठा—"ये जगह कितनी खतरनाक है।"

"सच में।" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"यहां लोग बे-वजह दूसरे को मारते हैं। गलियों के किनारों पर सुबह पांच-सात लाशें जरूर पड़ी दिखती हैं। जिन्हें दूसरे लोग यहां कुछ दूर खाली जगह पर गड्ढा खोदकर दबा देते हैं। हामीदा में ये है इंसान की जिंदगी।"

दूर चलती गोलियों में अब कमी आ गई।

"सरकार को इन लोगों पर काबू पाना चाहिए।" देवराज चौहान बोला।

"काबू पाने वाले ही इनसे काम लेते हैं और पैसे देते हैं तो काबू कौन करे। किसी को गैरकानूनी कोई भी काम हो तो पैसे लेकर हामीदा आ जाए उसका काम हो जाता है। इस्लामाबाद में तो लोग सिर्फ हामीदा इलाके के नाम

की धमकी देकर अपना काम निकाल लेते हैं। इतना खतरनाक माना जाता है हामीदा।" महबूब ने कहा।

"सलमान कहां है?"

"अभी बरगद का पेड़ आएगा। उस पेड़ के पास है वो गली। सलमान भी वहीं होगा।"

कुछ ही देर में वे बरगद के पेड़ के पास पहुंच गए थे।

चारों तरफ सुनसानी छाई हुई थी। आकाश में तारे और चंद्रमा चमक रहे थे। चंद्रमा की रोशनी में जमीन पर आधा-अधूरा नजर आ रहा था। महबूब की निगाह हर तरफ घूमी और फिर उसकी निगाह एक तरफ खड़ी टूटी-फूटी कार पर जा टिकी। महबूब तेजी से उस कार की तरफ बढ़ गया। रिवॉल्वर उसके हाथ में दबी थी।

"सलमान भीतर हो?" कार के पास पहुंचकर, महबूब बोला।

"तेरे को बताया तो था कि टूटी-फूटी कार के भीतर छिपा हूं।" भीतर से सलमान की आवाज आई—"यहां तो दस मिनट भी खुले में नहीं खड़ा रहा जा सकता। पता नहीं कब गोली चल जाए।"

कार का दरवाजा खोलकर सलमान बाहर निकला।

देवराज चौहान और जगमोहन पास आ पहुंचे थे।

"कार में रहकर तुम उन लोगों पर कैसे नजर रख रहे...।" महबूब ने पूछना चाहा।

"वो रहा सामने मकान, गली में दूसरा।" सलमान ने गम्भीर स्वर में कहा—"ये मैं जानता हूं कि तीन घंटों से मैं कैसे यहां टिका हुआ हूं। पीछा करने वाले दो व्यक्ति थे और दोनों उसी मकान में गए हैं।"

महबूब ने चंद्रमा की रोशनी में देवराज चौहान और जगमोहन को देखा।

"सुन लिया तुम लोगों ने न?" महबूब बोला।

"हां।" देवराज चौहान की नजरें आसपास फिर रही थीं।

"हमारा काम खत्म हुआ। क्यों सलमान, हमें निकल चलना चाहिए यहां से?"

"बिना देर किए।" सलमान वहां से निकल जाने में सहमत था।

"बेशक तुम लोग जा सकते हो।" देवराज चौहान ने नजरें दौड़ाते गम्भीर स्वर में कहा।

"तुम दोनों संभलकर रहना। चल सलमान।"

इसके साथ ही महबूब और सलमान वहां से चले गए।

"जगमोहन।" देवराज चौहान होंठ भींचे कह उठा—"बशीर ने एक बात मुझे कही थी, जो कि सही थी। अगर जिंदा रहना है तो सामने वाले को गोली चलाने का मौका नहीं देना है। ये बात हम महसूस भी कर चुके हैं।"

comicsmylife.blogspot.in

"हूं।" जगमोहन के चेहरे पर सख्त भाव आ सिमटे थे।
"आओ।" आगे बढ़ता देवराज चौहान कह उठा—"हमें उस मकान में, उन लोगों से मिलना है, जो हमारे पीछे थे। उनसे पूछताछ करनी है कि किसने उन्हें हमारे पीछे लगाया।"
"वो कामनी के भेजे ही आदमी होंगे।"
"तो उनसे पता करना है कि कामनी या इकबाल खान सूरी कहां पर मिल सकते हैं।"
दोनों गली में प्रवेश कर गए।
गली का दूसरा मकान ही उसके टारगेट की जगह थी।
उसमें गेट नहीं लगा था। काफी खुली जगह में वो मकान था।
दोनों की नजरें मिलीं और वो भीतर प्रवेश कर गए। गेट वाली जगह के बाद थोड़ी-सी खाली जगह थी फिर खुला हुआ दरवाजा था। वे भीतर प्रवेश कर गए। आगे देवराज चौहान, पीछे जगमोहन।
फर्श के नाम पर मिट्टी बिछी थी। दीवारों पर कहीं भी पलस्तर नहीं था।
सामने ही दो आदमी बोतल खोले बैठे, पी रहे थे और ताश खेल रहे थे। उनकी रिवॉल्वरें पास ही पड़ी थीं। उन्हें भीतर आया पाकर नजरें उठाई तो अजनबियों को देखकर वे चौंके। तुरंत रिवॉल्वर की तरफ हाथ लपके कि देवराज चौहान और जगमोहन के रिवॉल्वरों वाले हाथ उनकी तरफ उठ गए।
"खबरदार।" देवराज चौहान गुर्राया—"रिवॉल्वर वहीं रहने दो।"
दोनों की नजरें मिलीं। दूसरे कमरों से हंसने-बोलने की आवाजें आ रही थीं।
रिवॉल्वर पर से उन्होंने हाथ हटा लिया। चेहरों पर हैरानी थी
"कौन हो तुम लोग?"
"हमें वो दो लोग चाहिए। जिन्होंने एयरपोर्ट से दो आदमियों का पीछा किया था फिर यहां आ गए।" देवराज चौहान बोला।
"हम—वो नहीं हैं।"
"तो जहां भी हों वे दोनों, उन्हें बुलाओ।"
"क्या करना चाहते हो उनका?"
"पूछताछ करनी है।" देवराज चौहान का स्वर बेहद सख्त था।
रिवॉल्वर ताने जगमोहन की निगाहों में चीते जैसी चमक थी।
चंद पल वहां चुप्पी रही।
"तुम लोगों ने हामीदा में आकर और इस ठिकाने पर आकर गलती कर दी है।" एक कह उठा।

"खामोश रहो और उन दोनों को बुलाओ जो एयरपोर्ट पर पीछा करने...।"
तभी एक का हाथ तेजी से करीब पड़ी रिवॉल्वर पर झपटा।
इसी पल जगमोहन ने ट्रेगर दबा दिया।
बे-आवाज-सी गोली निकली और उसकी छाती में जा लगी। वो नीचे जा गिरा और तड़पने लगा। दूसरा वाला हक्का-बक्का-सा बैठा उन्हें देखता रह गया फिर अपने साथी को देखता तो कभी एक हाथ दूर पड़ी रिवॉल्वर को।
बीतते पल मौत की पटरी पर चल रहे थे।
लेकिन साइलैंसर लगे रिवॉल्वर पर से गोली इतनी भी बे-आवाज नहीं थी कि दूसरे कमरे में मौजूद लोगों को एहसास न हो सके। यही वजह थी कि चंद पल बीतते ही वहां एक आदमी पहुंचा।
फिर दूसरा आया, तीसरा, चौथा और पांचवा भी आ गया।
पहले वाला अभी तक कुर्सी पर बैठा था।
नीचे गोली लगे पड़ा, अब शांत पड़ गया था।
तभी उन पांचों में से एक आंखें सिकोड़े चौंककर बोला।
"ये दोनों तो वही हैं जिनका एयरपोर्ट से हमने पीछा किया था।"
देवराज चौहान और जगमोहन की निगाह बोलने वाले पर टिक ग
वे हर किसी के प्रति सावधान थे।
"तेरे साथ कौन था?" देवराज चौहान ने सख्त स्वर में पूछा।
"मैं था—क्यों?" दूसरे ने खतरनाक स्वर में कहा।
"शक्ल देखनी थी।" देवराज चौहान का स्वर पहले जैसा ही था।
"तुम लोग यहां क्या करने आए हो?" पहले वाले ने पूछा।
"हमारे ठिकाने का पता कैसे चला?"
उसी पल देवराज चौहान की रिवॉल्वर से एक के बाद एक तीन फायर हुए। उन दोनो को छोड़कर बाकी तीनों को गोलियां लगीं। एक के चेहरे पर। दूसरे के माथे में और तीसरे के गले पर। वे चीखते हुए नीचे गिरते चले गए। अब सामने वो दोनों ही खड़े थे।
वो स्तब्ध रह गए थे ये देखकर।
हक्के-बक्के खड़े थे।
तभी कुर्सी पर बैठे व्यक्ति ने पास पड़ी अपनी रिवॉल्वर पर झपट्टा मारा।
जगमोहन का रिवॉल्वर वाला हाथ तेजी से घूमा और ट्रेगर दबा दिया।
गोली उसके कंधे में जा लगी। वो चीखा रिवॉल्वर उसके हाथ से छूट गई। जगमोहन ने दूसरा फायर किया तो वो शांत हो गया।
उन दोनों के चेहरे सफेद पड़ चुके थे।
देवराज चौहान के चेहरे पर दरिंदगी नाच रही थी।

comicsmylife.blogspot.in

जगमोहन के दांत भिंचे हुए थे।
"तुम दोनों से मैं जो सवाल पूछने जा रहा हूं उसका जवाब फौरन देते जाना।" देवराज चौहान खतरनाक स्वर में बोला—"वरना इन लोगों की तरह तुम भी अपनी जान से हाथ धो बैठोगे।"
दोनों डरे-से खड़े रहे।
"हमारा पीछा क्यों किया एयरपोर्ट से?"
"हमें पैसे मिले थे इस काम के।"
"पीछा करके क्या करना चाहते थे?"
"तुम दोनों कहां जाते हो, ये पता लगाने को कहा गया था।"
"किसने दिए पैसे?"
"गुलफाम ने।"
"गुलफाम कौन?"
"आसिफ अली रोड पर दारूखाना चलता है। वो अकसर हमसे काम लेता रहता है।"
"आसिफ अली रोड पर?"
"हां।"
"अब भी वो वहीं मिलेगा?"
"उसका दारूखाना रात भर चलता है। वो वहीं होगा।"
"नसरीन शेख को जानते हो?"
"नहीं।"
"कभी नाम नहीं सुना?"
"नहीं।"
"और इकबाल खान...।" पूछते-पूछते देवराज चौहान के शब्द मुंह ही रह गए।
गर्दन पर रिवॉल्वर की नाल आ टिकी थी।
जगमोहन का पूरा ध्यान उन दोनों पर था कि पीछे दरवाजे से आने वाले को न देख सका था।
"तुम्हें किसी ने सलाह नहीं दी कि हामीदा मत जाओ।" पीछे वाले ने कड़वे स्वर में कहा।
जगमोहन की निगाह फौरन उस तरफ घूमी।
वो पचास वर्ष का, चेहरे पर पुराने जख्म वाला खतरनाक इंसान था।
"तुम मौके पर आए।" उन दो में से एक आंखें चमक उठी—"इसने हमारे बहुत लोगों को मारा है।"
"वजीरा हमेशा सही वक्त पर आता है। गोलियों की आवाजें इधर से ही आई थीं। सोचा देखूं तो सही कि मामला क्या...ऐ तुम, मैं तुमसे कह रहा

हूं।" एकाएक वजीरा जगमोहन से कठोर स्वर में कह उठा—"तुम मौके की तलाश में हो। मैं सब समझ रहा हूं। अपनी रिवॉल्वर फेंक दो, वरना मैं तुम्हारे साथी को उड़ा दूंगा।"
जगमोहन के दांत भिंच गए। उसने रिवॉल्वर नीचे गिरा दी।
सामने खड़े दोनों ने अपनी रिवॉल्वरें निकाल लीं।
"तुम भी रिवॉल्वर फेंको।" वजीरा ने देवराज चौहान से कहा।
चेहरे पर खतरनाक भाव समेटे देवराज चौहान ने भी रिवॉल्वर गिरा दी। बुरा वक्त सामने था अगर अगले कुछ पलों में, कुछ किया न गया तो मौत निश्चित थी।
उसी पल एक के बाद एक चार-पांच गोलियों की आवाजें वहां गूंज उठीं।
सब कुछ अचानक हुआ था।
देवराज चौहान और जगमोहन ठगे-से खड़े रह गए थे।
सामने खड़े दोनों आदमियों को गोलियां लगी थीं। वो नीचे गिरते चले गए। देवराज चौहान ने उसी पल गर्दन से नाल हटती महसूस की फिर पीछे किसी के गिरने की आवाज आई।
देवराज चौहान फौरन पलटा।
उसकी गर्दन पर रिवॉल्वर लगाने वाला नीचे गिरा पड़ा था। आंखें फटी हुई थीं। स्पष्ट था कि उसे भी गोली लगी थी। देवराज चौहान की नजरें उठीं तो दरवाजे पर महबूब और सलमान को खड़े पाया।
जगमोहन ने फौरन नीचे से अपनी रिवॉल्वर उठा ली।
देवराज चौहान ने भी रिवॉल्वर उठाई। वहां पर लाशें और खून बिखरा पड़ा था।
"चलो।" महबूब बोला—"रुकना ठीक नहीं।"
वो चारों बाहर निकल आए। गली के बाहर की तरफ बढ़े।
"तुम लोग वापस कैसे आए?" जगमोहन ने पूछा।
"आ गए।" महबूब ने गम्भीर स्वर में कहा—"जाने का मन नहीं हुआ इस तरह।"
"तुम लोगों का काम बना कि नहीं?" सलमान ने पूछा
"बन गया है।"
वे गली के बाहर से बाहर आ निकले।
तभी सामने से तीन लोग आते दिखे।
वे सतर्क हो गए।
"ऐ हमारे उस्ताद को तुम लोगों ने मारा है?" एक ने पास आते गुस्से से पूछा।
"कौन है तुम्हारा उस्ताद?" जगमोहन बोला।

comicsmylife.blogspot.in

"उधर गली में, लुंगी-बनियान पहने...।"

"उन्हें तो उन लोगों ने मारा है।" जगमोहन एक तरफ इशारा करता बोला—"उधर गए हैं वो।"

"तेरे को कैसे पता कि उन्होंने हमारे उस्ताद को मारा है?"

"वो किसी लुंगी-बनियान वाले को मारने की बात कर रहे थे।"

"आओ।" उसने कहा और वो तीनों तेजी से दूसरी दिशा में बढ़ते चले गए।

"निकल चलो यहां से।" महबूब गम्भीर स्वर में कह उठा।

▭ ▭

आसिफ अली रोड।

इस्लामाबाद का पुराना इलाका था।

वे लोग वहां पहुंचे तो रात के दो बज रहे थे। सलमान पीछे अपनी कार में आया था।

उन्होंने एक जगह कारें रोकीं और गुलफाम के दारूखाने का पता किया। वो कुछ आगे एक गली के भीतर था। चोरी-छिपे दारूखाना चलाया जा रहा था। यूं ये इलाका फैक्ट्रियों वाला था। रिहायश कम थी अगर थी तो वो फैक्ट्रियों में काम करने वाले लोगों की ही थी और अधिकतर वो ही रात को दारूखाने पर आ जमते थे।

"इस दारूखाने का मालिक, गुलफाम है। उसी ने उन दोनों को एयरपोर्ट से हमारा पीछा करने का काम सौंपा था।" देवराज चौहान ने कहा—"मुझे पूरा यकीन है कि ये काम उसे कामनी उर्फ नसरीन शेख ने करने को कहा होगा।"

"तो तुम गुलफाम से क्या चाहते हो?" सलमान बोला।

"कामनी का पता-ठिकाना मालूम करना है।"

"जरूरी तो नहीं कि इस गुलफाम को उसका ठिकाना पता हो।"

"जो भी हो, हमने तो अपनी कोशिश जारी रखनी है।" देवराज चौहान ने कहा और गली में प्रवेश कर गया।

तीनों उसके पीछे थे।

"कैसी लगी हामीदा जगह?" महबूब ने मुस्कराकर जगमोहन से पूछा।

"बेहद खतरनाक।"

"अभी तो वहां से बच आए हैं। दो-चार घंटे और वहां रहते तो वापस न आ पाते। दोबारा जाना चाहोगे?"

"कोशिश तो यही होगी कि न जाऊं।"

"इसी कारण मैंने हामीदा जाने को मना कर दिया था।" महबूब ने गम्भीर स्वर में कहा—"एक बार मैं अनजाने में किसी की तलाश में हामीदा चला आया था। तब कठिनता से जान बचाकर भागा था। वहां पर

खतरनाक-से-खतरनाक मुजरिम छिपे बैठे हैं। परंतु पाकिस्तान सरकार ये जानने के बाद भी कुछ नहीं कर पाती। क्योंकि सिवाय खून-खराबे के कुछ हासिल नहीं होगा। हामीदा वाले बराबर का मुकाबला करेंगे अगर पुलिस ने वो जगह घेर ली तो। दो बार पुलिस का ऐसा प्रोग्राम बनकर ठंडा हो चुका है। नेता भी कम नहीं, वो हामीदा को सुरक्षित रखना चाहते हैं, ताकि उनका काम चलता रहे। महीना-भर पहले ही एक नेता के बेटे का अपहरण हो गया। पक्की खबर थी कि अपहरण करने वाले और बच्चा हामीदा में हैं, परंतु पुलिस चुप रही और करोड़ों की फिरौती देकर बच्चे का आजाद कराया गया।"

"एक दिन ऐसा आएगा कि सरकार हामीदा के इशारे पर चलने लगेगी।" सलमान कह उठा।

तभी देवराज चौहान गली में एक मकान के दरवाजे के आगे जा रुका। दरवाजा खुला हुआ था और स्टूल पर डंडा थामे एक आदमी अंधेरे में बैठा था।

"अंदर दारू मिलेगी?" देवराज चौहान ने पूछा।

"कहां से आए हो?"

"दारू को ढूंढ़ते यहां आ पहुंचे। इस वक्त और तो कहीं से मिल नहीं रही।"

"भीतर जाओ, सब कुछ मिलेगा।" उसने कहा।

"सब कुछ क्या?"

"दारू, गिलास, पानी, मूंगफली, चने, मटर—और क्या चाहिए?"

"इतना ही काफी है।" देवराज चौहान भीतर की तरफ बढ़ गया।

तीनों उसके पीछे थे।

"ये तुम्हारे साथ हैं?" उसने ऊंची आवाज में देवराज चौहान से पूछा।

"हां, आने दो।"

सामने रोशनी हो रही थी। काफी बड़ी जगह थी। पहले बरामदा था, वहां चारपाइयों पर लोग बैठे दारू पीने में मस्त थे। दो फर्श पर लुढ़के पड़े थे। आगे दो दरवाजे खुले हुए थे। एक दरवाजे के भीतर आठ-दस लोग बैठे पी रहे थे वे उस कमरे को पार करके आगे के कमरे में पहुंचे जहां बार जैसा माहौल बनाने की चेष्टा की गई थी। दीवारों के साथ लगे रैकों में बोतलें सजी थीं। एक ही व्यक्ति उधर मौजूद था जो कि खुद भी पिए हुए लग रहा था। वो इन्हें देखकर मुस्कराया और कह उठा।

"आइए जनाब। कौन-सी शराब लेंगे। सस्ती या महंगी। देशी या विदेशी। हर तरह की...।"

"गुलफाम कहां है?"

"उससे मिलना है।"

"हां।"

comicsmylife.blogspot.in

"कुछ देर पहले ही गुलफाम मियां आए हैं और नोट गिन रहे हैं भीतर कि कितनी कमाई हुई। जनाब को हमेशा ये शक रहता है कि मैं उनकी कमाई का कुछ हिस्सा दबा जाता हूं। उनका शक जाता नहीं है।" वो दांत दिखाते कह उठा—"तो पिएंगे नहीं?"

"बढ़िया शराब का एक पैग बना दो।" देवराज चौहान बोला।

"पैग महंगा पड़ेगा। बोतल ही खरीद लो तो वो सस्ती...।"

"बड़ा पैग, बढ़िया शराब का।"

"डेढ़ सौ रुपया दीजिए तो बोतल खोलूंगा। पीने वालों से पहले पैसा लिया जाता है।"

देवराज चौहान ने जेब से दस दीनार का एक नोट निकालकर उसे दिया।

"दीनार। दुबई से आए लगते हैं जो पाकिस्तान में दीनार बांट रहे हैं। दस दीनार का नोट तो तीन पैग के बराबर है। मैं आपको बढ़िया पैग देता हूं।" दीनार को अपनी जेब में रखता कह उठा—"क्या आपके दोस्त भी लेंगे?"

"नहीं।" देवराज चौहान ने कहा।

उसने पैग तैयार करके देवराज चौहान को दिया।

देवराज चौहान ने घूंट भरा और बोला।

"गुलफाम कहां है?"

"आगे बढ़ जाइए। बाईं तरफ कमरा है। इस वक्त दरवाजा बंद होगा। उसी में चले जाइए।"

"तुम लोग यहीं रहो।" देवराज चौहान ने कहा और आगे बढ़ गया।

"आप भी दीनार देकर कुछ पी लेते तो बढ़िया रहता।" उसने दांत दिखाकर तीनों को देखा।

"ये बेकार का नशा है।" जगमोहन मुस्कराया।

"बेकार का नशा? क्या बात करते हैं जनाब, एक बार मेरे हाथों से पीकर...।"

"दो घंटे में उतर जाता है। लेकिन तुम्हारी जेब में जो दस दीनार का नोट है, उसका नशा देर तक रहेगा।"

"उसका नशा तो तब तक रहेगा, जब तक वो खत्म नहीं हो जाता।"

"ये ही मैं तुम्हें समझाना चाहता हूं कि नोटों का नशा सबसे बढ़िया नशा है। इस नशे में कुछ नहीं रखा।"

"आप लोग तो बढ़िया बातें करते हैं। कहो तो एक पैग चुपके से, मुफ्त में दे दूं?"

"नहीं।" जगमोहन ने कहा और वहां से आगे बढ़ गया।

महबूब और सलमान वहीं खड़े रहे।

देवराज चौहान ने दरवाजे के बंद पल्लों को धक्का दिया तो वो खुल गए। सामने ही टेबल-कुर्सी रखे एक व्यक्ति नोटों की गड्डियों को गिन रहा था। उसने फौरन दरवाजे की तरफ देखा।

देवराज चौहान दरवाजे के बीचोबीच खड़ा था। हाथ में थमे गिलास से घूंट भरा।

"तुम्हें यहां किसने आने दिया?" वो व्यक्ति तीखे स्वर में बोला। पचास वर्ष के करीब का था वो। शरीर का मर्दाना कमीज-सलवार सफेद रंग की पहन रखी थी। चेहरे से वो सख्त किस्म का लगा।

"गुलफाम हो?" देवराज चौहान बोला।

"हां—तो?"

देवराज चौहान एक कदम भीतर आ गया। बोला।

"मैं वो ही हूं जिसका पीछा एयरपोर्ट से तुम्हारे कहने पर दो आदमियों ने किया था।"

गुलफाम की आंखें सिकुड़ीं। वो सतर्क हो गया।

"क्या मतलब?" वो खड़ा हो गया।

"उन दोनों को मैं अभी गोली मारकर आ रहा हूं।" देवराज चौहान ने कहा।

"बकवास मत करो। वो हामीदा में रहते हैं और...।"

"मैं सीधा हामीदा से ही आ रहा हूं। पूछताछ में उन्होंने तुम्हारे बारे में बताया। ये सब करने के लिए मुझे हामीदा में काफी लाशें बिछानी पड़ीं।" देवराज चौहान का स्वर कठोर हो गया—"नसरीन शेख को कबसे जानते हो?"

जवाब में उसने होंठ भींच लिए।

अब ये तो पक्का हो गया कि ये नसरीन शेख को जानता है।

"मैं जानता था कि ये काम नसरीन शेख ही कराएगी।" देवराज चौहान ने पुनः घूंट भरा—"तुम्हारे आदमी ने बढ़िया पैग बनाकर दिया है। स्वाद आ रहा है। अच्छी कमाई कर रहे हो यहां।"

वो सतर्क-सा खड़ा कठोर निगाहों से देवराज चौहान को देखे जा रहा था।

तभी दरवाजे पर जगमोहन आ खड़ा हुआ।

गुलफाम ने उसे देखा। कुछ बेचैन हुआ।

"मेरा साथी है।" देवराज चौहान बोला—"हम दोनों ही थे, जब हमारा पीछा तुम्हारे इशारे पर किया गया।"

"क्या चाहते हो?" उसने शब्दों को चबाकर पूछा।

"नसरीन शेख का ठिकाना जानना है।"

"मैं नहीं जानता।"

comicsmylife.blogspot.in

"इकबाल खान सूरी का ही ठिकाना बता दो।"

"नहीं मालूम।"

देवराज चौहान ने एक ही सांस में गिलास खाली किया और आगे बढ़कर टेबल पर रख दिया।

"सोच लो।" देवराज चौहान बोला।

"मैं कुछ नहीं जानता।"

उसी पल देवराज चौहान का हाथ घूमा और गुलफाम के गाल पर जा लगा। गुलफाम के होंठों से कराह निकली। वो कुर्सी से टकराया फिर संभल गया और अगले ही पल देवराज चौहान पर झपटने को हुआ कि ठिठक गया। दरवाजे पर खड़े जगमोहन के हाथ में उसने रिवॉल्वर देख ली थी।

"कुछ याद आया?" देवराज चौहान ने कठोर स्वर में पूछा।

"मैं नसरीन शेख या इकबाल का ठिकाना नहीं जानता। इकबाल को तो मैं जरा भी नहीं जानता।" गुलफाम गुस्से से भरे स्वर में कह उठा—"मेरा थोड़ा-बहुत सम्बंध नसरीन शेख से है। वो जब भी इस्लामाबाद आती है तो जो भी काम होता है मुझे कह देती है। मैं उसका काम पूरा करके उसे खबर कर देता हूं। हमारी बातें सिर्फ फोन पर होती है। उसका आदमी काम के पैसे मुझे दे जाता है।"

"ये कब से चल रहा है?"

"कई सालों से।"

"नसरीन शेख से मुलाकात कैसे हुई?"

"एक बार वो ही मुझ तक आई थी। मुझे इस तरह काम करने को कह कर चली गई। उसके बाद से ये सिलसिला चल रहा है।"

"वो तुम्हारे पास ही क्यों आई?"

"मैं क्या कह सकता हूं। इस्लामाबाद में मेरे दारू के दस ठिकाने चलते हैं। मुझे ऐसे काम करने की जरूरत नहीं है, परंतु नसरीन शेख से बनाए रखना मैंने ठीक समझा। वो नेताओं के सम्पर्क में रहती है। एक बार मेरा कोई काम फंस गया था तो उससे कहकर नेता द्वारा काम करवा लिया। ये ही रिश्ता है हमारा।"

"तुम्हें कुछ तो हवा होगी कि इस्लामाबाद में वो कहां...।"

"इस बारे में मुझे कुछ नहीं पता।"

"ये मुंह नहीं खोलेगा।" जगमोहन कहकर आगे बढ़ा—"खत्म कर दो इसे।"

देवराज चौहान चुप रहा। जगमोहन ने आगे बढ़कर उसके पेट से रिवॉल्वर लगा दी। गुलफाम के चेहरे पर डर नाच उठा।

"ये क्या कर रहे हो। मुझे मत मारना, मैं सच में नहीं जानता...।"

"नहीं जानते तो तभी तुम मरने जा रहे हो।" जगमोहन गुर्राया—"जानते होते तो न मरते।"

"मेरी जान मत लो। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा...।"

"अभी भी वक्त है नसरीन शेख का पता बता दो।" देवराज चौहान ने कहा।

"सच में नहीं जानता...।"

"नम्बर मिला उसका। बात करा।" देवराज चौहान सख्त स्वर में बोला।

"ह-हां, बात करा देता हूं।" उसने जल्दी से टेबल पर रखा मोबाइल उठाया और नम्बर मिलाने लगा।

जगमोहन ने उसके पेट से रिवॉल्वर हटा ली। पास ही खड़ा रहा।

"लगा गया नम्बर।" अगले ही पल गुलफाम कह उठा।

देवराज चौहान ने आगे बढ़कर उससे मोबाइल लिया जगमोहन से कहा।

"इसे बाहर ले जाओ।"

"चल।" जगमोहन ने रिवॉल्वर वाला हाथ हिलाकर गुलफाम से कहा।

वे दोनों कमरे से बाहर निकल गए। देवराज चौहान ने मोबाइल कान से लगाया। दूसरी तरफ बेल जा रही थी।

"हैलो।" तभी कामनी का नींद से भरा स्वर कानों में पड़ा।

"तुम मुझसे खेल क्यों खेल रही हो?" देवराज चौहान ने बेहद शांत स्वर में पूछा।

पलों के लिए लाइन पर खामोशी आ ठहरी।

"हैलो।" फिर कामनी की आवाज आई—"ये तुम हो देवराज चौहान।"

"हां।"

"पर ये फोन नम्बर तो गुलफाम का है।"

"इस वक्त वो मेरी रिवॉल्वर पर है।"

"ओह। हैरानी है कि तुम गुलफाम तक पहुंच गए। जबकि दिन में तुमने उसके आदमियों से पीछा छुड़ा लिया...।"

"दिन में जिन दो ने पीछा किया वो मारे जा चुके हैं।"

"बहुत तेजी से काम कर रहे हो। मुझे तुम में ये ही बात बहुत अच्छी लगती है कि...।"

"तुम मेरे साथ चूहे-बिल्ली का खेल क्यों खेल रही हो?" देवराज चौहान की आवाज शांत थी।

"चूहे-बिल्ली का खेल? मैं बच्चों के खेल नहीं...।"

"ये बच्चों का खेल नहीं मौत का खेल है, तुम भी इस बात को जानती हो।" देवराज चौहान ने कहा—"दुबई में तुमने अपने आदमी को कमल चावला बनाकर मेरे पास भेज दिया। उसी ने मुझे बताया कि मैं इकबाल खान सूरी

comicsmylife.blogspot.in

के ठिकाने पर कैसे प्रवेश कर सकता हूं और ठीक वैसे ही मैं प्रवेश कर गया। यानी कि तुम मुझे वहां बुलाना चाहती थी कि...।"

"मैं देखना चाहती थी कि वास्तव में तुममें कितना हौसला है।" उधर से कामनी की आवाज आई—"परंतु इस्लामाबाद पहुंचकर तुमने साबित कर दिया कि तुममें हौसले की कमी नहीं है देवराज चौहान।"

"इस्लामाबाद पहुंचने को भी तुमने कहा था।"

"मैंने?"

"भोली मत बनो। तुमने ही मुझे बताया कि इकबाल खान सूरी इस्लामाबाद में है और तुम भी कल वहां जा रही हो।"

"ये भी कहा कि मां का दूध पिया है तो इस्लामाबाद पहुंचकर इकबाल खान सूरी पर हाथ डालकर दिखाओ।"

"ये तुम्हारे बुलाने का अंदाज था।"

"धमकी थी ये।"

"नहीं, तुमने ही मुझे इस्लामाबाद बुलाया। आखिर तुम्हारे दिमाग में क्या चल रहा है?"

"मैं तुम्हें क्यों बुलाऊंगी कि...।"

"ये तुम जानती हो। वरना तुम खामोशी से इस्लामाबाद आ जाती तो शायद मुझे पता भी नहीं चलता कि इकबाल खान सूरी इस्लामाबाद में है। ये खबर तुमने मुझे दी। तुम कोई खेल, खेल रही हो मेरे साथ।"

उधर से कामनी के हंसने की आवाज आई।

"मुझे इस्लामाबाद बुलाया फिर एयरपोर्ट से अपने आदमी मेरे पीछे लगा दिए।"

"मैंने बोला न, तुममें गजब का हौसला है, तभी तो तुम इस्लामाबाद पहुंच गए। मैं तो सोचती थी कि तुममें थोड़ी-बहुत हिम्मत ही है। लेकिन अब मैं जान गई कि तुम कुछ भी कर गुजरने की हिम्मत रखते हो। परंतु मौत तुम्हारे सिर पर नाच रही है, वो तुम्हें नजर नहीं आता। इकबाल खान सूरी के नाखून के बराबर भी नहीं हो तुम और उसे मारने इस्लामाबाद आ गए। मेरे जीते जी तुम इकबाल की हवा भी नहीं पा सकते। इस्लामाबाद तुम्हारी जिंदगी की आखिरी मंजिल बन जाएगी देवराज चौहान।"

"कह चुकी।"

"तुम्हारी मौत का वक्त करीब आ चुका...।"

"समझदारी इसी में है कि मेरे से आराम से बात कर लो।" देवराज चौहान ने कहा।

"फिर क्या होगा?" उधर से कड़वा स्वर था कामनी का।

"तुमने अपना खेल तब शुरू किया था, जब तुम दुबई की कॉफी शॉप

में मुझे मिली। मुझे सामने पाकर तुमने, अपने आदमियों के हाथों में पहुंच चुके जगमोहन को आराम से मेरे हवाले कर दिया। उस शाम तुमने मुझ पर या जगमोहन पर कोई हमला नहीं किया जबकि हमने तुम्हारे कहने पर दुबई नहीं छोड़ी, परंतु मार्शल के एजेंटों को तुमने खत्म करा दिया। फिर तुमने किसी को कमल चावला बनाकर, मेरे पास...।"

"इन बातों का फायदा?"

"मैं साबित करना चाहता हूं कि तुम कोई खेल, खेल रही हो।"

"कैसा खेल?"

"मेरे हाथों इकबाल खान सूरी को मरवाने का।"

"ये तुमने कैसे सोच लिया?"

"क्योंकि तुमने जानबूझकर मुझे बताया कि इकबाल खान सूरी दुबई में नहीं, इस्लामाबाद में है। अपनी धमकियों की आड़ में तुमने मुझे इस्लामाबाद पहुंचने का इशारा दिया।" देवराज चौहान ने शब्दों को चबाकर कहा।

"तुम्हारा मतलब कि मैं ड्रामा कर रही थी। वो मेरी धमकियां नहीं थीं।" उधर से कामनी का स्वर तेज हो गया।

"ये ही मैं कहना चाहता...।"

"बकवास मत करो। ये ठीक है कि अभी तक मैंने तुम्हारे प्रति नर्मी का इस्तेमाल किया। शायद ये सूरत में हुई हमारी मुलाकात का असर था कि वहां तुमने तब मेरी जान बचाई थी जब बाजार में, वो आदमी मुझे गोली मारने जा रहा था। परंतु वो बातें अब नहीं चलने वाली। मैं देख रही हूं कि तुम इकबाल का पीछा नहीं छोड़ रहे और इस्लामाबाद आ पहुंचे...।"

"तुम आगे बढ़कर बार-बार पीछे क्यों हट रही हो?"

"क्या मतलब?"

"जो भी बात है स्पष्ट कह दो। समझौता कर लो मेरे से। तुमने मुझे इस्लामाबाद आने का इशारा देकर ये साबित कर दिया कि तुम भी चाहती हो कि मैं इकबाल खान सूरी को खत्म कर दूं। बेहतर है कि...।"

"बहुत ज्यादा बकवास कर रहे हो तुम।" उधर से कामनी की गुर्राहट कानों में पड़ी—"मैं तुम्हें बहुत बुरी मौत मारूंगी। तुम इकबाल खान सूरी की हवा भी नहीं पा सकते, जब तक मैं तुम्हारे सामने हूं। गलती मेरे से ये हो गई कि जब तुम इस्लामाबाद एयरपोर्ट से निकले, तभी तुम्हें खत्म करा देना चाहिए था ताकि...।"

"इकबाल खान सूरी इस वक्त कहां पर है।" देवराज चौहान गम्भीर था—"जरा-सा इशारा दे दो।"

"तुम कुत्ते की मौत मरोगे।"

"मैं इस्लामाबाद पहुंच गया हूं तो समझो 'दुबई के आका' की मौत आ

comicsmylife.blogspot.in

गई है। तुम मेरे साथ समझौता क्यों नहीं कर रही, इस बात पर मुझे भारी उलझन है। अगर एक इशारा दे दो उसके ठिकाने का तो...।"

"अपनी मौत का इंतजार करो देवराज चौहान। इस्लामाबाद तुम्हारी जिंदगी का आखिरी शहर है।" उधर से खतरनाक स्वर में कहने के साथ ही कामनी ने फोन बंद कर दिया था।

देवराज चौहान के होंठ सिकुड़ गए। उसने फोन टेबल पर रखा और बाहर आ गया। उसी बार वाले कमरे में जगमोहन, गुलफाम को रिवॉल्वर से दबाए खड़ा था। महबूब, सलमान भी वहीं थे। गुलफाम के चेहरे पर घबराहट थी और जो बारमैन के रूप में व्यक्ति था, वो चूहा बना एक तरफ सूखा-सा खड़ा था। देवराज चौहान वहां जाकर ठिठका और गुलफाम से बोला।

"नजरीन शेख ने क्या जानने के लिए मेरा पीछा कराया था?"

"वो-वो जानना चाहती थी कि तुम कहां पर टिकने वाले हो।" गुलफाम ने जल्दी से कहा।

"महबूब।" देवराज चौहान बोला—"इसे उस फ्लैट का पता बता दे, जहां हमारे बैग पड़े हैं।"

"लेकिन...।" जगमोहन ने कहना चाहा।

"चुप रहो।" देवराज चौहान ने कहा और भिंचे होंठों में फंसाकर सिग्रेट सुलगाई।

महबूब ने गुलफाम को पता बताया।

"ऐसे नहीं, लिखकर दे।" देवराज चौहान ने कहा—"ये भूल भी सकता है।"

चूहे से पैन-कागज लेकर महबूब ने पता लिखकर दिया।

"जहां मैं ठहरा हूं, इस कागज पर वहां का पता लिखा है।" देवराज चौहान ने कश लेकर गुलफाम से कहा—"ये पता तुम नसरीन शेख को बता दोगे। कहना कि मैंने दिया है।"

गुलफाम ने फौरन सिर हिला दिया।

"जनाब के लिए एक पैग और बनाऊं क्या?" चूहा जल्दी से बोला।

"चलो।" देवराज चौहान ने कहा और बाहर जाने के लिए आगे बढ़ गया।

जगमोहन, महबूब, सलमान ने भी कदम आगे बढ़ा दिए।

"कामनी से बात करके कुछ फायदा हुआ?" पीछे से जगमोहन ने पूछा।

"नहीं।"

"तो उसे अपने ठिकाने का पता क्यों...।"

"अभी कोई बात मत करो।" देवराज चौहान ने कहा।

वे मकान से निकलकर गली में आए और बाहर की सड़क की तरफ बढ़ गए।

▭ ▭

सलमान अपनी कार लेकर चला गया था।

महबूब ने वहीं पर फ्लैटों के पास कार रोकी जहां वे शाम को रुके थे।

"आप लोगों की जगह आ गई। सुबह के पांच बजने वाले हैं। मुझे इजाजत दो। नींद मारूंगा। बीवी की दस-बीस बातें सुनूंगा और उठने पर बशीर से पूछूंगा कि मेरे लिए कोई काम तो नहीं है।" महबूब बोला—"आज की रात बुरी रही। खासतौर से हामीदा जाना। दोबारा जाने से पहले हजार बार सोचूंगा।"

महबूब का शुक्रिया करके दोनों फ्लैट की सीढ़ियों की तरफ बढ़ गए।

"अब बोलो।" जगमोहन ने कहा—"कामनी से फोन पर क्या बातें हुई?"

"अजीब-सी बातें। वो हमारे साथ खेल खेल रही है।" देवराज चौहान ने सख्त स्वर में कहा।

"कैसा खेल?"

"अपने मुंह से तो नहीं कह रही, परंतु उसकी हरकतों से स्पष्ट है कि वो चाहती है मैं इकबाल खान सूरी की हत्या कर दूं। वो अपने ही अंदाज में इशारे दे रही है कि उस इशारों को सिर्फ मैं ही समझ सकूं।"

"ओह।"

"साथ में धमकी-भरे शब्द जोड़ना नहीं भूलती कि वो मुझे मार देगी।"

"इकबाल खान सूरी की मौत से कामनी को क्या फायदा?" जगमोहन बोला।

"फायदा ही फायदा है। इकबाल खान सूरी की खास बनी हुई है वो। उसकी दौलत के बारे में जानकारी रखती है, उसके धंधों के बारे में पूरा पता है उसे। अगर इकबाल खान मर जाता है तो वो उसकी जगह ले लेगी। सब पर अपना अधिकार घोषित कर देगी। कामनी सामान्य स्त्री नहीं है। चालाक बिल्ली की तरह है। सीधे-सीधे वो मुझे नहीं कह रही कि इकबाल खान वहां है, उसे मार दूं, सिर्फ इशारों में बात कर रही है। वो सतर्कता इस्तेमाल कर रही है। इतना बड़ा खेल कोई हिम्मत वाला ही खेल सकता है, जो कि इकबाल खान सूरी की बगल में बैठकर उसकी रक्षा का भी दावा करे और उसे मरवाने का भी इंतजाम करे।" देवराज चौहान सीढ़ियां चढ़ते हुए कह रहा था—"कामनी बहुत होशियार है। उसे इस बात की भी चिंता है कि उसके इरादों की भनक इकबाल खान को न लग जाए। वो कई बार मुझे आजमा चुकी है कि कहीं मैं अपने इरादे से पीछे तो नहीं हट जाऊंगा। अब वो जानती है कि मैं पीछे हटने वाला नहीं और...।"

देवराज चौहान के शब्द अधूरे रह गए।

वे सीढ़ियां तय करके ऊपरी मंजिल पर आ गए थे और सामने ही उनके

comicsmylife.blogspot.in

फ्लैट का दरवाजा था जो कि खुला हुआ था। भीतर की रोशनी बाहर तक आ रही थी। देवराज चौहान और जगमोहन की नजरें मिलीं। हाथ जेबों में पड़े रिवॉल्वरों पर जा टिके। दोनों आगे बढ़े और रिवॉल्वरें निकालते हुए तेजी से भीतर प्रवेश करते चले गए।

रोशनी ड्राइंग रूम में थी। वो वहां पहुंचे तो ठिठक गए।

सामने सोफे पर बशीर बैठा था जो कि उन्हें देखते ही कह उठा।

"देवराज चौहान, जगमोहन?"

देवराज चौहान ने बशीर की आवाज पहचान ली और रिवॉल्वर जेब में रखता बोला।

"ये बशीर है।"

जगमोहन ने सिर हिलाकर रिवॉल्वर जेब में रख ली।

"मुझे तुम दोनों की बहुत चिंता थी।" बशीर बोला—"हामीदा जाने पर मैं चिंतित था। वहां कुछ भी बुरा हो सकता है, परंतु मुझे तब राहत मिली, जब तुम लोग सही-सलामत हामीदा से बाहर आ गए।"

"तुम्हें कैसे पता कि हम सही से, वहां से निकल आए?" बैठते हुए जगमोहन ने कहा।

"सलमान ने फोन करके बताया था।"

देवराज चौहान भी बैठ गया।

"तुम लोग ने जो भागदौड़ की, उसका कोई फायदा हुआ?" बशीर दोनों को देखा।

"नहीं।" देवराज चौहान बोला—"कोई फायदा नहीं हुआ। तुम लापरवाही कर गए। जब नसरीन शेख इस्लामाबाद पहुंची थी तब ठीक से उसका पीछा किया गया होता तो हम उसका ठिकाना जान सकते थे।"

"उसका अफसोस है मुझे। महबूब और सलमान को ही मैंने नसरीन शेख का पीछा करने का काम सौंपा था, परंतु वो धोखा खा गए। वो वक्त हाथ से निकल चुका है, लेकिन हम जो जानना चाहते हैं जान के ही रहेंगे। तुम लोग जब से इस्लामाबाद पहुंचे हो तब से ही दौड़े फिर रहे हो। रात भर भी भागते रहे। अब नींद ले लो। मैं भी रात को सो नहीं पाया। उठने पर दिन में हम नसरीन शेख की खबर पाने के लिए एक साथ चलेंगे। तुम और मैं...।"

"मैं क्यों नहीं?" जगमोहन बोला।

"हमें किसी से मिलना पड़ेगा। जो ऐसी खबरें रखता है। कम ही लोग हों साथ में तो अच्छा है।"

"ऐसा कोई है तो तुम्हें उससे पहले ही बात लेनी चाहिए थी।" देवराज चौहान ने कहा।

"अभी ध्यान आया उसका कि शायद वो इंसान कुछ बता सके। हम चलेंगे उसके पास।"

"नसरीन शेख ने दुबई में क्या किया, तुम्हें मालूम है?" देवराज चौहान ने उसे देखा।

"मुझे नहीं पता। क्या किया?"

"उसने मार्शल के सारे एजेंटों को मार दिया। उसके आदमी सब पर नजर रखे हुए थे।"

"ओह। ये तो बहुत बुरा हुआ।"

"मैं तुम्हें सतर्क कर रहा हूं कि वो इस्लामाबाद में भी ऐसा कुछ कर सकती है।"

"मैं इन बातों से डरने वाला नहीं। मेरे एजेंटों तक पहुंच पाना आसान नहीं। वे अधिकतर एक-दूसरे को नहीं जानते। कभी काम के लिए इकट्ठे भी होते हैं तो काम पूरा करके अलग हो जाते हैं। कोई किसी का फोन नम्बर या पता नहीं जानता। मेरे एजेंट मेरा चेहरा नहीं पहचानते। सिर्फ फोन पर ही बात होती है। अगर किसी ने मुझे देखा भी है तो वो नहीं जानता मैं कहां रहता हूं। मेरे खयाल में दुबई में कोई लापरवाही हुई है जो नसरीन शेख सब एजेंटों को मार सकी।"

"हां, दो एजेंट उसके हाथ लग गए थे। उन्होंने मुंह खोला था।"

"तभी नसरीन शेख के लिए सबको मारना सम्भव हो सका। परंतु इस्लामाबाद में ऐसा कुछ नहीं होगा। मैंने सब कुछ ठीक से संभाला हुआ है।" बशीर ने गम्भीर स्वर में कहा—"ऐसे कामों में खतरा तो होता ही है, लेकिन डर की कोई बात नहीं है।"

"तुम कब से इस्लामाबाद में हो, तुम्हें पहले से ही इकबाल खान सूरी का वो खास ठिकाना तलाश करके रखना चाहिए था, जहां वो टिकता है। ये काम तुमने कर रखा होता तो, हमारा काम अब आसान हो जाता।"

"मैं ऐसी कोशिश करता रहता हूं तभी इकबाल खान सूरी के तीन ठिकानों को जानता हूं। वो उसमें से किसी में रहता है या नहीं, ये मैं नहीं जानता। वो किसी को नजर नहीं आता या अचानक ही पाकिस्तान के नेताओं में घिरा दिखाई देने लगता है। वो बहुत ही सतर्क रहने वाला इंसान है। उस पर हाथ डालना आसान नहीं।"

"ऊपर से कामनी, उस इंसान को भटकाने में लग जाती है, जो उसे तलाश करता है।" जगमोहन ने कहा—"जैसे कि अब हमें कामनी ने बिना वजह उलझा रखा है।"

"मैं जान सकता हूं कि कैसे?"

comicsmylife.blogspot.in

"छोड़ो इन बातों को।" देवराज चौहान कह उठा—"हमें नींद ले लेनी चाहिए।"

"उसके बाद हम उस आदमी से मिलेंगे, जो शायद इस बारे में कोई खबर दे।" बशीर उठ खड़ा हुआ।

"तुम दोबारा यहां मत आना।" देवराज चौहान ने कहा—"फोन करना।"

"क्यों?"

"इस जगह के बारे में कामनी जानती है।"

"कैसे?" बशीर के होंठों से निकला।

"मैंने उसे यहां का पता दिया है।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तुमने?" बशीर ने अजीब-सी निगाहों से उसे देखा—"तुम्हें कामनी कहां मिली?"

"फोन पर बात हो गई थी उसके आदमी द्वारा।"

"पर तुमने यहां का पता क्यों दिया?" बशीर ने एतराज भरे स्वर में कहा।

"मेरा काम करने का अपना ढंग है। कुछ वजह रही, जो मैंने ऐसा किया।" देवराज चौहान बोला।

"ये तुमने गलत कर दिया। अब वो आसानी से तुम दोनों को खत्म...।"

"ये बात हम पर छोड़ दो।"

बशीर कुछ पल देवराज चौहान को देखता रहा फिर बोला।

"क्या बीच में कुछ बात है जो अभी तुम मेरे को बताना नहीं चाहते?"

"ऐसा ही समझो।"

"ठीक है। परंतु ऐसी स्थिति में अब मैं यहां नहीं आऊंगा। मैं कामनी निगाहों में नहीं आना चाहता।"

देवराज चौहान ने सिर हिला दिया।

"जब सो के उठो तो मुझे फोन करना।" कहने के बाद बशीर वहां से चला गया।

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई। जगमोहन बोला।

"ये बात मैं भी तुमसे पूछना चाहता हूं कि तुमने कामनी को यहां का पता क्यों दिया?"

"गलत क्या किया?" देवराज चौहान मुस्कराया।

"वो हम पर हमला करा सकती है।'

"ऐसा कुछ नहीं होगा। हमारी जान लेने के लिए दुबई में उसके पास कई मौके थे, परंतु उसने ऐसा नहीं किया। वो हमारी जान नहीं लेगी, खेल खेल रही है वो हमारे साथ। खुद बहुत पीछे रहकर, वो हमारे हाथों इकबाल खान सूरी की हत्या करवा देना चाहती है। वो हमें मोहरा समझ रही है, जो उसकी इच्छा को पूरी करेगा।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैंने इस जगह का पता उसे इसलिए दिया कि अगर वो हमें किसी प्रकार का इशारा देना चाहती है इकबाल खान सूरी के बारे में तो वो इशारा दे दे। मत भूलो कि उसके आदमियों ने एयरपोर्ट से हमारा पीछा किया तो वो सिर्फ ये जानना चाहते थे कि हम कहां टिकने वाले थे। वो सिर्फ हमारा ठिकाना जानना चाहती है। मैंने उसका काम कर दिया अब देखना है कि वो क्या करती है।"

"तुम्हें पूरा यकीन है कि वो इकबाल खान सूरी की मौत चाहती है?" जगमोहन गम्भीर था।

"पूरा यकीन है। इस बारे में कोई दो राय नहीं है। अगर वो इकबाल खान की मौत न चाहती तो, हमें कबका मार चुकी होती। परंतु वो चाहती है हम उसे मार दें। वो इस्लामाबाद में है, ये बताकर कामनी ने अपना इरादा स्पष्ट कर दिया।"

"ऐसा है तो उसे अब तक ये भी बता देना चाहिए कि वो कहां पर मौजूद है।"

"इसी बात का तो इंतजार है। तभी तो मैंने गुलफाम के माध्यम से अपना पता दिया। परंतु कामनी जरूरत से ज्यादा सतर्कता इस्तेमाल कर रही है। शायद उसे इकबाल खान सूरी का डर है कि उसे कुछ पता न चल जाए।"

▭ ▭

दोपहर बाद देवराज चौहान और बशीर इस्लामाबाद के एक मध्यमवर्गीय इलाके में पहुंचे। कार को उन्होंने बाहर ही सड़क किनारे छोड़ दिया था। बशीर ने हाथ में ब्रीफकेस थाम रखा था, जिसमें नोट भरे थे। बशीर बोला।

"हम जिसके पास जा रहे हैं उसका नाम याकूब मोहम्मद है। कभी वो ड्रग्स का काम करता था। परंतु फिर एकाएक ड्रग्स के कामों से किनारा कर लिया और हर तरह की खबरें रखने लगा। खबरें बेचकर नोट लेना ही अब धंधा है इसका। यहां तक कि पुलिस भी इसके पास आकर खबरें ले जाती है। इसके बारे में हर कोई जानता है और लोग डरते हैं इससे।"

"याकूब मोहम्मद को भी खतरा लगा रहता होगा अंडरवर्ल्ड के लोगों से।" देवराज चौहान ने कहा।

"हां। दो-तीन बार तगड़ा हमला हो चुका है परंतु बच गया। पुलिस की सहायता से उन लोगों को खत्म करवा दिया जो हमला करने वाले थे। पुलिस इसके काम आती है, क्योंकि वो मुफ्त में इससे खबरें लेती हैं।"

"ये इकबाल खान सूरी के बारे में जानकारी रखता होगा?"

"नोट सामने रखेंगे। जानता होगा तो जरूर बोलेगा।"

"अकेला रहता है?"

"दो बीबियां हैं। पांच-सात बच्चे हैं। भरा-पूरा परिवार है। एक बीवी को तो काबुल से भगा लाया था।"

comicsmylife.blogspot.in

वे एक मकान के गेट के सामने जाकर रुके।
भीतर दो-तीन बच्चे खेलते दिखे।
"ऐ बच्चो।" बशीर बोला—"याकूब मियां घर पर हैं?"
"हां, अब्बा हैं।" एक बच्चे ने ऊंचे स्वर में जवाब दिया।
"बुलाना तो।" कहकर बशीर ने गेट खोला और वे दो कदम भीतर गए।
दूसरा बच्चा दौड़ता हुआ खुले दरवाजे से भीतर चला गया।
फौरन ही बच्चा बाहर आ गया। उसके पीछे-पीछे चालीस साल का व्यक्ति भी आया। उसके चेहरे पर दाढ़ी थी। पठानी कमीज-सलवार पहन रखी थी। गोरा रंग। सामान्य कद।
"याकूब मियां, कैसे हो?" बशीर मुस्कराकर कह उठा।
"तुम लोग कौन हो?" पास आ पहुंचा याकूब।
"धंधे की बात करने आए हैं।" बशीर धीमे से बोला।
"क्या?"
"इस ब्रीफकेस में नोट भरे हैं। भीतर चलकर बात करें तो ठीक रहेगा।"
याकूब ने दो पल सोचा फिर सिर हिलाकर, पलटता कह उठा।
"आओ।"
वो तीनों मकान के भीतर पहले कमरे में पहुंच गए, जो कि छोटा-सा ड्राइंग रूम था। बशीर ने सैंटर टेबल पर ब्रीफकेस रखकर उसे खोल दिया।
भीतर नोट भरे पड़े थे। गड्डियां लगी हुई थीं।
याकूब की आंखें सिकुड़ीं। तभी तीस वर्ष की पेट निकली औरत वहां पहुंची और नोटों को देखकर ठिठक गई।
"बेगम।" याकूब बोला—"चाय-पानी का इंतजाम करो।"
वो वहीं खड़े-खड़े गर्दन घुमाकर बोली।
"रुखसाना। पानी ले आ और तीन चाय का पानी चढ़ा दे। मेहमान आए हैं।"
"ठीक है।" भीतर से दूसरी स्त्री की आवाज आई।
याकूब ने देवराज चौहान और बशीर को देखकर कहा।
"क्या चाहते हो?"
"छोटी-सी खबर पानी है। बताओगे तो ये पंद्रह लाख हैं, तुम्हारे हो जाएंगे।" बशीर बोला।
"सच में पंद्रह लाख हैं।" औरत कह उठी।
याकूब ने नाराजगी भरी निगाहों से औरत को देखा।
"आप बैठिए भाभी।" बशीर ने मीठे स्वर में बोला—"खड़ी क्यों हैं। हम आपके भाई के बराबर हैं।"

"हां-हां, क्यों नहीं।" औरत ने कहा और आगे बढ़कर सोफे पर आ बैठी।
तभी भीतर से दूसरी औरत आई और पानी के गिलास रख गई।
"चाय के साथ बिस्कुट, केक वगैरह भी ले आना।" सोफे पर बैठी औरत ने, दूसरी औरत से कहा।
"क्या जानना चाहते हो?" याकूब ने पूछा।
"इकबाल खान सूरी के बारे में।"
याकूब बुरी तरह चौंका।
"क्या बकवास कर रहे हो। मैं किसी इकबाल खान सूरी को नहीं जानता।" याकूब कह उठा।
"क्या बात करते हो।" पास बैठी औरत कह उठी—"परसों ही तो तुम इकबाल खान सूरी की बात मुझसे कर रहे थे कि वो हिन्दुस्तान का भगौड़ा है। दुबई का आका बन चुका है और पाकिस्तान में भी...।"
"चुप रहो।" याकूब झल्लाया।
"मैंने गलत क्या कह दिया। सच ही तो...।"
"चुप रहो। तुम यहां से उठकर क्यों नहीं चली जातीं।" याकूब ने गुस्से से कहा।
"क्यों जाऊं। अपने भाईजान के पास बैठी हूं।"
"ठीक ही तो कह रही हैं।" बशीर पुनः मुस्कराया—"हम घर के ही लोग हैं।"
"मैं किसी इकबाल खान सूरी को नहीं...।"
"गलत मत कहो। अभी हमारी बहन ने कहा है कि परसों तुम उसकी बात कर रहे थे।" बशीर ने कहा।
याकूब के चेहरे पर बेचैनी दिखने लगी।
"चाहते क्या हो?"
"इकबाल खान सूरी का ठिकाना जानना है कि वो इस्लामाबाद में कहां पर...।"
"दिमाग खराब हो गया है तुम्हारा। मेरे पास उसकी कोई खबर नहीं है।" याकूब ने कहा।
औरत ने नोटों को देखा फिर याकूब से कह उठी।
"तुम्हारे पास उसकी खबर न होती तो परसों तुम मेरे से उसकी बात न करते।"
"तुम चुप रहो।"
"पंद्रह लाख सामने रखा है और तुम कह रहे हो कि उसकी खबर नहीं है।"

comicsmylife.blogspot.in

"उसके बारे में मुंह खोलना मौत को दावत देना है बेगम। पंद्रह लाख का लालच मत...।"

"तुम कब से किसी से डरने लगे। कितने बहादुर हो तुम। फिर घबराते क्यों हो?"

याकूब ने आहत भाव से अपनी बेगम को देखा।

"बता दो इन्हें। उसका ठिकाना ही तो जानना चाहते हैं।"

"मैं नहीं जानता।"

"भाईजान ये झूठ बोल रहे हैं। इन्हें सब पता रहता...।"

"तुम यहां से जाओ बेगम। ये मर्दों की बात है।"

"मैं तो यहीं बैठूंगी। महीने भर से हाथ तंग चल रहा है अब पैसे घर में आए हैं तो...।"

"ये इकबाल खान सूरी के बारे में जानना चाहते...।"

"बता दो।"

याकूब होंठ भींचकर रह गया।

देवराज चौहान और बशीर की निगाह याकूब पर थी।

"तुम लोग कौन हो?" याकूब बोला।

"मैं हिन्दुस्तानी हूं। देवराज चौहान नाम है मेरा।"

"हिन्दुस्तानी हो?" याकूब संभल गया।

"हां। कल ही हिन्दुस्तान से...।"

"सुन लिया बेगम। ये हिन्दुस्तानी है।"

"तो क्या हो गया। हिन्दुस्तानी क्या इंसान नहीं होते फिर नोट तो पाकिस्तानी है।" बेगम कह उठी।

"इकबाल खान सूरी पिचासी पुलिस वालों को मारकर हिन्दुस्तान से भागा हुआ है।" देवराज चोहान ने शांत स्वर में कहा—"वो हिन्दुस्तान का अपराधी है जो दुबई और पाकिस्तान में रहता है। मैं पहले दुबई गया तो वहां से पता चला कि इकबाल खान महीने भर से इस्लामाबाद में है। अब यहां आया हूं। मेरे खयाल में तुम बता सकते हो कि वो कहां पर है।"

"हिन्दुस्तान की पुलिस के आदमी हो?"

"नहीं?"

"किसी सरकारी एजेंसी के हो?"

"नहीं। मैं किराए पर काम कर रहा हूं। पैसा लेकर ये काम कर रहा हूं

"ये काम से तुम्हारा मतलब?"

"इकबाल खान सूरी को खत्म करने का काम मुझे दिया गया है।"

याकूब ने गहरी सांस ली फिर बोला।

"वैसे तुम करते क्या हो?"

"लोग मुझे डकैती मास्टर देवराज चौहान कहते...।"

"वो, वो, तुम वो देवराज चौहान हो।" याकूब चौंका।

"हैरान क्यों हुए?"

"तुमने पाकिस्तान आकर अली को मारा था। तुम्हारे साथ मोना चौधरी भी थी।" (ये सब जानने विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **राजा पॉकेट बुक्स** से प्रकाशित अनिल मोहन का उपन्यास **'WANTED अली'**।)

"सब खबर रखते हो।" देवराज चौहान बोला।

"रखनी पड़ती है। ये ही धंधा है मेरा। सुना बेगम।"

"क्या?"

"तुम्हारे भाईजान हिन्दुस्तान के बहुत बड़े डकैती मास्टर निकले। ऐसे रिश्तेदार हैं तुम्हारे।"

"ये मेरे भाईजान हैं। ऐसे-वैसे नहीं हैं।" बेगम ने हाथ हिलाकर कहा—"कितने शरीफ हैं। देख नहीं रहे।"

याकूब ने बेगम को घूरा।

"मुझे मत देखो। उधर बात करो।"

"अब तुम्हें इकबाल खान सूरी का पता चाहिए।" याकूब गम्भीर स्वर में बोला।

"हां।"

"गुणी आदमी हो। वरना अली को न मार पाते। शायद इकबाल खान सूरी तक भी पहुंच जाओ। परंतु मैं तुम्हें कुछ नहीं बता सकता। इस बारे में बात करना भी नहीं चाहता। इकबाल के हाथ बहुत लम्बे हैं, वो मेरी जान...।"

"ये बात हम तक ही रहेगी।" देवराज चौहान ने कहा।

"मैं जानता हूं कि बात बाहर निकल जाती है।" याकूब बेचैनी से बोला।

"एक हिन्दुस्तानी का वादा है कि ये बात कभी बाहर नहीं जाएगी।"

"हिन्दुस्तानियों के वादे का एतबार नहीं।"

"तो मेरे भाईजान के वादे का एतबार कर लो। ये तुम्हारा नाम कभी नहीं लेंगे कि तुमसे उसके बारे में पता लगा। क्यों भाईजान मैंने सही कहा न?" बेगम गर्दन हिलाकर कह उठी।

"बात बाहर नहीं जाएगी बहन।"

"अब तो सुन लिया।" बेगम हाथ हिलाकर बोली।

याकूब परेशान दिख रहा था।

"सोच क्या रहे हो?" बेगम ने नोटों को देखकर कहा।

याकूब ने गम्भीर निगाहों से दोनों को देखते हुए कहा।

"ये बड़ी खबर है। पंद्रह लाख वाली खबर नहीं है।"

"क्या चाहते हो?" बशीर बोला।

comicsmylife.blogspot.in

याकूब खामोश रहने के पश्चात कह उठा।

"मेरी बात पर भरोसा करो कि मैं सच में ठीक से नहीं जानता कि इकबाल खान सूरी का ठिकाना कहां है।"

"लेकिन कुछ जानते हो?"

"हां, कुछ जानता हूं।" याकूब गम्भीर और बेचैन था।

"वो कुछ ही बता दो।"

"कीमत बढ़ाओ। हिन्दुस्तान उस कुछ की बहुत बड़ी कीमत दे सकता है।"

"तुम हिन्दुस्तान से नहीं, हमसे बात कर रहे हो।" देवराज चौहान ने कहा—"इस जानकारी की हम तुम्हें ज्यादा कीमत नहीं दे सकते। ये पंद्रह लाख है थोड़े-बहुत और डाल सकते हैं बीच में...।"

"पचास लाख लूंगा।"

"ठीक है भाई साहब।" बेगम जल्दी से कह उठी—"अब मना मत करना, पचास लाख पूरा कर दो।"

"ज्यादा है।" बशीर गम्भीर स्वर में बोला—"मैं इतना नहीं दे सकता

"तो कितना दे सकते हैं भाईजान?"

"दस लाख और दे सकता हूं—बस।"

"पंद्रह-दस-पच्चीस हो गया। मैंने कहा जी ठीक है। हमारा काम चल जाएगा। खामखाह अड़ना मत।" फिर वो बशीर से कह उठी—"भाई जान आप दस लाख और दो और जो पूछना है पूछ लो।"

"मंजूर है याकूब?" बशीर ने पूछा।

"इनसे क्या पूछते हो भाईजान। मैंने हां कह दी तो हां हो गई। ये मेरी मुट्ठी में हैं।" बेगम ने जल्दी से कहा।

याकूब व्याकुल-सा खामोश रहा।

"मैं दो घंटे में दस लाख लेकर आता हूं।" बशीर ने उठते हुए कहा और बाहर निकल गया।

"रुखसाना।" बेगम ने आवाज लगाई—"चाय नहीं आई अभी तक। मुझे ही देखना पड़ेगा।" वो उठते हुए देवराज चौहान से कह उठी—"ये ब्रीफकेस मैं भीतर ले जाती हूं, भला यहां पर इसका क्या काम।" वो ब्रीफकेस उठाए भीतर चली गई।

देवराज चौहान और याकूब की नजरें मिलीं।

"कितने लोग हो तुम?" याकूब ने गम्भीर स्वर में पूछा।

"दो।" देवराज चौहान बोला।

"ये जो साथ आया था, जो पैसा लेने गया है—ये?"

"नहीं। मेरा साथी दूसरा है जो हिन्दुस्तान से मेरे साथ आया है।"

"सिर्फ दो हो?"

"हां।"

"जानते हो इस काम में कितना खतरा है।"

"जानता हूं।"

"इक़बाल खान सूरी के करीब फटकना आसान काम नहीं। इस बार मारे जाओगे।"

"मैं इस बात की चिंता नहीं करता।"

"इरादे बुलंद है?"

"पूरी तरह।"

"इकबाल खान के आसपास खतरनाक लोग उसकी रक्षा करते हैं। नसरीन शेख उसकी सुरक्षा के काम संभालती है। मैंने उसे देखा तो नहीं, पर सुनने में आया है कि वो शेरनी से भी ज्यादा खतरनाक है।"

"सही सुना है। मैं उससे मिल चुका हूं दुबई में।"

"कैसे मिले?"

"हो गई मुलाकात।"

याकूब कुछ पल देवराज चौहान को देखने के बाद बोला।

"हिन्दुस्तान की किस एजेंसी ने तुम्हें इकबाल खान सूरी के पीछे लगाया है?"

"खुफिया विभाग वालों ने।"

"परंतु ये काम तो हिन्दुस्तान की आई-बी का है, देश के बाहरी मसलों को...।"

"जरूरी कुछ भी नहीं है। कुछ काम ऐसे होते हैं जो कोई करे काम पूरा होना चाहिए।"

"तगड़ा पैसा मिला होगा तुम्हें?"

"तुम इस बारे में मत सोचो। जान भी तो जा सकती है।" देवराज चौहान ने कहा।

"एक बात तो पक्का है कि अली की तरह तुम्हें इस बार शायद कामयाबी न मिले।"

"क्यों?"

"इकबाल खान सूरी पर हाथ डालना बहुत मुश्किल है। उस तक पहुंच पाना भी सम्भव नहीं।"

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।

"इकबाल खान सूरी जानता है कि तुम उसके पीछे हो?" याकूब ने पूछा।

"हां।"

"देखो, मुझे मुसीबत में मत डाल देना अगर इकबाल खान के हाथ लग गए तो मेरा नाम मत...।"

comicsmylife.blogspot.in

"आप भी कमाल करते हैं।" बेगम चाय की ट्रे पकड़े भीतर प्रवेश करते कह उठी—"मेरे भाईजान पर भरोसा नहीं क्या। मैंने इस बात की गारंटी ली है कि ये मरते मर जाएंगे पर आपका नाम नहीं लेंगे, क्यों भाईजान?"

जवाब में देवराज चौहान उसे देखकर मुस्कराया।

ट्रे टेबल पर रखते कह उठी।

"चाय पीजिए भाई साहब। साथ में बिस्कुट भी है। मैं सोच रही थी कि आपको गाजर-मूली के परांठे बनाकर, ऊपर मक्खन रखकर खिलाऊं, पर ये आपको अपनी बातों से परेशान कर रहे हैं तो मैं पास आकर बैठ जाती हूं। परांठे रुखसाना बना देगी। थोड़े-बहुत जले भी हों तो मना मत करना, खा लेना। मैं तो...।"

"बेगम।" याकूब सख्त स्वर में बोला—"तुम यहां से जाओ।"

"जाने की भी सोच रही थी। वैसे परांठे बनाने का वक्त शायद ही निकले। मैं और रुखसाना नोट गिन रहे हैं। वैसे तो पूरे ही होंगे। पर नोट गिनने का अपना ही मजा होता है। वो मजा तो ले ही लें। आप चाय पीजिए। वैसे ज्यादा देर की बात नहीं है। रुखसाना नोटों को गिनने में बहुत तेज है। मैं जल्दी यहां आ जाऊंगी।" कहकर बेगम बाहर निकल गई।

दोनों चाय पीने लगे।

"मेरी सलाह मानो तो ये काम छोड़ दो।" याकूब गम्भीर स्वर में बोला—"इसे पूरा नहीं कर सकोगे।"

देवराज चौहान ने चाय का प्याला उठाया और घूंट भरने लगा।

"तुम शायद मेरे शब्दों को मजाक समझ रहे हो देवराज चौहान, लेकिन मैं...।"

"मजाक नहीं समझ रहा तुम्हारी बात को।" देवराज चौहान ने सिर हिलाकर कहा—"परंतु इस काम में मैं इतना आगे बढ़ चुका हूं कि वापस नहीं पलट सकता। या तो मैं इकबाल खान सूरी को खत्म करूंगा या वो मुझे मार देगा।"

"तुम ही मारे जाओगे।"

▭ ▭

डेढ़ घंटे में बशीर लौटा। हाथ में एक लिफाफा थाम रखा था।

वहां बैठी बेगम उसे देखते ही कह उठी।

"आइए भाईजान। मैं तो बेसब्री से आपका इंतजार कर रही हूं। बड़ी देर लगा दी आपने। वो पंद्रह लाख तो मैंने गिन लिए हैं। पूरे हैं। उस ब्रीफकेस को तो वापस करने की जरूरत नहीं। उसमें मैं अपनी चूड़ियां डालकर रख लूंगी टूटेगी नहीं। दस लाख नहीं लाए?"

बशीर ने मुस्कराकर हाथ में पकड़े लिफाफे को आगे बढ़ा दिया।

"दस लाख हैं ये भाईजान?" उसने लिफाफा थामते हुए कहा।

"हां।"

"बहुत थोड़े से लग रहे हैं।" उसने लिफाफा खोलकर भीतर झांका। "बड़े नोट हैं।"

"मैं जरा दूसरे कमरे में बैठकर गिन लूं। रुखसाना तो पांच मिनट में गिनती कर लेगी। तब तक आप बातें कीजिए। आपने चाय नहीं पी। पहले की बनी रखी है, मैं उसी को गर्म करके ला देती हूं, नई क्या बनानी। नोट भी तो गिनने हैं।" कहने के साथ ही बेगम लिफाफा थामे कमरे से चली गई।

बशीर बैठता हुआ देवराज चौहान से बोला।

"इसने कुछ बताया?"

"अभी नहीं।"

बशीर ने याकूब को देखा।

"तुम लोग आग से खेलने की कोशिश कर रहे हो।" याकूब ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तुम नोटों से खेलो, जो पच्चीस लाख तुम्हें दिए गए हैं। हमें आग से खेलने दो।" बशीर बोला—"अब फालतू की बात कहना बंद कर के हमारे काम की बात करो जिसके लिए हमने पच्चीस लाख खर्च किए हैं।"

याकूब ने पहलू बदला और होंठ भींचे धीमे स्वर में कह उठा।

"इकबाल खान सूरी शेखाबाद में कहीं पर रह रहा है।"

"शेखाबाद में?" बशीर ने दोहराया।

"हां।"

"शेखाबाद में कहां?"

"ये मैं नहीं जानता। पंद्रह दिन पहले कहीं से ये खबर मिली थी कि इकबाल खान सूरी गुप्त रूप से इस्लामाबाद के शेखाबाद में रह रहा है। उसके साथ मसूद नाम का एक आदमी है। नसरीन शेख को अपने साथ रहने से मना कर दिया है। इकबाल खान सूरी का सोचना है कि नसरीन शेख के साथ रहने की वजह से दुश्मन को उसकी पहचान जल्दी हो जाती है।"

देवराज चौहान और बशीर की नजरें मिलीं।

"शेखाबाद में कहां?" बशीर ने पूछा।

"बोला तो, मैं नहीं जानता।"

"शेखाबाद काफी बड़ा इलाका है याकूब।"

"पूरे इस्लामाबाद में ढूंढ़ने से तो अच्छा ही है कि शेखाबाद में उसे ढूंढ़ो। देर-सबेर में उसका पता लगा ही लोगे या उसे पता चल जाएगा कि उसके दुश्मन शेखाबाद तक भी आ पहुंचे हैं और वो तुम लोगों को खत्म करा देगा।"

comicsmylife.blogspot.in

"तुमने कहा कि उसके साथ सिर्फ मसूद नाम का आदमी है?" देवराज चौहान बोला।

"हां।"

"और भी उसकी सुरक्षा पर तैनात होंगे।"

"तुमने ठीक से सुना नहीं कि मैंने कहा है शेखाबाद में इकबाल खान सूरी गुप्त रूप से रहा है। गुप्त रूप में रहने के लिए जरूरी है कि उसके पास ज्यादा लोग न हों। उसने एक ही आदमी अपने पास रखा है।"

"पक्की खबर है?"

"खबरें बेचना मेरा काम है और जिस खबर का मैंने पच्चीस लाख लिया हो, वो कच्ची कैसे हो सकती है लेकिन किसी भी सूरत में तुम लोग मुंह से ये मत निकालना कि मैंने कुछ बताया...।"

तभी बेगम ने भीतर प्रवेश करते हुए कहा।

"लगे आप फिर वो ही बात करने। भाईजान की गारंटी मैंने ले ली कि ये आपके बारे में किसी को कुछ नहीं बताएंगे। इन पर नहीं तो मुझ पर ही भरोसा कर लो और एक ही बात बार-बार कहकर इन्हें परेशान मत करो। मैं तो ये कहने आई थी कि रुखसाना तेजी से नोटों को गिन रही है। अभी आए दस लाख की गिनती पूरी होने वाली है। इन्हें बिठा के रखना।" कहकर बेगम चली गई। याकूब ने दोनों को देखा।

"हिन्दुस्तानी पर भरोसा रखो।" देवराज चौहान बोला—"तुम्हारा कहीं नहीं आएगा।"

"शुक्रिया।"

"कोई और बात कहना चाहते हो तो कह दो।"

"इकबाल खान सूरी के बारे में इतनी ही जानकारी है मेरे पास।" याकूब ने धीमे स्वर में कहा।

देवराज चौहान और बशीर की नजरें मिलीं। वे उठ खड़े हुए।

याकूब बैठा रहा और बेचैनी भरी निगाहों से उन्हें देखता रहा।

"चलते हैं।" बशीर ने कहा और दरवाजे की तरफ बढ़ गया। देवराज चौहान उसके साथ था।

दोनों बाहर निकल गए।

याकूब ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी। वहीं बैठा रहा। आंखें बंद कर लीं।

"चले गए। चलो अच्छा ही हुआ।" बेगम की आवाज सुनने पर उसने आंखें खोलीं—"नोट भी पूरे हैं। रुखसाना के पांव कितने अच्छे हैं इस घर के लिए। जबसे उसे दूसरी बीवी बनाकर लाए हो, तभी से नोटों की बरसात होने लगी है। मेरी मानो तो तीसरा निकाह भी कर लो। पूरा घर नोटों से भर जाएगा।"

□ □

देवराज चौहान और बशीर गली में आगे बढ़ गए। याकूब से जो जानकारी मिली थी। वो उनके लिए काफी महत्त्वपूर्ण थी। पूरे इस्लामाबाद में इकबाल खान सूरी का पता लगाने से आसान था शेखाबाद को टटोलना। पच्चीस लाख में ये जानकारी महंगी नहीं थी। किसी और सूरत में इतनी जानकारी के करोड़ों दिए जा सकते थे।

"याकूब पर तुम्हें कितना भरोसा है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"वो गलत नहीं कहने वाला। इकबाल खान सूरी के बारे में जानकारी देगा नहीं। दी है तो वो सही है। गलत खबर देने का मतलब वो जानता है कि हम उसे खत्म कर सकते हैं।" बशीर ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मतलब कि तुम्हें पूरा भरोसा है। वो ठीक बोला।"

"लगभग पूरा भरोसा है।"

गली से बाहर आकर वे कार में बैठे।

बशीर ने स्टेयरिंग संभाला और मोबाइल निकालकर नम्बर मिलाने लगा।

"तुम्हारे सब एजेंट भरोसे के हैं?" देवराज चौहान ने कहा।

"हां, क्यों?"

"सोच-समझकर ये खबर आगे बढ़ाना। कोई गद्दार हुआ तो इकबाल खान शेखाबाद से खिसक जाएगा।"

"मैं प्रभाकर को खबर दे रहा हूं। जो कराची में इकबाल खान को तलाश कर रहा है।"

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।

फोन लग गया। बशीर की प्रभाकर से बात हो गई।

"इकबाल खान सूरी इस्लामाबाद में है।" बशीर बोला।

"पक्की खबर है?" उधर से प्रभाकर की आवाज आई।

"हां। पक्की है। उसके एक इलाके में गुप्त रूप से रहने की खबर मिली है।" बशीर ने फोन पर कहा।

"ये अच्छी खबर है। मैं अभी किसी प्लेन में इस्लामाबाद के लिए टिकट बुक कराता हूं। तीन घंटे के भीतर मैं इस्लामाबाद पहुंच जाऊंगा। तुम मुझे कहां मिलोगे?" उधर से प्रभाकर ने पूछा।

"इस्लामाबाद पहुंचकर मुझे फोन कर लेना।"

"ठीक है। देवराज चौहान क्या कर रहा है?"

"इस वक्त वो मेरे साथ ही है। हम दोनों ने मिलकर ही ये खबर हासिल की है।"

"ठीक है। मैं इस्लामाबाद पहुंचकर मिलता हूं।"

बशीर ने फोन बंद करके जेब में रखा और कार आगे बढ़ा दी।

comicsmylife.blogspot.in

"शेखाबाद कैसी जगह है?"

"शेखाबाद रिहायशी इलाका है। उच्च मध्यमवर्गीय लोग वहां बसे हुए हैं। अच्छी कालोनियों में शेखाबाद का नाम आता है। पुरानी कालोनी है और बंटवारे के बाद सरकार ने वहां लोग बसाए थे।"

"वहां से इकबाल खान सूरी को कैसे ढूंढ़ा जाएगा?"

"ये कठिन काम है।" बशीर गम्भीर स्वर में बोला—"हर घर पर नजर नहीं रखी जा सकती। वहां हम ज्यादा एजेंट भी नहीं फैला सकते कि इकबाल खान को सतर्क होने का मौका मिले।"

"तो काम कैसे होगा?" देवराज चौहान ने उसे देखा।

"सोचना पड़ेगा।"

"यहां से शेखाबाद कालोनी कितनी दूर है?"

"एक घंटे का रास्ता है।"

"वहीं चलो। मैं शेखाबाद को देखना चाहता हूं।" देवराज चौहान ने कहा।

बशीर ने सिर हिला दिया।

"याकूब की खबर अगर सही है तो इकबाल खान सूरी को खत्म करने का हमें सुनहरी मौका मिलने वाला है।" देवराज चौहान बोला।

"वो कैसे?"

"उसके पास सिर्फ एक ही आदमी मौजूद है। ऐसे में उसे खत्म करने में कोई दिक्कत नहीं आएगी।"

"ये भूल है तुम्हारी।" बशीर बोला—"उस पर हाथ डालना इतना आसान नहीं होगा, जितना कि तुम सोच रहे हो।"

"अगर उसके साथ एक ही आदमी रहता है तो सब कुछ बहुत आसान होगा।"

"पहले उसका ठिकाना पता तो चले। बाकी बातें बाद की हैं।"

▭ ▭

देवराज चौहान और बशीर शेखाबाद पहुंचे।

कार पर और पैदल भी, वे शेखाबाद की पूरी कालोनी में घूमे। इस काम में उन्हें तीन घंटे लग गए। देवराज चौहान ने कालोनी के रास्तों को अपने दिमाग में बसा लिया था। कालोनी का समाप्ति पर पीछे खेत थे। वहां भी खेत वालों ने खेतों में अपने लिए इक्का-दुक्का मकान बना रखे थे।

इसी काम में उन्हें शाम हो गई।

"क्या कहते हो?" बशीर ने पूछा।

"इस कालोनी में से इकबाल खान सूरी को ढूंढ़ निकालना कठिन काम है।" देवराज चौहान ने कहा।

"लेकिन उसे तलाश तो करना ही है।"

"हमें शायद महीनों का वक्त लग जाए। योजना बनाकर सोच-समझकर यहां इकबाल खान की तलाश शुरू करनी होगी।"

"जनगणना वाले कर्मचारी बनकर, घर-घर जाकर हम...।"

"बेकार प्लान है। ये बात खुलते देर नहीं लगेगी कि सरकार ऐसा कोई काम नहीं करा रही है।"

दोनों कार में आ बैठे। बशीर ने कार आगे बढ़ा दी।

"बिजली कर्मचारी बनकर घर-घर जाकर हम मीटर चैक करने जा सकते...।"

"कोई फायदा नहीं होगा। घरों के मीटर प्रवेशद्वार के आस-पास लगे होते हैं। घर के भीतर नहीं कि हम सारा घर चैक कर सकें। तुम बेकार के प्लान बता रहे हो। कितने एजेंट हैं तुम्हारे पास?"

"पच्चीस-तीस।"

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाकर कश लिया।

"तुम क्या इकबाल खान की तलाश के लिए शेखाबाद में एजेंटों का इस्तेमाल करना चाहते हो?"

"मैं अभी कोई प्लान नहीं बना रहा। इस मामले पर गम्भीरता से सोचना होगा।"

"प्रभाकर कभी भी इस्लामाबाद पहुंच सकता है। उसे तुम्हारे पास लाऊं या कहीं और...।"

"प्रभाकर से पूछ लेना। जैसा वो चाहे, वैसा ही करना।"

"प्रभाकर को जानते हो। पहले मिले हो उससे?"

"हां।"

"फिर तो उसे तुम लोगों के पास ही तो...।"

तभी बशीर का मोबाइल बजने लगा। अब तक अंधेरा फैल चुका था। कार चलाते उसने मोबाइल पर बात की। दूसरी तरफ प्रभाकर ही था।

"मुझे आने में देर हो गई। विमान लेट हो गया।" प्रभाकर की आवाज कानों में पड़ी—"कहां आऊं मैं?"

"एयरपोर्ट पर हो?"

"हां।"

"इंतजार करो तो घंटे तक मैं आ जाता हूं नहीं तो पता सुन लो, जहां पहुंचना है।"

"पता बता दो।"

"देवराज चौहान और जगमोहन के पास रहना चाहोगे या...।"

"इनके साथ ही रहना चाहूंगा।" उधर से प्रभाकर ने कहा।

बशीर ने पता बता दिया।

comicsmylife.blogspot.in

शाम हो चुकी थी।

जगमोहन सुबह से ही घर पर था। दोपहर एक बजे नींद से उठा था, तब तक देवराज चौहान वहां जा चुका था। जगमोहन जानता था कि उसने, बशीर के साथ कहीं पर जाना था। बाकी का वक्त उसे नहा-धोकर, कुछ खाकर फ्लैट पर ही बिताया कि कुछ पल पहले ही कॉलबेल बजी थी। तब वो टी. वी. देख रहा था। देवराज चौहान आया होगा ये सोचकर उसने दरवाजा खोला कि ठिठक गया। सामने अंजान व्यक्ति खड़ा था। उसने हाथ में दबा मोबाइल जगमोहन की तरफ बढ़ाया।

जगमोहन की आंखें सिकुड़ गईं।

"क्या है?" जगमोहन ने पूछा।

"ये तुम्हारे लिए है।" उस आदमी ने आगे बढ़कर, जबर्दस्ती फोन जगमोहन को थमा दिया।

"ये क्या कर रहे हो?"

तब तक वो व्यक्ति पलटकर सीढ़ियों की तरफ बढ़ चुका था।

"तुम कौन हो और ये फोन मुझे क्यों दे रहे हो?" पीछे से जगमोहन कह उठा।

तब तक वो व्यक्ति सीढ़ियों से उतरकर नजर आना बंद हो चुका था।

जगमोहन ने हाथ में दबे मोबाइल को देखा कि अगले ही पल उसकी आंखें सिकुड़ीं। कामनी का चेहरा आंखों के सामने नाच उठा। दुबई में भी अलजीरा होटल में कामनी ने इसी तरह मोबाइल पहुंचाया था तो क्या अब भी ये फोन कामनी ने भेजा है? जगमोहन उलझन में पड़ चुका था।

जगमोहन ने दरवाजा बंद किया और मोबाइल सैंटर टेबल पर रखकर कॉफी बनाने किचन में चला आया। उलझन चेहरे पर छाई थी कि यकीनन ये फोन कामनी ने भेजा होगा। देवराज चौहान ने गुलफाम को यहां का पता बता दिया था।

अभी कॉफी पूरी न बना पाया था कि फोन बजने की आवाज कानों में पड़ने लगी। जगमोहन ने गैस बंद की और वापस ड्राईंगरूम में पहुंचा। सैंटर टेबल पर रखा मोबाइल बज रहा था।

आगे बढ़कर जगमोहन ने मोबाइल उठाया और बात की।

"हैलो।"

"इस्लामाबाद कैसा लगा?" कामनी की शांत आवाज उसके कानों में पड़ी।

"तुम? तो तुमने फोन भेजा। जैसे कि दुबई में भेजा था।" जगमोहन सोफे पर जा बैठा।

"बुरा लगा क्या?"

"नहीं। मेरी भी शादी नहीं हुई और तुम्हारी भी नहीं हुई। बात चलाई जा सकती है।"

"तुम क्या करोगे शादी करके?"

"जो लोग करते हैं शादी करके, वो ही मैं करूंगा।"

"इस्लामाबाद तुम लोगों की जिंदगी का आखिरी शहर बनने वाला है।" कामनी की आवाज कानों में पड़ी।

"ये ही कहने के लिए तुमने फोन किया है।"

"दुबई में मैंने तुम लोगों की जान बख्श दी, परंतु इस्लामाबाद में मौत तुम लोगों को खा जाएगी। इकबाल खान सूरी तक पहुंचने से पहले मुझे रास्ते से हटाना होगा, जो कि तुम लोगों के लिए सम्भव नहीं। मरोगे तुम दोनों।"

"देवराज चौहान कहता है कि तुम खामखाह का ड्रामा कर रही हो, जबकि तुम भी इकबाल खान सूरी की मौत...।"

"जल्दी मरोगे तुम दोनों। देवराज चौहान से मेरी बात करा।"

"वो यहां नहीं है। हमारी शादी के लिए घोड़ी-बाजा बुक कराने गया है।"

"मेरे से मजाक करना तुम्हें बहुत महंगा...।"

"कितना भी महंगा हो मैं कीमत चुका दूंगा। अब तुम्हें इकबाल खान सूरी के बारे में बता देना चाहिए।"

"मैंने तुम्हें एक मौका देने के लिए फोन किया है।"

"बोलो।"

"जिंदा रहना चाहते हो तो पाकिस्तान छोड़ दो।" कामनी की गुर्राहट कानों में पड़ी।

"तुमने दुबई छोड़ने को कहा था, हम दुबई छोड़कर पाकिस्तान आ गए। अब पाकिस्तान छोड़ने को कह रही हो तो तुम्हारी बात टालेंगे नहीं। पाकिस्तान से भी चले जाएंगे। अब तक तुम्हें इकबाल खान का पता बता देना चाहिए बाकी हम संभाल लेंगे।"

"तो तुम अपनी जान गंवाकर ही रहोगे।"

"अगर तुमने हमारी जान लेनी होती तो यहां फोन न भेजती, अपने आदमी भेजती।"

"अभी तक मैं रियायत से काम ले रही थी। सूरत में देवराज चौहान ने मेरी जान बचाई थी। जब भी मैं सख्त कदम के बारे में सोचती हूं तो वो वक्त मेरे सामने आ जाता है। परंतु अब बहुत हो चुका है। अब रियायत की और गुंजाइश नहीं रही। शेखाबाद में मरो या इस्लामाबाद में, मरोगे तुम लोग जल्दी ही और...।"

"शेखाबाद जगह का नाम है?"

comicsmylife.blogspot.in

"हां।" कामनी की गुर्राहट कानों में पड़ी—"जहां भी मरना चाहते हो, अपनी पसंद की जगह चुन लो।"

"शेखाबाद में खास क्या है मरने को?" जगमोहन के स्वर में व्यंग था।

"वहां सब कुछ खास है। तुम दोनों की मौत भी खास होगी। शेखाबाद में मरने में तकलीफ कम होती...।"

"अगर हम दोनों शेखाबाद में शादी करें तो...।"

उधर से कामनी ने फोन बंद कर दिया था।

जगमोहन ने होंठ सिकोड़कर फोन कान से हटाया और टेबल पर रख दिया। वो समझने की कोशिश कर रहा था कि कामनी ने फोन क्यों किया? क्या कहना चाहती थी वो? ऐसा तो कुछ भी नहीं कहा कि देवराज चौहान की बात सच हो कि वो भी इकबाल खान सूरी की मौत चाहती है।

जगमोहन कुछ नहीं समझा।

परंतु कई बार उसकी सोचें शेखाबाद पर आकर रुकीं। सोचों में डूबे उसने मोबाइल पुनः उठाया और महबूब का नम्बर मिलाने लगा। महबूब का नम्बर याद था उसे।

"हैलो।" अगले ही पल महबूब की आवाज कानों में पड़ी।

"मैं जगमोहन...।"

"पहचाना, कहो, कहां आना है?"

"कहीं भी नहीं। ये शेखाबाद क्या है?"

"इस्लामाबाद की एक जगह का नाम है। कालोनी है।" उधर से महबूब ने कहा।

"शेखाबाद में खास क्या है?"

"खास तो कुछ भी नहीं। कालोनी है। लोग रहते हैं।" महबूब ने सोच-भरे स्वर में कहा।

"फिर बात करूंगा।" कहकर जगमोहन ने फोन बंद कर दिया। परंतु मस्तिष्क में शेखाबाद घूम रहा था कि कामनी ने शेखाबाद का नाम क्यों लिया? कोई तो वजह होगी। बिना वजह तो शेखाबाद का जिक्र करने से रही।

▭ ▭

डेढ़ घंटे बाद देवराज चौहान आ गया।

"बशीर साथ नहीं आया?" जगमोहन ने पूछा।

"उसे कुछ काम था। कल आएगा।" देवराज चौहान ने कहा—"थोड़ी-सी सफलता मिलती लगी है आज।"

"क्या?"

"किसी याकूब नाम के आदमी से मिले थे जो कि खबरें रखता है ऐसी। उसने पच्चीस लाख लेकर हमें उस इलाके का पता बता दिया। जहां इकबाल खान सूरी गुप्त रूप से रह रहा है। कामनी सावधानी के नाते उसके साथ नहीं रहती।"

"अकेला रहता है इकबाल खान?"

"साथ में मसूद नाम का एक आदमी है।"

"कहां पर है इकबाल खान सूरी?"

"शेखाबाद में।"

जगमोहन बुरी तरह चौंका।

"शेखाबाद? ओह भगवान, मैं क्यों नहीं समझ पाया कामनी की बात?" जगमोहन के होंठों से निकला।

"कामनी?" देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा—"क्या वो आई थी?"

"उसने फोन भेजा था। कोई दे गया। फिर कामनी का फोन आया। उसने अपनी बातों में शेखाबाद का नाम लिया।"

देवराज चौहान की निगाह टेबल पर रखे मोबाइल पर पड़ी।

"क्या बात हुई कामनी से?"

जगमोहन ने सारी बात बता दी।

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाकर कश लिया।

"अब ये बात तो स्पष्ट हो गई कि इकबाल खान सूरी शेखाबाद में ही है।" देवराज चौहान बोला—"कामनी जानती है कि हम उसे नहीं ढूंढ़ सकेंगे, ऐसे में हमें आगे बढ़ने का रास्ता बता रही है।"

"तो तुम्हारा खयाल ठीक निकला कि वो भी इकबाल खान सूरी की मौत चाहती है।" जगमोहन ने कहा।

"इसका एहसास मुझे दुबई में ही हो गया...।"

"तो वो स्पष्ट क्यों नहीं बता देती कि इकबाल खान सूरी का सही ठिकाना कहां पर है?"

"उसे भी तो खतरा है। वो सतर्कता बरत रही है।" देवराज चौहान ने जगमोहन को देखा—"अगर इकबाल खान सूरी को उसके इरादे की जरा भी भनक पड़ गई तो वो उसे खड़े पांव खत्म कर देगा।"

"शेखाबाद के बारे में बता सकती है तो दो लाइनें और भी बता सकती...।"

"ये तुम कहते हो। परंतु उसे भी किसी बात का डर होगा, जो सीधे-सीधे मुंह नहीं खोल रही। मेरे खयाल में इकबाल खान सूरी की मौत का फायदा उठाकर वो उसकी दौलत की मालकिन बनना चाहती है। इसके अलावा तो कोई और वजह मुझे नजर नहीं आती कि वो इकबाल खान की मौत चाहे।" देवराज चौहान ने सोच-भरे स्वर में कहा—"जो भी हो, कामनी हमारे साथ

comicsmylife.blogspot.in

है और मुझे पूरा यकीन है कि वो हमें जल्दी ही इकबाल खान सूरी का सही ठिकाना बता देगी।"

"पता नहीं वो क्या चाहती है। उससे पहले ही हम वहां से इकबाल खान को ढूंढ़ लेंगे।"

"ये आसान नहीं जगमोहन। बशीर के साथ जाकर मैंने शेखाबाद की कालोनी देखी है। वो काफी बड़ी है। लाखों की संख्या में वहां मकान हैं। ऐसे में इकबाल खान किस घर में छिपा रह रहा है। पता लगाना आसान नहीं। हमारे सामने काफी बड़ी समस्या आ खड़ी हुई है कि शेखाबाद में इकबाल खान को कैसे तलाशा जाए।"

"वहां पर अपने ज्यादा आदमियों का भी इस्तेमाल नहीं कर सकते। इससे इकबाल खान सूरी तक ये बात पहुंच जाने का खतरा है कि शेखाबाद में अचानक ही अंजान चेहरे घूमते दिखाई देने लगे हैं।" जगमोहन बोला।

इस तरह की कई समस्याएं हमारे सामने आ रही हैं।" देवराज चौहान ने कश लिया।

"इसका कोई रास्ता तो निकालना पड़ेगा कि पता चल सके कि शेखाबाद में इकबाल खान सूरी कहां पर मौजूद है। ये भी जाहिर है कि वो अपनी जगह से, पहचाने जाने के डर से बाहर नहीं निकलता होगा। उसके साथ जो मसूद नाम का आदमी है, वो ही बाहर आता-जाता होगा और हम मसूद को पहचानते भी नहीं।"

देवराज चौहान ने होंठ सिकोड़कर, जगमोहन को देखा।

"कोई खास बात?" जगमोहन ने पूछा।

"हमें इकबाल खान सूरी की जगह मसूद की तलाश करनी चाहिए। उसे ढूंढ़ना आसान होगा।" देवराज चौहान बोला।

"कहा तो मसूद को हम पहचानते नहीं।"

"किसी प्रकार मसूद की पहचान करनी होगी।"

"कैसे?"

"इकबाल खान शेखाबाद में करीब महीने-भर से रह रहा होगा। क्योंकि लगभग इतना समय पहले ही वो दुबई से इस्लामाबाद पहुंचा है। महीना नहीं तो पच्चीस दिन से रह रहा होगा। ऐसे में मसूद अक्सर अपने ठिकाने से बाहर आकर पास की दुकानों से, रोजमर्रा की चीजें लेता होगा, जैसे ब्रेड, मक्खन, दूध, छोटा-मोटा सामान और भी तो हम दुकानों से पूछताछ करके ऐसे आदमी की पहचान कर सकते हैं, जो पच्चीस-तीस दिनों से वहां आना शुरू हुआ हो।"

"ये बात जंची नहीं।" जगमोहन ने इंकार में सिर हिलाया।

"क्यों?"

"दुकानों पर से इस तरह की पूछताछ की खबर मसूद को मिल जाएगी। वो अकेला ही इकबाल खान सूरी की रखवाली कर रहा है तो यकीनन शातिर होगा। इकबाल खान ने उसे साथ रखने को यूं ही नहीं चुना होगा। उसकी नजर हर तरफ रहती होगी। वो कभी भी लापरवाह नहीं होता होगा। ये तरीका ठीक नहीं रहेगा।" जगमोहन बोला।

"तो हम ऐसा कर सकते हैं कि दुकानों पर नजर रखें और संदिग्ध व्यक्ति का पीछा करें।"

"समस्या तो ये है कि हम मसूद की उम्र भी नहीं जानते कि बीस वर्ष के युवक पर नजर रखें या पचास साल के आदमी पर।"

"तुम ठीक कहते हो। हमारे पास मसूद के बारे में जानकारी नहीं है। वो ही ऐसा सूत्रधार है कि जिसके दम पर हम इकबाल खान सूरी तक पहुंच सकते हैं।" देवराज चौहान ने होंठ भींचकर कहा।

"कामनी का फोन आए तो उससे मसूद के बारे में जानकारी ली जा सकती...।"

"भरोसा नहीं कि वो बताए।"

"वो भी तो चाहती है कि इकबाल खान सूरी मारा जाए।"

"ऐसा अवश्य चाहती है वो, परंतु वो पर्दे के पीछे रहना चाहती है। पर्दे के सामने नहीं आना चाहती। वो शायद इकबाल खान की मौत के साथ अपना नाम जोड़ना नहीं चाहती।" देवराज चौहान ने कहा—"वो अगर इकबाल खान की दौलत को अपना बनाने का इरादा बनाए हुए है तो ये तभी हो सकता है, जब वो इस सारे झंझट से दूर रहे।"

"इकबाल खान मर गया तो उसे किस बात का डर?"

"इकबाल खान सूरी के दसियों खास आदमी होंगे। जो इकबाल खान का बहुत कुछ संभालते होंगे। ऐसे में कामनी का नाम इकबाल खान की मौत के साथ जुड़ा तो वो कैसे पसंद करेंगे कि कामनी उसकी बड़ी बन जाए।"

जगमोहन ने सिर हिलाया फिर बोला।

"सवाल ये है हमारे सामने कि हम कैसे पता लगाएं कि इकबाल खान सूरी शेखाबाद में कहां पर छिपा है।"

देवराज चौहान कुछ कहने लगा कि तभी कॉलबेल बजी

"कौन आया होगा?" जगमोहन के होंठों से निकला।

"प्रभाकर होगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"प्रभाकर?" जगमोहन चौंका—"वो तो कराची में...।"

"बशीर ने दोपहर में उसे खबर दे दी थी कि इकबाल खान इस्लामाबाद में है। उसे यहां का पता भी दे दिया था।"

जगमोहन तब तक दरवाजे के पास पहुंच चुका था। दरवाजा खोला

comicsmylife.blogspot.in

सामने सूटकेस थामे प्रभाकर ही खड़ा था।

"आओ दोस्त।" जगमोहन पीछे हटता कह उठा।

प्रभाकर भीतर आया।

जगमोहन ने दरवाजा बंद किया।

सूटकेस एक तरफ रखकर प्रभाकर कह उठा।

"एक बात तो है। पाकिस्तान का कोई भी शहर ले लो, सब कुछ हिन्दुस्तान जैसा ही दिखता है। लगता ही नहीं कि हम हिन्दुस्तान से बाहर हैं। कभी-कभी तो मैं भूल भी जाता हूं कि ये पाकिस्तान है।"

"ये पाकिस्तान ही है। ये बात हमेशा याद रखना।" जगमोहन बोला।

"कोई खास बात हुई क्या?"

"यहां इकबाल खान सूरी जैसा हिन्दुस्तान का अपराधी मजे से पनाह लिए हुए है।"

प्रभाकर गहरी सांस लेकर रह गया फिर बोला।

"देवराज चौहान कहां है?"

"ड्राइंग रूम में—आओ।"

जगमोहन और प्रभाकर ड्राइंगरूम में पहुंचे।

देवराज चौहान और प्रभाकर एक-दूसरे को देखकर मुस्कराए।

"इकबाल खान सूरी इस्लामाबाद में है और मैं उसे कराची में ढूंढ़ता रहा। उसके वहीं होने की खबर मुझे मिली थी।" प्रभाकर बैठता हुआ कह उठा—"जहां भी हो, पता तो चल गया कि वो यहां है। किसी ने उसे देखा?"

"नहीं।"

"तो कैसे पता चला?"

"इसके लिए तुम्हें शुरू से ही सब कुछ जानने की जरूरत है। बार-बार तुम सवाल न पूछो, इसलिए मैं तुम्हें हर वो बात बता देता हूं। जिसे जानने-पूछने की तुम्हें जरूरत पड़ेगी।" देवराज चौहान ने कहा।

प्रभाकर ने सिर हिला दिया।

"तब तक मैं कॉफी तैयार कर लेता हूं।" जगमोहन ने कहा और बाहर निकल गया।

▭ ▭

देवराज चौहान, जगमोहन और प्रभाकर कॉफी के घूंट ले रहे थे। देवराज चौहान, प्रभाकर को सब कुछ बता चुका था। वो भी अब हालातों से उतना ही वाकिफ था जितना कि देवराज चौहान और जगमोहन।

"ऐसे में तो गम्भीर समस्या है शेखाबाद से इकबाल खान सूरी को ढूं निकालने की।" प्रभाकर ने कहा—"मेरे खयाल में तुम्हें कामनी का फोन आने का इंतजार करना चाहिए। शायद वो कुछ इशारा दे दे।"

"उसका फोन दस दिन न आया तो हम क्या इसी तरह बैठे रहेंगे?" देवराज चौहान बोला।

"ये भी चिंता का विषय है।" प्रभाकर कह उठा।

"हमें इकबाल खान को ढूंढ़ने का काम अपनी तरफ से, कल से ही शुरू कर देना चाहिए।" जगमोहन बोला।

"कैसे?"

"हम दुकानों पर नजर रखेंगे। इलाके के भीतर हर गली-मोहल्ले में दुकानें बनी हुई हैं।" देवराज चौहान ने कहा—"एक तरफ तो कतार में बनी दुकानों की काफी बड़ी मार्किट है। इकबाल खान सूरी के पास टिका आदमी, कम उम्र का तो होगा नहीं। अनुभवी होगा। ऐसे में उसकी उम्र तीस से ऊपर होनी चाहिए। तीस से चालीस तक के उम्र के आदमी पर हम खास नजर रखेंगे। जो दुकान से सामान लेकर जा रहा हो और हमारे शक के दायरे में आ जाए।"

"हमारा शक का दायरा क्या होगा?"

"ऐसा आदमी खामोशी से दुकान पर आएगा और सामान लेकर चल देगा। वो किसी भी आलतू-फालतू आदमी से बात नहीं करेगा। क्योंकि वो इलाके में नया है और किसी को जानता नहीं होगा कोई उसे नहीं जानता होगा। मसूद नाम का वो आदमी, किसी भी कीमत पर लोगों से मिलना-बात करना पसंद नहीं करेगा। इसके लिए हमें उन दुकानों पर नजर रखनी होगी, जहां से दूध, अंडे-ब्रेड और दाल-चावल मिलते हों। रोजमर्रा की चीजों वाली दुकान हो।"

"ऐसी बहुत दुकानें होंगी उस इलाके में।" प्रभाकर ने देवराज चौहान को देखा।

"मेरे खयाल में ऐसी चालीस दुकानें तो होनी ही चाहिए। इलाका बड़ा है।" देवराज चौहान ने कहा—"इसी अंदाजे से हम इस मामले में आगे बढ़ेंगे कि मसूद की उम्र तीस से चालीस तक की होगी, वो पैंतालीस का भी हो सकता है। जो भी हमारे शक के दायरे में आएगा, उसके पीछे जाना होगा।"

"इस काम में वक्त भी लग सकता है।"

"कुछ भी वक्त लग सकता है। दो दिन में भी काम हो सकता और तीन महीने भी लग सकते हैं।"

"बशीर से बात की इस बारे में?" प्रभाकर ने पूछा।

"पूरी तरह नहीं। वो कहता है उसके पास 30-35 एजेंट हैं।"

"इतनों से हमारा काम चल जाएगा।" प्रभाकर ने सिर हिलाया।

"परंतु शंका ये है कि उनमें से कोई गद्दार न हो।" जगमोहन बोला—"कोई इकबाल खान तक ये खबर न पहुंचा दे कि हम क्या कर रहे हैं शेखाबाद में। ऐसा हुआ तो हमारी कोशिश फेल हो जाएगी।"

comicsmylife.blogspot.in

"हमारा कोई एजेंट गद्दार नहीं होना चाहिए। फिर भी सावधानी के नाते हम एजेंटों को सिर्फ काम के बारे में बताएंगे, उन्हें ये नहीं बताएंगे कि ये मामला इकबाल खान सूरी से वास्ता रखता है।" प्रभाकर ने कहा।

"ऐसा ही करना पड़ेगा।" देवराज चौहान ने कॉफी का आखिरी घूंट लेकर कहा—"सब एजेंटों को समझाना होगा कि ये सारा काम बहुत सावधानी से करना है। हम खतरनाक इंसान की तलाश कर रहे हैं जो कि चार आंखें रखता...।"

"बशीर ये सब संभालेगा।" प्रभाकर मोबाइल निकालता बोला—"कल से काम करना है तो बशीर को यहीं बुला लूं। उसे समझा देते हैं वो एजेंटों से रात भर में बात कर लेगा और कल से हमारा काम शुरू हो जाएगा।"

"हम सिर्फ एजेंटों पर भरोसा नहीं कर सकते। हमें भी हर पल उस इलाके में मौजूद रहना...।"

"हम भी वहां रहेंगे।" प्रभाकर नम्बर मिलाते कह उठा—"एजेंटों समझा देंगे कि उनका काम संदिग्ध का पीछा करना है। उसका ठिकाना देखना है और हमें खबर कर देनी है। बाकी आगे का काम हम देखेंगे।"

प्रभाकर ने फोन पर बशीर से बात की और उसे वहां पहुंचने को कहा।

"प्रभाकर।" जगमोहन बोला—"अब हमारा काम खत्म होने वाला है।"

"वो कैसे?"

"हमारा काम उस जगह की निशानदेही करके तुम्हें बताना है कि इकबाल खान सूरी वहां पर मौजूद है। उसके आगे का काम तुम्हें ही देखना है। ये ही बात मार्शल से तय हुई थी।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"हां। पता है। बाकी का काम अपने एजेंटों की मदद से मैंने संभालना है।" प्रभाकर सिर हिला उठा—"इकबाल खान सूरी को खत्म करना जरूरी है। वो पिचासी पुलिस वालों की हत्या करके, हिन्दुस्तान से फरार है। दुबई में उसने हमारे सत्रह एजेंटों को मारा। इधर वो पाकिस्तान के साथ मिलकर, हिन्दुस्तान के खिलाफ षड्यंत्र रचता रहता है। उसे खत्म करना जरूरी है। मार्शल का प्लान अच्छा है कि चुपचाप पाकिस्तान जाओ। इकबाल खान सूरी का पता लगाओ और हमला करके उसे खत्म करके वापस हिन्दुस्तान लौट आओ। किसी को पता भी नहीं चलेगा कि ये सब किसने किया। पता चल भी गया तो परवाह किसे है। कोई भी सबूत पेश नहीं कर सकता कि ये काम हिन्दुस्तानी एजेंटों ने किया है।"

"मैं तो तुम्हें याद दिला रहा हूं कि हमारा काम ज्यादा बाकी नहीं रहा।" जगमोहन कह उठा।

जवाब में प्रभाकर मुस्कराकर उसे देखने लगा। देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगा ली। उन्हें बशीर के आने का इंतजार था।

▭ ▭

अगले दिन काम शुरू हो गया।

शेखाबाद में मार्शल के चौंतीस एजेंट फैल चुके थे जिनमें देवराज चौहान और जगमोहन भी थे। उन्हें समझा दिया गया था, परंतु वे ये नहीं जानते थे कि मामला इकबाल खान सूरी से जुड़ा है। इस बात को छिपाकर रखा गया था कि किसी भी हालत में बात बाहर न जाए। देवराज चौहान, जगमोहन, बशीर, प्रभाकर काफी सतर्कता बरत रहे थे।

देवराज चौहान और प्रभाकर एक साथ थे और शेखाबाद के आते-जाते लोगों पर नजर रख रहे थे। इसी तरह जगमोहन और बशीर एक साथ और हर तरफ पैनी नजर रखे थे। सब एजेंटों के पास इन चारों के फोन नम्बर थे। सारे एजेंट इलाके की परचून और ब्रेकरी की दुकानों को तलाश करके उनके आस-पास जा चुके थे और दुकानों पर आने-जाने वालों पर नजर रखे थे। सब इस तरह काम में लगे थे कि देखने वालों को शक न हो। सुबह दस बजे तक काम शुरू हो गया था। धूप बढ़ रही थी। गर्मी थी।

बारह बजे देवराज चौहान को एक एजेंट का फोन आया।

"मैंने एक आदमी की पहचान की है। वो, वो ही हो सकता है जिसकी हमें तलाश है।" आवाज आई।

"शक की वजह?" देवराज चौहान ने पूछा।

"मुझे लगता है वो आदमी सतर्कता बरतते हुए सड़क पर चल रहा है। बार-बार आगे-पीछे देखता जा रहा था। किसी से उसने बात नहीं की। बेकरी से खाने का सामान लिए चल पड़ा।"

"उम्र क्या है उसकी?"

"पैंतीस के करीब।"

"अब क्या पोजीशन है?"

"वो एक मकान में गया है जिसका नम्बर चार सौ आठ है। मैं अभी उसी गली में हूं।"

"तुम वहीं रुको। हम पहुंचते हैं।" कहकर देवराज चौहान ने फोन बंद करके प्रभाकर से कहा—"हमें चार सौ आठ नम्बर मकान की तलाश करनी है। वहां एक संदिग्ध है। गली में हमारा आदमी, हमारे इंतजार में मौजूद है।"

▭ ▭

देवराज चौहान और प्रभाकर उस गली में पहुंचे जिसमें चार सौ आठ नम्बर मकान था। उन्हें देखते ही पैंतालीस वर्ष का एक व्यक्ति उनके पास आ पहुंचा।

"तुमने खबर दी?" प्रभाकर ने पूछा।

"हां।" कहते हुए उसने कुछ दूरी पर मौजूद 408 नम्बर मकान पर नजर मारी—"वो आदमी इसी मकान में गया है। मैं तब से इसी मकान पर नजर

comicsmylife.blogspot.in

रखे हूं परंतु भीतर से मुझे कोई हलचल नहीं नजर आ रही। कोई भी नहीं दिखा।"

"ठीक है, हम चैक कर लेते हैं। तुम बाहर रहकर, गली में नजर रखोगे।"

उसने सिर हिलाया और पास से हट गया।

देवराज चौहान और प्रभाकर की नजरें मिलीं।

"भीतर वो ही लोग हुए तो तुम्हें मेरा साथ देना होगा देवराज चौहान प्रभाकर ने कहा।

"दूंगा।" देवराज चौहान के चेहरे पर गम्भीरता थी।

प्रभाकर ने नजर घुमाई। उस वक्त गली में दो औरतें जा रही थीं। जब वो निकल गईं तो प्रभाकर बोला।

"चलें?"

देवराज चौहान ने सिर हिला दिया। दोनों के चेहरों पर सख्ती थी। उन्होंने जेबों में पड़ी रिवॉल्वरों पर हाथ रखे और मकान नम्बर 408 की तरफ बढ़ गए। पास पहुंचकर उन्होंने मकान का गेट खोला। बरामदे के पार भीतर जाने का दरवाजा नजर आ रहा था। वे वहां पहुंचे। दरवाजा बंद था।

दोनों की नजरें मिलीं। देवराज चौहान ने हाथ से दरवाजा खटखटाया। चेहरों पर खतरनाक भाव नाच रहे थे उनके।

"कौन है?" भीतर से मध्यम-सी आवाज आई।

"अहमद हूं भाई। दरवाजा खोलो।" प्रभाकर ने एकाएक आवाज को मुलायम करके कहा।

"कौन अहमद?" भीतर से पुनः आवाज आई और साथ में दरवाजा खुल गया।

जेब से देवराज चौहान का हाथ फुर्ती से बाहर निकला। उसमें रिवॉल्वर दबी थी। जिसकी नाल दरवाजा खोलने वाले के पेट में लगाई और उसे भीतर धकेलता ले गया। इसी पल प्रभाकर की रिवॉल्वर थामे भीतर प्रवेश करता गया। सब कुछ आनन-फानन हुआ था। पहला कमरा खाली था, प्रभाकर फुर्ती से दूसरे कमरे में प्रवेश करता चला गया।

वो आदमी हक्का-बक्का खड़ा था, जिससे देवराज चौहान ने रिवॉल्वर लगाई थी।

"क-क्या है?" उस आदमी के होंठों से घबराया-सा स्वर निकला।

"कौन हो तुम?" देवराज चौहान गुर्राया।

"शौकत अली।" उसने पहले जैसे स्वर में कहा।

"भीतर कौन है?"

"म-मेरी अम्मी। बी-बीमार है।"

तभी प्रभाकर वापस कमरे में आता कह उठा।

"सब ठीक है। भीतर एक बूढ़ी औरत बीमार पड़ी है।"

देवराज चौहान ने उससे रिवॉल्वर हटाई और जेब में डालता कह उठा।

"चलो।"

"दरवाजा बंद कर लेना।" उस हक्के-बक्के-से खड़े आदमी से प्रभाकर ने कहा।

देवराज चौहान और प्रभाकर मकान से बाहर निकल आए।

गली में मौजूद एजेंट फौरन उनके पास पहुंचा।

"सब ठीक है।" प्रभाकर ने कहा—"जाकर जगह संभाल लो।

वो चला गया।

देवराज चौहान और प्रभाकर गली के बाहर की तरफ बढ़ गए।

"ये तरीका ठीक नहीं है।" प्रभाकर बोला—"इस तरह हम पांच-सात मकान ही चैक कर सकेंगे और तब तक हमारी हरकतों की बात फैल जाएगी। कोई पुलिस को भी हमारे बारे में खबर कर सकता है।"

"ये ही मैं सोच रहा था।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"इस तरह तो इकबाल खान सूरी भी जान जाएगा कि यहां कुछ हो रहा है। ऐसे में फौरन शेखाबाद से निकल जाएगा फिर शायद उसकी खबर न मिले।"

"हमें अपना काम करने का ढंग बदलना होगा।" प्रभाकर ने होंठ भींचे कहा—"कुछ और सोचना पड़ेगा।"

"इकबाल खान सूरी को ढूंढ़ निकालने का हमारे पास सुरक्षित रास्ता नहीं है।" देवराज चौहान ने कहा।

"बेशक न हो। परंतु ये ढंग हमें फौरन छोड़ना होगा। वरना इकबाल खान हाथ से निकल जाएगा।"

"हमें मसूद नाम के उस आदमी की तस्वीर चाहिए।" देवराज चौहान बोला।

"पहली बात तो ये है कि ऐसे आदमियों की तस्वीरें नहीं होतीं। वो सावधानी के तौर पर अपनी तस्वीर नहीं खिंचवाते। दूसरी बात ये है कि अगर तस्वीर है भी तो वो हमें हासिल नहीं होने वाली।" प्रभाकर सोच-भरे स्वर में बोला।

"जब तक हम मसूद को नहीं पहचान पाते, तब तक इकबाल खान सूरी तक नहीं पहुंच सकते।" देवराज चौहान बोला—"हमें जल्दी नहीं करनी चाहिए। ये काम अभी यहीं रुकवा देना चाहिए।"

"तुम गम्भीर हो।"

"हां।"

"तुम्हें एक बार कामनी से बात करनी चाहिए। वो कुछ बता सकती है या मसूद की तस्वीर...।"

"मेरे पास कामनी का फोन नम्बर नहीं है।"

comicsmylife.blogspot.in

"गुलफाम के पास तो है। उससे लिया जा सकता है। बशीर उससे नम्बर ले आएगा। आदमियों को अभी इसी पोजीशन पर रहने दो। शायद हमारा तुक्का तीर बन जाए।" प्रभाकर ने कहा—"मैं बशीर को फोन करता हूं।"

▭ ▭

बशीर और जगमोहन सतर्क थे।

अभी-अभी एक एजेंट ने उन्हें 162 नम्बर मकान में एक संदिग्ध के जाने की खबर दी थी। उसका कहना था कि संदिग्ध ने परचून की दुकान से कुछ दालें खरीदीं और तेजी से एक तरफ बढ़ गया। इस दौरान वो सतर्क निगाहों से आस-पास भी देखता जा रहा था और पीछे लगे उसे भी देखा। वो पूरी तरह संदिग्ध लगा। किसी से उसकी बातचीत नहीं हुई और 162 नम्बर मकान में जा घुसा था। उसने मैला हो रहा सफेद कुर्ता-पायजामा पहन रखा था।

बशीर और जगमोहन फौरन 162 नम्बर मकान वाली गली में जा पहुंचे। वो एजेंट भी वहीं था। उसने मकान की निशानदेही कराई तो जगमोहन ने उसे बाहर रहने को कहा और खुद गेट खोलकर मकान में घुस गए।

मुख्य दरवाजा बंद था। बशीर ने पास लगी कॉल बेल दबा दी।

तुरंत ही दरवाजा खुला। दरवाजा खोलने वाला सफेद कुर्ता-पायजामा पहने हुए था।

"क्या है?" उसने दोनों को माथे पर बल डालकर देखा।

बशीर ने उसी पल रिवॉल्वर निकाली और उसके पेट से लगाकर गुर्राया।

"भीतर चलो।"

वो घबरा गया और उल्टे पांव पीछे हटता चला गया।

जगमोहन रिवॉल्वर थामे भीतर आ गया। परंतु ठिठक गया। पहला कमरा ड्राइंग रूम था और वहां दस-बारह आदमी-औरतें बैठे थे। सैंटर टेबल खाने-पीने की चीजों से सजा था।

"चैक करो।" बशीर उस पर रिवॉल्वर रखे गुर्राया।

जगमोहन रिवॉल्वर थामे मकान के भीतरी हिस्से की तरफ बढ़ गया

रिवॉल्वर देखकर ड्राइंग रूम में बैठे लोगों में सांप सूंघ गया था। वे हिलने से भी डर रहे थे।

"क्या चाहते हो तुम लोग?" सफेद कुर्ते-पायजामे वाले ने हिम्मत करके पूछा।

"हम पुलिस वाले हैं।" बशीर कठोर स्वर में बोला—"एक अपराधी की तलाश कर रहे हैं।"

"लेकिन ये मेरा घर है। ये मेहमान हैं, मेरी बेटी का रिश्ता लेकर आए हैं। यहां कोई अपराधी नहीं है।" वो कह उठा।

"अभी पता चल जाएगा।"

"ऐसा करके आप मेरे मेहमानों को डरा रहे हैं।"

बशीर खामोश रहा।

जगमोहन वापस आता कह उठा।

"यहां कुछ नहीं है। चलो।"

उसे छोड़कर बशीर और जगमोहन बाहर निकल आए।

"हम गलत ढंग का इस्तेमाल कर रहे हैं। इस तरह तो इकबाल खान हाथ नहीं आने वाला। बल्कि हाथ से निकल जाने के चांसिस ज्यादा हैं। कालोनी में हमारी हरकतों की खबर फैलते देर न लगेगी।"

"और ये बातें इकबाल खान सूरी के कानों तक भी पहुंच सकती हैं।" बशीर ने गहरी सांस ली।

"हां। हमें ऐसे काम नहीं करने चाहिए। काम का ढंग बदलना होगा। देवराज चौहान से बात...।"

इसी पल बशीर का फोन बज उठा।

बशीर ने बात की। उधर प्रभाकर था।

"प्रभाकर हमें बुला रहा है।" बशीर फोन बंद करता बोला—"हम उनके पास ही चल रहे हैं। वहीं बात करेंगे।"

▭ ▭

चारों इस बात से सहमत थे कि इस मामले में उनका काम करने का तरीका ठीक नहीं है। काम करने के ढंग को बदलना होगा और बातचीत फिर मसूद पर आकर अटक गई कि मसूद रोजमर्रा का सामान लेने उस जगह से बाहर जरूर आता होगा। मसूद की तस्वीर होनी चाहिए, ताकि उसे पहचाना जा सके। यही एक रास्ता था। इकबाल खान सूरी के ठिकाने का पता लगाने का। ऐसे में मसूद की तस्वीर कहां से हासिल की जाए, ये सवाल उनके सामने था।

"इकबाल खान सूरी के इस्लामाबाद में तीन ठिकाने हैं।" बशीर बोला—"वहां से हमें इकबाल खान के आदमी पकड़ने चाहिए। वो ही मसूद की तस्वीर का इंतजाम करा...।"

"इकबाल खान के आदमियों के पास मसूद की तस्वीर होगी, या वे इंतजाम करा देंगे तस्वीर का, ये खयाल अपने दिल से निकाल दो।" देवराज चौहान बोला—"मसूद की तस्वीर कोई जेब में डालकर घूमने से रहा।"

"क्या पता मसूद की कोई तस्वीर है भी या नहीं?" प्रभाकर ने कहा।

"लेकिन हम इकबाल खान के किसी आदमी से मसूद का हुलिया तो जान सकते हैं।" बशीर बोला—"अगर हमारे पास मसूद का हुलिया हो तो तब भी हम अपनी कोशिश में कामयाब हो सकते हैं। हमें तो उसकी उम्र तक नहीं पता।"

comicsmylife.blogspot.in

हुलिये वाली बात सबको जंची।
"बशीर।" प्रभाकर बोला—"तुम जाकर इकबाल खान के किसी आदमी को पकड़ो और मसूद का हुलिया...।"
"रहने दो। ऐसा करना खतरनाक होगा।" देवराज चौहान ने कहा—"फौरन ही ये बात इकबाल खान के कानों तक पहुंच जाएगी कि कोई मसूद का हुलिया पूछ रहा है। शायद इकबाल खान सूरी मामले को भांप भी जाए।"
"तुम्हारा मतलब कि हम कुछ न करें।" प्रभाकर खींझ-भरे स्वर में कह उठा।
"जो भी करना है, उस पर सौ बार गौर कर लेना चाहिए हमें।" देवराज चौहान बोला—"ये मामला इकबाल खान सूरी से जुड़ा है जो कि खतरनाक और शातिर बंदा है। हिन्दुस्तान की पुलिस उसके पीछे है। दुबई में अपना साम्राज्य फैलाकर, दुबई का आका बना हुआ है और पाकिस्तान सरकार और आतंकी गुटों से हाथ मिलाकर, उनकी आंख का तारा बना हुआ है मामूली इंसान नहीं है वो। उसका जबर्दस्त नेटवर्क है। यहां तक कि हम इकबाल खान सूरी को अभी तक देख भी नहीं पाए। मार्शल ने उसकी जो तस्वीर दिखाई थी, वो ही देखा है उसे। उसकी तो ठीक से खबर भी नहीं मिलती कि वो किस देश में है। किस शहर में है। तुम उसे कराची में ढूंढ रहे थे। मैं दुबई में ढूंढ़ रहा था, जबकि वो इस्लामाबाद में मौजूद है। ऐसे इंसान की मौजूदगी की सही खबर लगा पाना ही बहुत बड़ी बात है।"
"मेरे खयाल में हम जल्दी से इकबाल खान सूरी को ढूंढ़ निकालना चाहते हैं। ये ही हमारी गलती है।" जगमोहन ने कहा—"हम चाहते हैं कि आनन-फानन हमें इकबाल खान सूरी मिल जाए, जबकि मेरा खयाल है कि हमें सब्र से काम लेना चाहिए। वो शेखाबाद नाम के इस इलाके में है, ये तो हम जान ही चुके हैं, परंतु उस तक पहुंचने में हमें महीनों का भी वक्त लग सकता है। हमें एक-एक कदम सोच-समझकर, संभलकर आगे बढ़ाना होगा। कहीं भी जल्दबाजी नहीं करनी है जैसी जल्दबाजी हम इस वक्त कर रहे हैं। हमने गलत प्लान बनाया। जल्दबाजी कर रहे हैं हम।"
"मैं जगमोहन की बात से सहमत हूं।" प्रभाकर गम्भीर स्वर में बोला
"तो फिर क्या किया जाए?" बशीर बोला।
"शेखाबाद में हमारे एजेंट फैले रहेंगे। वो हर तरफ नजर रखेंगे और संदिग्धों की लिस्ट तैयार करके हमें देंगे। हम सब्र के साथ उस लिस्ट को चैक करेंगे। अबकी तरह नहीं कि हथियार लेकर घरों में घुस जाएं। अंत में संदिग्ध होने के हमारे पैमाने पर जो खरा उतरेगा, उस पर ही हाथ डाला जाएगा।" जगमोहन ने कहा।

"ये ठीक है।" प्रभाकर ने सिर हिलाया।
"तो ये काम तुम लोग संभालो। मेरे एजेंट तुम लोगों के हवाले हैं।" बशीर बोला—"तब तक मैं किसी तरह मसूद का हुलिया जानने की कोशिश करता हूं। इस तरह कि किसी को शक न हो।"
"अगर तुमने जरा भी लापरवाही की तो हमारा सारा काम खराब जाएगा बशीर।" प्रभाकर बोला।
"जानता हूं। मैं कोई लापरवाही नहीं करूंगा।" बशीर ने सिर हिलाकर कहा।
देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगा ली।
"अभी एजेंटों को संदिग्ध लोगों की लिस्ट तैयार करने दो।" प्रभाकर ने देवराज चौहान से कहा—"आज तैयार हुई लिस्ट को हम कल चैक करेंगे और छांटकर उसमें से खास संदिग्ध निकालकर, उसे देखेंगे।"
"ऐसा करना ही ठीक होगा।" जगमोहन कह उठा।
"तुम लोग यहां का काम संभालो।" बशीर ने कहा—"मैं जाता...।"
तभी जगमोहन की जेब में पड़ा मोबाइल बज उठा।
जगमोहन ने जेब से मोबाइल निकाला। अगले ही पल उसकी आंखें सिकुड़ गईं। वो ही फोन बज रहा था जो कामनी ने भिजवाया था। जगमोहन ने फौरन बात की।
"हैलो।"
"तुम हो। देवराज चौहान से मेरी बात कराओ।" कामनी की आवाज कानों में पड़ी।
"मेरे-तुम्हारे बीच देवराज चौहान का क्या काम।" जगमोहन ने शांत स्वर में कहा—"हम तो...।"
"मैं देवराज चौहान से बात करना चाहती हूं। नहीं तो मैं फोन बंद कर रही हूं।"
"ये लो। करो बात।" कहने के साथ ही जगमोहन ने देवराज चौहान की तरफ फ़ोन बढ़ा दिया।
देवराज चौहान ने फोन थामकर कान से लगाया।
"कहो।" देवराज चौहान बोला।
"तो शेखाबाद में डेरा जमा लिया।" कामनी की आवाज कानों पड़ी—"जगमोहन बहुत जल्दी मेरा इशारा समझ गया।"
"उससे पहले मैंने जान लिया था कि इकबाल खान सूरी शेखाबाद में है।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।
"सच में?" उधर से कामनी ने हैरानी जताई।

comicsmylife.blogspot.in

"हां। परंतु तुम्हारी बात से ये बात पक्की हो गई थी कि वो शेखाबाद में ही है।"

"लेकिन तुम लोग तो शेखाबाद में बेवकूफी वाली हरकतें कर रहे हो।"

"जैसे कि...?" देवराज चौहान के होंठ सिकुड़े।

"हथियार लेकर लोगों के घरों में घुस रहे हो। इस तरह तो तुम लोगों के पहुंचने से पहले ही इकबाल खान तक तुम लोगों की खबर पहुंच जाएगी। वो बहुत सतर्क रहने वाला इंसान है।" कामनी का स्वर सामान्य और शांत था।

"तो तुम हम पर नजर रखे हो।" देवराज चौहान बोला।

"हां। मेरी मर्जी के बिना तुम लोग कभी भी इकबाल खान तक नहीं पहुंच सकते। मेरा एक इशारा तुम सबको खत्म कर देगा।"

"दुबई की तरह?"

"ऐसा ही समझ लो।"

"तुम्हारी मर्जी क्या है?"

कामनी की आवाज नहीं आई।

"मैं पूछता हूं कि तुम चाहती क्या हो?" देवराज चौहान ने पुनः पूछा।

"तुम जानते हो।"

"मुंह से बोलो।"

"इकबाल खान सूरी की मौत।" कामनी का सरसराता स्वर देवराज चौहान के कानों में पड़ा।

"ऐसा है तो तुमने शुरू से मेरा साथ क्यों नहीं... ।"

"साथ ही तो दे रही हूं, तभी तो तुम और जगमोहन जिंदा हो, तभी तुम दोनों इस्लामाबाद में हो, तभी तो शेखाबाद में भटकते फिर रहे हो। अगर मैं तुम्हारा साथ न देती तो तुम अभी भी दुबई में होते।"

देवराज चौहान के होंठ सिकुड़ गए।

"इकबाल खान सूरी के बारे में तुम पहले भी मुझे बता सकती...

"नहीं बता सकती थी। मेरे अपने हालात हैं, जो मुझे जुबान बंद रखने पर मजबूर कर देते हैं। इकबाल खान सूरी वो शैतान है, जो चेहरा देखकर भीतर का हाल जान जाता है। तुम अभी उसे नहीं जानते।"

"ऐसा है तो दुबई में मार्शल के एजेंटों की जान क्यों ली?" देवराज चौहान बोला।

"वो जरूरी था। इकबाल को दिखाना भी तो था कि मैं पूरी तरह सतर्क हूं और कामों को ठीक से कर रही हूं।"

"कहां है इकबाल खान सूरी?"

"बहुत जल्दी जान लेना चाहते हो।"

"बताओ।"

"ये सब इतना आसान नहीं है देवराज चौहान, जितना कि तुम सोच रहे हो। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि मेरी मर्जी के बिना इकबाल खान सूरी तक कोई नहीं पहुंच सकता। उसे कोई मार नहीं सकता। मेरे खयाल में तो तुम लोग उसे शेखाबाद से ढूंढ़ भी नहीं सकोगे। तुम अगर कुछ करोगे तो मेरी मेहरबानी से सफल होंगे।"

"मानी ये बात। इकबाल खान सूरी को खत्म करने की इच्छा कब से बनी तुम्हारी?"

"दो सालों से है। परंतु मौका कभी नहीं मिला। तुम्हें जब दुबई में, उस कैफे में देखा और तुम्हारे इरादे का पता चला तो ये बात मैंने तभी प्लान कर ली कि तुम्हें ही मोहरा बनाकर, इकबाल खान सूरी को खत्म कराऊंगी।"

"फिर तो तुमने खुलकर सामने आने में बहुत देर कर दी। पहले ही स्पष्ट बात कर लेती तो... ।"

"नहीं कर सकती थी। मुझे भी बहुत कुछ देखना था। इकबाल खान की मौत के बाद उसके खास दो लोग मेरे रास्ते में आकर मेरे इरादों पर पानी फेर सकते थे। इतने वक्त में मैंने उन दोनों को रास्ते से हटाया।"

"ओह।"

"अगर वो इकबाल खान की मौत के बाद मारे जाते तो शक मेरे पर आता। परंतु अब कोई भी मेरे पे शक नहीं कर सकता। मैंने उसकी हत्या ही कुछ इस तरह कराई है।" उधर से कामनी ने गम्भीर स्वर में कहा—"अब मैं कुछ फुर्सत में आई हूं और तुमसे बात कर रही हूं। पहले वो शायद मुझ पर नजर भी रखते थे। मुझे लगता था कि वो मेरा फोन भी टेप कराते हैं। वो मुझे पसंद नहीं करते थे, क्योंकि इकबाल खान का झुकाव मेरी तरफ है।"

"तुम इकबाल खान की मौत क्यों चाहती हो?"

"अब तुम मेरी व्यक्तिगत जिंदगी में हाथ डालने की चेष्टा कर रहे हो। जबकि तुम्हें अपने काम की बात जाननी चाहिए।"

"शेखाबाद में इकबाल खान कहां मौजूद है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"इससे पहले मैं तुम्हारा प्लान जानना चाहूंगी।" उधर से कामनी का शांत स्वर आया।

"उससे तुम्हें क्या फर्क पड़ता है कि मेरा प्लान... ।"

"फर्क पड़ता है। जान जाओगे।"

"मार्शल के एजेंट इकबाल खान सूरी को संभालेंगे।" देवराज चौहान ने कहा।

"तुम नहीं?"

"नहीं। मेरा काम इकबाल खान सूरी को तलाश करने तक है।"

comicsmylife.blogspot.in

"फिर तो बात नहीं बनेगी।"
"क्यों?"
"उस वक्त का मेरा भी कुछ प्लान है। मामला तभी ठीक पड़ सकता है, जब तुम ये सब संभालो।"
"स्पष्ट कहो।"
"जब तुम लोगों का हमला होगा, मैं उस वक्त इकबाल खान सूरी पास रहना चाहती हूं।"
"ऐसा क्यों?"
"ये मेरा मामला है।"
"मसूद भी होगा वहां।"
"वो मेरा आदमी है।"
"फिर?"
"मैं और मसूद वहां पर मौजूद होंगे। परंतु हमें कुछ नहीं होना चाहिए। तुम लोगों को रास्ता साफ मिलेगा। आराम से इकबाल खान सूरी तक पहुंच जाओगे। तुम्हारे लोग, मतलब कि मार्शल के एजेंट मुझे नहीं पहचानते। सच पूछो तो मुझे उन पर जरा भी भरोसा नहीं है। मैंने तुम्हारे भरोसे ये खेल खेलने की कोशिश की है देवराज चौहान।"
"मार्शल के एजेंट बहुत बेहतर काम करते हैं। तुम्हें उन पर भरोसा रखना चाहिए।"
"मुझे तुम पर भरोसा है। मैं चाहती हूं तुम ये काम करो। तुम मुझे पहचानते हो। इस वजह से मुझे जान का खतरा नहीं रहेगा। वरना मार्शल के किसी भी एजेंट की लापरवाही से मैं मारी जा सकती हूं। ये मामला तुम हैंडिल करो।"
"अगर तुम ऐसा चाहती हो तो, मैं ही मामला संभालूंगा।" देवराज चौहान का स्वर गम्भीर था।
"मसूद को भी कुछ नहीं होना चाहिए।"
"मैं उसे नहीं पहचानता।"
"इकबाल खान सूरी को पहचानते हो?"
"उसकी तस्वीर देख रखी है।"
"मतलब कि पहचानते हो। वहां इकबाल खान सूरी के अलावा एक ही आदमी मसूद होगा। मैं होऊंगी, बस।"
"मसूद अगर मेरे रास्ते में आया तो?"
"नहीं आएगा।" इस बार कामनी का आने वाला स्वर दृढ़ता से भरा था—"वो मेरा साथी है। मेरे साथ है।"
"समझ गया।"
"तो ये मामला तुम्हीं संभालोगे।"

"हां।"
"मैं ऐसा ही चाहती हूं। सुनकर अच्छा लगा। तुमने सूरत में मेरी जान बचाई थी और अब भी तुम मेरी बहुत बड़ी समस्या हल करने जा रहे हो। तुम्हारी मेहनत बेकार नहीं जाएगी। मैं तुम्हें तगड़ी दौलत दूंगी।"
देवराज चौहान के चेहरे पर मुस्कान उभरी और लुप्त हो गई।
"अब तुम पूछोगे कि इकबाल खान सूरी कहां पर है?"
"हां।"
"शेखाबाद में ऐसा मकान ढूंढ़ो जो अकेला खड़ा हो। जिसकी दीवार किसी अन्य मकान से न लगती हो।"
"क्या मतलब?" देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं।
"बता तो दिया। इकबाल खान सूरी ऐसे मकान में है जो अकेला खड़ा है और...।"
"तुम स्पष्ट क्यों नहीं बताती कि...।"
"ये काम कल होगा देवराज चौहान।"
"कल—क्यों?"
"क्योंकि कल सुबह मैंने इकबाल खान के पास आना है। उसे बताना है कि उसके उन खास दो आदमियों की मौत कैसे हुई। तब मैं दोपहर तक वहां रहूंगी और इसी वक्त में तुमने काम कर देना है।" कामनी की गम्भीर आवाज आई।
"ठीक है। काम कल ही हो जाएगा, परंतु तुम साफ तौर पर बताओ कौन-से मकान में...।"
"जैसा मैंने कहा है वैसा ही करो।" कामनी की आवाज कानों में पड़ी—"ऐसा मकान ढूंढ़ो जो अकेला खड़ा हो। ऐसे ही किसी मकान में इकबाल खान सूरी मौजूद है। लेकिन सावधान रहना। मकान पर सी.सी.टी.वी. कैमरे लगे हैं। भीतर बैठा वो बाहर आने वालों को देखता रहता है। अगर वो तुम लोगों पर शक कर गया तो सारा खेल बिगड़ जाएगा।"
देवराज चौहान ने गहरी सांस ली।
"मैं तुम्हें दो घंटों के बाद फोन करूंगी।" इसके साथ ही कामनी ने दूसरी तरफ से फोन बंद कर दिया था।
देवराज चौहान ने फोन कान से हटाया तो जगमोहन बोला।
"क्या बात हुई?"
जवाब में देवराज चौहान ने सब कुछ बता दिया।
सुनकर सबका दिल धड़क उठा।
"अब तो हम मंजिल के करीब पहुंच गए।" प्रभाकर के होंठों से निकला।
"बशीर। तुम अपने एजेंटों को इकट्ठा करो और कालोनी में ऐसे मकान

comicsmylife.blogspot.in

की तलाश पर लगा दो जो कि अकेले खड़े हों उनसे किसी अन्य मकान की दीवार न जुड़ी हो। उन्हें कैमरों के बारे में भी समझा देना।"

बशीर ने सिर हिलाया और अपना मोबाइल निकालकर, चंद कदम दूर हटता चला गया।

"कामनी को स्पष्ट तौर पर मकान के बारे में बता देना चाहिए था प्रभाकर ने कहा।

"अब तो कुछ ना भी बताए तो भी हम इकबाल खान सूरी को आसानी से ढूंढ़ लेंगे।" देवराज चौहान बोला—"कालोनी में ऐसे चंद ही मकान होंगे जो अकेले खड़े हों। उनके आस-पास कोई मकान न बना हो।"

"कामनी ने हमें मामले में काफी करीब पहुंचा दिया। वो दिल से हमारी सहायता कर रही है।" प्रभाकर बोला।

"वो हमारी कोई सहायता नहीं कर रही बल्कि हमारे द्वारा अपना काम निकाल रही है।" देवराज चौहान ने कहा—"मुझे पहले ही शक था कि कामनी के दिमाग में ऐसा कुछ चल रहा है। कहने के साथ ही देवराज चौहान बशीर की तरफ बढ़ गया।

जगमोहन ने प्रभाकर से कहा।

"अब हमें भी बात कर लेनी चाहिए।"

"कैसी बात?"

"हमारा काम इकबाल खान सूरी को ढूंढ़ने तक था। उसे मारने का काम हमारा नहीं था। लेकिन कामनी उस शर्त पर इकबाल खान सूरी का ठिकाना बता रही है कि हम इस काम को निबटें।"

"तो?"

"लेकिन हम कोई भी काम मुफ्त में नहीं करते। जबकि ये काम मुफ्त में होने वाला है।"

"मुफ्त में कहां, इस काम में तुम मुंहमांगे पैसे ले चुके हो।"

"वो तो इकबाल खान सूरी को तलाश करने के थे, मारने के नहीं।"

"मैं हूं न उसे मारने के लिए।" प्रभाकर ने मीठे स्वर में कहा।

"लेकिन कामनी की शर्त है कि हम ही उसे मारें।"

"तुम मार दो।"

"मारने के नोट तय हो जाने चाहिए।"

"मैं कौन होता हूं नोट तय करने वाला?"

"तुम मार्शल के खास एजेंट हो। तुमसे बात की जा सकती है। इकबाल खान सूरी को मारने का सौ करोड़ कैसा रहेगा?"

"सौ करोड़?"

"अभी तो कम मांगा है, क्योंकि इस वक्त हम इस्लामाबाद में मौजूद

और इकबाल खान भी ज्यादा दूर नहीं है हमसे। ये ही बात अगर इंडिया में हो रही होती तो डेढ़ सौ करोड़ से कम में बात नहीं बैठती।" जगमोहन ने समझाने वाले स्वर में कहा—"और मार्शल भी तुरंत ही मान जाता। वो समझता है कि इकबाल खान सूरी को मारना जरूरी है और ये काम मुश्किल है।"

"मुझे तो पता चला है कि इस काम की तुमने मार्शल से पहले ही तगड़ी रकम ली है।" प्रभाकर मुस्कराया।

"इकबाल खान सूरी को ढूंढ़ने की रकम के बारे में बात कर...।"

"हां।"

"वो तो मार्शल ने खुश होकर खुद ही तय कर दी थी। ऐसे में उसकी खुशी के वास्ते मैं चुप रहा।"

"इस बारे में तुम मार्शल से क्यों नहीं बात कर...।"

"तुम्हारा हां कहना ही बहुत है। तुमने हां कही, मार्शल ने कही, एक बात है। तो सौ करोड़...।"

"इस बारे में बात करना मेरे अधिकार क्षेत्र में नहीं आता।"

"चलो नब्बे पर मान जाओ।"

"सत्तर भी नहीं।" प्रभाकर ने मुंह बनाकर कहा।

"तो पचास करोड़ पर मैं बात को पक्का समझूं?"

"फूटी कौड़ी भी तुम्हें और नहीं मिलने वाली। पहले ही तुमने बहुत ज्यादा ले लिया है।" प्रभाकर ने तीखे स्वर में कहा और बशीर, देवराज चौहान की तरफ बढ़ गया। बशीर अभी भी फोन पर उलझा हुआ था।

▭ ▭

शाम के साढ़े छः बजे थे जब कामनी का फोन आया। देवराज चौहान ने बात की।

"कितने ऐसे मकानों की निशानदेही की जो कालोनी में अकेले खड़े हैं?" कामनी ने उधर से पूछा।

"ऐसे चार मकान दिखे हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

"कौन-कौन से?" बताओ मुझे।"

देवराज चौहान ने चारों मकानों के बारे में बताया।

"मुझे मालूम था कि तुम लोग उस मकान तक नहीं पहुंच पाओगे।" सुनने के बाद, कामनी की आवाज आई।

"क्या मतलब?"

"इन चार मकानों में से किसी में भी इकबाल खान सूरी नहीं है।"

"परंतु तुमने तो कहा था कि...।"

"मैंने सही कहा था, लेकिन तुम नहीं समझ सके। अब सुनो इकबाल खान

comicsmylife.blogspot.in

सूरी कहां पर है। कालोनी के पीछे खेत है वहां कार्द बड़ा हरे रंग का मकान बना हुआ है।"

"हां—है।"

"उसमें है इकबाल खान सूरी।"

देवराज चौहान फौरन कुछ न कह सका। होंठ सिकुड़ गए उसके।

"समझे देवराज चौहान?" कामनी की आवाज कानों में पड़ी।

"समझ गया।"

"मैंने तुम्हारी बहुत बड़ी समस्या हल कर दी।"

"शुक्रिया।"

"लेकिन ये बात अभी किसी को नहीं बताना, कल जब काम शुरू करना हो, तभी बताना। वरना बात बाहर आकर दूर तक जाएगी और इकबाल खान सूरी के कानों तक भी पहुंच सकती है।"

"आगे का काम मेरा है। तुम किसी बारे में फिक्र मत करो।"

"फिक्र तो करनी पड़ती है। मैंने बहुत बड़ा खतरा मोल ले लिया है तुम्हें सब बताकर। अगर तुम असफल हुए तो इकबाल खान सूरी को समझते देर नहीं लगेगी कि मैंने ही गड़बड़ की है। क्योंकि इस जगह के बारे में मेरे अलावा कोई नहीं जानता। इसलिए तुम्हें हर हाल में सफल होना है। खेल का दारोमदार अब तुम्हारे कंधों पर है।"

"मैं सफल रहूंगा।" देवराज चौहान गम्भीर था।

"कल कौन-कौन भीतर जाएगा?"

"मैं जगमोहन और प्रभाकर।"

"प्रभाकर मार्शल का एजेंट है?"

"हां।"

"उसे सब समझा देना कि मुझ पर और मसूद पर गोली न चले।" उधर से कामनी की आवाज आई।

"इस बारे में निश्चिंत रहो।"

"मैं सुबह नौ बजे तक वहां पहुंच जाऊंगी। परंतु उससे पहले तुमसे बात करूंगी और भूल कर भी उस मकान के पास जाने की चेष्टा मत करना। ये मत सोचना कि रात है और कैमरे तुम्हें देख नहीं सकेंगे।"

"कैमरों की समस्या तो कल दिन में भी आएगी, जब काम किया जाएगा।" देवराज चौहान बोला।

"तुम्हें इतना मौका मिल जाएगा कि तुम सुरक्षित भीतर प्रवेश कर सको।" ये बात तुम्हें सुबह बताऊंगी।"

बातचीत खत्म हो गई।

देवराज चौहान ने फोन जेब में रखा। चेहरे पर गम्भीरता नाच रही थी। वो वहां से बशीर, जगमोहन और प्रभाकर के पास पहुंचा। शाम हो चुकी थी। परंतु अंधेरा होने में अभी वक्त बाकी था।

"कामनी ने बता दिया है कि इकबाल खान सूरी कहां पर है।" देवराज चौहान बोला।

"उन चारों में किस मकान में है?" बशीर व्याकुलता से कह उठा।

"किसी में भी नहीं। तुम अपने एजेंटों को इस कालोनी से हटा लो। सिर्फ छः को रोक लेना। वो रात भर वहां नजर रखेंगे। कालोनी के पीछे खेतों में बड़ा-सा हरे रंग का मकान है। इकबाल खान सूरी उसमें मौजूद है। परंतु उस मकान के पास नहीं जाना है किसी को। वहां कैमरे लगे हैं और भीतर बैठकर वो बाहर के हालातों का जायजा लेता रहता है।"

"ये तो अच्छी बात रही कि हम खेतों की तरफ नहीं गए।" प्रभाकर ने कहा।

कुछ पलों के लिए उनके बीच गम्भीरता से भरी चुप्पी छाई रही।

"अब क्या करना है?" जगमोहन ने पूछा।

"कल के लिए रणनीति तैयार करेंगे। इकबाल खान सूरी को बचना नहीं चाहिए। ये हमें पहला और आखिरी मौका मिल रहा है उसे खत्म करने का एक बार वो हाथ से निकल गया तो फिर हाथ नहीं लगेगा। उसकी मौत हिन्दुस्तान के लिए फायदे वाली बात होगी। वो हिन्दुस्तान के बारे में सब कुछ जानता है और पाकिस्तान के साथ मिलकर, षड्यंत्र रचता है। हिन्दुस्तान में धमाके करता है। लोग बे-मौत मरते हैं। मुम्बई में अक्सर बम विस्फोट होते हैं जिनमें इकबाल खान सूरी का ही हाथ होता है। वो अब फिर मुम्बई में बम धमाके करने वाला है, कामनी इसी सिलसिले में मुम्बई गई थी। इकबाल खान सूरी का मारा जाना, हमारे देश के लिए बहुत बड़ी राहत की बात होगी।"

"इकबाल खान सूरी अब नहीं बचेगा।" दांत भींचे प्रभाकर धीमे से गुर्रा उठा।

"इतनी मेहनत के बाद भी बच गया तो क्या फायदा हमारा।" जगमोहन बोला।

"बशीर। तुम छः आदमियों के साथ रात भर खेतों में बने हरे मकान पर नजर रखोगे। कोई खास बात हुई तो मुझे फोन पर बताओगे। उन छः आदमियों को पता नहीं चलना चाहिए कि मामला इकबाल खान सूरी से वास्ता रखता है। तुमने इस काम में हर तरह की सावधानी बरतनी है।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

comicsmylife.blogspot.in

"सब कुछ मुझ पर छोड़ दो।"

"अपने आदमियों को शेखाबाद से भेज दो। अब यहां कोई हलचल नहीं दिखनी चाहिए। हम तीनों यहां से जा रहे हैं। कल के लिए योजना तैयार करनी है काम को कैसे अंजाम देना है परंतु सुबह नौ बजे तक यहां पहुंच जाएंगे।"

बशीर ने सिर हिला दिया।

▭ ▭

तीनों सुबह चार बजे सोये और सात बजे उठ गए थे। रात भर इस बात पर विचार-विमर्श करते रहे कि सुबह काम कैसे करना है। उठने पर तीनों गम्भीर से दिख रहे थे क्योंकि आज काफी बड़े काम को अंजाम देना था। तीनों में से कोई भी नहीं चाहता था कि इकबाल खान सूरी बच निकले। कामनी उनकी सबसे ज्यादा सहायता कर रही थी इस मामले में। कामनी की सहायता के बिना इतनी जल्दी ये सब कर पाना मुमकिन नहीं होता। इकबाल खान सूरी जैसे लोग तभी मर पाते हैं जब उनका अपना ही, उनसे कोई गद्दारी करे और ये काम कामनी बखूबी कर रही थी। नहा-धोकर जल्दी से वे तैयार हुए। रिवॉल्वरें चैक कीं। उसके बाद कार पर शेखाबाद के लिए चले तो 7.45 का वक्त हो रहा था। देवराज चौहान ने बशीर को फोन किया।

"सब ठीक है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हां।" उधर से बशीर ने कहा।

"हम आ रहे हैं। रास्ते में हैं।" देवराज चौहान ने कहा और फोन बंद कर दिया।

"कामनी का फोन नहीं आया। उसने कैमरों के बारे में बताना था। तुमने कहा था कि...।"

"उसका फोन जरूर आएगा। वो नौ बजे इकबाल खान सूरी के पास पहुंचेगी। उससे पहले वो फोन जरूर करेगी।" देवराज चौहान बोला।

"तो उसने नहीं बताया कि वो इकबाल खान सूरी की मौत क्यों चाहती है।" जगमोहन ने कहा।

"नहीं बताया। परंतु मेरे खयाल में उसका इरादा इकबाल खान सूरी की दौलत समेटने का होगा।"

"या फिर इकबाल खान से उसकी कोई खुंदक होगी।"

"ऐसा भी हो सकता है।" देवराज चौहान ने सिर हिलाया।

कार चलाते प्रभाकर से जगमोहन ने कहा।

"तुमने कुछ सोचा मेरी बात के बारे में।"

"क्या—बात?"

"इकबाल खान सूरी को मारने का पचास करोड़ तो छोटी रकम है। तुम्हारी जेब से पैसा नहीं जाएगा। ये तो सरकार का पैसा होगा। तुमने तो सिर्फ इतना

ही कहना है कि पचास करोड़ हिन्दुस्तान पहुंचते ही मिल जाएगा। बाकी मैं मार्शल से बात कर लूंगा।"

"मेरे कान बेकार की बातों को नहीं सुनते।"

"मैंने बेकार की बात कही है?" जगमोहन चिढ़कर बोला।

"मैंने नहीं सुना, तुम क्या कह रहे हो।"

"अच्छा हो कि तुम्हारे कान कभी ठीक ही न हों। हमेशा हां-हूं ही करते रहो।"

तभी देवराज चौहान का मोबाइल बज उठा।

"हैलो।" देवराज चौहान ने बात की।

"तैयार हो?" कामनी का गम्भीर स्वर कानों में पड़ा।

"पूरी तरह।"

"कर लोगे ये काम?"

"तुम बेवकूफों वाले सवाल कर रही हो।" देवराज चौहान बोला।

"मुझे भरोसा है तुम पर देवराज चौहान। तभी तो तुम्हें रास्ता दिखाया इकबाल खान सूरी तक पहुंचने का।"

"आज तुमने मुझे कैमरों से बचने का रास्ता बताना है।"

"तुम 11.40 से 11.50 के बीच उस मकान में प्रवेश करोगे। मसूद तब वहां की लाइट बंद कर देगा कैमरे भी लाइट के बंद होते ही, बंद हो जाएंगे और मैं इन दस मिनटों में इकबाल खान को व्यस्त रखूंगी कि वो लाइट बंद होने के बारे में न जान सके। मसूद का कहना है कि तुम लोग इन दस मिनटों में बाईं तरफ वाली दीवार फलांग कर आओगे।"

"मसूद मकान के सामने का दरवाजा भी तो खोल सकता है।" देवराज चौहान ने कहा।

"वो ऐसा नहीं करेगा। उस मकान के भीतर तुम लोगों को खुद ही आना होगा। दरवाजा खोलने और बंद करने में वक्त लगता है। वो लोहे की चादर वाला बड़ा दरवाजा है। भीतर से तीन कुंडिया लगानी पड़ती हैं। चाबी लगाकर ताला खोलना पड़ता है और चाबी इकबाल खान सूरी के कमरे में रहती है। फिर मसूद को अक्सर इकबाल खान के आस-पास ही रहना पड़ता है। ऐसे में मुख्य फाटक खोलना सम्भव नहीं हो पाएगा मसूद के लिए।"

"ठीक है। हम बाईं तरफ वाली दीवार से भीतर आएंगे।" देवराज चौहान ने कहा।

"11.40 और 11.50 के बीच में दस मिनटों में तुम लोगों ने भीतर आना है। एक मिनट भी इधर-उधर न हो।"

"ऐसा ही होगा।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"याद है न कि मुझे और मसूद को गोली नहीं लगनी चाहिए।"

comicsmylife.blogspot.in
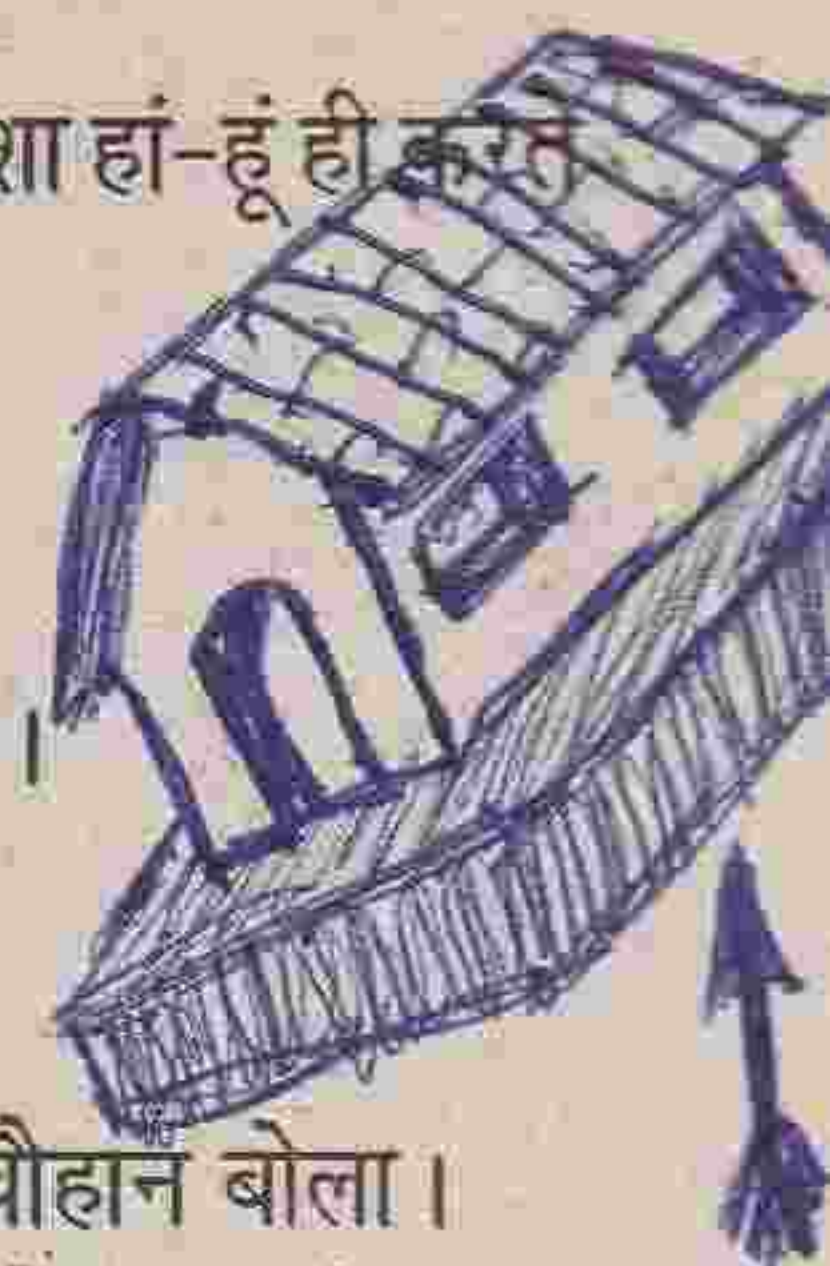
"नहीं लगेगी। तुम तीनों के अलावा वहां सिर्फ इकबाल खान सूरी ही होगा।"

"हां, मैं तुम्हारी सफलता के लिए प्रार्थना करूंगी।" कहकर कामनी ने उधर से फोन बंद कर दिया था।

देवराज चौहान ने फोन कान से हटाते हुए कहा।

"11.40 और 11.50 के दस मिनटों के बीच हमें, उस मकान के बाईं तरफ वाले हिस्से से भीतर प्रवेश करना है। तब इकबाल खान सूरी का आदमी मसूद लाइट बंद कर देगा कि कैमरे काम न करें। कामनी भी इन दस मिनटों में इकबाल खान को व्यस्त रखेगी। भीतर इकबाल खान के अलावा, ये दोनों ही होंगे।"

"कामनी की सहायता के बिना ये काम सम्भव नहीं था।" प्रभाकर बोला—"सम्भव था तो परेशानियों से भरा सम्भव था।"

"ऐसे लोग अपने साथियों की गद्दारी की वजह से ही मरते हैं। देवराज चौहान ने कहा।

"हमें अपने को इस तरह से तैयार कर लेना चाहिए कि इकबाल खान सूरी को खत्म किए बिना उस जगह से बाहर नहीं आना है।" जगमोहन बोला।

"आज वो मरकर ही रहेगा।" प्रभाकर दांत भींचे कह उठा।

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगा ली।

▭ ▭

11.39 हो गए थे।

देवराज चौहान, जगमोहन और प्रभाकर खेतों से कुछ हटकर एक मकान की ओट में खड़े थे। बशीर या कोई एजेंट वहां नहीं था। देवराज चौहान ने बशीर को समझा दिया था कि वो अपने एजेंटों के साथ दूर रहकर उस मकान पर नजर रखे और अगर कोई मकान से निकलकर भागता दिखे तो उसे शूट कर दिया जाए। परंतु देवराज चौहान को पूरी आशा थी कि इकबाल खान सूरी को भागने का मौका नहीं देगा।

11.40 हो गए।

तीनों की निगाह बार-बार कलाई पर बंधी घड़ी पर जा रही थी।

नजरें मिलीं।

"एक मिनट और यहीं रुको।" देवराज चौहान ने होंठ भींचे कहा।

"दीवार बारह फुट ऊंची है।" जगमोहन बोला—"उसे पार करने में भी वक्त लगेगा।"

देवराज चौहान होंठ भींचे खड़ा रहा।

11.41 हो गए।

"चलो।" देवराज चौहान बोला।

अगले ही पल वो तीनों उस मकान की ओट से निकले और खेतों की तरफ दौड़े। बहुत तेज थी उनके दौड़ने की रफ्तार। सूर्य चमक रहा था। परंतु गर्मी का एहसास उन्हें नहीं हो रहा था। तीनों के दिमागों में इकबाल खान सूरी घूम रहा था। सफल हो जाने की इच्छा, दिलों में ठूंस-ठूंसकर भर चुकी थी।

डेढ़ मिनट लगा उन्हें खेतों में बने उस बड़े मकान की बाईं दीवार तक पहुंचने में।

देवराज चौहान ने दीवार के पास खड़े होकर अपनी दोनों हथेलियों को बांधा। प्रभाकर फौरन उसकी जुड़ी हथेलियों पर पांव रखकर उछला और दीवार की मुंडेर थाम ली। अगले ही पल वो दीवार पर था फिर भीतर कूद गया। जगमोहन ने भी फुर्ती से हथेलियों पर जूता रखा और ऊपर उछल गया। दीवार का किनारा थाम लिया फिर दूसरे हाथ से किनारा थामा और ऊपर उठता चला गया। दूसरे ही क्षण वो दीवार पर लेट चुका था और दायां हाथ नीचे को किया। देवराज चौहान ने छोटी-सी छलांग लगाई और जगमोहन के लटकते हाथ को थामकर लटक गया। जगमोहन ने हाथ ऊपर खींचा। इधर देवराज चौहान ने अपने शरीर को झटका दिया तो दीवार के किनारे पर उसका हाथ जा टिका।

ऐसा होते ही जगमोहन दीवार के उस पार कूद गया।

देवराज चौहान दीवार के ऊपर पहुंच गया था।

"जल्दी।" जगमोहन कलाई पर बंधी घड़ी पर निगाह मारकर बोला।

देवराज चौहान नीचे आ कूदा।

11.49 हो चुके थे।

प्रभाकर और जगमोहन के हाथ में रिवॉल्वर दबे थे।

देवराज चौहान ने भी रिवॉल्वर निकालकर हाथ में ले ली। तीनों के चेहरों पर खतरनाक भाव नाच रहे थे। जहां पर इस वक्त वे मौजूद थे, वो दस फुट चौड़ा रास्ता था और दीवार के साथ कबाड़ जैसा सामान रखा था। जैसे कि पुरानी साइकिल। गेहूं काटने की मशीन। मशीन के ब्लेड। कुछ बोरियां। ऐसा ही अन्य सामान। वहां हर तरफ सन्नाटा था। आगे से आता, वो रास्ता मकान के पीछे की तरफ जा रहा था। अब उन्हें कोई जल्दी नहीं थी। मकान के भीतर कैमरों से सुरक्षित थे वे कि इकबाल खान सूरी उन्हें नहीं देख सकता। आधा मिनट तो वो इसी प्रकार रिवॉल्वरें थामे खड़े रहे।

फिर तीनों की नजरें मिलीं।

"मैं पीछे की तरफ जा रहा हूं।" जगमोहन ने कहा और रिवॉल्वर थामे दबे पांव पीछे की तरफ बढ़ गया।

देवराज चौहान ने प्रभाकर को साथ आने का इशारा किया और आगे

comicsmylife.blogspot.in

की तरफ बढ़ गया। उनके कदमों की आवाजें नहीं उठ रही थीं। अभी तक कहीं से भी कोई आहट नहीं मिली थी।

वे आगे की तरफ पहुंच गए।

सामने ही लोहे का बड़ा फाटक था।

भीतर दो कारें खड़ी थीं।

वहां कोई नहीं दिखा।

देवराज चौहान आगे बढ़ा और कारों के बोनट पर हाथ रखकर देखा। एक कार का बोनट गर्म था और एक का ठंडा। देवराज चौहान समझ गया कि गर्म बोनट की कार पर कामनी आई होगी। वो वहां से हटा और हर तरफ नजर मारी। पंद्रह कदमों की दूरी पर मकान के दरवाजे नजर आ रहे थे।

गर्दन से प्रभाकर को साथ आने का इशारा करके देवराज चौहान दरवाजे की तरफ बढ़ा कि अगले ही पल ठिठक गया। उसके देखते-ही-देखते दरवाजा खुला और मसूद बाहर निकला।

देवराज चौहान का दिल धड़का। हाथ में दबी रिवॉल्वर तैयार थी।

मसूद ने उन्हें सर्द निगाहों से देखा और उनकी तरफ आने लगा।

रिवॉल्वरें थामे देवराज चौहान और प्रभाकर बेहद सतर्क थे।

मसूद उनके पास से निकलकर, इस तरह आगे बढ़ गया जैसे वो वहां हो ही नहीं।"

देवराज चौहान और प्रभाकर ठिठके-से उसे देखते रहे।

मसूद कारों के पास पहुंचा और एक कार से टेक लगाकर खड़ा हो गया। दोनों हाथ छाती पर बांध लिए थे और दूसरी तरफ देखने लगा था।

"आओ।" देवराज चौहान ने फुसफुसाकर प्रभाकर से कहा—"ये मसूद है।"

दोनों आगे बढ़े।

जिस दरवाजे से मसूद बाहर निकला था, वो खुला हुआ था। दोनों भीतर प्रवेश कर गए। ये कमरा था। सीमेंट का फर्श था। वहां दो कुर्सियां और एक टेबल रखी थी। शायद दिन-भर मसूद यहां बैठा रहता होगा। वो आगे बढ़े और अन्य दरवाजा पार करके, दूसरे कमरे में पहुंचे।

वहां एक चारपाई बिछी थी। एक पानी का घड़ा रखा था।

वे आगे बढ़े। रेलगाड़ी के डिब्बे की तरह कमरे बने हुए थे। तीसरे कमरे में पहुंचे तो वो बिल्कुल खाली था। देवराज चौहान वहां से आगे बढ़ने ही वाला था कि ठिठक गया। प्रभाकर भी चैकन्ना हुआ।

एक औरत के हंसने की आवाज कानों में पड़ी थी।

देवराज चौहान ने पहचाना कि ये कामनी की आवाज है।

प्रभाकर ने देवराज चौहान को देखा।

देवराज चौहान के होंठ भिंचे हुए थे। हंसने की आवाज सीधी खड़ी दीवार के उस पार से आई थी। देवराज चौहान ने सिर उठाकर ऊपर देखा तो, छत के साथ रोशनदान लगा दिखा। स्पष्ट था कि कामनी दीवार के उस पार थी और जाहिर था कि इकबाल खान सूरी उसके साथ था।

देवराज चौहान रेलगाड़ी के डिब्बे जैसे चार कमरों को पार कर गया। कमरे भी खत्म हो गए थे और दीवार भी खत्म हो गई थी। अब वहां किचन-बाथरूम वगैरह दिखे। परंतु देवराज चौहान तुरंत घूमकर दीवार के उस पार आ गया और आगे बढ़ने लगा। सब कुछ बे-आवाज हो रहा था।

सामने दरवाजा था।

देवराज चौहान समझ चुका था कि उसी के भीतर कामनी और इकबाल खान सूरी मौजूद हैं। चेहरे पर दरिंदगी नाच उठी देवराज चौहान के। प्रभाकर की आंखों में भी खतरनाक भाव नाच रहे थे।

दबे पांव वे आगे बढ़ रहे थे कि तभी कामनी की आवाज कानों में पड़ी।

"बाद में। पहले कॉफी पिएंगे। मैं तुम्हें कॉफी बनाकर पिलाती हूं डियर।"

देवराज चौहान सामने के खुले दरवाजे के पास पहुंचा।

प्रभाकर उससे तीन कदम पीछे था और पीछे का भी ध्यान रख रहा था। अब अचानक ही उसके मन में आने लगा था कि कहीं कामनी ने उनके लिए यहां मौत का जाल तो नहीं बिछा रखा? इंसान जब इन हालातों में फंसता है तो हर तरह के अंदेशे मन में उछलने लगते हैं। ऐसी उथल-पुथल एकाएक प्रभाकर के मन में पैदा हो गई थी।

तभी दरवाजे पर कामनी दिखी।

देवराज चौहान और कामनी की नजरें मिलीं।

"देवराज चौहान।" चौखट पर ठिठक गई कामनी और तेज स्वर में बोली—"मेरे होते हुए तुम इकबाल खान को नहीं मार सकते।"

उसी पल देवराज चौहान को कामनी के पीछे किसी के आ खड़े होने का एहसास हुआ।

"क्या बात है कामनी?" कामनी के पीछे से आवाज आई—"तुम...।"

"रिवॉल्वर फेंक दो। देवराज चौहान।" कामनी का स्वर तेज था—"तुम इकबाल खान सूरी की जान नहीं ले सकते।"

देवराज चौहान ने दांत भींचे रिवॉल्वर वाला हाथ उठा लिया। चेहरे पर दरिंदगी नाच उठी थी।

अब देवराज चौहान के निशाने पर कामनी थी।

दोनों की नजरें मिलीं।

"क्या बात है।" कामनी के पीछे से आवाज आई—"कौन है, जरा मुझे देखने दो।"

comicsmylife.blogspot.in

उसी पल कामनी तेजी से आगे बढ़ी और दरवाजे से हट गई।

उसके पीछे इकबाल खान सूरी खड़ा था। उसे पहचानने में देवराज चौहान ने कोई गलती नहीं की।

सामने देवराज चौहान को रिवॉल्वर ताने पाकर इकबाल खान सूरी की आंखें भय से फैल गई।

'धांय।'

देवराज चौहान ने ट्रेगर दबा दिया।

गोली इकबाल खान सूरी के माथे में जा धंसी। वो थोड़ा-सा हिला। आंखें फटी रहीं उसकी और अगले ही पल पीछे को जा गिरा। 'धप्प' उसके गिरने की आवाज आई फिर सब कुछ शांत पड़ गया।

देवराज चौहान रिवॉल्वर ताने खड़ा रहा।

परंतु चौखट के भीतर पड़े इकबाल खान सूरी के शरीर में अब कोई हरकत नहीं बची थी।

"चैक करो प्रभाकर।" देवराज चौहान के होंठ से मौत से भरा स्वर निकला।

रिवॉल्वर थामे प्रभाकर उसकी बगल से निकला और चौखट पार करके कमरे के भीतर प्रवेश कर गया। पीठ के बल इकबाल खान सूरी पड़ा था। हाथ-पांव फैले हुए थे। आंखें खुली-फटी पड़ी थीं।

चैक करने के बाद प्रभाकर बोला।

"मर गया।"

दांत भींचे देवराज चौहान ने रिवॉल्वर वाला हाथ नीचे कर दिया।

तभी कामनी ठहाका लगा उठी और खुशी से हंसने लगी।

उसी पल दौड़ते कदमों की आवाजें आईं। पीछे की तरफ से जगमोहन आ पहुंचा वहां और जिस तरफ से देवराज चौहान और प्रभाकर आए थे, वहां से मसूद आ पहुंचा।

कामनी के ठहाके वहां गूंज रहे थे।

"गया इकबाल खान?" जगमोहन ने तेज स्वर में पूछा।

"हां।" इकबाल खान के पास खड़े प्रभाकर ने ऊंचे स्वर में कहा।

"मसूद।" कामनी ने मसूद को देखते ही बांहें फैला ली।

मसूद मुस्कराकर आगे बढ़ा और कामनी को बांहों में भींच लिया।

"हमने बाजी मार ली मसूद।" कामनी मसूद को चूमते हुए कह उठी।

देवराज चौहान ने मोबाइल निकालकर बशीर को फोन किया।

"काम हो गया है। तुम लोग यहां से ऐसे निकल जाओ जैसे शेखाबाद में कभी आए ही नहीं।" देवराज चौहान ने कहा।

"ठीक है।" उधर से बशीर की आवाज आई—"मैंने अभी-अभी गोली चलने की आवाज सुनी थी।"

देवराज चौहान ने मोबाइल जेब में रखा।

उधर कामनी, मसूद से अलग होती कह उठी।

"मुझे तो विश्वास नहीं आ रहा कि इकबाल खान सूरी मारा गया है।

"तुम्हारी सहायता के बिना ये काम शायद इतनी जल्दी सम्भव नहीं हो पाता।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"इकबाल खान सूरी तक पहुंचने में तुमने हमारी काफी मदद की।"

"देवराज चौहान।" कामनी हंस पड़ी—"मैं तो समझती हूं कि तुमने मेरा काम कर दिया। दो साल से मैं इकबाल खान सूरी की मौत की ख्वाहिश कर रही थी कि ये मरे तो इसके धंधों पर, पैसों पर मेरा कब्जा हो जाए। मैंने तुम्हारी सहायता नहीं की, बल्कि तुमने मेरी सहायता की। मैं मसूद को चाहती हूं परंतु इकबाल खान की वजह से हममें दूरी बनी रही। अब सब ठीक हो गया। इकबाल खान सूरी के धंधे मैं संभालूंगी। सब कुछ वैसे ही चलेगा, जैसे इकबाल खान के होते चलता था। दुबई और पाकिस्तान के साथ मेरे व्यक्तिगत तौर पर अच्छे सम्बंध हैं। इकबाल खान के लोगों में मेरी मजबूत पकड़ है। जो मेरे खिलाफ जा सकते थे, उन्हें मैंने रास्ते से हटा दिया। मसूद अब मेरे साथ होगा और हम मिलकर इकबाल खान के धंधों को आगे बढ़ाएंगे। पाकिस्तान सरकार को तो मेरी मुट्ठी में समझो।"

"तुम इकबाल खान सूरी के धंधे को संभालोगी?" देवराज चौहान ने कामनी के खुशी से चमकते चेहरे को देखा।

"हां। अब सब कुछ मेरा है।"

"तुम पाकिस्तान के साथ मिलकर काम करोगी?"

"जरूर।"

"पाकिस्तान तो हिन्दुस्तान में आतंक फैलाता है।"

"तो क्या फर्क पड़ता है। नोट बहुत देता है पाकिस्तान। मैं सब कामों को नजदीक से जानती हूं क्योंकि इकबाल खान सूरी को मैंने काम करते देखा है। हमेशा उसके करीब रही हूं। सब कुछ संभालना बहुत आसान है मेरे लिए।"

"मैंने तो सोचा था कि इकबाल खान की मौत के बाद तुम उसकी दौलत लोगी, परंतु तुम तो हिन्दुस्तान में आतंक...।"

"ये बिजनेस है देवराज चौहान। आतंक का नाम मत दो। हिन्दुस्तान को चोट पहुंचाने के पाकिस्तान से बहुत तगड़ी दौलत मिलती है। ये बिजनेस मैंने इकबाल खान सूरी से सीखा...।"

तभी देवराज चौहान का रिवॉल्वर वाला हाथ उठा और ट्रेगर दबा दिया।

'धांय'।

गोली कामनी की छाती में जा लगी।

कामनी के शरीर को तीव्र झटका लगा और वो नीचे जा गिरी।

comicsmylife.blogspot.in

"कुछ वक्त के बाद किसी हिन्दुस्तानी को तेरी तलाश करनी पड़े, उससे तो ये ही अच्छा है कि तू अभी मरे।" देवराज चौहान ने कड़वे स्वर में कहा।

सन्नाटा-सा आ ठहरा वहां।

कामनी टूटी-फूटी सांसें लिए हिल रही थी।

"हरामजादे।" एकाएक मसूद गुर्राया और उसने फुर्ती से रिवॉल्वर निकाल ली।

प्रभाकर ने उस पर फायर कर दिया। गोली चलाने की कोशिश में मसूद के कंधे पर गोली जा लगी। रिवॉल्वर उसके हाथ से छिटक गई।

तभी जगमोहन ने एक-के-बाद-एक दो फायर मसूद पर कर दिए। वो दीवार से टकराया और नीचे गिरता चला गया और उकडूं होकर बैठा-सा रह गया था उसका शरीर। वो मर चुका था। कामनी का शरीर अभी भी हौले-हौले हिल रहा था। आंखें बंद थीं उसकी। जगमोहन ने आगे बढ़कर कामनी के सिर से रिवॉल्वर की नाल लगाई और ट्रेगर दबा दिया। तेज धमाके के साथ कामनी का सिर खुल गया और वो शांत पड़ गई।

"गोलियों की आवाजें गूंज चुकी हैं। प्रभाकर बोला—"यहां से हमें फौरन निकल चलना चाहिए।"

उन्होंने रिवॉल्वरें जेब में रखीं और जैसे भीतर आए थे, वैसे ही दीवार फांदकर बाहर आ गए। फाटक पर ताला लगा था। चाबी का उन्हें पता नहीं था और ताले पर गोली चलाकर वो और आवाज पैदा नहीं करना चाहते थे। खेतों को पार करते वे शेखाबाद के मकानों की गलियों तक आ पहुंचे और तेजी से उस तरफ बढ़ने लगे, जहां उन्होंने कार खड़ी की थी। जगमोहन, प्रभाकर के पास आकर बोला।

"वो पचास करोड़ वाली बात याद है न?"

"क्या?" प्रभाकर ने उसे देखा—"मुझे सुनाई नहीं दे रहा।"

"पचास करोड़। अब सुनाई दिया?"

"नहीं।"

"मैंने तेरे को पचास करोड़ देने हैं। अब तो सुन लिया होगा?" जगमोहन झल्लाया।

"नहीं समझ में आ रहा। मेरे कान काम नहीं कर रहे।"

"लगता है कमीने के कानों का काम, परमानैंट हो गया है।" जंगमोहन मुंह बिगाड़कर कह उठा।

चलते-चलते देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगा ली थी। वो कश ले रहा था। चेहरे पर गम्भीरता के भाव ठहरे हुए थे। जल्दी ही वो तीनों कार तक आ पहुंचे। भीतर बैठे, प्रभाकर ने तेजी से कार दौड़ा दी।

टॉप मिस्ट्री राइटर

सुरेन्द्र मोहन पाठक

के

सरदार सुरेंद्र सिंह सोहल उर्फ विमल के नए उपन्यास

चैम्बूर का दाता

लाल निशान

और

सदा नगारा कूच का

सम्पूर्ण भारत में उपलब्ध

सरदार सुरेंद्र सिंह सोहल उर्फ विमल के कालजयी उपन्यास

अब व्हाइट पेपर पर पक्की बाइंडिंग में सर्वत्र उपलब्ध

जाना कहीं

मौत का खेल + दौलत और खून और

पैंसठ लाख की डकैती

अपने निकट के पुस्तक विक्रेता, रोडवेज बुक स्टाल, ए.एच. व्हीलर एंड कंपनी व सभी रेलवे बुक स्टालों से खरीदें, न मिलने पर उपरोक्त छहों उपन्यासों के लिए 480/- मूल्य का मनीऑर्डर राजा पॉकेट बुक्स 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084 के पते पर भेजकर घर बैठे प्राप्त करें। डाक व्यय माफ। एम.ओ. पर अपना फोन नं. अवश्य लिखें।

राजा पॉकेट बुक्स की गौरवशाली भेंट!

comicsmylife.blogspot.in

दुबई का आका की

अपार सफलता के बाद

अनिल मोहन का

राजा पॉकेट बुक्स में

देवराज चौहान सीरीज का आगामी नया उपन्यास

वर्दी का नशा

अगस्त, 2011 में सम्पूर्ण भारत में उपलब्ध

राजा पॉकेट बुक्स

ISBN : 978-93-80871-21-9

9 789380 871219

₹ 60/-

A.H.W. TIGER SERIES

comicsmylife.blogspot.in